शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूर शिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग–3 हिंदी

विधा विशेष का अध्ययन

(शैक्षिक वर्ष 2015-16 से)

सत्र–5 पेपर 7

सत्र–6 पेपर 12

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2015
बी. ए. भाग 3 (हिंदी : बीजपत्र-7 और 12)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 1,500

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्र. कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-81-8486-614-8

★ दूर शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

★ दूर शिक्षण विभाग-विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के विकसन अनुदान से इस साहित्य की निर्मिति की है।

दूरशिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

सलाहकार समिति

प्रा. (डॉ.) डी. बी. शिंदे
मा. कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एम. एम. साळुंखे
मा. कुलगुरू,
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नाशिक

प्रा. (डॉ.) के. एस. रंगाप्पा
मा. कुलगुरू,
म्हैसूर विश्वविद्यालय, म्हैसूर

प्रा. पी. प्रकाश
मा. प्र-कुलगुरू,
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नवी दिल्ली

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २,
११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. अनिल गवळी
अधिष्ठाता, कला व ललितकला विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्य डॉ. जे. एस. पाटील
अधिष्ठाता, सामाजिक शास्त्रे विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्य डॉ. सी. जे. खिलारे
अधिष्ठाता, विज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. आर. जी. फडतरे
अधिष्ठाता, वाणिज्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्य डी. आर. मोरे
संचालक, महाविद्यालय व विद्यापीठ विकास मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्र. कुलसचिव, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्री. एम. ए. काकडे
परीक्षा नियंत्रक, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्री. एन. व्ही. कोंगळे
वित्त व लेखा अधिकारी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

कॅप्टन डॉ. एन. पी. सोनजे (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

अध्ययन मंडल : हिंदी

डॉ. वसंत दादू सुर्वे
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा, ता. वाळवा, जि. सांगली.

- **डॉ.श्रीमती पद्मा पाटील**
  हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
- **डॉ. सुनील बापू बनसोडे**
  जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, जिला - कोल्हापुर
- **डॉ. गजानन सदाशिव भोसले**
  डी. पी. भोसले महाविद्यालय, कोरेगांव, जि. सातारा
- **डॉ. रघुनाथ गणपती देसाई**
  श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली
- **डॉ. रामा कृष्णा नकाते**
  शहाजी राजे महाविद्यालय, खटाव, जि. सातारा.
- **प्राचार्य डॉ. कृष्णा राजाराम पाटील**
  तुकाराम कोलेकर आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, नेसरी, जि. कोल्हापुर.
- **डॉ. भीमराव ज्ञानू पाटील**
  डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय, सांगली.

	सत्र 5	सत्र 6
★ **डॉ. सुनील बापू बनसोडे** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर	**1**	**-**
★ **डॉ. भानुदास अगेडकर** किसनवीर महाविद्यालय, वाई	**2, 4**	**-**
★ **डॉ. सुरज चौगुले** वारणा महाविद्यालय, ऐतवडे खुर्द	**3**	**-**
★ **प्रा. गोरख बनसोडे** सहकार महर्षी शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, रहिमतपुर	**-**	**1**
★ **डॉ. उत्तरा कुलकर्णी** महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर	**-**	**2**
★ **डॉ. कल्पना पाटोळे** गोखले महाविद्यालय, कोल्हापुर	**-**	**3**
★ **डॉ. भारत खिलारे** छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा	**-**	**4**

■ **सम्पादक** ■

डॉ. व्ही. डी. सुर्वे
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा,
ता. वाळवा, जि. सांगली.

डॉ. सुनील बापू बनसोडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर,
जिला. कोल्हापुर

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–3 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 1, 2 तक की अध्ययन सामग्री से दूर शिक्षा योजना के छात्र जिस तरह लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह बी. ए. 3 के छात्र भी प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूर शिक्षा के छात्रों का महाविद्यालय तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संपर्क नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 3 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूर शिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य हैं।

धन्यवाद।

– संपादक

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र-5	
1.	कृष्णा अग्निहोत्री का परिचय ।	1
2.	'आना इस देश' : कथावस्तु एवं शीर्षक ।	8
3.	'आना इस देश' : पात्र एवं संवाद ।	40
4.	'आना इस देश' : देश काल तथा वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	58
	सत्र-6	
1.	कौसल्या बैसंत्री का परिचय ।	77
2.	'दोहरा अभिशाप' : कथावस्तु एवं शीर्षक ।	88
3.	'दोहरा अभिशाप' : पात्र एवं चरित्र - चित्रण ।	119
4.	'दोहरा अभिशाप' : देश काल तथा वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	139

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे–

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं–अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं–अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा में हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

सत्र 5 : इकाई 1

कृष्णा अग्निहोत्री का परिचय

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य ।

1.2 प्रस्तावना ।

1.3 विषय विवेचन ।

1.3.1. कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन परिचय ।

1.3.2. कृष्णा अग्निहोत्री का व्यक्तित्व ।

1.3.3. कृष्णा अग्निहोत्री का कृतित्व ।

1.3.4. उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री ।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1.1 उद्देश्य –

इस इकाई को पढने के बाद आप –

1. कृष्णा अग्निहोत्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हों जाएंगे ।

2. कृष्णा अग्निहोत्री के आत्मनिर्भर एवं विवेकपूर्ण उपन्यासकार के रूप से परिचित हो जाएंगे ।

1.2 प्रस्तावना :

कृष्णा अग्निहोत्री वर्तमान युग में हिंदी साहित्य क्षेत्र में सबसे अधिक चर्चित महिला साहित्यकार रही है । हिंदी समीक्षकों की दृष्टि से कृष्णा जी केवल नारी विमर्श की रचनाकार न रहकर अखिल मानव जीवन की सही व्याख्या प्रस्तुत करनेवाली एक श्रेष्ठत्तम रचनाकार हैं । इन्हीं विचारों की झलक उनके उपन्यास, कहानी, समीक्षा, रिपोर्ताज आदि विधाओं में मिलती है । आज पुरे विश्व में मनुष्य का जीवन पूरी तरह से बदल चुका है । उनकी आवश्यकताएँ, समाज, राष्ट्र, धर्म आदि के प्रति देखने का नजरिया बदल गया है । मानो आज विश्व में मनुष्य यंत्रवत विकास के पीछे भाग रहा है । विश्व अनेक समस्याओं से घिरा हुआ नजर आता है । वर्तमान में साम्प्रदायिकता एवं आतंकवाद की समस्याओंने गंभीर रूप धारण कर लिया है । जिससे मानव जाति भयभीत हो चुकी है । इन सारी समस्याओं ने भारतीय समाज को खोखला बना दिया है । कृष्णा जी ने साम्प्रदायिकता एवं आतंकवाद की समस्याओं का चित्रण बडी बेबाकी से किया है ।

1.3 विषय विवेचन :

विषय विवेचन के अंतर्गत हम कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन परिचय, व्यक्तित्व के पहलू, नौकरी, पुरस्कार, कृतित्व एवं एक सर्जक उपन्यासकार का विस्तार से परिचय प्राप्त करेंगें ।

1.3.1. **कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन परिचय :**

8 अक्तूबर 1934 को राजस्थान के नसीराबाद में कृष्णा अग्निहोत्री हा जन्म हुआ । कृष्णा की माता ने गर्भवती अवस्था में भी स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया था । शायद यहीं से कृष्णा के मन में विद्रोही भाव भर दिये गए । कृष्णा का नाम मोहनी रखा गया था परंतु उनकी बुआ द्वारा उन्हें कृष्णा नाम दिया गया । 'कृष्णा' नाम लोकगीत तथा देशभक्ति से जुडा हुआ है इसी वजह से कुछ लोक उन्हें 'किन्ना' भी पुकारते थे । कृष्णा जन्म से राजस्थान की लेकिन पली-बढी मध्यप्रदेश खंडवा में ।

बुआ के बुलाने पर पिताजी राजस्थान से दो साल की बच्ची कृष्णा को लेकर खंडवा में आकर बस गए । कृष्णा का बचपन गणेश तलाई में बीता । माँ कर्मठ, परंपरावादी विचारों की स्त्री थी । माँ की कठोरता के कारण उनका बचपन दबा-घुटा ही रहा । उनका घर हमेशा लोगों से भरा - भरा रहता । एकत्र परिवार की वजह से घर के ही कुछ पुरूष रिश्तेदारों और नौकरों से ही उन्हें बचपन में ही गंदे अनुभवों का सामना करना पडा । माँ से डरती कृष्णा अपनी व्यथा माँ को नहीं बता पाती । घर की बडी बच्ची होने के कारण माँ छोटे बच्चों की जिम्मेदारी उनपर ही डाल देती थी । परिवार की जिम्मेदारी उठानेवाली, बालिका कृष्णा परिस्थितिवश बडी हो गई ।

कृष्णा का जन्म कान्य-कुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ । माँ हीरामणि के कठोर व्यवहार के कारण कृष्णा संघर्षशील बनी । बेटी के जन्म के पश्चात पिताजी की आर्थिक स्थिति में सुधार आया था । परिवार के लिए कृष्णा भाग्यशाली मानी गई । उनकी माँ चौथी कक्षा तक पढी थी । प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा, रवींद्रनाथ की रचनाओं में वे विशेष रूचि लेती थी ।

कृष्णा के जन्म के समय उनके पिताजी नसीराबाद में एक छोटी नौकरी करते थे । कृष्णा के पिता पं. रामचंद्र तिवारी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा । मॅट्रिक के पश्चात कृष्णा को इंजिनीयरिंग डिप्लोमा के लिए नागपुर भेजा गया । जहाँ उन्होंने एक समय चने खाकर अपनी पढाई पूरी की । पिताजी ने अजमेर के किसी गॅरेज में अस्सी रूपये की नौकरी करके अपनी गृहस्थी सँभाली थी । वे एक प्रतिष्ठित समाजसेवी भी थे । कृष्णा भी हरिजन, कहार, बसोड, महार आदि की सेवा में रत थी । अत: कृष्णा को समाज को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ । कृष्णा पर माता-पिता के मानवतावादी संस्कार दिखाई देते हैं ।

कृष्णा पर पिता का स्नेह जादा था । उनके मन में कुछ बनने की आकांक्षा पनपती गई । पिताजी उन्हें एक समाज सेवी डॉक्टर बनाना चाहते थे । उनके पिताजी ने हारमोनियम, सितार आदि कलाओं का ज्ञान कराने हेतु अलग अलग गुरूओं की नियुक्ति की थी । फिर कृष्णा ने हिंदी में एम. ए. तथा अंग्रेजी में ' स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

सोलह साल की आयु में कृष्णा का विवाह कानपुर के श्री सत्यदेव अग्निहोत्री के साथ हुआ । पुरातन संस्कारयुक्त परिवार में उनका जीवन दबा-घुटा ही रहा । वहाँ उनका व्यक्तित्व नहीं खिला । उनके पति डिप्टी कलक्टर थे । परंतु थोडे ही दिनों में सुरा और सुंदरी के कारण नौकरी से हाथ धो बैठे । कृष्णा का ससुराल में जीना और कठिन हो गया । अग्निहोत्री मानसिक संतुलन खो बैठे । सास के द्वारा यातना और घर में सम्मान प्राप्त न होने की वजह से कृष्णा ने आत्मनिर्भर बनने का निर्णय लिया । इसलिए वह अपने पिता के घर लौट आयी । पति के बिना खुबसुरत अकेली महिला का जीना दुर्भर हो गया । जो भी देखता, उसे पाने की ललक निर्माण हो जाती थी । ऐसे में चार बच्चों के पिता श्रीकांत जोग से कृष्णा ने विवाह कर लिया । विवाह के पश्चात थोडे दिनों में ही श्रीकांत जी ने अपनी असलियत दिखाना शुरू किया । कृष्णा जी ने उनसे भी नाता तोड दिया । विवाह मानो उनके लिए त्रासदी है जो कभी सफल नहीं बना ।

अपनी इकलौती बेटी नीहार गिते की माँ तथा पिता दोनों जिम्मेदारियां उन्होंने निभायी । बेटी गुजराती कन्या महाविद्यालय इंदौर में अध्यापिका का काम करती है ।

कृष्णा जी ने अपने जीवन के यथार्थ अनुभवों के बल पर साहित्य सृजन किया है । चौदह वर्ष की आयु तक उन्होंने रामचरितमानस, गीता, सत्यार्थ प्रकाश, महाभारत इतिहास, शरतचंद्र, बंकिमचंद्र, प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टॅगोर आदि की रचनाओं का अध्ययन किया था । सातवीं कक्षा में पहुँचने तक अपनी मन की सहमी, दबी भावनाएँ वह कागज पर उतारने लगी, अपने मन की बातें, दबी इच्छा को प्रकट करने का साधन साहित्य रहा है, वही सबका साथी बनता है, किसी का साथ छोडता नहीं । यह कथन कृष्णाजी के साहित्य प्रेरणा के लिए सही लगता है ।

कृष्णा जी के साहित्य को विविध सम्मानों से गौरवान्वित किया गया है । राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, भोपाल मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल, अक्षर साहित्य संमेलन, भोपाल, रत्नभारती पुरस्कार, पन्नालाल पुरस्कार आदि साहित्यिक पुरस्कारों से उन्हें विभूषित किया गया है ।

1.3.2 कृष्णा अग्निहोत्री का व्यक्तित्व :

कृष्णा जी के व्यक्तित्व के पहलु के दृष्टि से उनका व्यक्तित्व सीधा-सादा ही रहा है । खान-पान सीधा-सादा सरल है । संगीत में रूचि, फिल्में देखना उन्हें पसंद है । धार्मिक तथा आध्यत्मिकता उनके जीवन का एक अंग रहा है ।

कृष्णा जी स्पष्टवक्ता रही है । अपने विचारों को स्पष्ट रूप से बतानेवाली रही है । अपने इन्हीं रवैये से कभी कभी आत्मीयजनों से नाराजगी भी लेनी पडी है । दोस्ती में भी उनकी स्पष्ट मान्यताएँ हैं । वे कहती है, दोस्ती में उम्र की मर्यादा नहीं होती, हर जाति, हर आयु के मित्र हो सकते हैं, दोस्ती में अमीरी, गरीबी नहीं आती । मुझे दोस्ती निभाने का शौक है । उन्होंने बचपन से ही गलत का विरोध ही किया है । इसी तरह से बडी नीडरता से उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी है । अपार साहस के साथ उन्होंने अकेले साहित्य लेखन किया है । लेखन के लिए किसी साहित्यिक गुटबाजियों, दलबंदियों एवं संघों से सहायता नहीं ली । अपनी मौलिकता, स्थापित करने में वे सक्रिय रही है । उनकी रचनाओं में जीवन की यथार्थता एवं वास्तविकता का सही चित्रण हुआ है । अपने लगातार तीस साल के लेखन में प्रसिद्धी के लिए गलत माध्यम का इस्तेमाल नहीं किया ।

अपने अनुभव, संघर्षरत व्यक्तित्व और कल्पना के माध्यम से कृष्णा जी ने अपने साहित्य सृजन में यथार्थता को शब्दबद्ध किया है । प्रकृतिचित्रण के अंतर्गत उनका घुमक्कड स्वभाव दृष्टिगोचर होता है । खेत, खलिहान, पेड पौधे, आदि प्राकृतिक चित्र कहानियों में सशक्तता से वर्णित हुए हैं । प्रकृति के खुले माहौल में घूमनेवाली कृष्णा जी ने अपने साहित्य में यह चित्रण प्रसंगानुकूल किया है । जीवन की घटनाओं से कृष्णा जी जिंदादिल व्यक्तित्व रखती है । अपने अनुभवों को छिपाना उनकी प्रवृत्ति नहीं है । उनके साहित्य में इसी का प्रत्यय आता है।

1.3.3 कृष्णा अग्निहोत्री का कृतित्व

कृष्णा जी ने अपना लेखन कार्य 'धर्मयुग' से आरंभ किया और बाद में सा. हिंदुस्थान, सारिका, नया ज्ञानोदय, नई कहानी, मनोरमा, माया, दै. जागरण, इंडिया टूडे, नवनीत, हंस आदि पत्र - पत्रिकाओं में निरंतर लिखती रही है । उन्होंने कहानी, उपन्यास, आलोचना, रिपोर्ताज, बाल साहित्य और आत्मकथा आदि अनेक विधाओं में लेखनी चलाई हैं । उनका साहित्य - संसार निम्नांकित है

उपन्यास –

बात एक औरत की, टपरेवाले, कुमारिकाएँ, टेसू की टहनियां, बौनी परछाइयाँ, अभिषेक, निष्कृति, नीलोफर, नानी अम्मा मान भी जाओ, मैं अपराधी हूँ, जोधा-मीरा, बीत्ता भर की छोकरी, आना इस देश ।

कहानी –

टीन के घरे, नपुंसक, विरासत, पारस, जीना-मरना, याही बनारसी रंगबा, गलियारे, क्या जमीं है दोस्तों, जै सियाराम, पंछी पिंजरे के, दूसरी औरत, जिंदा आदमी, सर्पदंश, मान मी जा सांझी, अपने-अपने कुरूक्षेत्र ।

समीक्षा ग्रंथ - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी ।

प्रौढ पुस्तकें - ग्राम सेविका, सेवा के मोती ।

रिपोर्ताज – भीगे मन रीते मन ।

आत्मकथा – लगता नहीं है दिल मेरा, और और औरत... ।

बाल साहित्य – अपना हाथ जगन्नाथ, समय की कीमत, अक्षरों की हडताल, एक था रॉबी, सूर्यतपा, गुलगुले आदि ।

1.3.4 उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री

कृष्णा अग्निहोत्री ने अब तक कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, रिपोर्ताज, बाल-साहित्य आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है । उन्होंने अब तक बारह उपन्यास लिखे हैं । ऐसा माना जाता है कि स्त्री लेखिका सिर्फ नारी जीवन कहानी लिखती है । नारी समस्या को पुरूष प्रधान समाज के सामने रखने का प्रयास करती है । कृष्णा जी ने नारी चित्रण के साथ साथ समकालीन समाज के बदलते वातावरण, मानवीय मूल्यों का तथा विश्व स्तर पर पनप रहे आतंकवाद, साम्प्रदायिकता एवं भूमंडलीकरण के दुष्परिणामों का लेखा-जोखा अपने उपन्यासों में चित्रित करने का प्रयास किया है । मनुष्य का समाज, राष्ट्र, धर्म आदि के प्रति देखने का नजरिया बदल गया है, मनुष्य यंत्रवत जीवन जी रहा है, आपसी द्वेष, मतभेद बढते जा रहे हैं । अनेक समस्याओं से घिरा मनुष्य भयभीत हैं, आतंकित है, एक-दूसरे पर का विश्वास उड गया है । नारी, दलित, आदिवासी एवं निम्न-मध्य वर्ग की समस्याएँ दिनोंदिन बढती जा रही हैं । ऐसे समय में एक सृजनशील मानवीय संवेदनाओं भरी कृष्णा जी कैसे तटस्थ रह सकती है । उन्होंने हर एक समस्या को अपने अलग-अलग उपन्यासों में बडी यथार्थ और बेबाकी से चित्रित किया है । कृष्णाजी के बारे में प्रमीला चौरे कहती है, ''प्रख्यात उपन्यास लेखिका – राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त कथाकार है । जिनके कथानक की बुनावट, ताना-बाना बडी बारिकियां वाला रेशमी धागों से बीना हुआ सुंदर आकृतिवाला है । सहज और यथार्थवादी लेखन इनकी एक और विशेषता है । लेखन की शैली धारा प्रवाह कथानक को हर वक्त प्रभावित करती है । बिना थके संपूर्ण साहित्य में नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है और नारी को झकझोरा है ।''

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म राजस्थान के. . . . . गांव में हुहा ।

   1. नसीराबाद 2. असीसबाद 3. समीराबाद 4. अमीनानगर

2. कृष्णा जी को कृष्णा यह नाम . . . . . ने दिया था ।

   1. माँ 2. पिताजी 3. बुआ 4. फूफा

3. कृष्णा जी की माताजी का नाम . . . . . है ।

   1. हिरामणी 2. मोहिनीदेवी 3. तारामती 4. हेमदेवी

4. कृष्णा जी के पति का नाम . . . . . था ।

   1. रत्नकुमार 2. सत्यदेव 3. रामदेव 4. राधाकृष्ण

5. कृष्णा जी ने . . . . . से पुनर्विवाह किया था ।

1. श्रीकांत 2. हिरालाल 3. रत्नकुमार 4. सत्यदेव

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

कान्य – कुब्ज – एक प्राचीन जनपद, कान्य कुब्ज (कन्नौज) क्षेत्र का निवासी ।

घुम्मकड – यायावर, बहुत घुमनेवाला।

खलिहान – काटी हुई फसल का ढेर लगाना ।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. नसीराबाद 2. बुआ 3. हिरामणि

4. सत्यदेव 5. श्रीकांत

1.7 सारांश :

1. कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक हिंदी महिला रचनाकारों में सशक्त रचनाकार है ।
2. पारिवारिक संघर्ष के बावजूद भी उनका व्यक्तित्व उभरकर आता है ।
3. साहित्य सृजन की देन विरासत से प्राप्त न होते हुए भी वह सृजनशील साहित्यकार बनी है ।
4. सादा जीवन और उच्च विचार के अनुसार अपना जीवन यापन करती है ।
5. कृष्णा जी के अनुसार जीवन संघर्ष सजीव एवं चेतना का प्रतीक है, इसलिए अपने अस्तित्व की रक्षा करने में कठिन परिश्रम करती है ।
6. कृष्णा जी को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जो उनके लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर आगे लिखने के लिए सचेत करते हैं ।

1.8 स्वाध्याय :

1. कृष्णा अग्निहोत्री का जीवन परिचय लिखिए ।
2. कृष्णा अग्निहोत्री के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी लिखिए ।
3. कृष्णा अग्निहोत्री का कृतित्व ।
4. उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. कृष्णा अग्निहोत्री के जीवन परिचय पर मराठी में चरित्रप्रधान निबंध लिखिए ।
2. कृष्णा अग्निहोत्री के समकालीन मराठी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों की सूची बनाइए ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1. कृष्णा अग्निहोत्री : संपूर्ण साहित्य का मूल्यांकन – डॉ. नीहार गिते
2. हिंदी आत्मकथा – डॉ. सविता सिंह
3. लगता नहीं है दिल मेरा – कृष्णा अग्निहोत्री
4. और और औरत. . . – कृष्णा अग्निहोत्री

●●●

सत्र 5 : इकाई 2
'आना इस देश' – कथावस्तु एवं शीर्षक

अनुक्रम :

2.1 उद्देश्य।

2.2 प्रस्तावना ।

2.3 विषय – विवेचन।

2.3.1 'आना इस देश' उपन्यास की कथावस्तु ।

2.3.2 'आना इस देश' उपन्यास का शीर्षक ।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

2.7 सारांश ।

2.8 स्वाध्याय ।

2.9 क्षेत्रीय कार्य ।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने पर आप -

1) उपन्यास विधा में प्रचलित लघु उपन्यास प्रकार का ज्ञान होगा ।

2) हिंदी साहित्य में चर्चित नारी विमर्श की जानकारी होगी ।

3) आजादी के पूर्व भारतीय परिवेश का ज्ञान होगा ।

4) बटवारे के समय की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलेगी ।

5) भारत व पाकिस्तान के बीच के साम्प्रदायिक तनाव से परिचित होंगे ।

6) भारत के प्रति पाकिस्तान की ईर्षा, द्वेष, सामुदायिक संघर्ष नीति की जानकारी होगी ।

7) ''दोनों मुल्कों की युवा पीढी धर्मांधता को त्यागकर, मनुष्य बनकर मानवता का रवैया अपनाकर, भविष्य में अपना खुशनुमा जीवन जी सकेंगे ।'' इस तरह के आशवादी विचारों से परिचित होंगे ।

2.2 प्रस्तावना :

कृष्णा अग्निहोत्री वर्तमान युगीन हिंदी साहित्य क्षेत्र की एक प्रभावात्मक रचनाकार मानी जाती है । कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, रिपोर्ताज, समीक्षा, बाल साहित्य आदि विधाओं में उन्होंने जो रचनात्मक योगदान दिया है वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । अब तक उनके ग्यारह उपन्यास हिंदी उपन्यास क्षेत्र में प्रस्तुत हुए हैं । अब उनका बारहवां उपन्यास शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है । उन्होंने अपने सभी रचनाओं में मानवतावादी विचारों के केंद्र में रखकर उनके अनिवार्यता पर प्रकाश डाला है । नारी विमर्श, उनके रचना संसार का सबसे सशक्त माध्यम रहा है । उनके अनुसार इस ग्लोबलाइझेशन में भी औरत दुहरी जिम्मेदारियाँ निभाकर भी स्वेच्छा से अपनी तसब्बुरानुसार कुछ नहीं पा सकती , स्त्री की इसी स्थिति का यथार्थ चित्रण अपनी कहानी तथा उपन्यासों में हुआ दिखाई देता है । प्रस्तुत उपन्यास 'आना इस देश' इस बात का सशक्त प्रमाण रहा है । प्रस्तुत उपन्यास की नायिका सुरैय्या पढी-लिखी उच्च शिक्षित है । इसके अतिरिक्त वह एक जानी-मानी गजल गायिका है । जब उसकी शादी की जाती है तो उसके पति को उसका सजना-संवारना तथा पब्लिक में जाना अच्छा नहीं लगता, तो वह मुँह पर ॲसीड डालने की धमकी देता है । धर्म की आड में खूद दूसरी शादी करके सुरैय्या को यतीम बनाता है । भारत आनेपर वह अबीर से प्यार ही नहीं करती तो उसे अपना सब कुछ न्योच्छावर करके उसके लिए ही जीना चाहती है । मगर हमेशा धर्म के ठेकेदार का उसे डर सताता रहता है । इसी डर के कारण वह चाहकर भी अपने हिंदू प्रेमी के साथ घर बसाने की हिम्मत नहीं करती । क्योंकि वह जानती है कि वह पाकिस्तानी और उस पर धर्म से मुस्लिम होने से हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म के ठेकेदार फतवे निकालकर उनका जीना मुश्किल कर देंगे । यही कारण था कि अपने प्रेम की हिफाजत करती है । अंत मे मुस्लिम होकर भी आतंकवादियों व्दारा उसपर पाशवी बलात्कार होता है । उस हादसे से पागल होकर सीमा पर भटकनेवाली सुरैय्या का अंत होता है । यह दर्दनाक कहानी को लेखिका ने

प्रस्तुत उपन्यास में अत्यंत सजीवता से साकार किया है । इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिक संघर्ष की डरावनी आशंका, सीमा भाग में रहा अशांत वातावरण, भारत, पाकिस्तान में प्रचलित पीछले साठ-सत्तर साल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, गतिविधियाँ, बटवारे के बुरे परिणाम आदि का वर्णन अत्यंत तटस्थता से करते हुए इन्सानियत और मानवता का रिश्ता दोनों देशों सहीत विश्वस्तर पर एक दूसरे के बीच निर्माण करने का और भविष्य में यही इंसानियत का विचार विकसित होने का आशावाद प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री ने व्यक्त किया है ।

2.3.1 'आना इस देश' उपन्यास की कथावस्तु :

'आना इस देश' उपन्यास केवल आकार की दृष्टि से लघु है किन्तु आशय की दृष्टि से देखे तो यह एक विशालकाय महाग्रंथ है और विषय की दृष्टि से देखे तो यह एक उच्चस्तरीय आदर्श रचना है जिसमें मनुष्य को जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्णभेद, लिंगभेद की सीमाओं को तोडकर मनुष्य बनकर रहने की, एक दूसरे के प्रति समर्पित भाव से व्यवहार करने के लिए केवल प्रोत्साहित ही नहीं किया है तो लेखिका हमे वैसे रहने के लिए सही मार्गदर्शन करती हुई दिखाई देती है ।

'आना इस देश' इस लघु उपन्यास की कथा का ताना-बाना लेखिकाने बडी सहजता से बुना है । इसमें चित्रित प्रमुख कथा मूलत: एक प्रेमकहानी है । उस प्रेमकहानी के आसपास लेखिकाने जिन चरित्रों का, घटनाओं का, आचार-विचार और संस्कारो का जो ताना-बाना है, वह बेजोड है । जिससे हमे हमारे देश में पीछले पैंसठ साल में घटित राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और भौतिक जीवन के क्षेत्र का ऐतिहासिक ज्ञान भली भाँति हो जाता है । साथ ही साथ इस बात का भी ज्ञान होता है कि पीछले पैंसठ साल में हमारे देश का जो विकास हुआ है वह विकास मात्र जंगल तोडकर सिमेंट का विकास हुआ है । न हम बदले हैं न हमसे अलग हुआ पडोसी मुल्क पाकिस्तानी बदला है । न हमने अपनी सोच बदली है पाकिस्तानी ने अपनी दरिदंगी बदली है । कृष्णा अग्निहोत्री का यह लघु उपन्यास भारत और पाकिस्तान में परंपरा से प्रचलित रहे इन्ही दकियानुसी आचार-विचार और झूठे संस्कारों का बेबाक (नग्न) चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तूत करता है । अत: इस लघु उपन्यास की कथावस्तु या कथानक को कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है ।

'आना इस देश' यह कहानी है सुरैय्या की, सुरैय्या के समर्पित प्रेम की, उसके भयंकर, यातानामय, असुरक्षित जीवन की । साथ ही साथ यह कहानी है भारत और पाकिस्तान के बीच बँटवारे से लेकर अब तक चले घिनोंने राजनीति की । यह कहानी है, हिंदु और मुस्लिम कें बीच रहे धार्मिक, साम्प्रदायिक उन्माद की, यह कहानी है झुठे धार्मिक गर्व की जिसमें फतवे निकाले जाते हैं इन्सान के रुप में जन्मे पुरुष या स्त्री को मारने, तोडने, चिरने या जिन्दा जलाने के । यह कहानी है उन धार्मिक फतवों से निर्माण होनेवाले भयंकर साम्प्रदायिक संघर्ष व बेचिराख करनेवाले आसूरी धर्मवृत्ति के भय से भयभीत होकर अपने-अपने प्रेम को बेजुबान बनाकर जिंदगीभर मन के किसी कोणों में दफनानेवाले असंख्य हिंदू और मुस्लिम प्रेमियों की जिन्होंने इन्सान होने के नाते एक दूसरे को जी जान चाहा, मगर धर्म ने, सम्प्रदाय ने उन्हें अलग अलग रहने के लिए मजबुर किया । इस दृष्टि से देखे तो धर्म से मुस्लिम रही सुरैय्या और हिंदू रहे अबीर की अधुरी प्रेम कहानी है। उपन्यास

में चित्रित कथानक का प्रारंभ फ्लॅश बैक से होता है । उपन्यास की नायिका सुरैय्या इंदौर के किसी एक रेसीडेन्सी क्लब में बैठी रेडवाईन शराब पी रही है और कबाब खा रही है । क्लब का वातावरण पूरी तरह से रंगीन बन चुका है । ''बात निकली तो बहुत दूर तलक जायेगी,'' जगजीत सिंह की यह गजल एक ओर बज रही है तो दूसरी ओर क्लब में आए सभी लोग यहां तक की कुत्ते और कबुतर भी मस्ती में झूम रहे हैं । इसी बीच सुरैय्या की सहेली गीत वहाँ आ जाती है। दोनों के बीच स्त्री की मर्यादाएँ और पादरी पुरोहित नेताओ की घिनौनी राजनीतिक लालसाओं की बाते होती हैं। दूसरे दिन पठानी सलवार पहनी सुरैय्या फिर उसी क्लब में उसी मेज पर बैठे रेड वाईन की ऑर्डर देती हुए दिखाई देती है । मेज पर बैठे बैठे उसे अचानक कराची की याद आती है । जिससे धीरे धीरे स्वयं सुरैय्या की और साथ ही साथ पूरे उपन्यास की कहानी परत दर परत साकार होती है । सुरैय्या के दादा-दादी, नाना-नानी, भारत से ताल्लुक रखते हैं । बटवाँरे के पहले उनका परिवार भारतीय परिवेश में अपना दैनिक जीवन व्यतीत करनेवाला एक अच्छा खांसा परिवार था । आज भी सुरैय्या के नाना-नानी उत्तर प्रदेश के रामपुर में खुशहाली से रह रहे हैं । सुरैय्या मेजर नदीम और हरन्नुम की बेटी है जो अपने माता-पिता, दादा-दादी के साथ बटवाँरे के बाद कराची में रहती थी । दादी के कथनानुसार बटवाँरे के समय मेजर नदीम अर्थात सुरैया के पिता भारतीय फौज में थे और वहीं से मिलिटरी के कुछ गुप्त राज की फाईल साथ लेकर पाकिस्तान भाग आए थे, मुस्लिमों के प्रति दिखाई गई इसी वफादरी के कारण पाकिस्तान सरकारने उन्हें अपनी मिलीटरी में बडा ओहदा बहाल किया था । उन्हें रहने के लिए समुंदर के किनारे बडा सा फ्लॅट भी दिया था । मगर मेजर नदीम का यह करतब सुरैया की दादी और माँ दोनो की दृष्टिसे गद्दारी थी । फिर भी मजबुरी में वे सब उनके साथ बांधे अपना जीवन बीता रहे थे । सुरैय्या की अम्मी तरन्नुम ने उर्दु में एम.ए.किया था । उन्हीं की तरह सुरैय्या ने भी दसवीं पूरी कर एन्ट्रेस में गई तो उर्दु अदब लिया और उसी में एम.ए.तक फर्स्ट क्लास पाती रही । वह एक ओर अरबी भाषा पढ रही थी तो दूसरी ओर उसने ड्राईव्ह भी सीख ली थी । घर में फौजी वातावरण और बाहर धार्मिक पाबंदियो के बावजूद एक पढी-लिखी खातून को जिस जिंदादिली से जीना चाहिए उस जिंदादिली से सुरैय्या अपना जीवन जी रही थी । वह एक रेडियो सिंगर भी थी ।

बचपन से ही सुरैय्या जब भी अपनी अम्मी या दादी के साथ बात करती थी तो उन बातों में भारत का जीक्र बार बार होता था । उसकी अम्मी तरन्नुम तो अपने मायके रामपुर की चर्चा बडी आत्मीयता से करते हुए सुरैय्या को कहती थी कि तुम एक बार तो जरुर भारत जाना और अपने नाना-नानी को मिल लेना । अपनी अम्मा और दादी की यही ख्वाईश सुरैय्या के मन में बचपन से ही भारतीय भूमि के प्रति अपनापन तथा आकर्षण केवल निर्माण ही नहीं करता तो वह बढती उम्र के साथ अधिक तीव्र भी बनता जाता है । यही कारण है कि वह कराची में एक खानदानी दावत में केवल भारत से आए हुए मेहमूद की ओर खींच जाती है । उसके साथ पहचान बढाते हुए उसके साथ भारत संबंधी अलग अलग विषयों पर विस्तृत चर्चा करती है । जिससे वह यह भली-भाँति जान जाती है कि भारतीय मुसलमानों पर धर्म के नामपर अत्याचार किए जाते हैं, उन्हें नौकरी तक ठीक से नहीं मिलती, जैसी सुनी-सुनाई बातें पूरी तरह से झूठी है क्योंकि मेहमूद उसे बता देता है कि वह भारत में ही एक सरकारी इंजिनियर है, उसके नाना जास्टिस होकर रिटायर्ड हुए हैं और उसका छोटा

भाई वकालत में मशहूर है तथा उसकी बडी आपा एक सफल डॉक्टर है । (पृ-१७) मेहमूद उसे इस बात की भी जानकारी देता है कि भारत में सारे मुसलमान खुली हवा में सांस लेते हैं और अपनी इच्छानुसार जीते हैं । जो नफरत सन १९४७ में जन्मी थी अब वह बस एक चिंगारी के रुप में शेष है जिसे बीच बीच में कुछ सियासत मामलों द्वारा हवा देकर भडकाने की कोशिश की जाती है सियासत के इसी चक्कर में अमेरिका ने आतंकवाद का भस्मासूर निर्माण किया है । यही भस्मासूर आज एक ओर अमेरिका पर हावि होने लगा है तो दूसरी ओर उसने पाकिस्तान, तालिबान, अलकायदा की गिरफ्ते में आ गया है । यही आतंकवादी भस्मासूर बँटवारे के बाद अलग हुए दो भाई हिंदुस्थान और पाकिस्तान को चैन से जीने नहीं देते । मेहमूद की इस बात के सुरैय्या के मन में भारत के प्रति अधिक आकर्षण निर्माण होता है । जिसे देखकर मेहमूद उसे भारत आने का न्योता देता है, मगर वह हताश है क्योंकि वह जानती है कि उसके अब्बाने भारत छोडते समय जो बेहूदा करनामा किया था, उससे उनपर भारत आने जाने पर बेन लगाया हुआ था । जिससे वह भी भारत आ नहीं सकती थी । वैसे तो सुरैय्या पाकिस्तान में प्रचलित जिहाद से पूरी तरह से ऊब चुकी थी । वह पाकिस्तान छोडकर अमेरिका या दुबई में बसने की, नौकरी करने की सोच रही थी ।

सुरैय्या पाकिस्तान में फैले भयंकर जिहादी वातावरण से ऊबकर किसी परिंदे के भाँति कहीं दूर उडकर जाने की फिराक में थी तभी उसके अब्बाजान ने उसकी इजाजत के बिना उसका निकाह एयरफोर्स मे कार्यरत परवेज से तय कर दिते हैं । परवेज का रईस खानदान ही अब्बाजान के लिए मायने रखता था । यही कारण था कि परवेज की पहली बीवी मरने के बाद भी तथा सुरैय्या से दोगूना उम्र का होते हुए भी यह शादी निश्चित की गई थी । सुरैय्या की अम्मीने इस शादी का जमकर विरोध किया किंतु जिंदगीभर जीस पति ने उस पर मनमाने अत्याचार किए, भूखे शेर की तरह उसे नोंचता, चिरता, फाडता रहा उस पति के सामने वह हार गई, माँ की आँखों का दर्द जानकर सुरैय्या ने भी इस रिश्ते को कबुल किया । मगर यह रिश्ता अधिक समय तक नहीं टिका क्योंकि सुरैय्या की खुबसुरती, उसकी गायक परवेज को खूंखार जानवर बनाती रही । उसके बच्चे की माँ बनने जा रही सुरैय्या पर परवेज ने भयंकर अत्याचार किए । उसके खुबसूरत चेहरे पर ॲसीड डालने की बात से लेकर बच्चा गिराने की हिदायत देने तक की अपनी राक्षसी पुरुषी वर्चस्ववादी वृत्ति का प्रदर्शन परवेज ने सुरैय्या के सामने किया, जिसने भयभीत हुई सुरैय्या ने अपने बच्चे के खातीर परवेज की दौलत छोड दी । किंतु खूदा की कहर से न बच्चा रहा न दौलत । उसपर परवेज ने एक हसीना को फसाकर अपनी तीसरी शादी की । सुरैय्या की बात कोर्ट ने मानी और न ही पंचायत ने । चारो ओर से हारी हुई सुरैय्या नफरत की आग में दिन-प्रति दिन उबलती रही मानो उसकी जिन्दगी सिकुडकर किसी कटघरें में कैद हो रही थी । तभी बेटी का दर्द जानकर अब्बाजान ने उसे खाला के पास दुबई भेज दिया था । यही पर कुछ अंदरूनी परेशानी के कारण सुरैय्या की पहचान डॉ. गीत से होती है। उनकी यही पहचान आगे चलकर अटूट दोस्ती में बदल जाती है। डॉ. गीत भारत के इंदौर शहर की रहनेवाली है वह अपना पति अर्जुन और बेटा सूर के साथ दुबई में रहते हैं । डॉ. गीत का परिवार भारतीय होने से सुरैय्या के मन में उनके प्रति अधिक लगन और स्नेह निर्माण होता है । उनकी दोस्ती इसी कारण दिन प्रति दिन गहरी बनती जाती है । एक दिन सुरैय्या की ड्राईव देखकर

ही उसे इस्पेक्टर के लिए अप्लाय करने का सुझाव देती है । उसके सुझावानुसार सुरैय्या अप्लाय तो करती है, और वहां सिलेक्ट भी होती है । उधर जिस खाला के यहां वह रहती है वहां जीजाजी उसपर अपनी जान छिडकने लगते हैं । किसी न किसी बहाने वह सुरैय्या को छूने की कोशिश करते रहते हैं । यहां तक की वह उनके साथ शादी करने के लिए सुरैय्या को मनाने की कोशिश भी करते हैं किंतु सुरैय्या अपनी ही बहन का घर उजाडने के बजाय डॉ. गीत की अनुमतीनुसार उनके गेस्टरुम में रहने के लिए आ जाती है । जाति और धर्म से मुस्लिम सुरैय्या यहां हिंदू घर में अधिक सुरक्षितता महसूस करती है । यहा डॉ. गीत और उनके पति अर्जुन सुरैय्या को अपने ही घर की लडकी मानकर उसके शील की रक्षा करते हैं, चौबीसो घंटे वह उसे अपने साथ लेकर जाते हैं ताकि वह उदास न हो जाए । सुरैय्या भी उनके बेटे 'सूर' पर अपनी जान छिडकती है । सुरैय्या और गीत के बीच जो दोस्ती तथा अपनापन निर्माण हुआ था, उसी अपनेपन के कारण डॉ. गीत सुरैय्या को अपने साथ भारत लेकर आई थी ।

सुरैय्या भारत में डॉ. गीत और अर्जुन के साथ तब आई थी जब भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में धार्मिक उन्माद ने आतंकवाद का जहर चारों ओर फैल रखा था । साम्प्रदायिक कट्टरपंथियों के गठजोड पर जांच ऐजेंसियो की नजर और दबाव कायम था । बस दुबई फ्री पोर्ट होने से सुरैय्या गीत के साथ बडी आसानी से अपने नानी-नानी को मिलने के लिए भारत में दाखिल हुई थी । वह दुबई से मुंबई और मुंबई से इन्दौर फ्लाईट से पहुंची थी । इन्दौर आते ही उसने देखा एरोड्रम के बाहर लाल मारुती लिए डॉ. गीत के पिता डॉ. सुधीर सक्सेना (रामकृष्ण अवस्थी), गीत का भाई अवधेश और अवधेश का अजीज दोस्त अबीर उनका स्वागत करने के लिए खडे थे । इन्दौर में गीत के पिता का बंगला देखकर सुरैय्या को अच्छा लगा । बंगले के भीतर प्रवेश करते ही उनका स्वागत गीत की माँ पार्वती और गीत की भाभी नैना ने किया । यही पर सुरैय्या की पहली मुलाखत अबीर से हुई । अबीर जयपुर के किसी कम्पनी में मॅनेजर की हैसीयत से काम करता है । तीस साल की उम्र इस जवान लडके की शादी माता पिता ने सॉफ्टवेअर इंजिनिअर मनु नामक लडकी से निश्चित की है । गीत और अर्जुन ने इसी अबीर पर सुरैय्या को राजस्थान से लेकर जयपुर, रामपुर तक घुमाने की जिम्मेदारी सौंपी थी । तो खुद अबीर स्नान करके, सलवार कुरता पहने, ओढनी आठे, धुले हुए घुंघराले घने बालों वाली सुरैय्या की सुन्दरता देखकर दो पल के लिए ठिठक गया था । मानो सुरैय्या नक्षत्रों के बीच ध्रुवतारा सी उसे लग रही थी । वह अपने आप सुरैय्या के प्रती आकर्षित हो चुका था । दूसरे दिन निश्चित समय पर सुरैय्या और अबीर जयपुर के लिए निकले थे । वहा से वे दोनों बस पकडकर रामपुर जानेवाले थे । नियोजनानुसार दोनों हँसी मजाक करते हुए शॉपिंग करते, खाते-पीते रामपुर पहुंचे तब सुरैय्या के ध्यान में आया कि उसके पास न तो नाना-नानी के घर का पता है न उनका फोन नंबर उसे ज्ञात है । आखिर इस मुश्किल का हल अबीर निकालता है वह पोस्ट ऑफिस जाकर सुरैय्या के नाना मकसुद सा को फोन लगाकर पता प्राप्त करता है और जैसे तैसे दोनों नाना-नानी के घर पहुँच जाते हैं । सुरैय्या को देखकर नाना-नानी सहित मामू खाला चाचा-चाची बडी गर्भजोशी में उसका स्वागत किया था । इस घर में ढेर सारे लोग रहते थे । अबीर की रहने की व्यवस्था स्वतंत्र कमरे की गयी है । वह धर्म से हिंदु होने के कारण उसके खाने-पिने की

व्यवस्था भी अलग की गई थी । इस समय उनके सामने अबीर मात्र एक मेहमान था । उसकी जाति उसका धर्म उनके लिए मायने नहीं रखता था । मानो वे सब साम्प्रदायिक कडवाहट को भूला चुके थे जो बरसो पहले बॅटवारे ने उनमें निर्माण की थी । इधर सुरैय्या अपने लोगों के बीच में आनंदी और बडी प्रसन्न थी । वह समय मिलते ही नाना-नानी के पास बैठकर अपने अम्मी के बेकरारी बाते करके उन्हें याद किया करती थी । कभी कराची फोन लगाए अपनी अम्मी तरन्नुम की बात उसके अब्बा और अम्मी के साथ करवाती थी । फोन पर तरन्नुम अपने अब्बा व अम्मी पर रो-रोकर मुहब्बत फेंकती रही । जिससे नाना और नानी अपनी नातिन सुरैय्या पर खुश थे, उसके सर पर हाथ रखकर उसे ढेर सारी दुवाएँ देते थे । यहा रामपुर सुरैय्या की रोज सुबह या शाम कभी इस घर तो कभी उस घर दावत पर जाना पडता था । वही पर अबीर उसके साथ केवल उसके कारण इस नए माहौल में की भिंडी तो कभी गिलकी खाकर रह रहा था । एक अजनबी होकर भी वह उस घर में बेहद अपना सा बनकर रह रहा था । एक दिन मौका मिलते ही स्वयं सुरैय्या अपने हाथों से खीर बनाकर अबीर के हाथों मे थमा देती है । सुरैय्या की उपस्थिति में होनेवाले हर प्रोग्राम का आनंद अबीर उठाता रहता है । वैसे तो वह यह भलि-भाँति जानता है कि साम्प्रदायिक भावनाओं में भीतरी सतह तक जुडा है । एक मुस्लिम के घर में मेहमान बनकर रहनेवाले अबीर का मन कुछ पल के लिए विचलित हो जाता है पर चिलमन से झाँकती सुरैय्या की बडी बडी आँखो ने उसे सब भुलाने के लिए विवश कर दिया था । आखिर एक दिन सुरैय्या को रोते हुए अपने नाना नानी से बिदाई लेनी पडी । वह दोनों का हाथ पकड-पकड कर रोती रही । क्योंकि वह जानती थी अब यहा वापस आना कठीन है । इसी एक मुलाखत में उसने रिश्ते नातों की असलियत पहचानी आपसी झगडों को देखा, महसुस किया, इसपर उसने अपने मामू को कहा भी कि आप पाकिस्तान क्यों नहीं बसते ? तो मामू का यह कहना था कि, हम यहां खुश है । हमे हमारे भारत में सकून, चैन, आजादी है । सब आपस में प्रेम से रहते हैं । वरना सभी खानदानो में लालच के झगडे होते ही हैं । हाँ जब धर्म का जुनून बढता है, तब ही मारा काटी मचती है । दिवाने लोग मजहब के नाम पर अपनी हवस पूरी करते हैं । वैसे अच्छे बुरे लोग तो हर धर्म में होते ही हैं । (पृ.२८) नाना और नानी के चाहत के विपरीत उसके मामू और मामी ने जो उसके साथ बर्ताव किया, उसने सुरैय्या सामने खानदानी फूट की खाई अधिक स्पष्ट हुई थी। इसपर भी सुरैय्या के अम्मी की ख्वाईस थी कि उसे रामपुर में ही दफनाया जाए इस स्थिति में यह नामुकिन था, सुरैय्या इस बात को जान चुकी थी शायद यही कारण था कि वह अपने साथ एक रुमाल में उसके आंगन की मिट्टी बाँधकर ले जा रही थी ।

रामपुर से विदाई होने के बाद जयपुर तक रास्ते में सुरैय्या और अबीर हिंदू और मुस्लिमों के बीच रही साम्प्रदायिक एकता और विभेद पर चर्चा करते हैं और सुरैय्या को बता देता है कि, सीवन जिले के ढेपरा गांव में हिन्दु मुहर्रम मनाते हैं, ताजिया निकालते हैं, रोजा रखते हैं, इद मनाते हैं । (पृ.२८) तब सुरैय्या भी दिवाली और करवाँ चौथ उसे बहुत अच्छा लगता है, यह बताती है। उन दोनों के बीच चली बातों से इस बात का संकेत मिलने लगता है कि, सुरैय्या की नेकदिली व सहृदयता अबीर पर हावी होती जा रही थी । यही कारण था कि, अबीर मौका मिलते ही अपने मन में उमडनेवाले प्रेम भावना को सुरैय्या के सामने जाहीर

करने की कोशिश कर रहा था । उनके बीच शुरू रही चर्चा में अबीर का यह मानना है कि धार्मिकता बुरी नही धर्मांधता बुरी होती है । जिस तरह पाशविकता किसी भी धर्म में हो वह आलोचना का विषय है । (पृ-29) अपने इस मत को प्रमाणित करते हुए वह भारत मे भंवरी पर हुए बलात्कार और उसके हत्याकांड तथा वैसेही पाकिस्तान में मसोई पंचायत ने मुख्तारन पर किए गए बलात्कार का उदाहरण देता है । इन दोनों भी महिलाओं पर उन्हीं के जाति-धर्म के लोगों ने धर्मग्रंथों के आधारपर अमानुष अत्याचार किया थे । अदालत में दोनों को न्याय नहीं मिला था । यह धर्मांधता का मामला है, भारत पाकिस्तान का नहीं, यह तो सब धर्मों में होता है । इस तरह अबीर सुरैय्या को धर्मांधता कितनी बुरी होती है और पाकिस्तान तथा भारत दोनों देशों में यह भावना किस तरह पनपती जा रही यह समझाने की कोशिश करता है । इसी बिच वे दोनों जयपुर आ पहुँचते हैं। अबीर की माँ 'ज्ञानवती' ने दोनों का अच्छा-खासा स्वागत किया था । सुरैय्या मुस्लिम होते हुए भी अबीर की माँ ने किसी भी तरह का अवडंबर न करते हुए विदाई के समय अबीर की शादी का न्योता देते हुए उसे राजस्थानी कुर्ती व लेहंगा भेट दिया । जयपुर से निकलते समय ट्रेन में बैठते ही सुरैय्या अबीर को उसके शादी के संबंध में सवाल पुछती है, जिसके जवाब में अबीर कहता है कि, उसकी शादी सॉफ्टवेअर इंजिनिअर मनू से निश्चित की गई है । दो साल से विवाह टल रहा है । वह यह भी बता देता है कि, ''किस तरह हमारे भारतीय परिदृश्य में अपने कैरियर के पीछे विवाह को टालने की प्रवृत्ति तेजी से बढ रही है ।'' आगे वह कहता है कि, हम अपनी जिम्मेदारियाँ के संतुलन में आज इतने व्यस्त हो जाते हैं कि शादी का स्मरण ही नहीं होता । (पृ.30) इस पर अबीर और सुरैय्या दोनों भी अपनी-अपनी राय एक दूसरे के सामने रखते हुए चर्चा करते हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि, आज भारत हो या पाकिस्तान दोनों देशों की युवा पिढी विदेशी प्रभाव में आकर अपनी कॅरियर के पिछे दौड रही हैं । विकसित देशों में शुरू हुए इन रिलेशनशिप का अनुकरण हमारी अल्ट्रा मॉडर्न पीढी कर रही है । उम्रदा होनेपर (प्रौढ) दूसरे को अपने जीवन में यह पीढी स्पेस देने के लिए तैयार नहीं होती । आज लॅपटॉप, कम्प्युटर, आईपॅड, मोबाईल, टी.व्ही. नई पीढी के रिश्तेदार हैं । इस ग्लोबलाईजेशन में प्यार की भावना ही नष्ट हो चुकी है । मर्द और औरत की जरुरत पूरी करना आसान हो गया है । आज की नई पीढी उसे ही प्यार का नाम दे रही हैं। अबीर और सुरैय्या में चले इस वार्तालाप में अबीर सच्चे प्यार की बात करते हुए अपने प्यार का इजहार करने के लिए मौका तलाशता रहता है तभी सुरैय्या अजमेर शरीफ पर कुछ घंटे रुककर चादर चढाने की अपनी इच्छा व्यक्त करती है।

सुरैय्या की इच्छानुसार वे दोनों अजमेर में ख्वाजा सा के दरगाह पर चादर चढाते हैं। जहाँ हिंदु औरतें भी चादर चढाकर सीढियों पर बैठी थी। वहां हिंदु-मुस्लिम एकता का परिदृश्य देखकर अबीर फिर कहता है कि अल कायदा जैसे जीहादी संगठन अमेरिका या विदेशों के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियाँ चलाने के लिए सक्षम है जिससे हर देश का विकास रुक जाता है किन्तु इस पर सुरैय्या कहती है कि ''कोई भी समझदार इंसान जिहादों पर यकीन नहीं करता !'' (पृ. 82) सुरैय्या की इस बात पर अबीर अचानक एक शेर सुनाता है जिससे सुरैय्या उसे जल्दी से निकाह करने की सलाह देती है। किंतु अबीर उसे ही पुन: सैटल होने की बात छेडता है। तब हताश हुई सुरैय्या कहती है कि ''अब क्या रहा है मेरे पास ? वेसे भी मुस्लिम औरतें गोरी,

काली, पढी-लिखी कैसी भी हो, उन्हें कुरान शरीफ का वास्ता दे वैसे ही जीने की इजाजत है, जरा लाइन से हटें तो फरमान में दंड सजा, बेरहमी, पत्थरबाजी व मौत ही पल्ले पडती है।'' (पृ. 32) इसी बात को आगे बढाते हुए सुरैय्या अकरम का जिक्र करती है, जो कभी उसे चाहता था, आगरा के रहनेवाले अकरम को उसके घरवालों ने उसे वापस बुला लिया था। आगरा का जीक्र होते ही अबीर सुरैय्या को ताजमहल दिखाने के लिए आगरा की बस पकड लेता है। आगरा की सफर में सुरैय्या अबीर को बता देती है कि दुबई में किस तरह एक शिया उसके प्रति आसक्त था। इतना ही नहीं वह कई पेचीदगियों का सामना करने के बाद भी उसके साथ निकाह करने के लिए तैयार हुआ था। मगर अम्मी और अब्बू ने अंतिम इशारा देते हुए कहा था कि ''अगर शिया से शादी करोगी तो मुल्क में मत लौटना। हम तुम्हारे लिए मर गए।'' इसपर भी जब प्रेम की हौडी चढी तो सबके माथे पर बल पडने लगा, सारे धर्म के ठेकेदारों नें फतवे जारी कर दिए, तब कहाँ भाग जाती? आखिर बस एक न्यूज बनी और अफसाने चारों और फैले।'' (पृ. 33) सुरैय्या की यह दर्दभरी दास्तां सुनकर अबीर भी कुछ पल के लिए सदमे में चला जाता है फिर भी उसने सुरैय्या को एक कविता सुनाई। जिसमें उसने यह बताने की कोशिश की कि चाहे मुस्लिम हो या हिंदु चारो और धर्म के ठेकेदारों की नेताओं की यही पहचान है। देश के गुप्तचरों में देश-भक्ति नहीं है। यही कारण है कि ऊंगुलियों में गिने जानेवाले आतंकवादी करोडों की आबादीवाले देशों के राष्ट्रीय स्वाभिमान को राष्ट्रीय शर्म में बदल देते हैं। भारत ने इंदिरा गांधी, राजीव गांधी जैसे लोगों को मारनेवालो के लिए भी दया की मांग की। ऐसे लोग निश्चित ही तालिबानी है। वे मंदिर और मस्जिद जैसे पवित्र जगह में भी कत्ल करने के हथियार जमा करके रखते हैं । ऐसे समय में पंडित मुल्ला मौलवी जैसे धर्म के नेता चुप बैठते हैं मगर यही लोग शादी-ब्याह, शादीशुदा औरतों व प्रेमियों को दंड देते समय अलग-अलग फतवे निकालकर तालिबानी हो जाते हैं। अबीर के मतानुसार आज सबसे अधिक भयंकर आक्रमण अगर किसी पर हो रहा है तो वह है अच्छी सोच, सच्चे विचार। आज मानों सभी पाखंडी लोग अच्छे सोच विचारों को दफनाने की कोशिश कर रहे हैं । इसी चर्चा के बिच सुरैय्या और अबीर ताजमहल के समीप पहुँचे थे।

शाम चार बजे गेट पर टॅक्स अदा करके जैसे ही ये दोनों अंदर घुसे कि ताजमहल की एक झलक देखकर ही सुरैय्या के मुहँ से निकला कि ''हाय अल्ला ये हम जन्नत में कैसे आ पहुँचे।'' (पृ. 35) वहाँ का बाग, नकशा, नदी बडे बडे खुबसुरत गुम्बदें और बीच में खडे रहे प्यार की दिवानगी का सबूत ताजमहल का सौंदर्य देखकर सुरैय्या आवाक सी रही गई। वह यही सोचती रही कि क्या सचमुच बादशहा मुमताज को इतना प्यार करते होंगे ? इस सोचपर वह खुद ब खुद अपने-आपको प्यार न मिलने के कारण बदनसीब समझने लगी थी। मगर अबीर उसकी छोटीसी हथेली पकडकर उसे यह एहसास देने की कोशिश कर रहा था कि वह खुद उसे प्यार की दस्तक दे रहा है, मगर तुम ही अनसुनी कर रही हो। तब सुरैय्या ने भी अबीर के हाथों से अपना हाथ छुडाने के बजाय कुछ समय के लिए वैसे ही रहने दिया। तभी सामने से आनेवाले अकरम पर सुरैय्या की नजर पडी यह वहीं शिया मुंडा था जो कभी सुरैय्या के साथ शादी करने के लिए तैयार हुआ था। मगर धार्मिक बवाल के बाद उसके घरवालों ने उसे वापस भारत बुला लिया था। अकरम अपनी पत्नी आसमा के

साथ ताजमहल देखने आया था। सुरैय्या को देखकर वह कुछ समय के लिए बेतहाशा खुश हुआ था मगर पत्नी साथ होने से वह शर्मसी महसुस करने लगा था। ताजमहल से बाहर निकलते निकलते अबीर और सुरैय्या के बीच की दुरियाँ धीरे-धीरे कम होने लगीं थी। मानो वे एक दूसरे की भावनाओं, प्यार और जजबातों को समझने लगे थे। आगरा से इन्दौर तक आते-आते दोनों एक दूसरे की चिंता करने लगे थे जैसे कि उनके बीच में प्यार का बीज रोपना शुरू हुआ था। मगर एक भय भी था धर्म, फतवों, पंडित और मौलवियों का। शायद यही कारण था कि इन्दौर में पहुंचते ही गीत द्वारा अबीर सुरैय्या को भगाकर ले जाने की मजाक में कही गई बात का वह गंभीरता से जवाब देते हुए कहता है कि ''भागता तो कहाँ तक भागता। किसी न किसी शहर के पंडित, मौलवी पकडवा ही लेते, क्यों कि उनके फलोवर तो हर जगह हैं, जो उन्हें ही राम व अल्लाह मानते हैं ।'' (पृ. 37)

इन्दौर जाने के बाद तरोताजा होकर सुरैय्या गीत सहीत सभी को रामपुर के किस्से सुनाती रही। तभी गीत ने अबीर से कहा कि कल माँ ने गायत्री पाठ व हवन रखा है और परसों तुम्हे सुरैय्या को ओंकारेश्वर में ले जाकर नौका विहार कराना है। इस बीच लेखिका ने गीत के घर में काम करनेवाली नौकरानियाँ शमा और रामकली के माध्यम से हिंदु और मुस्लिम दोनों धर्मो की नारी पर होनेवाले शोषण तथा उनके अनपढपन से उनके ही पति द्वारा तथा मुल्ला, मौलवी और पंडितों द्वारा उन्हें गुमराह करके किस तरह उन्हें जैख की वैख रखा जाता है, इस पर प्रकाश डाला है। इन दोनों औरतों के पति शराब पीकर अपनी पत्नियों की धुलाई करते हैं । दोनों को छः छः बच्चे हैं। इनमें से रामकली बच्चों को ईश्वर की देन मानती है तो शमा उन्हें अल्लाताला की रहमत। पंडित और मौलवी दोनों उन्हें ऐसा ही कहते हैं। इस पर गीत की माँ उन्हें समझाते हुए कहती है कि ''पंडित, पादरी, मौलवी मनुष्य की कमजोरियाँ जानते हैं और उन्हीं कमजोरियाँ का शोषण कर भुनाते हैं। धर्म व मजहब इंसानियत को कभी गुमराह नहीं करता। सच्चा धर्म तो वो है, जो इंसान को दुःखों व कमजोरियों से मुक्त होने का रास्ता बता देता है।'' (पृ. 38) गीत की माँ द्वारा कही गई इस बात से सारे लोग प्रभावित होते हैं। उनकी बातों से अबीर भी जान जाता है कि धर्म भयभीत नहीं करता तो मुल्ला, पंडित हमें भयभीत करते हैं, जो इमानदारी से इसका सामना करता हैं, वहीं धार्मिक है, धर्म की आड में अन्याय का सामना न करना अधार्मिकता ही है।

दूसरे दिन शाम के समय सुरैय्या को लेकर अबीर नर्मदा नदी, सतपुडा, विध्यांचल की पहाडियों व ओंकारेश्वर के धार्मिक वातावरण की सफर करने के लिए निकलते हैं । रास्ते में अबीर सौन्दर्य, जवानी और प्यार की बाते करता रहा, घने जंगलों के बीच से गुजरते हुए कुदरत के अजीब नक्शे, अबीर को प्यार भरी बाते करने के लिए उकसा रही थी। यही भाव न चाहते हुए भी सुरैय्या के तन-बदन में हलचल मचा रहे थे यही कारण था कि उसकी गर्दन शर्म एवं खुशी से झुकी जा रही थी और उसकी आँखों में स्वीकृति की परिभाषा व्यक्त होकर अबीर को निमंत्रित कर रही थी। वैसे तो दोनों के मन में एक अज्ञात सा भय था, डर था क्योंकि वे दोनों भी जानते थे कि भले ही दो किनारों ने एक होना चाहा तो भी वे एक नहीं हो सकते। इसपर भी अबीर का यह मानना था कि प्रेम दबने से दबता नहीं यदि उसे निभाना चाहे तो...। मगर उम्र के पैंतीस वर्ष

में जीवन के हर क्षेत्र से आए हुए कटु अनुभव को सहन करनेवाली सुरैय्या जजबातों के बवंडर में इस कदर समा जाती है कि वह खुद बार बार स्वयं को संभलने की नाकाम कोशिश करती रहती है। तो अबीर उसके घने बालों को अपने कंधे पर रखकर सहलाते हुए उसे समझा देता है कि ''जिसे अंजुमन में आना होता है, वह आ ही जाता है। एक उम्र में जिन चीजों पर सहसा हम उमड पडते हैं, वही दूसरे पडाव पर चिंतन हमें ठिठका देता है।'' मन की इसी चिंतनात्मक स्थिति में अबीर और सुरैय्या नर्मदा नदी के किनारे स्थित रेस्ट हाऊस के ऑफिस में पहुँच जाते हैं। दोनों भी फ्रेश होकर बरांडे में मूक खामोशी से बैठे हैं। खाना लगाने और अपने घर जाने के बहाने वहा के बेरे ने उस खामोशी को तोडा। तो कुछ क्षण बाद अबीर ने सुरैय्या को पुछा की रेडवाईन (शराब) है पिओगी ? तब सुरैय्या ने भी दो पैग पी लिए और अबीर ने एक ही समाप्त किया था। दोनों द्वारा रेडवाईन पिने के बाद रेस्ट हाऊस का पूरा वातावरण ही (माहौल ही) बदल गया था। वह इतना बदल जाएगा इसका अंदाजा न अबीर को था न सुरैय्या को। सुरैय्या की आँखे तो बरसों की अतृप्त प्यास प्रगट कर रहे थे। वह नशे में अचेत सी अबीर का हाथ जकडे थी और लडखडा रही थी। अबीर भी चिंतामुक्त हो मस्त था। उधर बेरे ने लगाया हुआ खाना ठंडा हो चुका था मगर इधर ये दोनों भी बहुत ही गर्म हो चुके थे। तवते, बिखरते, झुमते एक दूसरे को बाहो में समेटते हुए वे दोनों रेस्ट हाऊस के अन्दर कब आ गए इसका पता भी उन्हें न चला। नशे में अचेत सुरैय्या के कानों में अबीर ने धीरे से कहा कि 'मैं आपके आर-पार होने को तडफ रहां हूँ।' अबीर इस बात का जवाब सुरैय्या ने उसे जोर से जकडते हुए दिया। अबीर के लिए तो यह सब नया था। वो सकुचाया पर दोनों के जिस्म बंदिशों के बावजुद बात कर रहे थे। गर्म सांसो की टकराहट के बीच बंजर भूमिपर पानी गीरा और बसंती बहार ने प्यार का एक नन्हा पौधा वहाँ रोप दिया। तब दोनों को लगा कि वे एक-दूसरे में जिंदा है। रात के अंधेरे झुमती सुरैय्या ने अबीर के जकडन में गहरी नींद पाई। जब उसकी नींद टूटी तो उसने मुस्कराते हुए अपने आपको अबीर के जकडन से मुक्त किया। नहा धोकर जब उसने साडी-ब्लाऊज पहना तो उसे किसी भी तरह का पछतावा न था। बल्कि जो अहसास उसने महसूस किया था, वह उसके लिए बहुत खुबसुरत था। उसकी दृष्टि से उन दोनों के बीच में जो हुआ वो गम नहीं, न होता तो गम न था, जो मिला कम मिला, पर एक आरजु पुरी हुई थी। सुरैय्या की तरह अबीर को भी जो हुआ उसका न गम था न पछतावा था। रेस्ट हाऊस से वे दोनों नौका विहार के लिए निकले। शिव मंदिर का दर्शन दोनों ने एक साथ लिया। लौटते समय दोनों (इन्दौर) हंसते, खिलखिलते लौट रहे थे। दोनों के बीच की दुरियाँ पूरी तरह से मिट चुकी थी। मानसिक और शारीरिक मिलन के बाद भी दोनों के एक-दूसरे के प्रति किसी भी तरह का दावां नहीं किया था कि वे एक दूसरे को इतना प्यार करते हैं या उतना। ''वास्तव में दोनों ही प्यार की हिफाजत कर रहे थे एवं दोनों प्यार से सराबोर थे। उनके दिल गंभीर व गहरे थे। उन्हें ही अपने प्यार को संभालना था।'' (पृ. 42) दोनों भी उम्रदां (प्रौढ, मॅच्युअर, समझदार) होने के कारण अपने प्यार का प्रदर्शन करने के बजाय, उसकी हिफाजत करने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि वे दोनों भी जानते थे कि अलग-अलग धर्म के होने से उनके बिच में निर्माण हुए प्यार के इस रिश्ते से उनके घर में परिवार में, समाज में धर्म के ठेकेदारों द्वारा किस तरह का भूचाल निर्माण किया जाएगा, कितने भयंकर फतवे निकालें जाएंगे और उनका उनके परिवार का जीना किस तरह से नरक बना दिया जाएगा। इसका अंदाज धर्म

से मुस्लिम रही सुरैय्या को जीस तरह से था वैसे ही धर्म से हिंदु रहे, अबीर को भी था। यही कारण था कि दोनों के बीच प्यार की सारी सिमाएँ पार करने पर भी दोनों एक दूसरे के लिए जीने-मरने के वादे करने के बजाय दोनों भी अपनी-अपनी ओर से प्यार की हिफाजत कर रहे थे।

ओंकारेश्वर से वापस इन्दौर आते समय अबीर और सुरैय्या ने रास्ते में भारी भीड का जमाव देखा। वैसे तो वे अपने कार से सफर कर रहे थे। पुछताछ करने पर उन्हें इस बात की जानकारी मिली कि रास्ते में दो मोटरों में टक्कर हुई है। दो मोटरों में से एक में हिंदू फैमिली थी तो दूसरी में मुस्लिम। टक्कर में दोनों परिवार का एक-एक सदस्य स्पॉट पर ही मर चुका हैं। भिड जमा हुई है मगर घायलों को अस्पताल ले जाने के बजाय इस मामले को साम्प्रदायिक रुप देकर वहां हिन्दु और मुस्लिम गुंडे आपस में भीड चुके हैं, जिससे ट्राफिक की समस्या निर्माण हुई है। मगर इतनी भीड के बीच से अबीर अपनी कार में सुरैय्या की अनुमती से दो घायलों को लेकर अस्पताल पहुँचता है। इस बात की खबर वह गीत को और अपने मित्र डी.वाय.एस.पी. राकेश को देता है, जिससे अस्पताल की सारी सुविधाए उन्हें तुरंत मिलती है। गीत भी वहां आ जाती है, कुछ देर के बाद उन्हें पता चलता है कि उन्होंने जीस घायल व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती किया था उसका नाम खुर्शीद खान था और वह जस्टिश कुरैशी का इकलौता बेटा था। अपने बेटे की जान बचानेवाले अबीर को गले लगाते हुए ढेरों दुवाँए मांगी और कहा कि ''तुमने हिन्दु होकर मुसलमान की जान बचाई ?'' इसपर अबीर उन्हें कहता है कि ''कब तक हम इस तरह पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी बने रहेंगे ? इंसान व हैवान तो दोनों जगह है। खूंखार दरिन्दे वहाँ भी ! शहरों में बियाबान वहाँ भी यहां भी। इंसान परेशान वहाँ भी यहाँ भी। सच्चा भारतीय तो कभी हिन्दू व मुसलमान का भेद नहीं करता।'' (पृ. 43) अबीर के यह विचार जस्टीस कुरेशी के अनुसार नई पीढी में बढना चाहिए, वैसी वे कामना भी करते हैं ।

गीत को सुरैय्या की चिंता रहती है कि कहीं पुलीस की नजर उसपर न पडे क्योंकि उसका वीजा समाप्त होने जा रहा था और उसने पिछले कई दिनों से रिपोर्ट नहीं किया था। अब सुरैय्या और गीत भी जल्द से जल्द वापस दुबई जाने की सोचती है। सुरैय्या तो वहाँ से पाकिस्तान जाकर अपनी अम्मी और दादी को रामपुर का पूरा वृत्तांत बताने के लिए बेचैन हो चुकी थी। ओंकारेश्वर से वापस आनेपर लगातार बडबडानेवाली, खुशी से उछलकुद करनेवाली सुरैय्या को और गाडी चलाते समय पसीने से तरबतर सुरैय्या को, कनखियों से बार बार ताकनेवाले अबीर को देखकर डॉ. गीत को उनके बिच निर्माण हुए मीठे रिश्ते का अंदाज आ गया था। यह कारण था कि घर आने के बाद जब हिन्दु-मुस्लिम के बीच साम्प्रदायिक कारणों से निरंतर शुरु रहे द्वेष, बैर, मारपीट, गोलीबारी की चर्चा शुरू होनेपर सर्वधर्म समभाव की भावना दोनों के बीच निर्माण करने के लिए अपनी आँखों में शरारत लाकर डॉ. गीत एकमात्र उपाय बताते हुए कहती है कि, ''पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी लडके-लडकियाँ एक दूसरे से मुहब्बत करने लगें, तब मजहब गायब हो जाएगा। क्योंकि मुहब्बत की नजर से देखो तो सब अच्छा लगता है।'' (पृ. 46) डॉ. गीत का यह सुझाव सुरैय्या और अबीर के बीच निर्माण हुए प्यार के रिश्ते का संकेत देता है वरना सब जानते हैं कि हिंदू और मुस्लिमों के बीच साथ ही साथ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों देशों के बीच शर्म के नामपर साम्प्रदायिक एकता के बजाय मारकाट,

खुनखराबा, दंगाफसादी की बार-बार आहट सुनाई देती है। सुरैय्या के मतानुसार ''इंसान तो हर जगह फितरती होता है। जैसे पाकिस्तान में प्रधानमंत्री लियाकत अलीखान को लाहौर में पीटकर मारा वैसे ही भारत में इन्दिरा गांधी जी को गोलियों से भून दिया। वहाँ भट्टों की हत्या की तो यहाँ राजीव गांधीजी को बम से उडा दिया। मस्जिदों से मौत के फरमान भेजे तो हैं, तो यहां मठ, सन्यासी, साधू संतों के कारनामें वैसे ही है। वहाँ पाकिस्तान में अगर औरत समाज के धर्म के गलत रिवाजों को चुनौती देती है तो उन्हें मार डालने की प्रथा आज भी अनेक इलाकों में 'काकारी' नाम से शरू है। यहां भी औरत पुरी तरह से सुरक्षित नहीं है। डॉ. गीत द्वारा किए गए इशारे पर अपनी भावना और भय व्यक्त करते हुए सुरैय्या कहती है कि ''मैं अगर यहाँ किसी से प्रेम करने लगी तो भारत मुझे यहाँ सैटल नहीं होने देगा! अब्बा का रिकार्ड आडे आएगा। मेरा भविष्य बहुत साफ नहीं है। इसलिए मेरे साथ किसी अन्य को जोडकर भी मैं बंद नहीं कर सकती, किसी का भी, मेरे साथ रिश्तों का भी भविष्य नहीं है।'' (पृ. 47)

अपने बहते आँसूओं को रोकते हुए सुरैय्या अबीर, अर्जुन और गीत द्वारा आगे जारी रही चर्चा में अपने मत विचार व्यक्त कर रही थी। उनके बीच चली चर्चा का सारांश यही था कि बटवाँरे के पहले मुस्लिम लीग को अंग्रेजो ने अपने स्वार्थ हेतु बनवाई, संस्कृति, रिवाज, भाषा, बोली साहित्य उत्पादन सब खरीद कर मजहब ही को कौम का आधार बना दिया और पाकिस्तान को वतन से ज्यादा मजहब के वजूद को महत्त्व देना पसंद आया व वो उसी दलदल में जीने लगा, जिसकी बुनियाद जिन्ना सा ने रखी थी। आज विश्व में पाकिस्तान बिना शिनाख्त का देश बन चुका है। अब तक वहाँ विश्व स्तर का तटस्थ एक भी हितकारी नेता नहीं हुआ है। पाकिस्तान तो बंजर है। वहाँ बुद्धिमान सेनापति भी नहीं, इसीलिए जनमत में कश्मीर जैसे अहं विषय में जहर घोला जाता है। अब पाकिस्तान आतंकवाद के भस्मासुर के अधीन है और सोचता है कि दूसरे देशों में भी आतंक फैलाकर अपना महत्त्व स्थापित कर लेगा। इसके विपरित हम भारतीय तो आज भी बम विस्फोट से कराने के बावजूद आतंकवादियों को भी इंसान समझकर एकदम फाँसी पर नहीं चढाते जबकि हमारे कैदियों की हालत वहाँ भयंकर की जाती है। खुद पाकिस्तान के बीच कबीलाई जंग जारी है। वही अशांति वह पडोस में फैलाना चाहता है। मगर अब भारत अपने आस-पास व अपने भीतर किए गए विस्फोटों से नजर अंदाज नहीं कर सकता। हमारे यहां भी हर समय बननेवाली साझा सरकारे व न्यायालयीन तंत्र की अस्तव्यस्तता के कारण लोकतंत्र खतरे से जूझ रहा है, धार्मिक उन्माद के केंद्र बन चुके हैं। मतलब दोनों देश आज साम्प्रदायिक संघर्ष के कगार पर खडे हैं, दोनों की दृष्टि से आज धर्म गर्व से कहने की बात बन चुका है। विकास के नाम पर आज दोनों के यहां केवल सिमेंट कांक्रिट के जंगल बनाए जा रहे हैं और उस जंगल में धर्म के ठेकेदार, पंडीत, साधू, संत, मुल्ला मौलवी खूंखार जानवर की तरह घाट लगाए रह रहे हैं। (पृ. 48, 49) इन बातों से सुरैय्या ऊब जाती है।

डॉ. गीत सुरैय्या को कहती है कि अगर कुछ खरीदना है तो अबीर के साथ चली जाओं क्योंकि हमें तो कल जाना है। अबीर तो इसी मौके की तलाश में था वह जल्दी ही गाडी निकालकर सुरैय्या के साथ बाजार जाने के लिए निकलता है मगर बाजार जाने के बजाए वे दोनों सिमरौल के डाक बंगलें में पहुँचते हैं। जैसे ही

वे दोनों डाक बंगले में पहुँचते हैं बडे उतावलेपन से सुरैय्या को अपने बाहों में कसकर लेता है। उसके आलिंगन में व्याकुलता, मिठास और विश्वास था। यही कारण था कि सुरैय्या भी अपने आपको उसके बाहों में, उसके आलिंगन में कसकर समाती हुई सुरक्षितता महसुस कर रही थी। यही पर अबीर ने सुरैय्या को अंगुठी और पेंडल (चैन) भेंट दिए। दोनों भी संभाव्य विरह वेदना से व्याकुल हो चुके थे। एक दूसरे से अलग होने, बिछडने की कल्पना से ही उनका आंतरिक मन आक्रोश करने लगा था। बावजुद इसके दोनों भी व्यवस्था के तिखे पंजों से भयभीत हुए। जिन पंजों के भय से हुसैन और तस्लीमा भाग रही है उस तीखे पंजों के शिकार ये दोनों प्रेमी हो सकते हैं ? इसी भय से अबीर और सुरैय्या अपने प्यार की, एक दूसरे की हिफाजत करते हुए दूर रहकर भी जजबातों के सहारे जीवन बिताने की बात करते हैं। एक दूसरे को अपना तन-मन समर्पित करनेवाले अबीर और सुरैय्या बिछडने के गम से व्याकुल हो चुके थे। उस डाक बंगले में एक दूसरे को बाहों में भरते हुए जीवन भर वे दोनों एक-दूसरें पर बेइंतहा मुहब्बत करते हुए यादों के सहारे जीवन काटने का मुक वादा करते हैं। बिछडने के भय ने, गम ने, व्याकुलता ने और फिर दुबारा न मिलने की आशंका ने उस डाक बंगले में एक भयकर अस्वस्थतापूर्ण खामोशी ने अबीर और सुरैय्या दोनों को लपेट लिया था। मानों अज्ञात यात्रा के मुसाफिर भरपूर एक-दूसरे को संभाल रहे थे। दोनों की आँखे आँसू गिरा रही थी, तब भी दोनों की आत्मा का नि:स्वार्थ स्पर्श अपने आप एक होता गया व एक हो गया था। (पृ. 51) वहाँ से लौटकर दोनों भी रातभर एक दूसरे का विचार करते हुए, अलग अलग पलंग पर सोने की कोशिश कर रहे थे। जिस्म दो थे पर मन एक था जो रातभर जागते हुए बात एक दूसरे की करता है। यही जजबातों की सौगात अबीर ने सुरैय्या को और सुरैय्या ने अबीर को बेशकीमती उपहार स्वरूप दे दी थी। दूसरे ही दिन डॉ. गीत और अर्जुन भारत से दुबई चले गए थे, उनके साथ चली गई थी अबीर की सुरैय्या।

सुरैय्या की वापसी ने अबीर के जीवन में खालीपन निर्माण हुआ था। उसके साथ बिताया हुआ हर पल अबीर को बेचैन कर रहा था। वह जानता भी नहीं था कि प्यार में इतना भराव व इतना खालीपन भी हो सकता है। सुरैय्या धर्म से मुसलमान थी परंतु अबीर को हमेशा उसके पैरों पर तिलक लगा हुआ लगता था। जैसे की वह उसीके आत्मा का एक अंश है। वैसे तो वे दोनों इन सीमित दिनों में केवल दो ही बार एकांत मे मिले थे। मगर अबीर को लग रहा था कि सुरैय्या अब उसके रोम-रोम में बसी है और उससे उन दो मुलाकातों में अबीर को जो मिला था उसी में वह समृद्ध हो चुका था। यही कारण था कि सुरैय्या से अलग होकर अबीर मानों अपने-आपसे अलग हो रहा था। मन के स्तर पर बिखरते, टुटते, गिरते हुए अबीर अपने विरहमय जीवन को खुद, संवरने में भी असफल हो रहा था। इसी हालत में वह जयपुर को, अपनी माँ को, अपने परिवार को भूल चुका था। किंतु जब घर पहुँचा तो माँ ज्ञानवती और पिताजी ने शादी करने की बात उठाई क्योंकि मनु ने अपनी ओर से छ: मास की मिली हुई छुट्टी में ही शादी करने का निश्चय किया था। मगर सुरैय्या के प्रेम में आबद्ध अबीर अपनी ओर से शादी से दूर भागने की, शादी टालने की हर नाकाम कोशिश कर रहा था। वह बदला नहीं था ना ही बदलने के लिए तैयार था, मगर सुरैय्या के विरह में जिस दर्द को वह सहन कर रहा था उसकी शिकायत सुननेवाला भी कोई नहीं था। उसके मन में कई बार यह विचार आ जाता है कि

वह सुरैय्या से शादी करके विदेश में ही बस जाएँ। मगर फिर उसके दिमाग में उनके अलग-अलग धर्म होने से जो बवाल उठनेवाला उसकी आशंका, उसे कुछ न करने के लिए मजबूर कर देती है। उसी हताशा और मजबुरी में वह यह निश्चय करता है कि वह कुँवारा ही रहेगा। सुरैय्या के बीना वह किसी अन्य के बारे में सोचने के लिए भी तैयार नहीं था। वह एक गहरी भंवर में फंस चुका था। उसका अल्लडपन उसकी चंचलता मस्ती सब लुट गई थी, अकेले, मौन और गंभीर होकर वह चारो तरफ से विचार कर रहा था मगर जिस जाल में वह फंसा था उसे तोडने की न हिम्मत उसके पास थी न कोई उपाय। क्योंकि घर में माँ-बाबूजी उस पर शादी के लिए दबाव बढाने हेतु अनशन तक पहुँचे थे। यह स्थिति अगर उसके द्वारा ऐसी ही रखी जाएगी तो अबीर जानता था कि एक दिन माँ फांसी लगा लेगी, मनु कुएँ में कुदेगी। पिताजी पागल हो जाएँगे। दो धर्मों के पाखंडी लोग बवाल मचा देंगे और इसमें कईयों की बली चढाई जाएगी। बार-बार किए गए इन्हीं विचारों से अबीर बौरा जाता है और आखिर मजबुरी से मनु के साथ शादी करने के लिए हाँ कर देता है। उस रात वह सुरैय्या के मासूम विश्वास और समर्पित प्यार को याद करते हुए लगातार मन ही मन में आक्रोश करते हुए रोता रहता है। उसके आँखों से बहनेवाले आँसु उसे सुरैय्या की जबरदस्त जखडन से मुक्त करने के बजाय उनके प्यार को और अधिक मजबुत गहरा बना देते हैं।

सुरैय्या, अर्जुन और गीत भारत से दुबई जाने के पंद्रह दिन बाद गीत का फोन आया था। जिससे अबीर को इस बात की जानकारी मिली कि दुबई में हालात अब पहले जैसे ठिक नहीं है। वहाँ बाहर से आकर सैटल हुए लोगों को वापस जाने के लिए हुकुम दिया गया है। औरतों पर जुल्म हो रहे थे। सुरैय्या हज पर है, उसे भी पाकिस्तान लौटना पडेगा। पाकिस्तान में उसकी अम्मी तरन्नुम बहुत बिमार है और उसकी अंतिम इच्छा है कि मरने के बाद भारत की जमीन में ही उसे दफनाया जाए। डॉ. गीत सुरैय्या के अम्मी की यह अंतिम इच्छा पुरी करने के लिए अबीर को किसी तरह बंदोबस्त करने के लिए कहती है तो अबीर भी तैय्यार हो जाता है। वह उन्हें बता देता है कि आप किसी भी तरह से तरन्नुम अम्मी को स्ट्रेचर पर बाँधकर सीमा तक पहुँचा दे, वहाँ से मैं उन्हें ले लुँगा। उसके बाद वह तरन्नुम अम्मी को भारत लाने और दफन करने के मसले में अपने आप को लगा देता है। उसके मुस्लिम मित्र अंसारी, जमाल आदि इस मसले पर साथ ही साथ साम्प्रदायिक विद्वेष हिंदु-मुस्लिम संघर्ष, भारत पाकिस्तान की धार्मिक दृष्टि आदि पर विषयों पर विवादात्मक चर्चा करते हैं । जिसका सारांश यही निकलता है कि ''सच्चा मुसलमान धार्मिक होता है, धर्मान्ध नहीं। आज पाकिस्तान जल रहा है। जो वहाँ रहेगा जलेगा। अब कोई देश अपनी लपटों में दूसरों को भी लपेटे ये तो सरासर गुनाह है। भीड भरे इलाके में अच्छे बुरे निर्दोष लोगों को मारने से कोई जेहाद नहीं होता। जिसका हम खाते हैं उसीका हमने बजाना भी चाहिए। हम यदि आतंकवादियों को छुपाएँगे तो मानों हम भी आतंक और जेहाद को सपोर्ट कर रहे हैं, जो कि ऐसा नहीं करना चाहिए। अंत में वे यह भी कहते हैं कि तरन्नुम आंटी को यहाँ दफन होने से न तो पाकिस्तान हिलेगा न भारत, मगर ख्वाइश पूरी करने से हमे शबाब तो जरुर मिलेगा। (पृ. 53/34) उसी रात अबीर को सुरैय्या की दादी का फोन आया था। उसके साथ बात करते समय अबीर समझ गया था कि यह औरत शालीन और बेहद बुद्धिमान है। उसने फोन पर ही अबीर पाकिस्तान में रहते हुए जिन

दिक्कतों को सहन करना पडता है, उसकी जानकारी दी थी। उसके बेटे नदीम ने भारत के साथ की हुई गद्दारी का उसे पछतावा है। उसके अनुसार पाकिस्तान में रह रहे जेहादी आतंकवादियों से खूंखार उतने ही खतरनाक है। वह जानती है उन खतरनाक जेहादियों में एक अपना बेटा नदीम भी है जिसके लगाए आग में आज उसकी बहु तरन्नुम और पोती सुरैय्या डर और भय से जी रही है, मगर वह कुछ कर नहीं सकती थी। दादी की यह दिल दहलानेवाली बाते सुनकर अबीर सोचने लगता है कि आखीर क्यों सुरैय्या जैसी अच्छी सभी नारियों को समाज और पुरुष सत्ता की शिकार बनती है। (पृ. 56) इसी बेचैनी में अबीर अम्मी तरन्नुम को भारत लाने के लिए बाह्य सीमा निश्चित करता है। उसे इस बात की पूरी उम्मीद थी कि वहाँ से अम्मी के साथ सुरैय्या जरुर आएगी। और हुआ भी वैसा ही वहाँ से सुरैय्या और यहाँ से अबीर वाघा सीमा पर तरन्नुम को देने और लेने के लिए आ पहुँचे मगर सीमा पर रहे दोनों देशों के सीमा रक्षकों के भय ने जितनी तेजी से उन्हें मिलाया उतनी ही तेजी से उनको अलग भी किया। स्ट्रेचर देते और लेते समय सुरैय्या की नजर पल भर में अबीर से बहुत कुछ कह गई थी और उनके बीच हुए कांपते स्पर्श ने दोनों के मन में एक साथ कई प्रश्न चिंता, शिकायत और मिलन के लिए उत्सुक रहे मन के व्याकुल भाव जान लिया था। यही कारण था कि अम्मी तरन्नुम को अस्पताल के आई.सी.यू में शिफ्ट करते ही अबीर ने अंसारी को कहा था कि मुझे अपनी शादी के पहले किसी भी हालत में पाकिस्तान जाना है। आप कुछ भी करो मगर मेरा वीजा बनवा दो। अबीर की मानसिक हालत देखकर अंसारी सा ने भी करांची में रहनेवाले उनके चचेरे भाई इकबाल की मदद से केवल वीजा ही नहीं बनवाया तो इकबाल खुद उन्हें लेने के लिए करांची एयरपोर्ट पर आ जाता है।

अबीर अंसारी सा की मदद से करांची पहुँचता है, वैसे तो उसका करांची देखना एक बहाना मात्र था। असल में वह सुरैय्या को मिलने के लिए वहां गया था। इकबाल के साथ एयरपोर्ट से वह सिधा सुरैय्या के घर 'अलमास' द्वार पर दस्तक देता है। अबीर को देखकर सुरैय्या हक्की-बक्की सी रह जाती है। अबीर सुरैय्या की दादी को रामपुर का सारा वृत्तांत बता देता है कि किस तरह उन्होंने तरन्नुम से पहले अलग-अलग डॉक्टरों को दिखाया किन्तु चार दिन के बाद इंतकाल होने पर उनके भाइयों ने उन्हें बडी इज्जत से दफनाकर उनकी अंतिम ख्वाईश पूरी की थी। सुरैय्या की दादी को अनुमती से ही अबीर को लाहौर दिखाने के लिए सुरैय्या ले जाती है। वैसे तो दादी के सामने अबीर लाहौर और पेशावर देखने की इच्छा व्यक्त की थी। उसकी यह इच्छा मात्र एक बहाना था। वह तो सुरैय्या के साथ समय बिताना चाहता था। वह केवल सात दिन के लिए यहां आया था। इन सात दिनों के वीजा में वह सुरैय्या के साथ जीना चाहता था। लाहौर में दादी की बहन जमीला रहती थी। उसी के यहां जाकर रहकर पूरा लाहौर देखने की अनुमती लेकर अबीर और सुरैय्या करांची से लाहौर निकले तो रास्तें में अबीर ने अपनी बेचैनी, व्याकुलता, उपने प्यार की सच्चाई कबुल करते हुए उसके बिना रहने और जीने के बजाय उसके लिए वह जीना चाहता है मगर वह यह भी जानता है कि अगर उसने वैसा किया तो दो परिवार तहस-नहस हो जाएंगे दूसरी ओर मजहबी ताकदे उनके विरोध में नुकीले तीर उठाएगी जीससे दोनों का जीवित रहना कठीन हो जाएगा। वैसे तो वे दोनों भी जीस पल में प्यार कर बैठे थे तब वे न हिंदु थे न मुस्लिम, न भारतीय थे न पाकिस्तानी उस समय वे बस प्रेमी थे। मगर उनके बीच निर्माण

हुए इस रिश्ते से दो धर्मों के बीच, दो मजहबों के बीच किस तरह का बवंडर निर्माण हो जाएगा, कितनों के शव पर उन्हें अपने प्यार के ताजमहल को सजाना पडेगा, इस बात का उन्हें पहले से ही अंदाजा तो था ही फिर भी वे एक दूसरे को प्यार कर बैठे थे। इस हालत में अपने प्यार और अपने प्रेमी की हिफाजत करने हेतु स्वयं सुरैय्या अबीर को समझाते हुए कहती है कि ''यूं तो कैसी भी फितरत हो। मुहब्बत को कोई मिटा नहीं सकता अबीर। क्योंकि जजबात न तो हिंदु होते हैं न मुसलमान।'' (पृ. 59) अपने जजबातों को दबाकर सुरैय्या अबीर को लाहौर की शान-शौरत और लक्ष्मी चौक, ग्वाल मंडी, फिरोजपुर रोड, जानकीदेवी अस्पताल, सर गंगाराम अस्पताल, दयालसिंह कॉलेज आदि स्थानों की खासीयत बता रही थी। उसके अनुसार 'लाहौर में अधिकतर पुरानी कोठियाँ हैं। वहॉ के रहवासी बदल गए हैं। विभाजन ने बहुत कुछ बांटा है। बदला है। मगर तब भी लाहौर ने अपने अतीत को करीने से संभाला व सहेजा है।' (पृ. 59) यहां सुरैय्या के साथ घुमते हुए अबीर को गदहागाडी और मोटरसाईकिल की सिटें हटाकर वहाँ ट्रॉली जोडकर बनाई गई 'चिमकी' नामक सवारी बडी मजेदार लगती है।

अनारकली बाजार में सुरैय्या मनु के लिए छः जोडे कसीदेवाले दुपट्टे और खुट खरीदकर ले आती है। वहां मर्द औरतों की दुकान में नहीं जाते इसलिए अबीर रबडी खा रहा था। वह जब से करांची में आया था, सुरैय्या के बारे में ही सोच रहा था, उसके साथ हर पल खुशी से जीने की कोशिश कर रहा था क्योंकि अब वह जान चुका था कि वे भले ही एक दूसरे पर अपनी जान न्योछावर करनेवाली बेइंतहा मुहब्बत कर रहे थे मगर दोनों एक साथ रहकर अपना उर्वरीत जीवन बीताने की चाह होते हुए भी मजहब की पाबदियोंने उनके सारे रास्ते बंद किए थे। इस भयंकर स्थिति में भी अबीर को अपने जजबातों पर अपने प्यार पर अधिक भरोसा और विश्वास। यही कारण था कि वह नाराज और हताश हुई सुरैय्या को समझाते हुए कहता है कि ''देखो सुरैय्या यह सच है कि अब हमारा मिलन सरल नहीं, पर क्या हमसें हमारी मुहब्बत कोई खींच सकता है? वो तो शरीर व आत्मा के जर्रे-जर्रे में बंद है। लोग हमारी हत्या कर दें, परन्तु हमारी आत्माओं में कैद इस अमर भाव की तो हत्या नहीं कर सकते। विपरीत स्थितियों में भी अपने प्यार के प्रति हममें निष्ठा व साहस है। जिसे न पाकिस्तान न हिन्दुस्तान खत्म कर सकता है। (पृ. 60) अबीर ने दिए हुए इसी प्यार के जबरदस्त विश्वास एवं एहसास का अनुभव सुरैय्या ले रही थी। वही विश्वास एवं साहस उसके भी प्यार में था मगर वह चूप भी किन्तु जैसे ही वह खाला के घर पहुँची व मेहमान नवाजी के बाद जैसे ही खाला घर से दावत के लिए निकल गई, वैसे ही सुरैय्या पागलों सी अबीर को लिपट गई थी। अबीर के बाहों में अपने-आपको जकडते हुए उसने पूछा कि अब मेरा क्या होगा ? तुमने तो रास्ता चुन लिया है। मैं कैसे जिऊंगी ? (पृ. 61) इस सवाल का जवाब दोनों के पास भी नहीं था। मगर उस कमरें में फैली खामोशी ने दो आत्माओं के तार एक-दुसरे के साथ जोड दिए थे। वे दोनों चाहकर भी एक साथ जीने के लिए तैयार नहीं थे और ना ही एक-दूसरे से अलग होकर विरह की अग्नी में तडपकर मरने के लिए तैयार थे। इस स्थिति में अबीर को उसका हिंदु होना, उसे विडंबना लगने लगा था तो सुरैय्या की दृष्टि से उसका मुस्लिम होना उसकी बदनसीबी था। उसी शामा ये दोनों जब अनारकली बाजार में टहलने के लिए निकले तो उन्हें युसूफ ने पहचान लिया कि ये

भारत आए महमान है। वह अपने स्टॉल पर अबीर को बडे प्यार से कुछ न कुछ खीलाता रहा और भारत के विषय बडी ही आत्मीयता से चर्चा करता रहा। वैसे तो युसूफ सुरैय्या को एक गजल गायक के रुप में पहचानता था और सुरैय्या बडे ही खुले खयालातों की है यह भी उसे मालूम था। युसूफ अबीर को बता देता है कि यहां बाकी औरतें अभी भी महफूज नहीं है। आपके साथ सुरैय्या को देखकर अब तक एक दो फतवे निकाले होते मगर सुरैय्या भी खुले खयालों और गजल गाती है इसलिए अब तक फतवे नहीं निकले। युसूफ के अनुसार ''इस्लाम ने औरतों को कमजोर समझकर मौलवी, धर्मगुरु, मुस्लिम अपढ मर्द अपनी मर्जी से उन्हें चलाते हैं। जबकि इस्लाम में आधुनिकता भी है।'' (पृ. 63) युसूफ की इस बात अबीर भी हिन्दुओं में रही स्त्रीयों के स्थिति की जानकारी देते हुए कहता है कि हमारे वेदों में भी स्त्री को बहुत सारे हक रहे हैं। पर पंडितों और ब्राम्हणों ने हमारे यहां सती प्रथा का ढकोसला बनाया है। विधावाओं के लिए कठोर नियम है। बहु पत्नित्व तो हमारे यहां भी है। अब हिन्दू कोड बील के बाद कुछ अधिकार मिले हैं। (पृ. 63) अबीर और युसूफ की इन बातों से यही स्पष्ट होता है कि चाहे हिंदुधर्म हो या मुस्लिम दोनों यहा औरत महफूज नहीं है, धर्म के नामपर उन्हें दोनों को फसाया जाता है। धर्मग्रंथों की आड में उनपर पाबंदिया लगाकर उन्हें पुरुषी वर्चस्व में गुलाम बनाया जाता है। दूसरे दिन सुबह अबीर के वापसी का सफर शुरू होता है, वह एअरपोर्ट पर सुरैय्या को अपने प्यार के भविष्य के बारे में पुछता है, तो अपने जजबातों को छुपाते हुए सुरैय्या बडी शुष्कता से कहती है कि ''शायद कभी नहीं। मैं परवेज की दूसरी बीवी बनना बर्दाश्त नहीं कर सकती तो मनु कैसे मुझे बर्दाश्त करेगी। मैं चाहती भी नहीं कि मैं अब तुमसे मिलू, तुम्हारे जेहन में भी न बसी रहूँ और तब शायद तुम मनु के साथ इंसाफ न कर पाओं। वैसे भी औरत होकर औरत का हक छीनना गुनाह है।'' (पृ. 64) सुरैय्या के इस दिमागी जवाब ने उसके दिल के दर्द को, विरह की वेदनाओं को और बिदाई की पिडा को छिपाने में सफलता पाई थी मगर वे दोनों भी जानते थे कि उनके जीवन का सफर एक-दूसरे के बगैर करना मुश्कील ही नहीं तो नामुमकिन ही है मगर अबीर का वीजा खत्म हुआ था और वे दोनों भी उम्रदां होने से उन्हें वास्तविकता का ज्ञान भलिभाँति था और वास्तविकता यह थी कि ''सारी कायनात, फिजा भी चाहे तो अबीर रुक नहीं सकता था, न सुरैय्या साथ जा सकती थी।'' (पृ. 64)

डॉ. गीत और अर्जुन दुबई से वापसी के हुकम के अनुसार भारत लौट आए थे। उन्होंने इन्दौर को नई संगम मल्टी के चौथे फ्लोर के फ्लॅट में बसकर अपना काम भी शुरू किया था। डॉ. गीत ने अभय प्रशाला के सामने अपना प्राइवेट क्लिनिक शुरू किया था और अर्जुन का ऑफिस न्यू पलासिया पर बन गया। दोनों भी रेजीडेसी क्लब के मेंबर बन चुके थे। यह क्लब नए नए समारोह का आयोजन करता था। ऐसे ही दिन एक नया गायक गुलाम अली की गजलों को प्रस्तुत कर रहा था तो उस समारोह में अबीर उनसे मिला था। प्रथमत: गीत ने अबीर से इधर उधर की बाते की और अर्जुन ने उसे पाकिस्तान की सफर का वृत्तांत पूछा। यह बात अबीर के लिए कोई मायने नहीं रखती थी क्योंकि वह तो उनके साथ सुरैय्या के सम्बन्ध में बातें करने के लिए उत्सुक था। जैसे ही वह सुरैय्या का संदर्भ लेकर इशारा करता है तो गीत उसे समझा देती है कि उस नामुराद के साथ नाइंसाफी हो गई है। तुम तो अपनी सारी कामनाएँ मनु के साथ पूरी करोगे व कहोगे

मजबुरी है, पर सुरैय्या का क्या होगा? उसकी कामनाएँ, वासनाएँ जागेंगी तो ? उसे तो उन्हें सुलाना ही पडेगा न क्योंकि वासना पूर्ति के लिए स्त्री यदि मर्द चुनती है तो वो बुरी है, बहुत खराब है। उसे पत्थरों से मारकर मृत्युदंड ही दोगे। तुम भले ही ऐसे न हो पर ज्यादातर पुरुष चाहे यहां हो या पाकिस्तान में हों, स्त्री तुम्हारे हाथ में हिरण जैसी है। जिसे चिरकर तुम सब खाकर चाकारे लेते हो। (पृ. 66) गीत द्वारा कही गई इस गंभीर बात पर अबीर हिंदू और मुस्लिमों के बीच रहे साम्प्रदायिक अहं वृत्ति के कारण न वहां स्त्री सुरक्षित है न यहां प्रेमी सुख से रहते हैं, की बात करते हुए अपनी ओर से सुरैय्या को मुक्त करने का दावां करता है। इसके बावजुद गीत जानती है कि सुरैय्या तो पागल है वह जल जाएगी मगर मुडेगी नहीं। इसी मुलाकात के समय डॉ. गीत अबीर को यह खबर देती है कि हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच रहे संघर्षमय संबंधों को सुधारने के लिए उनके रेजिडेन्सी क्लब ने इन्दौर दूरदर्शन के सहयोग से पाकिस्तानी गजलकारों को यहां बुलाया है। इस तरह कलाकारों में मेल-जोल बढेगा तो यह दोनों मुल्कों के लिए एक अच्छी शुरुआत होगी। इन गजलकारों में सुरैय्या भी यहां दो दिन रहने आ रही है। डॉ. गीत की खबर सुनकर अबीर हक्का-बक्का सा रह जाता है। उसकी शादी उसी दरम्यान है दूसरी ओर सुरैय्या ने भी उसे अपनी ओर से बडी ही मजबुरी और समझदारी से मनु के साथ शादी करने के लिए मुक्त किया था फिर भी वह उसके आने की खबर सुनकर आनंदीत होता है। उसके विषय में सोचता रहता है। वह जानता है कि यह हालात न उसने तैयार किए है न सुरैय्या ने। वह तो संघर्ष करके आगे आने के लिए तैय्यार था पर सुरैय्या कतरा रही थी। गीत के अनुसार उसने मुन के साथ शादी करने का जो निर्णय लिया उस निर्णय ने सुरैय्या को सबसे बडा धक्का और दर्द दिया था। वह खुद अपने जीवन में दो बार छली गई थी अब तीसरी बार वह वैसा ही दर्द सहन करने से पहले ही सजग होकर अपने आपको संभालने की कोशिश कर रही थी। मिलटरी माहौल में पली-बढी सुरैय्या बुद्धिमान थी, पुरानी जमीन तोडकर वह कलाकार बनी थी। पर थी तो वह एक मुस्लिम औरत ही जिसे कुराण ने तो इज्जत दी थी मगर उसे ही व्यवहार में बेइज्जत किया जाता था। दोष में उसे पत्थर मारा जाता था एवं जमीन में गाड दिए जाते थे। इसलिए बेइंतहा मुहब्बत के बावजुद कुछ सीमाएँ पार करने का हौसला सुरैय्या में नहीं था। बढती उम्रके साथ वह यह भलिभाँति समझ गई थी की सीमाओं को पार करने पर उसके हिस्से में उपेक्षा और घृणा ही आनेवाली है। इसलिए वह अबीर को छल कपट से जीतने के बजाय न चाहते हुए भी उसके सामने वास्तविकता का बयान देती है। वह कहती है कि ''मुझे मुस्लिम होने पर नाज है और मैं प्यार के लिए धर्म परिवर्तन सोच नहीं सकती। मेरा वतन मेरा है। मेरे भी अरमान व हसरते हैं, जिन्हें अब और मैं अंधकार में नहीं दफनाऊंगी। (पृ. 67) सुरैय्या के इन बातों से अबीर का आत्मविश्वास और निर्णय दोनों गडबडा जाते हैं। हालांकि वह जानता है कि यह गडबड सुरैय्या की मुहब्बत में नहीं है तो वह गडबड सीमाओं की है जिसने उन दोनों को विभाजित करके रखा है फिर वह सीमाएँ धर्म की हो, देश की हो या परंपराओं की हो। इन सीमाओं को पार करने की कोशिश अबीर करना चाहता क्योंकि वह जानता है कि भारत के उस पार दूर-दूर पहाडियों व घाटियों से आरपार पाकिस्तानी सीमा के अंदर के रही दो आँखे उसका पल-पल पीछा करती है, उसका इंतजार करती है, उसके लिए जीती है और उसी के विरह में वह हर पल आँसु बहाती है। उनसे बिछडने के भय से घबराकर अबीर जयपुर से इन्दौर पागलों सा घूमता रहता है, भटकता रहता है भागता रहता है क्योंकि उसे इंतजार है अपनी सुरैय्या का जो इन्दौर में गीत के यहां दो दिन रहने के लिए आनेवाली थी।

अबीर सुरैय्या का बेसबरी से इंतजार करता है। उसे देखने के लिए, उसे मिलने के लिए वह बडी व्याकुल ता से वह गीत को कहता है कि 'सुरैय्या के बिना रहना मेरे लिए कठीन है। वह गीत और अर्जुन के सामने उसकी शादी उसी के अनुमती से तय होने के बावजुद अपना अंतिम निर्णय बताते हुए कहता है कि मुझे तो सुरैय्या चाहिए, जो सीमा रहित हो। न वो देश वतन में उलझे न साम्प्रदायिता का लबादा ओढे। मेरे सामने उस पल की सुरैय्या बनकर आये जो अपनी बाहरी उलझने छोड ये कह दे कि वो मेरी है। यदि सुरैय्या मुझे छह या एक साल में भी बाघा की सीमा पर केवल खडी मिले तो मैं जीवन पर्यंत कुंवारा रहने के लिए तैयार हूँ।'' (पृ. 69) अपनी प्रेमिका के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर करने का विश्वास करनेवाले अबीर को समझाने के लिए अब तक अंदर बैठी स्वयं सुरैय्या अचानक बाहर आकर उसे कहती है कि कोई तारीख इतिहास नहीं बन सकती। जिस पल मैंने तुम्हे प्यार किया था वह पल कभी बदलेगा नहीं वह तो ठहर गया है।'' (पृ. 69) अचानक सुरैय्या को सामने देखकर अबीर को गीत पर घुस्सा आ जाता है मगर फिर उसी के अनुमति से वे दोनों बाहर आकर पातालपानी के ऊपर जैन मंदिर की सुरक्षित ग्रील तक आ जाते हैं। वहां आते ही अबीर सुरैय्या को अपने आगोश में भर लेता है। दो पल की खामोशी के बाद सुरैय्या अबीर को समझाते हुए कहती है कि ''मैं भी हाड-मांस से बनी एक आम औरत ही हूँ, जो अपना प्यार खोना नहीं चाहती। मुझे मालुम है कि अगर तुम मुझे नहीं मिलोगे तो मैं जींदगी भर लाश बनकर जिऊंगी और तुम मुझे हमेशा परंपराओं तथा मनु में सदा उलझे हुए लगते हो। यही कारण है कि हम दोनों अपनी-अपनी सीमाएँ लांघ नहीं सकते। हम जानते हैं कि जिन सीमाओं में हम कैद हैं उन्हें तोडने की किमत क्या है? अगर तोड भी देंगे तो कहा तक भागेंगे। क्योंकि भागेंगे तो, पीछा करेंगे अनेक। हमारे भीतर व निराशा, हताशा, भय, कुंठा पैदा करेंगे और हमपर ही हावी होकर हमें ही हरा देंगे। हम तो अब भी तथा आगे जीवन भर हम एक दूसरे से बेवफाई नहीं कर रहे हैं और न ही एक दूसरे से नाता तोड रहे हैं। हमारे बीच की मुहब्बत व जजबात कभी बदल नहीं सकती, मैंने तुम्हे पूरा पाया है और तुम मुझमें जिंदा रहोगे। इसी एहसास के सहारे हम जीवन भर खुश रहने की कोशिश करेंगे। हमारी इस प्यार भरी पहचान को कोई धर्म सीमा नहीं मिटा सकती। इसी विश्वास से मैंने तुम्हे मनु के साथ विवाह की इजाजत दे दी है। चलो अब हम खुशी से खुश रहने के लिए अलविदा होते हैं। (पृ. 71) सुरैय्या की इस लंबी बहस के बाद अबीर भी जान चुका था कि अपने रिश्ते की हिफाजत करना ही किसी खुशनुमा सुबह की शुरुआत हो सकती है। आखीर सॉझ ढले दोनों एक दूसरे का हाथ पकडकर पुरे विश्वास के साथ वापस आने के लिए निकलते हैं। रुखसतों के इस पल में वे खुदा को समझा रहे थे कि जजबातों की कोई सीमा नहीं होती, उन्हें कोई सीमा प्यार करने से रोक नहीं सकती। जीन सीमाओं को तोडने के लिए अबीर और सुरैय्या डर रहे थे। अबीर आशा करता है कि कल का युवा उन सारी सीमाओं को तोड देगा। क्योंकि वह समझ रहा है कि इन्सानियत व मानवता व प्यार से अधिक किमती जेहाद व सीमाएँ नहीं है। आनेवाला युवा तबका आनेवाले भविष्य के भारत के सामाजिक मूल्यों को नए सिरे से परिभाषित करेगा। यही पाकिस्तान में भी होगा।

अबीर और सुरैय्या पातालपानी से गाडी में (कार में) बैठकर घूमते-घूमते निकलते हैं । अब उनके बीच किसी भी तरह का अंदेशा नहीं था दोनों भी व्यर्थ की चिंता करने के बजाय हर पल एक-दूसरे के साथ पूरे

विश्वास से बिताने की कोशिश कर रहे थे। जिन सीमाओं का दबाव उनपर था, उस दबाव को ही उन्होंने गहरे विश्वास और इमानदारी में तब्दील कर दिया था। अब दोनों के बीच किसी भी तरह की न रुसवाई थी न शिकवा, दोनों के बीच अगर कुछ था तो वह था अटूट विश्वास। इसी विश्वास के बलपर अबीर और सुरैय्या एक दूसरे की भावनाओं का आदर और कदर करते हुए उर्वर जीवन का सफर पूरा करने के लिए तैय्यार हुए थे। पातालपानी से निकलकर वे राजवाडे के दलान पर आ पहुँचे थे। अब उनकी चर्चा हिंदुस्थान और पाकिस्तान की अच्छाई और बुराईयों से लेकर दोनों देशों में प्रचलित सामाजिक, धार्मिक मान्यताएँ, दोनों देशों का इतिहास झूठी परंपराए उनकी संस्कृति, उनके बीच चल रही राजनीतिक गतिविधियाँ, आतंकवादी माहौल, युद्धजन्य स्थिति, अणुबम से लेकर परमाणु बम तक की चिंता, साम्प्रदायिक दंगे, फसाद, महिलाओं से लेकर छ:सात वर्ष की मासूम लडकियों पर होनेवाले बलात्कार, नेट इंटरनेट पर दिखाये जानेवाले उल्टे सीधे कार्यक्रम, धार्मिक दलालों, ठेकेदारों, आतंकवादियों की दहशत इन सभी कारणों से दोनों देशों का हो रहा नुकसान आदि विषयों पर बडी गंभीरता से अपने अपने मत व्यक्त करते हैं। जैसे अंधेरा बढने लगता है दोनों कार में बैठकर निकलते हैं मगर रास्ते में वे भारी जाम में फंस जाते हैं। सुरैय्या को चिंता सताती है क्योंकि वह कल सुबह की फ्लाईट से जानेवाली थी। उसके जाने का गम अबीर को सताता ही है तो वह अंधेरे का फायदा उठाते हुए सुरैय्या को एक बार अपनी बाहों में जकड लेता ही है। क्योंकि देश में हिन्दू-मुस्लिम दंगे शुरू हुए थे, सुरैय्या का वीजा खत्म हुआ था और अगले चार दिन तक फ्लाइट की उडाने रदद की गई थी। टी.वी के सामने बैठे समाचार सुननेवाले अर्जुन को दंगा-फसाद में होनेवाला निर्दोषों का खून-खराबा सहन नहीं होता। वह चाहता है कि ''हिंदू-मुस्लिम लोग भले ही संत न बनो पर अपना लालच-लूट-खसोट छोडकर इंसान तो बनो ताकि इन्सान के जिन्दगी की किमत वे जान समझ सके।'' (पृ. 77) अर्जुन के इन विचारों का समर्थन सुरैय्या भी करती है। वह भी चाहती है कि हिंदू-मुस्लिमों के बीच जो साम्प्रदायिक जहर फैला है वह नष्ट हो जाए।

फ्लाइट कैंसल होने से सुरैय्या चार दिन तक यही पर रहनेवाली थी तो अर्जुन इन चार दिनों में गोवा जाने का कार्यक्रम आयोजित करता है। जिसके अनुसार अर्जुन, गीत, सुरैय्या और अबीर चारो ट्रेन से गोवा जाने के लिए निकलते हैं। ट्रेन से किया गया गोवा का यह सफर सुरैय्या के लिए बडा ही रोमांचक था। गोवा में उनका स्वागत शहनाज ने किया था। यह शहनाज सुरैय्या के फूफी की शानदार दोस्त थी। उसका चर्चनुमा घर समुद्र के किनारे ही था। चाय-नाश्ते के बाद वे सब टैक्सी में बैठकर गोवा घुमने के लिए निकले थे। उन्होंने देखा, हरा-नीला समुंदर उनके सामने था, और जहां समुन्दर का पानी नहीं था वहाँ हरियाली थी, न तो हीरे जैसी चमकती रेत थी। बीचपर विदेशी सुंदरियाँ अर्धनग्न होकर सूर्य किरनों से नहाती नारीयल पानी पी रही थी। अर्जुन के अनुस्वार गोवा तो दसवीं दुनियाँ ही है मगर इस स्वर्ग को अब विदेशी अपनी खामियाँ के प्रदूषण से मैला कर रहे हैं, ड्रग्स का कारोबार से युवा-पीढी इस जहर की चपेट में आ रही है। (पृ. 78) अर्जुन तो गोवा के बिगडते हालात की बखान करता है मगर कुछ पल के बाद खुद वह सारी चिंता छोडकर डी.जे.पर थिरकने के लिए तथा खाने पिने और मौजमस्ती करने के लिए गीत को उसे बंधन मुक्त करने की

याचना करता है। इस मौके का फायदा उठाते हुए अबीर और सुरैय्या समुंदर के किनारे घुमते हुए प्रेम और इश्क कामुकता और अश्लीलता पर बाते कर रहे थे। अबीर तो प्रेमभाव में मस्त था, वह तो मौका मिलते ही सुरैय्या को आलिंगनबद्ध करके छोड देता था। मगर सुरैय्या को चिंता लगी रहती है भारत और पाकिस्तान के बीच बढे तणाव की, उसे चिंता लगी है अगर चीन ने पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत पर आक्रमण किया तो वे दोनों फिर कहां मिलेंगे। क्योंकि तब विश्व युद्ध छिडेगा और फिर एक बार देश की सिमाएँ टूट जाएगी तब शरणार्थी इस देश से उस देश में भटकते रहेंगे। सुरैय्या के मन में निर्माण हुआ यह भय और आशंका निकाल ने की कोशिश अबीर अपनी ओर से करता है। उसे समझाते हुए वह कहता है कि ''धार्मिक उन्माद की तो कोई सीमा नहीं। पर हमारा देश तो हिन्दु-मुसलमान दोनों का सामुहिक रुप से उनका है। दोनों यदि देश के प्रति ईमानदार है तो कोई झगडा झांसा ही न होगा। वैसे भी सभी भारतीय राजनीति चीन व पाकिस्तान के विरोधावासी रवैये के बावजुद संतोष ख्यालातों के शिकार है।'' (पृ. 80) अबीर के इस मत को सुरैय्या का समाधान होता है क्योंकि वह भी जानती है कि पाकिस्तानी अमन शांति और सकून चाहते हैं। उसे भारत के प्रति नफरत या घृणा नहीं है। घने कोहरे में बैठे अबीर के मन में सुरैय्या के प्रति प्यार और वासना एक साथ उमडती है वह घने झुरमट में उसे अपने शरीर के नीचे दबा देता है। मगर सुरैय्या उसकी जकडन से अपने आपको अलग करने में सफल होती है और दोनों कार में बैठकर 'पब' और 'पब' से गीत और अर्जुन के पास क्लब में पहुँचते हैं। कुछ समय क्लब में नाचकर अबीर सुरैय्या को लेकर सीधा भागता हुआ क्लब के बाहर ले जाते हैं और हाँफते हुए उसे बता देता है कि चीन और भारत की सीमा पर जो विवादित जमीन है, उस इलाके में चीन ने अपनी टैंट चौकी खडी करके 2005 के समझौते को तोडते हुए युद्ध जन्य स्थिति के लिए तैयार रहने का माहौल पैदा किया है। इस स्थिति में अबीर सहीत गीत और अर्जुन को सुरैय्या की चिंता लगी रहती है। क्योंकि वीजा खत्म हुआ था और अगर युद्ध छिड गया तो ऐसे ही निरपराध लोगों को बिना पुछताछ किए जेल में कैद करके रखा जाता है।

दूसरे ही दिन गीत सबको गोवा से इन्दौर चलने के लिए कहती है। प्रात:कालीन गोवा के समुंदरतट का वातावरण अत्यंत सुंदर होते हुए भी ये लोग युद्ध और मारकाट, पाकिस्तान और चीन की असलियत एक दूसरे को बताकर अपने मन की भडास निकाल रहे थे। उनके अनुसार चीन एक बेवफा इंसान है जो वफा और शरीफाना मुखौटा लगाया हुआ है। हांलाकि चीन भारत से जलता है और पाकिस्तान उससे घृणा करता है क्योंकि भारत है ही सुंदरता, परंपराओं व विभिन्न संस्कृतियों वाला देश।'' (पृ. 83) गोवा से इन्दौर पहुँचते ही सुरैय्या का सामान बांधकर उसे विदा किया जाता है। अबीर के दोस्त अंकित ने सुरैय्या की रवानगी उसी शाम सारे कानूनी कागजात के साथ कर दी थी। अंकित उसके साथ था। देहली में सुरैय्या का फ्लाइट में रिजर्वेशन न होने से दोनों ने जोधपुर की ट्रेन पकडी थी। फ्लाईट का टिकट न मिलने और वीजा खत्म होने के कारण उन्हें जल्द से जल्द भारत छोडना था। यही कारण था कि उसने जोधपुर से ढाका और वहां से करांची तक पहुँचने का सफर ट्रेन से करने का निर्णय लिया था। इन्दौर से निकलते ही उसने यह महसूस किया था कि कुछ लोग उससे दूरी बना रहे हैं। अंकित उसके साथ था। वह पुरी सफर में हिंदु और मुस्लिमों के बीच

की साम्प्रदायिक एकता की चर्चा करता है। वही पर वह दोनों देशों के राजनीतिकों की रख्वाइशें किस तरह देश के आम आदमी की जिंदगी हराम कर देती है इसकी भी सोदाहरण चर्चा करता है। इसी बीच जोधपुर का चैकिंग पोस्ट आ जाता है। सुरैय्या अंकित को एक पठानी कुरता भेट देती है और जोधपूर चैकिंग पोस्ट की सारी फारमॅलिटी पूरी कर देती है। इतनी भाग दौड में थकी सुरैय्या एक बेंच पर लेटी समाचार पत्र पढने की कोशिश कर रही थी। तो कभी खुद अपने ही खयालों से जुझने लगी थी। भारत और पाकिस्तान के अलग-अलग हालातों पर वह सोच रही थी कि दोनों ओर धर्म नहीं धर्मांधता होती है अगर यह स्थिति ऐसे ही चलती रहेगी तो दो बंदरों की लडाई में तीसरे का ही (चीन) फायदा होगा। अपने इन्हीं विचारों में डुबी सुरैय्या को जगाते हुए पाकिस्तानी चैकिंग पोस्ट की फॉरमॅलिटी पूरी करने के लिए कहा जाता है। सुरैय्या भी सारी फॉरमॅलिटी पूरी करके सही सलामत प्लॉट फार्म से गुजर कर एक छोटे से पाकिस्तानी गैस्ट-हाऊस आराम कुर्सीपर लेटकर समझौता एक्सप्रेस का इंतजार कर रही थी।

पाकिस्तानी गेस्ट-हाऊस में अकेली बैठी सुरैय्या अपनी यादों के हिंदोले में खो गई थी। आराम कुर्सी पर लेटी सुरैय्या की आँखें बंद होते ही उसके सामने बार बार अबीर ही आ रहा था। मानो वह उसके सामने आकर अपनी नाकामी और बिदाई सहीत विरह पर आँसू बहा रहा था। उसे समझाते हुए सुरैय्या उसे कह रही थी कि हालात दोनों देशों के ठीक नहीं है। इसलिए तुम्हारा पाकिस्तान आना सरल नहीं और मेरा तो यहाँ आना नामुमकिन ही है। हमारा प्रेम, इज्जत, सब झोली में पडे विरह की चुभन से घायल होते रहेंगे। इसपर अगर अल्लाताला ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे। प्यार में तो सदियों से कितने ही लोग मर-खप गए हैं पर न तो प्यार खत्म हुआ है न प्यार होने पर कोई पहारा बैठा पाया है। वैसे तो आतंकवाद एक भयंकर विचार धारा है उसमें सहिष्णुता, उदारता की जगह नहीं होती वैसे ही प्यार में अविश्वास या सौदा नहीं होता।'' (पृ. 86) गैस्ट हाऊस में अकेली बैठी सुरैय्या इस तरह विचार कर रही थी। आँखे मूँदकर आराम कुर्सी पर बैठी सुरैय्या यह बात भली-भाँति समझ चुकी थी कि जैसी एकाद राष्ट्र अपने राष्ट्रधर्म और चरित्र के भावना की गहराई बिना समझे अर्थसम्पन्न या शक्तिशाली नहीं हो सकता उसी तरह प्यार और इंसानियत के बिना मनुष्य अधूरा होता है। इन्ही सद्विचारों में खोई सुरैय्या को अचानक छ:सात हाथों ने बडी बेरहमी में जकड लिया, उसपर हमला करके उसके खुबसुरत जिस्म पर अमानुष घाव किए गए। इसी जानलेवा हमले में वह बेसुध पडी उसके सारे कपडे तार-तार किए गए। हमलावर उसे गेस्ट हाऊस से उठाकर किसी वीराने में ले गए। असकी समझौता एक्सप्रेस छूट गई और वह विराने होश खोकर भटकने लगी। उधर अबीर अपनी शादी की तैयारी में व्यस्त था। फिर भी सुरैय्या के खुशवार पहुँचने की सूचना न मिलने से व बेचैन था। उसे विदाई के वे कठोर क्षण तीर जैसे चुभते हुए सुरैय्या की याद दिला रहे थे। सुरैय्या ने कही हुई हर बात उसके जेहन में बस गई थी। जाने से पहले उसने अबीर के साथ बात करते हुए यह आशा की थी कि दोनों देशों में आज भले ही घिनौनी राजनीति चल रही है, यही राजनीति आज धर्म के नामपर अपने स्वार्थ की फसल काट रही है। इससे ऊपर उठने के लिए ईश्वर मनुष्य को इतनी तो अकल दे कि वे इबादत और इंसानियत का सही मायने समझे। हम भले ही आज मजबूर है पर आनेवाली पीढी धर्म की इस बेवजह की बेअसर सीमा तोड देगी। (पृ. 87)

सुरैय्या के साथ की हुई इन्ही बातों और चर्चाओं की यादों के बवंडर के बीच अबीर और मनु की शादी हो जाती है। शादी में शरीक होने आए अंकित को उसने सुरैय्या की खबर पुछी। तो अंकित ने उसे जोधपुर और पाकिस्तान चौकिंग पोस्ट उसके आँखो के सामने पार करने की जानकारी दी थी। इस पर भी अबीर अपने शादी के माहौल में बेचैन था क्योंकि उसे सुरैय्या करांची में सुरक्षितता से पहुँची है इस बात की खबर किसी ने भी नहीं दी थी। उधर अर्जुन और गीत भी परेशान थे। इसी में एक माह बीत जाता है। बेचैन अबीर को बार बार ऐसा लगता है कि उसकी सुरैय्या उसे बुला रही है, वह परेशान है, उसे याद करके वह रो रही है। अबीर की यह बेचैनी पल-पल व्याकुलता में बदलती रहती है। वह अपने मित्र अंकित के कहनानुसार हनिमून के बहाने उदमपुर आ जाता है, वहां पत्नी मनु को एक होटल में रखकर अबीर और अंकित जोधपुर जाते हैं। वहाँ जाकर वह सुरैय्या की फोटो जोधपुर और पाकिस्तान दोनों चौकिंग पोस्ट पर दिखाकर पूछताछ करते हैं। मगर कोई भी उन्हें सही जवाब नहीं देता। सब यही कहते हैं कि वह समझौता एक्सप्रेस में बैठने को तैयार थी मगर वह कहाँ और कब गई यह किसीको भी पता नहीं है। परेशान हुआ अबीर करांची फोन लगाकर दादी से सुरैय्या के खैरत की पूछताछ करता है तब दादी रो ही पडती है। क्योंकि सुरैय्या वहां भी नहीं पहुँची थी। पिछले एक माह से वह उसका इंतजार कर रही थी। सुरैय्या न जाने कहाँ चली गई थी किसी को पता नहीं था। अबीर पागलसा उसे ढुंढ रहा था तथी चेकपोस्ट का एक सिपाही उसे यह जानकारी देता है कि ''रोज शाम आठ बजे एक पागल औरत यहाँ आकर जिद करती है कि उसे भारत आना है। आप उसे देख लो।'' (पृ. 89) सिपाही की यह दर्दभरी बात सुनकर अबीर और अंकित एक अज्ञात भय से डर जाते हैं, उनके पैर रेत में धंसते जाते हैं। उनके समझ में कुछ नहीं आता फिर भी वह अपनी आशंका निकालने के लिए वहां रुककर उस औरत का इंतजार करते हैं। रात के आठ-साढे आठ बजे गंदा चेहरा, फटे कपडे पहनी एक औरत वहाँ आ जाती है और बडी ही व्याकुलता से कहती है कि मैं बहुत बीमार हूँ, मुझे भूख लगी है, एक बार आने दो न वहाँ। उसके सारे देह पर फोडे थे। लाईट पडी तो उसने अबीर की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए कहां कि मुझे अपने देश आने दो न। मैं सुरैय्या हूँ, तुम मेरे अबीर को जानते हो क्या?'' (पृ. 89) इस पागल औरत को चैकपोस्टवाले हर रोज की तरह उसे वहां हकाल देते हैं। वह उसे कहते हैं कि तेरे पास परमिशन के कागजात नहीं है। और वह उनके सामने गीडगीडाते हुए कहती रहती है कि उन्होंने मेरे पास कुछ भी नहीं छोडा है, वे लोग एक घंटे के बाद फिर मुझे कमरे में बंद कर देंगे। तुम पुलिसवाले हो, मुझे अपने अबीर के पास ले चलो। उस औरत को देखकर अंकित तो नहीं मगर अबीर उसकी मुस्कुराहट देखकर पहचान गया था कि यही उसकी सुरैय्या है।

सुरैय्या तो अबीर को नहीं पहचानती मगर उसे कोई रोके उससे पहले वह दौडते हुए भारत की सीमा पर आ पहुँचती है और वही पर बेहोश होकर गीर जाती है, उसका एक हाथ पाकिस्तान की सीमापर तो दूसरा हाथ भारत की सीमा पर था। इस धांदली में सिपाही कुछ करे इससे पहले अबीर ओर अंकित सुरैय्या को जीप में रखकर एक क्लिनिक में पहुँच जाते हैं। चेकअप के बाद उस क्लिनिक के डॉक्टर बडे उदास स्वर में उसकी मृत्यु जाहीर करते हुए बताते हैं कि इसके साथ लगातार ज्यादतियाँ हुई है, इसपर अमानुष जुल्म किए

गए हैं। हादसे की बाकी कहानी सुरैय्या की लाश बता देती है। उसके योनि पर हुए घाव उसपर किए गए सामुहिक बलात्कार की ग्वाही देते हैं तो जांघों पर किए गए तेज धार के जख्म उसपर किए गए अमानुष अत्याचार की साक्ष देते हैं। उस खूनरहित काला पडा शरीर पिछले एक माह से सहन किए गए भयंकर यातनाओं की साक्ष का बखान कर रहा था। जिसके अनुसार अंदाजा यह लगाया जाता है कि सुरैय्या को गेस्ट हाऊस से कुछ आतंकवादी उठाकर ले गए होंगे क्योंकि आतंकवादी ही इस तरह घिनौना काम करते हैं। क्योंकि ऐसा घिनौना काम करनेवालों को न देश, न सीमा, न धर्म, न रिवाज समझता है। अंधेरा गाढा हुआ तो अंकित के साथ अबीर ने सुरैय्या की लाश को एक काझी के देखरेख में सारे धार्मिक रस्मों-रिवाजों का पालन करके मुस्लिम कब्रस्तान में दफनाते हुए वहाँ एक पत्थर लगाकर उस कब्र के सामने हाथ जोडकर दुआँ मॉगते हुए कहां कि ''सुरैय्या जजबातों की कोई सीमा नहीं होती उसी तरह खराब कामों की भी कोई सीमा नहीं होती । जिनका ताल्लुक देशों से नहीं जजबातों से होता है। तुम शरीर से यहाँ रहोगी तथा मेरे खयालों में भी हमेशा जीवित रहोगी।'' (पृ. 90) दो-तीन दिनों के बाद अबीर ने सुरैय्या के दादी को इस हादसे का सारा वृत्तांत सुनाया तो दादी ने अफजल गुरु की फाँसी, सरवजीत की हत्या, भारतीय संसद पर किए गए हमले आदि का जीक्र करके दोनों देशों के बिच निर्माण हुए तणाव में भी भारत आकर अपनी नाती के मजार पर रोती, बिलखती चिखती फतिहा पढने के लिए आ पहुँची थी। वापस जाते समय आपने आँसुओ को रोककर अबीर ने रोती हुई दादी को हाथ हिलाकर अलविदा कर रहा था तभी उसने महसुस किया कि उसकी सुरैय्या मुस्कराती हुई उसे कह रही थी कि ''देखो मैं तुम्हारे दिल में तो हूँ ही पर सदा के लिए तुम्हारे साथ नहीं रह रही हूँ। पर अब तो हमें मिलने से कोई रोक नहीं सकता।'' (पृ. 91) अबीर ने सुरैय्या की इस तरह दर्दनाक की मौत को स्वीकारा था वही पर यह भी समझ गया था कि सुरैय्या की यही मुस्कराहट उसे जिन्दगीभर जीने की प्रेरणा देती रहेगी।

समीक्षात्मक दृष्टि से देखे तो इस उपन्यास की कथावस्तु औपन्यासिक कथा तत्व के अनुसार एक सफल एवं सरस तथा उच्चकोटि की है। इसका प्रारंभ, मध्य, चरमबिंदु और अंत यह चारों स्थान कथानक की सजीवता, प्रवाहमयता और प्रभावात्मकता स्पष्ट करते हैं। यह कथानक प्रारंभ से अंत तक एक विशिष्ट गति से प्रवाहीत होकर पाठकों को अपने साथ बहाते हुए अंत तक ले जाता है। इस औपन्यासिक रचना में चित्रित मुख्य कथा अबीर और सुरैय्या की प्रेमकहानी है। जिसका अंत लेखिका ने अत्यंत भयंकर दर्दनाक परिदृश्य में साकार किया (चितारा) गया है। जिससे यह औपन्यासिक कृति एक ट्रैजिडी का रुप धारण करती है। मुख्य कथानक के केंद्र में सुरैय्या का चित्रण होने से, इसे स्त्री प्रधान कथानक उपन्यास भी माना जाता है। मुख्य कथानक के साथ पताका और प्रकरों से रुप में डॉ. गीत, और अर्जुन, नाना, नानी, दादी, मनु, अंकित के साथ घटनेवाली घटनाएँ उपन्यास में प्रासंगिक कथाए बनकर चलती रहती है। जिससे मुख्य कथा में रोचकता और प्रभावात्मकता निर्माण हुई है। कथानक में चित्रित घटनाएँ अत्यंत सजीव एवं नैसर्गिक लगती है। जिससे कथानक में रोचकता और उत्सुकता के साथ गतीशीलता निर्माण हुई। यही कारण है कि पाठक इस कथानक के साथ प्रारंभ से अंत तक जुडा रहता है। मूल या प्रमुख (मुख्य कथानक) को प्रभावात्मक बनाने हेतु

लेखिकाने हिदुस्थान और पाकिस्तान के बीच आजादी अर्थात बँटवारे के बाद सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साम्प्रदायिक क्षेत्र में घटी हुई सभी छोटी-मोटी घटनाओं, दोनो देशों के बीच रहे साम्प्रदायिक तणाव का, आतंकवादी माहौल का, युद्धजन्य स्थिति का, हर पल सीमापर बढते हुए आक्रमक स्थिति का इतना वास्तविक चित्रण किया है कि दोनों देशों का पिछले साठ-सत्तर सालों का इतिहास अत्यंत तटस्थता से प्रस्तुत करनेवाला यह एक प्रामाणिक ऐतिहासिक उपन्यास लगने लगता है। कुल मिलाकर इस उपन्यास की कथावस्तु तात्विक दृष्टि से परिपूर्ण रही है।

इसके बावजुद कथावस्तु में लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा कुछ स्थान, कुछ घटनाँए, या कुछ चरित्र ऐसे प्रस्तुत किए गए हैं कि जिनका संदर्भ पाठकों के मन में भ्रम निर्माण कर देता है। जैसे कथानक के प्रारंभ में (पृ. 11) रेसीडेंसी क्लब में दूसरे दिन रेडवाईन का ऑर्डर देकर अपने पैर फैलाकर मौसम का जायजा लेनेवाली सुरैय्या क्लब से बाहर कब आती है ? इसका संकेत पाठकों को उपन्यास के अंत तक नहीं मिलता। इसी तरह गीत के पिता का नाम प्रारंभ में (पृ. 15) रामकृष्ण अवस्थी बताया गया है। किंतु दुबई से भारत (इन्दौर) आने के बाद सुरैय्या को डॉ. गीत अपने पिता की पहचान कराते समय उनका नाम डॉ. सुधीर सक्सेना बताती है। इसी तरह सुरैय्या की अम्मी तरन्नुम जो की मरने के बाद उसे भारत के रामपुर में दफनाने की इच्छा रखती है (पृ. 28) उसी बीमार अम्मी को अबीर बाघा बॉर्डर से स्ट्रेचर पर भारत में लेता है और उसी अम्मी को मरने के बाद उसके भाईयों ने उसे रामपुर की मिट्टी में दफनाया था वही अम्मी कथानक के अंत में (पृ. 91) दादी के साथ सुरैय्या के मजार पर फातिहा पढने के लिए आती है। एक और संदर्भ यह है कि डॉ. गीत और अर्जुन सुरैय्या लेकर जब इन्दौर आते हैं तब वे एक बंगले के भीतर प्रवेशते हैं (पृ. 23) किन्तु उन्हीं के साथ आई हुई सुरैय्या और अबीर रामपुर, जयपुर, आगरा, दिल्ली घुमकर जब वापस इन्दौर आते है तब वह नई संगम मल्टी के चौथे फ्लोर की घंटी बजाते हैं और उस फ्लॅट का दरवाजा डॉ. गीत खोलती है। इसी तरह कथानक के अंत में गोवा से वापस इन्दौर आने के बाद सुरैय्या के साथ केवल अबीर का दोस्त अंकित ही था। वही जोधपुर चैकिंग पोस्ट की फॉरमिलीटी पूरी करता है। फ्लाईट न मिलनेपर वही दिल्ली से जोधपुर तक उसके साथ था। किंतु अचानक वहाँ अर्जुन कैसे आता है (पृ. 85) यह समझ में नहीं आता। इसके अतिरिक्त लेखिका ने पूरे कथानक में हिंदु-मुस्लिमों के बीच साम्प्रदायिक संघर्ष तथा आपसी द्वेष का इतना विस्तृत तथा डरावना चित्रण किया गया है कि उसके डर से, भय से नायक-नायिका के साथ-साथ पाठकों के दिलोंदिमाग से उनकी प्रेम कहानी फिसल जाती है। इन सारी त्रुटियों के बावजुद प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु सभी विशेषताओं से परिपूर्ण बनी हुई दिखाई देती है।

2.3.2 ''आना इस देश'' उपन्यास का शीर्षक :

किसी भी साहित्यिक कृति की पहली पहचान उसका 'शीर्षक' होती है। मानो शीर्षक उतना ही महत्त्वपूर्ण होता है जितना आदमी को पहचानने के लिए उसका चेहरा आवश्यक रहता है। साहित्य कृति का चेहरा 'शीर्षक' होता है, ऐसा कहा तो गलत नहीं होगा। क्योंकि जैसे किसी भी आदमी का चेहरा देखकर ही अधिकतर लोग उसकी अच्छाई-बुराई, उसके सद्गुण-दुर्गुण का अंदाजा लगाते हैं वैसे ही अधिकतर पाठक

साहित्यिक रचना का शीर्षक देखकर ही उसकी साहित्यिक ऊंचाई, उसका रचनात्मक ढाँचा, उसकी विषयगत गंभीरता से लेकर सफलता-असफलता का अंदाजा लगाते हैं। इस दृष्टि से कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा रचित उपन्यास का शीर्षक 'आना इस देश' चारो तरफा सफल एवं सार्थक हुआ दिखाई देता है। उपन्यास का यह शीर्षक सुनते ही पाठकों के मन इसके प्रति आकर्षण निर्माण होता, इसमें चित्रित विषय को जानने की उत्सुकता पाठक को बेचैन करती है। इस तरह उपन्यास का यह शीर्षक प्रथमदर्शी पाठकों को आकर्षित करने, अपनी अच्छाई और साहित्यिक ऊंचाई का परिचय देने में सफल एवं सार्थक हुआ दिखाई देता है।

उपन्यास में चित्रित कथानक में शीर्षक के माध्यम से व्यक्त किया गया भावनात्मक निमंत्रण एक उम्रदां प्रेमकहानी को साकार करता है। इसमें चित्रित भारतीय प्रेमी अपनी पाकिस्तानी प्रेमिका को संभाव्य साम्प्रदायिक संघर्षो के बावजुद भूलना नहीं चाहता। धार्मिक संघर्ष के बवाल से बचकर अपने प्रेम की हिफाजत करते हुए, अपने-अपने देश में रहकर जजबातों में अपनी मुहब्बत को जतन करने का निश्चय करनेवाले यह दो प्रेमी देश की, धर्म की, सम्प्रदाय की सीमा तोडने की हिम्मत नहीं करते। किंतु आतंकवाद के गिरफ्त में आए पाकिस्तान देश की प्रेमिका अपने देश में रहना पसंद नहीं करती और भारतीय प्रेमी उसे चाहकर भी यहां रहने के लिए सक्ति नहीं करता फिर भी सीमाओं को बिना तोडे वह उसे निमंत्रित करता है कि 'आना इस देश' क्योंकि यही भारत देश धर्म, मजहब से ऊपर उठकर इंसानियत, मानवता, सर्व-धर्म-समभाव आदि संविधानिक मूल्यों के माध्यम से आज पूरे विश्वभर में शांतिदूत बनकर मानवतावादी धर्म की स्थापना कर रहा है। अगर सुकून से रहना है, शांति से जीवन बीताना है तो ''आना इस देश।'' इस तरह लेखिका द्वारा प्रस्तुत औपन्यासिक रचना को दिया गया शीर्षक कथावस्तु के माध्यम से हमारे देश की अलगसी पहचान कराने में सफल हुआ नजर आता है। अत: उपन्यास का यह शीर्षक सार्थकता की दृष्टि से अत्यंत समीचिन लगता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

1. 'लगता नहीं है दिल मेरा' ..... का आत्मकथन है।
2. 'आना इस देश' उपन्यास का प्रथम संस्करण ..... में प्रकाशित हुआ है।
3. कानपुर के ..... प्रकाशन संस्था ने 'आना इस देश' उपन्यास का प्रकाशन किया है।
4. कृष्णा अग्निहोत्री के आत्मकथन के दूसरे भाग का शीर्षक ..... है।
5. 'आना इस देश' उपन्यास ..... विमर्श के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।
6. बटवारे के पहले सुरैय्या के घरवाले उत्तरप्रदेश ..... गाँव में रहते थे।
7. सुरैय्या के माता-पिता का नाम ..... है।
8. सुरैय्या की अम्मी तरन्नुम ने ..... में एम. ए. किया था।
9. मिलटरी में कार्यरत नदीम ने ..... देश के साथ गद्दारी की थी।

10. सुरैय्या की शादी ..... से की जाती है।

11. सुरैय्या के पति ..... में कार्यरत थे।

12. दुबई में अंदरुनी परेशानी के कारण सुरैय्या की ..... दोस्ती हो जाती है।

13. डॉ. गीत और अर्जुन सुरैय्या को दुबई से भारत के ..... शहर में ले आते हैं।

14. अबीर ..... शहर का रहनेवाला है।

15. अवधेश ..... के भाई का नाम है।

16. पाकिस्तान में रहनेवाली ..... की ख्वाइश है कि उन्हें भारत के रामपुर में दफनाया जाए।

17. ज्ञानवती ..... की माँ का नाम है।

18. मनु की शादी ..... से होती है।

19. सुरैय्या और अबीर देहली से आगरा ..... देखने के लिए जाते हैं।

20. अबीर के सुरैय्या की बिमार अम्मी को भारत लाने के लिए ..... सीमा तय की थी।

21. ..... सवारी में मोटर साइकिल की सीटें हटाकर वहाँ ट्रॉली जोड देते हैं।

22. इन्दौर दूरदर्शन के सहयोग से पाकिस्तानी गजलकारों में ..... भी भारत आ जाती है।

23. हिंदु-मुस्लिम दंगे शुरू होनेपर अर्जुन, गीत और अबीर और सुरैय्या इन्दौर से ..... शहर में चार दिन के लिए जाते हैं।

24. सुरैय्या के फूफी की ..... नामक दोस्त गोवा में रहती है।

25. अबीर के अनुसार ..... नामक देश भारत से जलता है और पाकिस्तान भारत से घृणा करता है।

26. पाकिस्तानी चैकिंग पोस्ट के गेस्ट हाऊस से सुरैय्या की ..... उठाकर ले गए थे।

27. अबीर के अनुसार धार्मिकता बुरी नहीं ..... बुरी है।

28. सिंध प्रदेश के केबुडेर समाज में लडकी का विवाह ..... से कर देते हैं।

29. सुरैय्या के अनुसार मुहब्बत को कोई मिटा नहीं सकता क्योंकि ..... न तो हिंदु होते हैं न मुसलमान।

30. पागलसी हुई सुरैय्या को मृत्यु के बाद ..... देश में दफनाया जाता है।

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

रेसीडेंसी : स्थायी
आध्यात्मिकता : भक्ति-भाव
भस्मासुर : हिंदु पुराण में चित्रित एक राक्षस
वेलफेयर : विकास
स्कीम : योजना
एमेंडमेंट : सुधार, परिवर्तन
आडम्बर : दिखावा
डिसिप्लिन : अनुशासन
दास्तान : कहानी
वहशी : बर्बर जंगली
मुख्वत : मुरौवत
मुलाहजे : देखना, निरखना
नालिश : फरियाद, अभियोग
विराना, वर्जित : निर्मनुष्य
बरांडा : बरामदा
फारिग : मुक्त
शगल : कामधंधा
जहीन : समझदार
गैर वाजिब : अनुचित
लुफ्त : आनंद
चिलमन : कोने से
पाशविक : खूंखार जानवर जैसा
कैरियर : भविष्य
फतवा : आदेश (धार्मिक)
रैबाई : यहुदियों की महिला धर्मगुरु
परिदृश्य : माहौल, वातावरण
तसब्बुर : इच्छा, आकांक्षा
परमिशन : अनुमती
फरिश्ते : दूत (ईश्वर या अल्लाह के)

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. कृष्णा अग्निहोत्री 2. सन 2014 3. अमन प्रकाशन 4. और–और–औरत 5. स्त्री विमर्श (नारी विमर्श)

6. रामपुर 7. तरन्नुम और नदीम 8. उर्दु 9. भारत 10. परवेज खान

11. एयरफोर्स 12. डॉ. गीत 13. इन्दौर 14. जयपुर 15. डॉ. गीत

16. तरन्नुम (सुरैय्या की अम्मी) 17. अबीर 18. अबीर 19. ताजमहल 20. बाघा

21. चिमकी 22. सुरैय्या 23. गोवा 24. शहनाज 25. चीन

26. आतंकवादी 27. धर्मांधता 28. कुराण 29. जजबात 30. भारत

2.7 सारांश

1. यह उपन्यास हमारे देश के पिछले साठ–सत्तर साल का लेखा–जोखा है।
2. इस उपन्यास में लेखिका ने भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का बेबाक चित्रण किया गया है।
3. पाकिस्तान की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थिति का इसमें सही–सही चित्रण किया गया है।
4. पाकिस्तान के समान हमारे भारत देश में भी साम्प्रदायिक उच्छाद का जो उग्र रुप समय–समय पर धर्म के ठेकेदारों द्वारा प्रगट किया जाता है, उसका भी वर्णन इसमें लेखिका ने बडी निडरता से किया है।
5. एक प्रेम कहानी के साथ–साथ दोनों धर्मों के बीच, दोनों देशों के बीच भविष्य में निर्माण होनेवाले साम्प्रदायिक संघर्ष का डरावना चित्र इसमें प्रामाणिकता से चितारा गया है।
6. यह कहानी सुरैय्या और अबीर जैसे अनेक हिंदु–मुस्लिम युवक–युवतियों की कहानी है जो आपस में प्रेम तो करते हैं किंतु साम्प्रदायिक संघर्ष के भय से एक साथ रहकर खुशनुमा जिंदगी जिने की हिम्मत नहीं करते।
7. यह उपन्यास भारत के साथ पडौसी मुल्क की घिनौनी राजनीति का संदर्भ भंडाफोड करनेवाला एक प्रामाणिक उपन्यास है क्योंकि इसे पढने के बाद पाठक को चीन और पाकिस्तान जैसे पडौसी मुल्क की घिनौनी नीति का ज्ञान होता है।
8. विश्व में फैल रहे आतंकवादी गतीविधियों का केंद्र अब पाकिस्तान बन चुका है तथा अब स्वयं पाकिस्तान ही आतंकवाद के गिरफ्त में आ गया है। इसकी जानकारी इस उपन्यास के माध्यम से होती है।
9. नारी चाहे हिंदु हो या मुस्लिम उसका शोषण और शिकार हर जगह हर देश में होता ही रहता है। इस भयानक सत्य की पहचान इस उपन्यास के माध्यम से भलिभाँति होती है।
10. साम्प्रदायिक संघर्ष, आपसी द्वेष, धार्मिक कट्टरता, युद्ध जैसी प्रचलित भयंकर स्थिति को, दोनों देशों के बीच अगर कोई बदल सकता है तो वह है मुहब्बत, आपसी प्यार, इन्सानियत और मानवता का

रिश्ता जो दोनों देशों की युवा पिढी आपस में विकसित करेगी। तभी दोनों मुल्कों में अमन और शांति फैलेगी। इस बात का विश्वास उपन्यास में दर्शाया गया है।

2.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न एवं दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'आना इस देश' उपन्यास की कथावस्तु का सारांश लिखिए।
2. उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर 'आना इस देश' कथानक की समीक्षा कीजिए।
3. 'सुरैय्या, 'आना इस देश' उपन्यास की प्रमुख स्त्री चरित्र है।' कथानक के आधार पर विवेचन कीजिए।
4. 'आना इस देश' उपन्यास में चित्रित नायक अबीर की चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए।
5. 'आना इस देश' उपन्यास भारत और पाकिस्तान के बीच के संबंधों का लेखाजोखा है।'' कथानक के आधारपर स्पष्ट कीजिए।
6. '' 'आना इस देश' एक दु:खांत प्रेम कहानी है।'' कथावस्तु के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
7. 'आना इस देश' उपन्यास में चित्रित डॉ. गीत का परिचय दीजिए।
8. 'आना इस देश' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

आ) ससंदर्भ के प्रश्न

1. ''मेरी प्यारी दोस्त, पादरी, पुरोहित व नेता, आदमी की कमजोरी से वाकिफ होते हैं, इसलिए उनसे अपने को बचाने के लिए राजनीति रचकर उनका शोषण करते हैं और मनुष्य के दिमाग की जमीन को बंजर बना देते हैं ।'' (पृ. 10)
2. ''..... आपका वतन ? तो ये क्या मुसलमानों का आराम घर है ? सुना है वहाँ तो मुसलमानों को नौकरी तक ठीक से नहीं मिलती? वे घबराएँ व खौफ में जीते हैं।'' (पृ. 16)
3. ''नौकरियों में भेदभाव नहीं। सब आपस में प्रेम से रहते हैं। वरना तो सभी खानदानों में लालच से झगडे होते ही हैं। हाँ, जब धर्म का जुनून बढता है, तब ही मारा-काटी मचती है।'' (पृ. 28)
4. ''..... प्रेम की हांडी चढी कि सबके माथों पर बल पडे। सारे धर्म के ठेकेदारों ने फतवे जारी कर दिए। अब कहाँ भागकर जाती? और हमारे नेता आग को ठंडी करने में कोई पहल नहीं कर पाए। बस न्यूज बनी। अफसाने फैले।'' (पृ. 33)
5. ''..... ऐसा ही पाखंड हर जगह है। धर्म का सही चेहरा तो छुपा हुआ है, बस शादी-ब्याह, शादीशुदा औरतों व प्रेमियों को दंड देते समय ये सब तालिबानी हो जाते हैं।'' (पृ. 34)
6. ''मैडम प्यार कोई खिला फूल नहीं जिसे कोई भी तोड ले, न ही नदी का पानी जिसे कोई आता-जाता पी ले। प्रेम तो वो आबदार मोती है जो सीपी में बंद रहता है, जिसे हर कोई नहीं पा सकता। जो सभी

को नहीं मिलता।'' (पृ. 35)

7. ''– क्या समझेंगी दोनों ! जहिल है। अंगूठा छाप ! कैसे समझायें कि पादरी, पंडित, मौलवी मनुष्य की कमजोरियाँ जानते हैं और उन्हीं कमजोरियों का शोषण कर भुनाते हैं। धर्म व मजहब कभी इंसानियत को गुमराह नहीं करते। सच्चा धर्म तो वो है, जो इंसान को दु:खों व कमजोरियों से मुक्त होने का रास्ता बताये।'' (पृ. 38)
8. ''-- मैं भी नहीं चाहूँगी कि मेरे लिए तुम आग पर ही चलो। यूं तो कैसी भी फितरत हो। मुहब्बत को कोई मिटा नहीं सकता अबीर। क्योंकि जजबात न तो हिंदू होते हैं न मुसलमान।'' (पृ. 59)
9. ''– सुरैय्या वो समय दूर नहीं जब कल का युवा इन सारी सीमाओं को तोड देगा। क्योंकि वो समझ रहा है कि इंसानियत व मानवता व प्यार से अधिक कीमती जेहाद व सीमाएँ नहीं। तब केवल होगी मुहब्बत जो इंसानियत को बढायेगी।'' (पृ. 71)
10. ''अच्छा है तुम एक ऐसे देश में दफन हो, जहाँ मेरे, अंकित, अर्जुन व गीत जैसे लोग तुम्हारे आने का इंतजार करते–करते आज तुम्हे खोने का दर्द पाले हैं।'' (पृ. 90)
11. ''देखो मैं तुम्हारे दिल में तो हूँ ही पर सदा के लिए तुम्हारे साथ नहीं रह रही हूँ। पर अब तो हमें मिलने से कोई रोक नहीं सकता।'' (पृ. 91)

2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. भारत एवं पाकिस्तान के संबंधों पर निबंध लिखिए।
2. 'सर्वधर्मसमभाव' पर निबंध लिखिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर।
2. टोपी शुक्ला – राही मासूम रजा ।
3. तमस – भीष्म सहानी ।
4. लज्जा – तसलीमा नसरीन ।

●●●

सत्र 5 : इकाई 3
आना इस देश : पात्र एवं संवाद

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय – विवेचन

3.3.1 'आना इस देश' : पात्र एवं चरित्र चित्रण

3.3.2 'आना इस देश' : संवाद

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- उपन्यास में चित्रित प्रमुख और गौण पात्रों का परिचय पा सकेंगे।
- पात्रों के चरित्र चित्रण से उपन्यास की कथावस्तु समझने में सहायता होगी।
- पात्रों के चरित्रगत विशेषताओं से परिचित होंगे।
- उपन्यास में चित्रित संवादों से परिचित होंगे।
- उपन्यासकार की संवाद शैली से परिचित होंगे।

3.2 प्रस्तावना :

उपन्यास की समीक्षा उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर की जाती है। इन तत्त्वों में चरित्र चित्रण और संवाद ये दो प्रमुख तत्त्व है। उपन्यास के पात्र उपन्यासकार की कल्पना की उपज होती है, फिर भी उपन्यासकार कई बार हमारे आसपास के अनेक चरित्रों को अपने उपन्यास में चित्रित करता है। 'आना इस देश' उपन्यास की उपन्यासकार डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री भी उपन्यास भूमिका में लिखती है कि, ''ये लघु उपन्यास मेरे जीवन के कई यथार्थ पात्रों से सम्बन्धित है, जो सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं के कारण उभरे व उपन्यास में ढल गये। सुरैय्या मेरी मित्र थी, जिनका जाने का गम कभी-कभी दिल में अटक जाता है।'' अर्थात इस उपन्यास के सभी पात्र यथार्थ में ढले हुए हैं। इस इकाई में पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है।

संवादों के स्तर पर पूरा उपन्यास संवादशैली में ही उधृत हुआ जाना पड़ता है। उपन्यास में उपन्यासकार कम बोलती है, पात्र ही अधिक बाते करते हैं। उपन्यास की पूरी कथावस्तु संवादों से आगे बढ़ती है। इसमें वर्णनात्मकता कम है। छोटे-छोटे संवादों से लेकर बड़े-बड़े विस्तृत संवाद उपन्यास में अनेक जगहों पर पाये जाते हैं। उपन्यास के पात्र ही इतने विस्तार से बाते करते हैं कि कथावस्तु अपने आप आगे बढ़ती है, उपन्यासकार को अपनी ओर से इसमें अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं लगती। इस उपन्यास के संवादों से ही उपन्यास के पात्रों के चरित्रपर अधिक प्रकाश ड़ाला जा सकता है।

3.3 विषय विवरण :

3.3.1 'आना इस देश' : पात्र एवं चरित्र चित्रण :

'आना इस देश' उपन्यास में प्रमुख पात्र हैं - सुरैय्या और अबीर। तरन्नुम, परवेज, गीत, दादी, नानी आदि गौण पात्र हैं। ''आना इस देश'' उपन्यास की प्रमुख नायिका सुरैय्या है। भारत से निकलकर पाकिस्तान जा बसे मुसलमान वहाँ मुहाजिर कहलाए और सुरैय्या इसी त्रासदी की शिकार नायिका है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक सुरैय्या की मानसिक स्थिति का यथार्थ अंकन हुआ है।

- **सुरैय्या :**

उपन्यास की नायिका, प्रमुख स्त्री पात्र एवं केंद्रीय पात्र के रूप में सुरैय्या का चरित्र-चित्रण हुआ है। सुरैय्या की चरित्रगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. पढी लिखी नायिका :

सुरैय्या ने अपनी प्राथमिक शिक्षा कराची के एक कॉनवेंट स्कूल में प्राप्त की। जब सुरैय्या दसवीं पूरी कर एन्ट्रंस में गई तो उसने उर्दू अदब लिया और उसमे वो एम. ए. तक फर्स्ट क्लास पाती रही। उसने अरबी भी पढ़ी और गालिब से लेकर नये शायरों की शायरी का अध्ययन किया। शिक्षित सुरैय्या साहित्य के संदर्भ में अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती है ''न तो पाकिस्तान में पढ़ाया गया शेक्यपिअर भारत से अलग और ना ही ब्राउनिंग'' सुरैय्या दोनो देशों की शिक्षा व्यवस्था को एक आँख से देखती है।

सुरैय्या अपनी स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ ड्राइविंग करना भी जानती है और अपने परिवार के सदस्यों को जिंदादिली के साथ जहाँ चाहे ले जाती है। सुरैय्या गायकी जानती है और रेडिओ पर गाती भी है।

2. बेमेल विवाह की शिकार :

पढ़ी लिखी, हरहुन्नरी, खुबसुरत, खुबसीरत सुरैय्या का विवाह एक दुगनी उम्र के रंडवा व्यक्ति परवेज से किया जाता है। परवेज खानदानी रईस, बड़ी कोठी का मालिक एवं कई नौकर चाकर का मालिक है, वह एअरफोर्स में काम करनेवाला व्यक्ति है, जिससे केवल एक मुलाकात पर सुरैय्या के पिता ने उसका विवाह कर दिया। विवाह के पश्चात एक टी.व्ही. पत्रकार ने सुरैय्या का इंटरव्ह्यू लिया और उसे अपनी गायकी पेश करने का मौका दिया। उसी दिन से परवेज मानव से दानव बन गया और सुरैय्या से वहशी व्यवहार करने लगा। सुरैय्या ने इस वहशीपन को चुपचाप सहन किया मगर जिस दिन परवेज ने फूफी की 14 साल की लड़की पर वहशाना हमला बोल दिया तब सुरैय्या ने चाकू उठा लिया और उस लड़की को छुटकारा दिला दिया और अपने नवजात बच्चे को लेकर माँ के पास चली गई। इस प्रकार सुरैय्या अनमेल विवाह की शिकार नायिका है।

3. नशा करनेवाली नायिका :

उपन्यास की नायिका अपने पति के बेरुखी से और उसके बर्ताव से घर छोड़कर मायके चली जाती है। अदालत में तलाक के कामकाज से वह बहुत ही आहत हो जाती है। इस बीच उसके नवजात शिशू की भी मृत्यू हो जाती है। अपनी बेटी की इस दशा को देखकर उसका मन हलका करने के लिए पिताजी उसे उसकी खाला के पास दुबई भेज दिया। वहाँ भी अपनी मौसेरी बहन के पति ने उसपर बुरी नजर ड़ालना शुरू किया। इन सभी बातों से तंग आकर तनहा बनी सुरैय्या अपनी सहेली गीत के साथ रहती है। इसी बीच हालात के कारण वह शराब का नशा करने लगती है। नायिका सुरैय्या का यह नशा करना निहायत निंदनीय है।

4. खुमारी में जीनेवाली नायिका :

आघातों से छुटकारा पाने एवं अपनी जिंदगी के गम भुलाने की नियत से दुबई पहुँची सुरैय्या गीत की सखी बन जाती है और उसी का प्रोत्साहन पाकर ड्राइविंग करने लगती है। गीत के भाई अवधेष के मित्र अबीर से सुरैय्या की मुलाकात होती है। दोनो हिंदुस्तान के शहरो में घुमते हैं। दोनो मिलकर नशा करते हैं और नशे के हालत में एक दूसरे से शरीर संबंध स्थापित करते हैं। इसके पश्चात सुरैय्या को कोई पछतावा नही, सुरैय्या कहती है -

''जो हुआ वो गम नहीं
न होता तो गम न था
किसी की जुस्तजू भी नहीं
जो मिला कम मिला, पर एक आरजू पूरी हुई
भविष्य में क्या होगा पता नही। वर्तमान में जो है वहीं जिंदगी थी।''

सुरैय्या के प्रस्तुत विचार उसकी खुमारी को दर्शाते हैं।

5. खुद्दार सुरैय्या :

परवेज को छोड़कर माँ के घर जाने के पश्चात सुरैय्या अपने आघातों से उभरने के लिए दुबई चली गयी। सुरैय्या की आर्थिक स्थिति चुस्त होने के बावजूद सुरैय्या सेल्सगर्ल या रिसेप्शनिस्ट बनने की अपेक्षा 6 माह की कड़ी मेहनत कर ड्राइविंग का इम्तेहान देकर लायसेंस पाती है और एक खुद्दार इन्स्पेक्टर के रुप में सामने आती है। नौकरी की पहली तनख्वाह लेकर घर पहुँचती है तो माँ और दादी उससे कहती है कि इतने रुपए तो तुझे तेरे अब्बा हाथ खर्च के लिए देते, यहाँ सुरैय्या द्वारा दिया गया उत्तर बहुत ही मार्मीक एवं उसकी खुद्दारी को दर्शाने वाला है – सुरैय्या कहती है – 'नही दादी जान ! वहाँ बैठे-बैठे मैं खाना पका, जेवर पहनकर जिंदगी दहशत में नहीं गुजारना चाहती' सुरैय्या के प्रस्तुत विचार उसकी खुद्दारी को दर्शाते हैं। किसी और के टुकडों पर पलते हुए ऐशोआराम की जिंदगी की अपेक्षा कड़ी मेहनत से जिंदगी गुजारना कई गुना बेहतर है।

6. रहमदिल :

सुरैय्या की चारित्रिक विशेषताओं में सबसे अहम है उसका रहमदिल होना। सुरैय्या समाज में फैले आर्थिक भेद को देखकर तिलमिला जाती है। समाज में एक ओर वे राजनीतिक नेता हैं जो पाँच साल के लिए चुनकर आते हैं और पाँच पीढ़ियों के लिए सामान जुटाते हैं और दूसरी ओर वे लोग हैं उनके बच्चे दंगे के शिकार बने भी तो शिकायत तक नहीं करते। ऐसे ही एक तांगेवाले की आर्थिक स्थिति को जानकर सुरैय्या उसे पाँच सौ का नोट देते हुए कहती है ''चाचा इस बार ईदी पर अपने लिए जोड़ा मेरी ओर से बनवा लेना'' सुरैय्या के प्रस्तुत वाक्य उसकी रहमदिली का ही प्रमाण देते हैं। तो दूसरी और ताजमहल के सामने रेवड़ी बेचनेवाले कमसिन बच्चे को देख उसकी पारिवारीक एवं आर्थिक, शैक्षिक स्थिति को जानने का प्रयास करती है और जवाब जानने पर एक प्रतिप्रश्न उसके मन में उठता है 'ये गरीब मुफलिस भी हमारे देश में है। मेरे पास तो एक ही सवाल है, क्या ये भी इन्सान नहीं ?'

सुरैय्या के इस प्रश्न में ही उसकी रहमदिली के दर्शन होते हैं। मंदिरो में करोड़ो रुपए चढ़ाए जाते हैं और गरीबो को कुछ नहीं दिया जाता इसे लेकर भी वो व्यथित है।

7. असफल प्रेमिका :

सुरैय्या पति परवेज को छोड़ने के पश्चात अबीर से प्रेम करती है। अबीर एक हिंदू युवक है जिसकी मनु से शादी निश्चित हो चुकी है। अबीर सुरैय्या आकंठ प्यार में डूबे अनेक जगहों पर साथ घूमते हैं। उनका प्रेम हिंदुस्तान-पाकिस्तान की सीमाओं का शिकार बन जाता है। राजनीतिक हालात के बिघड़ते ही उनका व्हिसा पास नहीं होता और व्हिसा खत्म होने पर वे साथ नहीं रह सकते। मिलते बिछुड़ते अब सुरैय्या ऊब चुकी है और अपने प्रेम मे असहाय्य बनी सुरैय्या अबीर से कहती है – '' मेरा क्या होगा ? तुमने तो रास्ता चुन लिया है। में कैसे जिऊंगी ? किसी और का खयाल तो कर ही नहीं सकती हूँ।'' सुरैय्या के प्रश्नों में उसके असफल प्रेम का सपना ही दिखाई देता है। सुरैय्या तो बसते-बसते उजड़ गई अब उसका आशियाना नामुमकिन है।

8. धार्मिक अज्ञानता :

सुरैय्या का धार्मिक अज्ञान यत्र-तत्र दिखाई देता है। सुरैय्या जब-जब भी अपने असफल प्रेम को सोचती है तो इस संसार से पलायन की बात सोचती है। सुरैय्या द्वारा गीत को यह कहना की मुसलमान औरत मस्जिद में नमाज नहीं पड़ सकती पीर, फकीर बनने की उसे कुरान में इजाजत नहीं उसके धार्मिक अज्ञान को दर्शाता है क्योंकि इस्लाम ने औरत को जहाँ चाहे नमाज पढ़ने का अधिकार दिया है और शबिया बसरी एक पाकदामन अवलिया ही थी। स्त्री के विवाह बाह्य संबंधों पर कारोकारी प्रथा जो पाकिस्तान में है, यहाँ भी उसकी गलत सोच प्रदर्शित करती है और असहाय्य बन उसका यहुदियों की धर्म गुरु रैबाई बनना भी उसकी गलत सोच को ही प्रदर्शित करता है।

सिंध प्रदेश के कुबडेर इलाके में लड़की का कुरआन से विवाह किया जाता है, वह भी संपत्ती बचाने के लिए, बिलकुल गलत सोच साबित होती है। आज तक दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी लड़की का कुरआन से विवाह नामुमकिन बात है। ऐसी बुरी प्रथाओं की इस्लाम पैरवी करता है ना इसकी इजाजत देता है। सुरैय्या के उपरोक्त संपूर्ण कथन उसकी धार्मिक अज्ञानता को ही प्रदर्शित करता है।

9. राजनीतिक सोच :

1984 के बम्बई दंगे, 2002 के गुजरात दंगे, साबरमती एक्सप्रेस पर हमला, अहमदाबाद के दंगे, खून खराबा, धर्मांधता आदि के संबंध में सुरैय्या कहती है कि, 'दो बंदरों की लड़ाई में तीसरे का लाभ' यहाँ दो बंदर हिंदुस्तान-पाकिस्तान है तो तीसरा बंदर इन दोनो का लड़ाकर लाभ पानेवाला हर वह राष्ट्र है। यहाँ सुरैय्या बड़ी मार्मिक टिप्पणी करते हुए तथ्य कथन करती है। सुरैय्या अपनी राजनीतिक ज्ञान का सबूत देते हुए अबीर से कहती है कि, ''अब तो हमारे देश को खुले आम आतंकवादी देश कहा जा रहा है, परंतु अबीर सच कह रही हूँ कि पाकिस्तानी अवाम शांति सुकून चाहती है। उसे भारत के प्रति नफरत या घृणा नहीं है।'' सुरैय्या के प्रस्तुत वाक्य दोनो देशों में अमन एवं शांति का संदेश देते हैं, जो की सराहणीय है।

10. दर्दनाक अंत :

राजनीति के बिगड़ते हालात और व्हिसा खत्म होने की दशा में सुरैय्या को पाकिस्तान रेल के रास्ते जाना पड़ा मगर बीच रास्ते में ही उसपर कई लोगों ने बलात्कार किया, उसके कपड़े तार-तार कर दिए, उसे कई दिनों तक खाना भी नहीं दिया गया। इन सब परिस्थितिओं के चलते सुरैय्या ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया और पाकिस्तान व हिंदुस्तान की सरहदों पर पागल होकर केवल अबीर को खोजती मिली। जब अबीर को उसके पाकिस्तान पहुँचने की इत्तला न मिली तब उसने उसे खोजने की कोशिश की, जब सुरैय्या मिली तो पूर्णत: प्रेमदिवानी बन चुकी थी उसका एक हाथ पाकिस्तान की सीमा पर तो दूसरा हिंदुस्तान की सरहद पर था और उसके प्राणपखेरु उड़ गए।

एक बेपनाह मुहब्बत करनेवाली प्रेमिका ने अपने असफल प्रेम के कारण स्वयं को स्वाहा कर दिया।

सुरैय्या पढ़ी लिखी, अपने पिता के गलत फैसले की शिकार, पति के वहशियाना दरिंदगी की शिकार और विवाह बाह्य असफल प्रेमिका जिस ने सरहदो की राजनीति की आलोचना की उसे सुधारने संबंधी अपने विचार व्यक्त किए पर अंतत: उसे अपने प्राणों की आहुती देनी पड़ी।

- **अबीर :**

'आना इस देश' उपन्यास का नायक अबीर है। उपन्यास में नायिका सुरैय्या की सहेली गीत के भाई अवधेश का वह करीबी दोस्त है। पढ़ा, लिखा, खुबसुरत यह युवक जयपुर की किसी कम्पनी में मैनेजर के पद पर काम करता है। वह इंदौर का रहनेवाला है। अबीर का सुरैय्या से परिचय गीत करारों देती है। गीत अबीर पर यह जिम्मेदारी सौंपती है कि वह सुरैय्या को उसके नाना-नानी से मिलाये। साथ ही उत्तर भारत के कई शहरों में भी सुरैय्या और अबीर साथ-साथ घुमते हैं। अबीर को भारतीय संस्कृति और परंपरा का सही ज्ञान है अत: सुरैय्या को वह अपनी परंपरा के बारे में विस्तार से जानकारी भी देता है साथ ही मुस्लिम परंपरा के प्रति भी अपनी आस्था प्र-प्रकट करता है।

अबीर और सुरैय्या इन दोनों का परिचय इतना दृढ़ हो जाता है कि उनमें अच्छी मित्रता बन जाती है और आगे यही मित्रता प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। भले ही अबीर और सुरैय्या का प्रेम सफल नहीं हो पाता फिर भी एक सच्चे प्रेमी के रुप में अबीर अपनी भूमिका अंत तक निभाता है। भारतीय परंपरा, भारतीय राजनीति के साथ-साथ विश्व की राजनीति का भी विस्तार से जानकारी रखनेवाला अबीर मानवतावादी और उतना ही संवदेनशील भी है। अबीर की चरित्रगत विशेषताओं का अध्ययन निम्नानुसार किया जा सकता है।

1. मानवतावादी :

अबीर और सुरैय्या कार से सफर कर रहे हैं, तभी सड़क पर एक दुर्घटना घटती है एक हिंदु परिवार और एक मुसलमान परिवार की कारे एक दूसरे से टकरा जाती है और जगह पर ही दो व्यक्ति दम तोड़ देते हैं। ऐसी हालत में कोई उन घायलों की मदद नहीं करता रास्ता बनाकर निकल जाते हैं। और वहाँ के सरफिरे कुछ गुंडे इस घटना को साम्प्रदायिक रुप देने का प्रयास करते हैं ऐसी अवस्था में अबीर सुरैय्या से पिछली सीट पर अस्पताल तक पहुँचाने की इजाजत लेता है और सामने मिले शख्श को अस्पताल में भर्ती करवाता है। घायल व्यक्ति का नाम खुर्शीद खान होता है जो जस्टीस कुरैशी का इकलौता बेटा है। जस्टीस कुरैशी अबीर के मानवीय व्यवहार को देखकर शुक्रगुजार बनते हैं और कहते हैं कि आप ने हिंदू होते हुए भी एक मुसलमान की जान बचाई तब अबीर कहता है ''कब तक हम पाकिस्तानीं व हिंदुस्तानी बने रहेंगे ?'' अबीर के प्रश्न में मानवीय भाव कूट-कूट कर भरा है। अपने आपको उसने धार्मिकता की संकीर्णता में नहीं बाँधा। विशाल हृदय का परिचय देते हुए उसने अपना दायित्व पूर्णत: निभाया नजर आता है।

2. ना समझ प्रेमी :

अबीर का विवाह मनु से निश्चित हो चुका है। मनु एक सॉफ्टवेअर इंजिनिअर है, अच्छा कमाती है। अपने करिअर को निखारना जानती है। विवाह निश्चित होने के बावजूद अबीर धीरे-धीरे सुरैय्या से मुहब्बत

करने लगता है। जब इस बात का पता सुरैय्या को चलता है तो अपनी सफाई में वह कहता है कि जमाने की आधुनिकता, पाश्चात्त्य प्रभाव, जिम्मेदारियों का संतुलन इन सब के कारण विवाह नहीं किया पर सच्चाई सुरैय्या बताती है कि, 'पब' क्लबों मे लड़कियों का आसानी से हासिल होना और विवाह की भूख ही न बचना यही वे कारण है जिसकी वजह से आप ने अब तक विवाह नहीं किया।

अबीर और सुरैय्या मनु का वास्तव जानने के बावजूद नासमझी करते हुए एक-दूसरे के और करीब आने लगते हैं। दोनों नशा भी करते हैं और नशे की खुमारी में शरीर संबंध स्थापित करते हैं। और ऐसा करने के बावजूद दोनों को इस कार्य का कोई पश्चात्ताप भी नहीं। दोनों मान लेते हैं कि किसी ने किसी से कोई वादा नहीं किया। यहाँ अबीर और सुरैय्या दोनों ही प्रेमी भावनाओं में बहकर अपना आपा खोनेवाले, काल की फिक्र न करनेवाले साबित होते हैं। उनके सामने राजनीतिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर व्हिसा के लिए संकट भी आते हैं इन सबका इलम होते हुए भी वे एक-दूसरे से प्रेम मे आकंठ डूब जाते हैं।

उपन्यास मे लव्ह जिहाद के मुद्दे को उठाया गया है। यहाँ अपनी शादी तय हो चुकी है इसका इल्म होते हुए भी अबीर सुरैय्या से प्रेम करता है। प्रेम में सारी हदे पार करने के बाद उसे पाकिस्तान भेज कर मनु से विवाह करता है। यहाँ अबीर के व्यक्तित्त्व में ऐसे इन्सान के दर्शन होते हैं जिसने दो जिंदगियों को तबाह कर दिया अपनी नसमझी के कारण।

3. असफल प्रेमी :

अबीर और सुरैय्या ने एक दूसरे से बेपनाह मुहब्बत की। राजनीतिक उथल-पुथल, व्हिसा की समस्याएँ, आंतरराष्ट्रीय तनाव, मनु की हकीकत इन सब के बावजूद वे एक दूसरे से बेपनाह मुहब्बत करते रहे । जब एक दूसरे से बिछड़ने का वक्त आया तो अबीर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता हुआ कहता है - ''सुरैय्या जिस पल मैं तुमसे प्यार कर बैठा उस समय मैं न हिंदू था न भारतीय मैं तो बस प्रेमी था।'' अबीर के यह वचन उसे हालात से मजबूर असफल प्रेमी करार देते हैं।

अबीर अपने प्रेम की असफलता को बयान करते हुए आगे कहता है, ''देखो सुरैय्या यह सच है कि अब हमारा मिलन सरल नहीं, पर क्या हमसे हमारी मुहब्बत कोई खींच सकता है ? वो तो शरीर व आत्मा के जर्रे-जर्रे में बंद है। लोग हमारी हत्या नहीं कर सकते। विपरित स्थितियों में भी अपने प्यार के प्रति हममें निष्ठा व साहस है। जिसे न पाकिस्तान न हिंदुस्तान खत्म कर सकता है।''

अबीर सारी सच्चाई को जानते हुए भी लगातार आगे बहता चला जाता है। उसमें न बगावत करने की शक्ति है न सत्य को मानने का साहस। वह तो हालात से समझौता करता एक असफल प्रेमी साबित होता है।

4. अपने प्रेम को स्वयं दफन करनेवाला प्रेमी :

एक ओर करीब आती हुई शादी, तो दूसरी तरफ राजनीतिक उथल-पुथल वहीं खत्म होता सुरैय्या का

व्हिसा, इन सबके चलते अबीर ने सुरैय्या को स्वयं पाकिस्तान रेल मार्ग से रुखसत कर दिया। और अपनी ही शादी के उलझनों में उलझा रहा। एक दिन पाकिस्तान फोन करने पर पता चला कि अब तक भी सुरैय्या अपने घर नहीं पहुँची तब अबीर ने उसे जहाँ छोड़ा था वहाँ से खोज शुरू की। अबीर को सुरैय्या मिली तो सही पर अब वो पागल बन चुकी थी। उसपर बलात्कार हो चुका था उसे इतनी यातनाएँ पहुँचाई गई थी कि वो अब एक जिंदा लाश बनकर रह गई थी। उसकी आँखे पत्थरा गई थी जो केवल अबीर को देखना चाहती थी। और अंतिम बार अबीर के दर्शन होते ही उसने अपना दम तोड़ दिया।

अबीर जिस सुरैय्या से बेहद प्रेम करता था आज वही प्रेम एक लाश बनकर उसके सामने था। अबीर ने पूरे सम्मान के साथ उसे अपने हाथो से दफन कर दिया। अबीर एक ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति है जो सबकुछ पाकर भी कुछ न पा सका, अपने प्रेम को स्वयं उसने दफन कर दिया।

- **सुरैय्या की दादी :**

सुरैय्या की दादी गोरी-चिट्टी और आकर्षक, रुबाबदार शखसियत रखती है। बोलने, चलने, खाने सब में एक अलग उनका अंदाज है। सफाई पसंद है। फ्लॅट में जगह की कमी के बावजूद गुलाबों की कई किस्मे उन्होंने लगाई है। जिससे व्यक्ति तरोताजा हो सके। दादी पाँच वक्त की नमाज पढ़ती है और रोजे के दिनों में गरीबों को ढूंढ-ढूंढ कर कंबल और लिहाफ बाँटती है। धार्मिक कट्टरता एवं भारत के विरोध से वे कोसो दूर है।

हिंदू-मुसलमानों के संदर्भ में दादी कहती है - ''क्या हिंदू क्या मुसलमान सब अल्लाह को ही याद करते हैं। हाँ, उन्हें याद करने का तरीका सबका अलग-अलग है।'' दादी एक उदात्त विचारों वाली खातून है।

सुरैय्या की दादी को गांधी की हत्या के बाद मजबूरन हिंदूस्तान छोड़ना पड़ा। गृह कलह की स्थिति में उनकी ओर एक भारतीय नागरिक की अपेक्षा एक मुसलमान की दृष्टि से देखा गया। उन्हें आग में झोंकने की कोशिश हुई इन सब से बचते-बचाते दादा व दादी दो अलग रास्तों से दर-दर भटकते हुए बाघा सीमा से प्रवेश करते हुए पेशावर, लाहौर होते हुए शरणार्थी कैम्प में कई दिनों तक पड़े रहे।

दादा-दादी शरणार्थी कैम्पो में छः महीने तक अलग-अगल भटकते रहे एक दिन मिलटरी के साथ खोजते-खोजते वे एक दूसरे से मिले। आज भी भारत छोड़ने का गम दादी को अत्यधिक है। पीछे छूटे रिश्तेदारों से वो बेपनाह मुहब्बत करते हैं, उनसे भारत आकर मिलना चाहते हैं, पर इसके लिए दोनों मुलकों की सियासत बीच में आ जाती है। आज भी उनके मन में अपना वतन जिंदा है।

दादी स्वयं कभी यहाँ नहीं आ पाई। इसीलिए यहाँ की मिट्टी, यहाँ के पकवान, यहाँ के गली-कोंच, यहाँ की मिठास बयान कर अपनी पोती को हिंदुस्तान भेज देती है। आज भी उनके जज्बातों में हिंदुस्तान जिंदा है। उनकी पोती सुरैय्या हिंदुस्तान आकर अबीर से प्रेम कर बैठी और अब अबीर ने उसे पाकिस्तान रुखसत कराया तो वहाँ पहुँच नहीं पाई। अंततः सुरैय्या की मौत के कारण दादीजान को हिंदुस्तान आना पड़ा अपनी नम निगाहों के साथ। दादीजान हिंदुस्तान आई जरुर पर एक ऐसा आघात उनके मन पर हुआ जिससे उभरना

उनके लिए नामुमकीन था। अबीर में उन्हें बार-बार हिंदुस्तान आने का न्योता दिया पर दादीजान बेपनाह गम के साथ पाकिस्तान रुखसत हुई।

4. सुरैय्या की नानी :

सुरैय्या के नाना-नानी रामपुर में रहते थे। सुरैय्या पहली बार उनसे मिलने आई है। नाना-नानी उससे मिलकर बेइंतहा खुश होते हैं। उसके मामू-खाला सभी उसे दुलार करते हैं। सुरैय्या अपनी नानी की बात फोन पर माँ से कराती है, माँ बेटी सालों बाद बात करके खुब रोते हैं, उनके इस रुदन में उनका स्नेह ही झलकता है। सुरैय्या ने अपने नानी के लिए कुछ तोहफे और मेवे लाए हैं जिन्हें देखकर नानी हर्षित होती है। नाना सुरैय्या को एक हजार रुपए देना चाहते हैं तो नानी अपने सोने के कंगन सौगात के रुप में सुरैय्या को देती है।

सुरैय्या की रुखसती पर उसे खूब तोहफे दिए जाते हैं। अपने रिश्तेदारों का इतना दुलार देखकर सुरैय्या भावविव्हल जाती है। और अपने मामू को पाकिस्तान आ बसने का न्योता देती है। तब मामू उसे जवाब देते हैं - ''सुरु ! हम यहाँ खुश है। मेरा बेटा सिव्हिल जज है। भतीजा इन्कमटैक्स ऑफिसर, हमे हमारे भारत में सुकून, चैन, आजादी है।'' मामू का प्रस्तुत कथन भारत में रहनेवाले मूसलमानों का प्रतिनिधित्त्व करता है जो सुकून से हिंदुस्तान में रह रहे हैं।

- **तरन्नुम :**

सुरैय्या की माँ रामपुर लखनऊ की रहनेवाली है। गांधीजी की हत्या के बाद उमड़े दंगों की वजह से उन्हें मजबूरन पाकिस्तान जाना पड़ा लेकिन आज भी जब उन्हें भारत की याद आती है तो यहाँ का रहन-सहन, मिठाईयाँ, पान, कबाब, चाट, मुर्गमुस्सलम आदि अनेक चीजों को याद करती है। मजबूरन वो पाकिस्तान चली गई वरना आज भी उनके हृदय में यहा की यादें ताजा है। अपनी पुत्री सुरैय्या को हमेशा भारत की रुहानी रिश्तों के बारे में बताती नहीं थकती तथा सुरैय्या प्रश्न पूछती है कि आप यहाँ आई क्यों ? तब वो जवाब देती है ''कौन अपना वतन मुल्क, छोड़ना चाहता है बच्ची। भारत में भी धार्मिकता का जुनून चढ़ा, आतंकवादी पैदा हो गए और गांधी जी के मरते ही हिंदू-मुस्लिम दंगों ने शहर-दर-शहर उजाड़ दिए।'' सुरैय्या की माँ तरन्नुम के प्रस्तुत विचार दंगों की त्रासदी का जीता-जागता सुबूत है।

सुरैय्या की माँ इतनी मानवतावादी है कि जब कभी गीत के पिता रामकृष्ण उनके यहाँ आते तरन्नुम किचन के बर्तन धो-धो कर उनका खाना बनाती क्योंकि वे वेजिटेरिअन थे। उनका मन खट्टा न हो इसलिए सुरैय्या की माँ पूरी अहतियात बरतती। उनका मान-सम्मान करती।

सुरैय्या की माँ परवेज से रिश्ता जोड़ते समय सुरैय्या के पिता को सारी बाते समझाती है, उम्र में बड़ा, रंडुआ व्यक्ति मेरी बेटी के मेल का नहीं, पर पिता को परवेज का अमीर होना भा गया। यहाँ एक माँ अपनी पुत्री के भविष्य को लेकर चिंतित होति नजर आती है।

सुरैय्या की माँ तरन्नुम की अंतिम ख्वाहिश है कि उसे रामपुर (हिंदूस्तान) में दफनाया जाय पर ये

नामुमकीन जानकर सुरैय्या जब भारत घूमने आती है तो एक मुठ्ठी मिट्टी अपने साथ ले जाती है ताकि उसकी आखरी ख्वाहिश पूरी हो सके। लेकिन एक समय ऐसा आता है कि अपनी जिंदगी की आखरी सांसे लेनेवाली तरन्नुम अपने पति को पाकिस्तान में छोड़ इलाज के लिए भारत आती है और यहीं परलोक सिधारती है। तरन्नुम की मृत्यू उसके वतनपरस्ती को ही दर्शाती है। सांस के आखरी समय औरत अपने पति के पास रहना पसंद करती है लेकिन तरन्नुम इसके विरुद्ध भारत में आकर दम तोड़ना ज्यादा पसंद करती है। तरन्नुम एक सच्ची भारतीय नारी सिद्ध होती है।

- **परवेज :**

परवेज उपन्यास की प्रमुख पात्र सुरैय्या का पति है। परवेज एअरफोर्स में काम करता है। परवेज रईस खानादान से है। बड़ी कोठी और ढ़ेर सारे नौकर-चाकर उसके यहाँ मौजूद है। वह शायराना मिजाज एवं खुले दिमाग का व्यक्ति है। सुरैय्या के पिता को केवल उसका रईस होना ही भा गया। वह तो सुरैय्या से दुगनी उम्र का व्यक्ति है जिसकी एक बीवी दम तोड़ चुकी है। परवेज की ऐसी अवस्था से सुरैय्या की माँ तरन्नुम रिश्ते से इन्कार करती है। लेकिन पिता सुरैय्या का निकाह परवेज से कर देते हैं।

परवेज एक संकीर्ण बुद्धि का व्यक्ति है। एक टी.व्ही. पत्रकार द्वारा सुरैय्या के लिए इंटरव्ह्यू एवं गायकी पेश करने की घटना से तुनककर पत्नी सुरैय्या से बदसुलूकी करता है। उसे जरुरत पड़ते पर चेहरे पर ॲसिड डालने तक की बात करता है। उसकी यह कृत्य उसकी मानसिक एवं वैचारिक संकीर्णता के दर्शन कराती है। सुरैय्या की खुबसुरती कहीं बरबाद ना हो इसलिए उसका हमल गिराने का परामर्श देता है। सुरैय्या उसके इस वहशीपन को चुपचाप सहन करती है। लेकिन जिस दिन यह वहशी दरिंदा 14 साल की फूफा की बेटी पर वहशाना हमला करता है तो सुरैय्या उसपर चाकू उठाकर बच्ची की हिफाजत करती है। इस घटना के पश्चात सुरैय्या अपने बच्चे सम्मेत अपनी माँ के घर चली जाती है पर परवेज बच्चे को कोर्ट द्वारा हासिल करना चाहता है पर बच्चा मर जाता है।

इस घटना के थोड़े ही दिनों बाद परवेज फिर किसी हसीना को शादी पढ़वाकर उसे फँसा लेता है। दूसरा ब्याह करने के पश्चात परवेज सुरैय्या को बुलाता है, पर सुरैय्या नहीं जाती क्योंकि उसे परवेज की दूसरी बीवी बनना मंजूर नहीं।

उपन्यास का परवेज एक ऐसा पात्र है जो दुनिया के सामने बड़ा खुशमिजाज एवं खुले दिमाग वाला व्यक्ति साबित होता है। पर अपनी पत्नी से वह वहशी व्यवहार करता है। चेहरे पर ॲसिड फेंकने की बात, हमल गिराने की बात, 14 साल की लड़की से बदसलूकी उसकी दरिंदगी एवं वहशीपन को साबित करता है।

- **गीत :**

गीत उपन्यास की एक सहाय्यक पात्र के रुप में सामने आती है। प्रमुख पात्र सुरैय्या और गीत की पहली मुलाकात दुबई में होती है। पहचान धीरे-धीरे बढ़कर घनिष्ठ मित्रता में बदल जाती है।

गीत एक ऐसी व्यक्ति है जो सुरैय्या के अनेक प्रश्नों का उत्तर साबित होती है। गीत-सुरैय्या को ड्राइविंग करने के लिए प्रोत्साहित करती है और सुरैय्या की रोजी रोटी का दरवाजा खुल जाता है। परवेज द्वारा दी गई यातनाओं से सुरैय्या को बाहर निकालने के लिए गीत हर मुमकीन प्रयास करती है। उसका दिल बहलता रहे इसलिए स्वयं अनेक जगह सुरैय्या को ले जाती है। अपने ही भाई के अजीज दोस्त अबीर से सुरैय्या की पहचान कराती है। दोनों की दोस्ती जब प्यार में बदल जाती है। तो दोनों को आग्रह भी करती है। इस प्यार के अंजाम से भी वाकिफ कराती है।

सुरैय्या दुबई में तो वह उसका साथ निभाती है और उसे अपने साथ अपने परिवार के बीच भारत भी ले आती है। अपने परिवार के बीच उसका मन बहलता रहे उसे किसी बात से ठेस ना पहुँचे इस ओर उसका विशेष ध्यान होता है।

हिंदु-मुस्लिम रिश्ते, हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बीच का तणाव, मुस्लिम स्त्री की दशा, विवाह संबंधी मान्यताएं अनेक विषयों पर वह सुरैय्या से विचार-विमर्श करती है। मानवीयता के धरातल पर वह हमेशा मानवीय संबंधों को श्रेष्ठ मानती है। उसके मन में कभी भी हिंदु-मुस्लिम भेद दिखाई नहीं देता।

गीत एक सहिष्णु एवं उदात्त विचारों वाली भारतीय नारी है जो विदेश में जाकर रही है और वहां भी अपने व्यवहार से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को अपनी कृति से सींच रही है।

3.3.2 'आना इस देश' : संवाद

कहानी तथा उपन्यास में 'संवाद' कथावस्तु की जान होते हैं। संवादों से कथावस्तु आगे बढ़ती है। उपन्यासकार संवादों के द्वारा अपने पात्रों का परिचय देता है। पात्रों के चरित्र को उजागर करने का काम संवाद करते हैं। कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा लिखित उपन्यास की पुरी कथावस्तु संवादों पर टिकी हुई है। उपन्यास में उपन्यासकार कई बार अपनी कथावस्तु को स्वयंकथन से ही आगे बढ़ाता है। ऐसे उपन्यासों में संवादों की मात्रा कम होती है, पात्रों का चरित्र घटनाएँ आदि बातों का कथन करते हुए उपन्यासकार उन बातों का वर्णन करता है। लेकिन उपन्यासकार की एक अन्य शैली में संवादों के द्वारा ही घटना का चित्रण तथा पात्रों के चरित्र चित्रित किये जाते हैं। ऐसे उपन्यास संवाद प्रधान होते हैं। उपन्यास में यह शैली महत्त्वपूर्ण होती है। 'आना इस देश' उपन्यास भी इसी शैली में लिखा मिलता है। वर्णनात्मकता की तुलना में इसमें संवादात्मकता अधिक मिलती है।

नाटक तथा एकांकी आदि में पात्र एक दूसरे के सामने होते हैं और वे एक दूसरे से बातचीत करते, अन्य परिवेश नाटककार मंच पर प्रत्यक्ष खड़ा करता है, कहानी तथा उपन्यास में संवादों के आसपास की परिवेश निर्मिति कथन तथा वर्णन के द्वारा की जाती है, जिससे संवाद और अधिक प्रभावपूर्ण होते हैं और पाठकों के लिए भी वे अधिक स्पष्ट होते हैं। संवाद प्रकट होने से पहले पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति का ज्ञान उपन्यासकार पाठकों को कराता है, साथ ही एक पात्र के संवाद का दूसरे पात्र की मनोवैज्ञानिकता पर क्या असर हुआ ये उस पात्र के जवाब से भी पता चलता है और साथ ही उपन्यासकार भी उस दशा को अपनी

वाणी में कथन करता है। दोनों विधाओं के संवादों में अंतर यह होता है कि नाटक आदि के संवाद पात्र खुद अभिनय के साथ प्रकट करते हैं और उपन्यास आदि के संवाद होते तो पात्रों के हैं लेकिन उसे पाठक पढ़ते हैं, इसमें अभिनय नहीं होता और पाठक की दशा, सुझबूझ तथा अन्य बातों पर यह निर्भर होता है कि संवाद कितने प्रभावी है। उपन्यास में संवादों की गति, उसका प्रभाव, परिणाम यह बातें पाठकों की स्थिति, गति आदि पर ही निर्भर होती है। यही वजह है कि संवादों के बाद भी उपन्यासकार को संवादों का विश्लेषण करना पड़ता है।

'आना इस देश' उपन्यास निश्चित ही संवादात्मक उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री अपनी ओर से बहुत ही कम बोलती है। उपन्यास की पूरी कथावस्तु संवादों के द्वारा ही आगे बढ़ती है। बहुत ही कम जगहों पर वर्णनात्मकता या कथनशैली का प्रयोग हुआ है अत: अधिकतर पात्र ही संवादों के द्वारा कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं। उपन्यास की पूरी कथावस्तु एक ऐसे पात्र को चित्रित करती है कि जिसका जन्म भले ही पाकिस्तान में हुआ है लेकिन उसकी जड़े भारतभूमि में धँस गयी है। एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से संवाद है। ऊपरी तौर पर यहाँ दिखाई देनेवाला संवाद दो पात्रों का संवाद है, लेकिन वास्तव में यहाँ एक देश की परंपरा दूसरी देश की परंपरा से, एक धर्म दूसरे धर्म से संवाद करते दिखाई देते हैं। उपन्यास में पात्र कम बोलते हैं बल्कि दो देश की परंपराएँ संस्कार ही अधिक बाते करते हैं। इस तरह के अनोखे संवादों को बड़ी खुबी से उपन्यासकार ने चित्रित किया है। उपन्यास की कथावस्तु भारत और पाकिस्तान के बीच की राजनीतिक स्थिति के साथ आगे बढ़ती है। उपन्यास के पात्र भी अपने बारे कम देश की राजनीति के बारे में अधिक बोलते हैं। यह संवाद व्यक्तिगत स्तर पर अधिक प्रकट नहीं होते बल्कि वर्णनात्मक जानकारी देने हेतु ही अधिक तर प्रकट हुए दिखाई देते हैं, जिससे संवादों में पाठकों को गति का अभाव दिखाई देता है।

'आना इस देश' उपन्यास के संवादो के विशेषताओं को लेकर चर्चा करते समय इस उपन्यास के संवादों की विशेषताओं के साथ उन्हें अलग-अलग प्रकारों से विश्लेषित भी किया जा सकता है। पूरे उपन्यास में निम्न प्रकार के संवाद दिखाई देते हैं।

1. छोटे, चुटकिले संवाद :

उपन्यास में अनेक जगहों पर छोटे-छोटे चुटकिले संवाद दिखाई देते हैं। प्रमुखत: नायिका सुरैय्या और नायक अबीर के बीच ही अधिक संवाद दिखाई देते हैं। अन्य पात्रों में गीत, अर्जुन, तरन्नुम, दादी और अन्य गौण पात्रों के संवाद है जो छोटे छोटे है फिर भी कथावस्तु को आगे बढ़ाने में उनका महत्त्व जरुर है। प्रारंभ में सुरैय्या और अबीर के बीच के संवादों का आरंभ भी प्रश्नोत्तर के रुपमें छोटे-छोटे वाक्यों से होता है, लेकिन इन छोटे-छोटे वाक्यों में भी एक दूसरे को जाँचने, परखने की अत: परिचय पाने की क्षमता है। ये छोटे-छोटे संवाद ही उपन्यास के प्रारंभ मे पाठकों को पात्रों का परिचय देने में सफल होते हैं।

इन छोटे छोटे संवादों में प्रश्न और उत्तर के साथ-साथ एक दूसरे को पहचानने की एक ललक है, जिससे पाठकों की जिज्ञासा भी कायम रहती है। पाठक इन्हीं संवादों से आगे बढ़ते बढ़ते पात्रों के चरित्र को और

उपन्यास के परिवेश को समझने में सफल होता है। जैसे –

''सुरैय्या भी पीछे-पीछे आ गई व पूछा –

''जनाब कहाँ से तशरीफ ला रहे हैं ?''

– आगरा से आ रहा हूं।

– आप तो मुहब्बत के मुकाम से आ रहे हैं, मैं भी आगरा ताजमहल, फतेहपुर सीकरी देखना चाहती हूँ।

– ''तो देर किस लिए। आ जाइए न।''

– ''जरुर कोई मौका मिले तो।''

– ''वो तो ढूँढने पड़ते हैं, जैसे अभी आपने ढूँढ़ा।'' मेहमूद हँसा।

– आप क्या वहाँ भी हमेशा पठानी लिबास ही पहनते हैं ?

– नहीं, एकदम नहीं, शर्ट-पेंट, पैजामा-कुर्ता, शादियो में शेरवानी भी पहनते हैं।''

ऊपरी संवादों से पाठकों को पात्रों का परिचय होता है। संवाद चुटकिले होने के कारण कथावस्तु बड़ी सहजता से आगे बढ़ती है। इन संवादों मे काफी सरल और सहजता है। संवादों की सहजता के कारण पाठक जब यह संवाद पढ़ते हैं तो मानो ऐसा लगता है कि हम ही पात्रों के साथ बातचीत कर रहे हैं। इन छोटे छोटे संवादों ने कथावस्तु की गंभीरता को ताड़कर उसमें सहजता लाने का प्रयास किया है।

उपन्यास में आए सभी गौण पात्रों का परिचय भी इन छोटे-छोटे संवादो के द्‌वारा ही होता है। उपन्यासकार की यह विशेषता रही है कि उन्होंने उन सभी पात्रों का परिचय संवादों के द्‌वारा ही दिया है, अपनी और से उन्होंने पात्रों का बहुत ही कम परिचय दिया है। उपन्यास के गौण पात्रों के चरित्र चित्रण के लिए हमे उनके द्‌वारा कहें संवादों पर ही अधिक निर्भर रहना पड़ता है। इन्हीं एक-दो वाक्यों के संवाद इन गौण पात्रों के चरित्र पर प्रकाश ड़ालने में सफल हुए हैं।

2. विस्तारित जानकारी देनेवाले संवाद :

'आना इस देश' यह उपन्यास भले ही ऊपरी तौर पर एक पाकिस्तानी नारी के जीवन की त्रासदी को प्रकट करता दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में यह एक राजनीतिक उपन्यास है। एक स्तर पर भारत और पाकिस्तान की राजनीति की अनेक समस्याओं को भी उपन्यासकार द्‌वारा प्रकट करती है। इस राजनीतिक चित्रण के लिए भी उपन्यासकार ने बड़े-बड़े संवादों का ही प्रयोग किया है। यह विस्तारित संवाद देश की स्थिति, गति, प्रसंग तथा अनेक घटनाओं की जानकारी देते हैं। चाहे तो उपन्यासकार अपने वर्णन मे अनेक प्रसंगों के बारे में विस्तार से बता सकती थी लेकिन उन्होंने ऐसा न करते हुएँ इन संवादों को पात्रों के मुख से उद्‌घटित किया है। उपन्यास की नायिका और नायक बड़ी सटीकता से विश्व और राष्ट्र की स्थितियों पर

बात करते हैं। ऐसे संवादों की भाषा पात्रानुकुल बन पड़ी है। पात्रों के मुख से आये इन संवादों से पात्रो के वैचारिक ज्ञान का पता चलता है। भले ही यह संवाद कई जगहों पर बोझिल हुए हैं, फिर भी इनके द्‌वारा राजनीतिक स्थिति तथा अनेक प्रासंगिक घटनाओं पर उपन्यास के पात्र बाते करते दिखाई देते हैं।

अनेक जगहों पर इन संवादों में कृत्रिमता आयी हुई थी दिखाई देती है, कुछ बातों की विस्तार से जानकारी देने हेतु उपन्यासकार ने जान-बुझकर कुछ संदर्भ इन संवादों के द्‌वारा प्रकट किये हैं। प्रसंगानुकुल कुछ संवाद पाठकों पर एक अलग प्रभाव छोड़ते हैं लेकिन इस उपन्यास में प्रकट हुए कुछ विस्तारित संवाद प्रसंगानुकुल नहीं है। प्रसंग घटना कोई भी हो राजनीतिक संवादों को बीच-बीच में घुसड़ने का उपन्यासकार का प्रयास कथावस्तु की सहजता को हानि पहुँचाता है। अनेक जगहों पर नायक-नायिका शृंगारिक परिवेश में भी एक दूसरे को राजनीतिक जानकारी देने हेतु संवाद करते हैं जो कृत्रिम लगते हैं। ऐसे विस्तारित संवादों में एकरसता का अभाव है।

3. वर्णनात्मक संवाद :

उपन्यास में संवाद कथावस्तु के लिए महत्त्वपूर्ण होते ही है लेकिन बीच-बीच में उपन्यासकार को सूत्रधार के रुप में अपनी ओर से कथन करना ही पड़ता है जिससे पाठकों को उस घटना तथा परिवेश की जानकारी मिलती है और पाठक उन पात्रों से अपना रिश्ता बना लेता है। अगर इन पात्रों और पाठकों के बीच सूत्रधार के रुप उपन्यासकार यदि अपना उचित दायित्त्व नहीं निभाता तो पात्र के संवाद मात्र कोरे बनते हैं और पाठकों को इनमें कोई रुचि पैदा नहीं होती। इस उपन्यास के अनेक वर्णनात्मक संवादों द्‌वारा यही हुआ है कि उपन्यास के दो पात्र आपस में अपनी ही बातों में इतने खोये हुए हैं कि लगता है औरों से उनका कोई रिश्ता ही नहीं है, इससे पाठक इन संवादों से ऊब जाता है। उपन्यास में कई जगहों पर इतने बड़े-बड़े संवाद है जिससे कथावस्तु मानो रुक गयी है। (उदाहरणार्थ, पृ- 68 पृ. - 77) लंबे लंबे वर्णनात्मक संवादों द्‌वारा अनेक घटनाओं का वर्णन पात्रों के द्‌वारा किया गया है, इन संवादो में आये राजनीतिक संदर्भो को देखते हुए पात्रों के बारे में पाठकों के मन अविश्वसनीयता पैदा होती है। ऐसे संवादों को बिना पढ़े भी यदि पाठक आगे बढ़ता है तो भी कथावस्तु समझने में उसे कोई दिक्कत नहीं आती।

नाटक और उपन्यास में यही अंतर होता है कि उपन्यासकार अपनी ओर से वर्णन करता है और पात्रों में आकर्षक संवाद होते हैं। इस उपन्यास में अनेक जगहों पर आये वर्णनात्मक संवादों द्‌वारा आवश्यक प्रभाव का निर्माण नहीं हो पाया है। इसकी एक वजह यह भी है कि संवादों के पहले की और बीच-बीच की स्थिति का वर्णन उपन्यासकार ने नहीं किया है। वर्णनात्मक संवादों से उपन्यास में एक बात यह भी हुई है कि पाठक लगातार संवादों में खोया रहता है। मानो उसे नाटक देखने का आभास होता है। ऐसे संवादो में कई बार एक ही वाक्य दो-दो बार भी आये है। संवादों की अखंडित शृंखला के कारण उपन्यास के देश-काल परिवेश का वर्णन प्रभावपूर्ण ढंग से नहीं हो पाया हैं।

4. भावनात्मक संवाद :

संवादों से पात्रों के चरित्रगत विशेषताओं का ज्ञान होता है। पात्र जब बोलते हैं तो उनके उच्चार, विचार तथा अभिव्यक्ति से पात्रों की वैचारिक, मानसिक स्थिति का ज्ञान भी पाठकों को होता है। भावनात्मक संवाद पाठकों के हृदय को छू लेते हैं, जिससे पाठको के मन में पात्रों के प्रति सहानुभूति तथा विश्वास प्रकट होता है। ''आना इस देश'' उपन्यास में भी अनेक जगहों पर इस तरह के संवाद मिलते हैं। सुरैय्या पढ़ी लिखी लड़की है वह अपने पैरों पर खड़ी है। सामाजिक स्तर पर उसके विचार बहुत ही सटीक, व्यवहारिक और कई जगहों पर प्रखर भी है लेकिन अनेक जगहों पर जब वह व्यक्तिगत स्तरपर आती है तो वह संवेदनशील बन जाती है। ऐसी जगहों पर उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री ने बड़े ही कोमल शब्दों का प्रयोग किया है। सुरैय्या, तरन्नुम, नाना-नानी आदि पात्रों के संवादो में उर्दु शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है जिससे वे संवाद और अधिक मधुर और कोमल बन गये हैं।

सांप्रदायिक संवादों के क्षणों में भी उपन्यासकार ने बहुत ही कोमल और सटीक शब्दों का प्रयोग किया है। सुरैय्या और अबीर के बीच के संवादो में दो प्रकार की संवेदना दिखाई देती है। दोनों भी अलग-अलग देश धर्म के हैं लेकिन एक दूसरे के देश-और धर्म के प्रति उन दोनों के बीच में आस्था है यही वजह है कि साम्प्रदायिक विषयों को लेकर चलनेवाली इनकी बहस भावनात्मक बन गयी है। दूसरी ओर अबीर और सुरैय्या के बीच पनपनेवाला प्रेम, उनके एकांत के पल, मिलन के क्षण और विरह का भय ऐसी स्थिति में व्यक्त संवाद भी कोमलता से अभिव्यक्त होते हैं। दोनों के मिलन के प्रसंगों को उपन्यासकार ने वर्णनात्मक रुप से नहीं बल्कि संवादों के द्वारा ही चित्रण किया है। जैसे -

''अबीर मस्त था, उसने धीरे से कहा, ''मैं आपके आर-पार होने को तड़फ रहा हूँ।'' मिलन के पश्चात सुरैय्या के मन की बात को उपन्यासकार ने बड़े काव्यात्मक रुप से प्रस्तुत किया है -

''जो हुआ वो गम नहीं,
न होता तो गम न था,
किसी की जुस्तजू भी नहीं।
जो मिला कम मिला, पर एक आरजू पूरी हुई।''

सारांश में अनेक जगहों पर संवादों में नायक-नायिका की संवेदनशील प्रकट हुई है। ऐसे जगहों पर कोमल तथा प्रभावपूर्ण शब्दों के प्रयोग से उपन्यास के संवाद पाठकों के लिए स्मरणीय बन गये है। संवादो में व्यक्त हुई भाषा सहज है ही लेकिन अनेक जगहों पर उर्दू शब्दों का प्रयोग मिलता है जो पात्रानुकुल है और आवश्यक भी है। लेकिन सामान्य पाठक भी इन संवादों को समझ पाता है। कथावस्तु के आरंभ से अंत तक कहानी संवादों से ही आगे बढ़ती है जिससे ऐसा लगता है कि पात्रों की बाते हमेशा पाठकों के कानों पर पड़ती है।

उपन्यास के तत्त्व 'संवाद' को देखते हुए निश्चित ही कहना होगा कि इस उपन्यास के संवाद प्रभावपूर्ण और सरस बन पड़े हैं। पाठको में कथावस्तु के प्रति रुचि पैदा करने में यह संवाद सफल बन गये हैं। सुरैय्या,

अबीर, गीत और अन्य गौण पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ उनके संवादों से ही अधिक प्रकट होती है। उपन्यासकार कृष्णा अग्निहोत्री संवादात्मक रुप से अपने कथ्य को प्रकट करने में सफल हो गई है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. सुरैय्या के सहेली का नाम ..... था।

   अ) सीता ब) गीत क) मिना ड) जीत

2. परवेज ..... जगह काम करता था।

   अ) मिलिट्री ब) नेवी क) एअर फोर्स ड) स्कूल

3. सुरैय्या की माँ का नाम ..... है।

   अ) झिनत ब) सक़िना क) समीना ड) तरन्नुम

4. सुरैय्या दुबई अपनी ..... के पास जाती है।

   अ) चाची ब) फूफी क) खाला ड) भाभी

5. सुरैय्या की माँ ..... शहर में दफन होना चाहती थी।

   अ) रामपुर ब) सीतापुर क) नागपुर ड) इन्दौर

6. हमारे मुहम्मद (स्व.) का कथन है कि वतन की मुहब्बत मनुष्य का ..... है।

   अ) ईमान ब) ईनाम क) ईबादत ड) इज्जत

7. बिल्ली के भाग से ..... टूटा।

   अ) छिका ब) छत क) छप्पर ड) छडी

8. 'दामन-ए-कोह' पर आप पेरिस के आयफेल टॉवर जैसे खडे होकर पूरे ..... नज़ारा देख सकते हो।

   अ) ईलाहाबाद ब) ईस्लामाबाद क) लाहोर ड) कराची

9. एक हाथ उसका पाकिस्तान की सीमा पर तो दूसरा ..... सीमा पर था।

   अ) चीन ब) जापान क) भारत ड) बांगलादेश

10. अबीर ने ..... फोन लगा दादी से सुरैय्या की खैरियत पुछी थी।

    अ) ईस्लामाबाद ब) लाहोर क) ईलाहाबाद ड) कराची

3.5 पारिभाषिक शब्द, अर्थ :

1. बरांडा : बरामदा
2. वाकिफ होना : ज्ञात होना, मालूम होना।
3. मजहब : धर्म
4. लिबास : कपडे
5. मयस्सर होना : आसानी से मिलना
6. लाजिमी : अनिवार्य
7. रुखसती : बिदाई
8. मुकद्दर : किस्मत
9. खाविंद : पति
10. हमसफर : जीवनसाथी

3.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1. गीत 2. एयरफोर्स 3. तरन्नुम 4. खाला 5. रामपुर
6. ईमान 7. छिंका 8. ईस्लामाबाद 9. भारत 10. कराची

3.7 सारांश :

1. उपन्यास में चित्रित सभी पात्र यथार्थ रुप में चित्रित हुए हैं।

2. उपन्यास को नायिका सुरैय्या के जीवन की त्रासदी को प्रकट करने में उपन्यासकार पूर्णरुप से सफल हुए हैं।

3. नायिका प्रधान इस उपन्यास में नायिका के व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलू के दर्शन होते हैं।

4. दूसरी ओर उपन्यास का नायक अबीर का चरित्र भी यथार्थ की भावभूमि पर हुआ है, इसमें कहीं भी आदर्शवाद नहीं दिखाई देता।

5. वास्तव में इस उपन्यास के दोनों प्रमुख पात्र दो अलग-अलग संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। नायिका सुरैय्या ईस्लाम धर्म की अपनी परंपराओं के साथ-साथ आधुनिक नारी के रुप में भी सामने आती है, तो हिंदू संस्कारों में पला अबीर भावना के स्तर पर अपने संस्कारों से भी मुक्त होता है।

6. अन्य गौण पात्रों का भी यथार्थ चित्रण उपन्यास में हुआ है। सशक्त चरित्र के आधार पर यह उपन्यास सफल बन पड़ा है।

7. उपन्यास के संवाद भी यथास्थिति आवश्यक रुप में प्रकट हुए हैं, कहीं-कहीं पात्रों का वार्तालाप व्यक्तिगत स्तर पर भी हुआ है जिससे पाठक कुछ जगहों पर उब भी जाता है। फिर भी उपन्यास संवादात्मक बन गया है।

8. पात्रों के संवादों से ही उनके व्यक्तित्त्व का परिचय प्राप्त होता है। सारांश में चरित्र-चित्रण संवाद इन दो तत्त्वों को लेकर यदि उपन्यास की समीक्षा की जाये तो यह एक सफल उपन्यास बन गया है।

3.8 स्वाध्याय :

1. 'आना इस देश' उपन्यास की नायिका सुरैय्या की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. असफल प्रेमी अबीर की मानसिकता को स्पष्ट कीजिए।
3. सुरैय्या के मानसिक उद्वेलन का परिचय दीजिए।
4. 'आना इस देश' उपन्यास के संवादों की समीक्षा कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'आना इस देश' उपन्यास पर आधारित मराठी में निबंध लिखिए ।
2. इस उपन्यास को मद्देनजर रखते हुए, मराठी में कहानी लिखिए ।
3. उपन्यास की कथावस्तु के आधार पर मराठी में लघुनाटिका लिखकर मंचन करने का प्रयास कीजिए ।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. बात एक औरत की (उपन्यास) - कृष्णा अग्निहोत्री
2. जोधा-मीरा (उपन्यास) - कृष्णा अग्निहोत्री
3. नीलोफर (उपन्यास) - कृष्णा अग्निहोत्री
4. लगता नहीं है दिल मेरा (आत्मकथा) - कृष्णा अग्निहोत्री
5. और-और-औरत (आत्मकथा) - कृष्णा अग्निहोत्री

●●●

सत्र 5 : इकाई 4
आना इस देश :
देश काल तथा वातावरण, भाषाशैली, उद्‌देश्य, समस्याएँ

अनुक्रम :

4.1 उद्‌देश्य।

4.2 प्रस्तावना ।

4.3 विषय – विवेचन ।

4.3.1 'आना इस देस' : देश काल तथा वातावरण (परिवेश) ।

4.3.2 'आना इस देस' : भाषा – शैली ।

4.3.3 'आना इस देस' : उद्‌देश्य ।

4.3.3 'आना इस देस' : समस्याएँ ।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

4.6 स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

4.7 सारांश ।

4.8 स्वाध्याय ।

4.9 क्षेत्रीय कार्य ।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

4.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई को पढने पर आपको -

1) कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने इस उपन्यास में देश–काल–वातावरण की दृष्टि जो वर्णन किया है उसका परिचय होगा ।

2) देश की दृष्टि से इस उपन्यास में लेखिका ने जिन स्थानों का वर्णन किया है उन स्थानों की आप को जानकारी होगी ।

3) काल की दृष्टि से इसमें जो वर्णन किया है उस कालखण्ड का, उस समय की बाह्य स्थितियों की जानकारी होगी ।

4) उपन्यास में वर्णित भारत और पाकिस्तान दोनों देशों मे बॅटवारे के बाद जीस तरह का बाहय एवं आंतरिक वातावरण पनप रहा है उसका सही परिचय होगा ।

5) उपन्यास अलग-अलग परिवेश से गुजरता रहता है अर्थात इसका कथानक भारत, पाकिस्तान, दुबई, चीन सीमाएँ आदि पर प्रकाश डालता है । इस में प्रयोगीत भाषा के अलग-अलग ढंग, गजल, कविता, शायरी, कहावतें, आदि के विविध भाषा प्रयोग की जानकारी होगी ।

6) आतंकवादी गतिविधियों की भयंकरता का इसमें साक्षात्कार होता है ।

7) साम्प्रदायिक संघर्ष की तीव्रता का ज्ञान इससे भलि-भाँति होता है ।

8) देश की आजादी के बाद बँटवारे ने दोनों देशों की की गई दुर्गति की सही जानकारी इसमें आपको होगी ।

9) इसके व्द्रारा मानवतावादी विचारों का महत्त्व आपके समझ में आएगा ।

10) 'सर्व धर्म समभाव' यही हर धर्म के मनुष्य के मानवपन का सही मूल्य है इसका ज्ञान आपको होगा ।

4.2 **प्रस्तावना :**

हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास विधा सबसे सशक्त साहित्यिक विधा मानी जाती है । समीक्षकों के अनुसार यही एक ऐसी गद्य विधा है जिसमे माननीय समाज का सर्वांगीण चित्रण बढी ही सूक्ष्मता एवं वास्तविकता से किया जाता है । कृष्णा अग्निहोत्री व्दारा प्रस्तुत किया गया, 'आना इस देश' यह उपन्यास इस बात का सही प्रमाण है । लेखिका ने इस उपन्यास में आजादी के बाद भारत एवं पाकिस्तान के बीच हुए बॅटवारे ने निर्माण की गई दुश्मनी, जिससे दोनों देशों के बीच पिछले साठ-सत्तर सालों से चल रहे साम्प्रदायिक संघर्ष तथा आंतकवादी गतिविधियों से निर्माण हुई भयंकर स्थिति पर बढे ही प्रामाणिकता एवं वास्तविकता से प्रकाश डाला है । इस उपन्यास में चित्रित कथानक को सजीव बनाने के लिए लेखिका ने 'देशकाल वातावरण' इस औपन्यासिक तत्त्व का बडी ही सशक्तता से प्रयोग किया गया है । भारत-पाकिस्तान और चीन सहित अलग अलग स्थानों का ऐतिहासिक, भौगालिक, आध्यात्मीक स्थानों का बाजार और धर्मस्थलों का वर्णन इस उपन्यास की कथावस्तु की सजीव बनाता है । आतंकवाद का जो डर, भय, प्रारंभ से चितारा गया है, उसकी गंभीरता इसी चित्रण से कभी तीव्र बनी तो कभी तणाव मुक्त स्थिति निर्माण की है । इसी तत्व के समान लेखिका ने भाषा और शैली के भी विविध प्रयोग यहां प्रस्तुत करते हुए अपनी कुशलता का परिचय दिया है । इसमें चित्रित केंद्रीय विषय आंतकवादी गतिविधियों से होनेवाला भारत-

पाकिस्तान दोनों देशों का नुकसान है । इस केंद्रीय समस्यापर उपचार बताते हुए लेखिका ने इस उपन्यास के उदेदश्य तत्त्व को प्रस्तुत किया है । जो सर्व धर्म समभाव, साम्प्रदायिक एकता, मानवतावाद, विश्वशाति, इन्सानियत आदि मानविय मूल्यों की अनिवार्यता का महत्त्व स्पष्ट करता है । प्रस्तुत इकाई में इस उपन्यास में चित्रित इन्हीं बातों कीं विस्तृत चर्चा की गई है ।

4.3 **विषय – विवेचन :**

कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा लिखित 'आना इस देश' यह लघु उपन्यास समीक्षात्मक दृष्टि से देखे तो यह एक सफल एवं उच्च कोटी की रचना रही है। इसमें लेखिका ने एक करुणामय प्रेम कहानी के माध्यम से साम्प्रदायिक भय का, घिनौनी धार्मिकता का, भयंकर राजनीति और निर्दयी आतंकवाद का अत्यंत प्रामाणिकता से बेबाक चित्रण प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि यह लघु उपन्यास औपन्यासिक तत्त्वों के मापदंड में भी परिपूर्ण प्रमाणित होता हुई दिखाई देता है। कथावस्तु, चरित्र–चित्रण आदि तत्त्वों के मापदंडो में लघु उपन्यास जीतना प्रभावात्मक तथा सफल रहा है, अन्य औपन्यासिक तत्त्वों की दृष्टि से देखे तो यही सफलता एवं प्रभावात्मकता कायम रखी हुई है।

4.1.1 **'आना इस देश' : देश काल तथा वातावरण**

हालांकि उपन्यास मूल्यांकन करते समय देशकाल–वातावरण या परिस्थिति का उल्लेख परम्परागत तत्त्व के रुप में कम–अधिक महत्त्वपूर्ण मानकर अब तक किया जाता रहा है। इसमें भौगोलिक अथवा सामाजिक स्थितियों का वर्णन उपन्यास की कथावस्तु या चरित्रों के चारित्रिक विकास या ऱ्हास की स्थितियों को उजागर करने के लिए किया जाता रहा है। किंतु द्वितीय महायुद्ध के बाद पश्चिमी औद्योगिक क्रांति तथा अपरिमित वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों की प्रखरता ने समस्त मानव जाति की बौद्धिक, मानसिक तथा सामाजिक चेतना को कुंठित एवं प्रसारित कर दिया है। भौतिक उपकरणों तो परमाणु अस्त्रों की भयावहता और अमानवीय व्यवस्था की विभीषिका ने मनुष्य प्राणी को भयाक्रांत, निरीह और असाहय कर दिया है। मानो द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका ने संपूर्ण मानव जीवन को बदल दिया है। मानवीय मूल्यों को तथा जीवनमानों को बदलकर एक नए परिवेश को जन्म दिया है। जिसके सामने आज हर एक व्यक्ति अपनी जीजिविषा के होते हुए भी असहाय तथा घुटने टेकने को मजबूर है। यही परिवेश आज साहित्य की विविध विधाओं में केंन्द्रवर्ति स्थान ग्रहण कर चुका है। यह परिवेश देशकाल–वातावरण तत्त्व के विपक्षी के रूप में अवतरीत नहीं हुआ है बल्कि इसका अपना एक अलग स्थान है। आज के हिंदी उपन्यास सहित सभी विधाओं में यह तत्त्व स्वतंत्र सज्ञा के रुप में प्रतिष्ठित हो चुका है। यही कारण है कि आज और अब उपन्यास विधा के अंतर्गत आनेवाली हर एक रचना का मूल्यांकन या समालोचन इसी बदले हुए मूल्यात्मक तत्त्व परिवेश को केंद्र में रखकर किया जाने लगा है। अर्थात परिवेश के रुप में समीक्षकों द्वारा उपन्यास में रचनाकार द्वारा चित्रित बाह्य जगत का लेखाजोखा परखा जाता है। उपन्यास में अलिखित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, प्राकृतिक प्रभाव को ग्रहण करके उसकी चर्चा की जाती है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में चित्रित परिवेश की चर्चा करते समय इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि परिवेश के निर्माण में उपन्यासकार का मूल लक्ष्य तथा उद्देश्य क्या है? क्योंकि

आधुनिक उपन्यासों में कथा तथा चरित्र के सुगठित रुप को क्षत-विक्षत करके परिवेश यह तत्त्व स्वयं केंद्र में आ गया है। डॉ. दंगल झाल्टे के अनुसार ''समस्त आधुनिक उपन्यास साहित्य का सर्वेक्षण करने पर एक बात स्वयंसिद्ध हो जाती है कि उपन्यास के केन्द्र से कथावस्तु और चरित्र तिरोहित होने के साथ ही परिवेश के आक्रमण ने वह केंद्रीय स्थान ग्रहण कर लिया है। यह परिवेश अनंत शक्ति तथा उसके शक्तित्त्व के विविध कोणों को उभारकर उसे एक नई अर्थवत्ता देने के लिए क्रियाशील रहता है। परिवेश के अच्छे-बुरे, मंगलमय अथवा भयावह आदि अनेक भिन्न-भिन्न कोण मनुष्य स्थितियों का यथार्थ एहसास कराके उसके जीवन को इन सबके बीच से उबारकर एक नई दिशा और मूल्यवत्ता प्रदान करने के लक्ष्य से ही चित्रित किए जाते हैं। परिवेश के आक्रमण की परिश्रमपूर्वक की गई अभिव्यक्ति ने यथार्थ के प्रति हमारी धारणा को अधिक मूर्तता दी है। इससे उपन्यास का अवकाशात्मक आयाम समृद्ध होता है।'' (पृ. 105, उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान) डॉ. झाल्टे सहित अनेक समीक्षकों द्वारा चर्चित विचारों से यहीं बात भलि-भाँति स्पष्ट होती है कि 'परिवेश' औपन्यासिक समीक्षा का नया मापदंडात्मक तत्त्व है। जिसका चित्रण उपन्यासकार अपनी-अपनी रचनाओं में वास्तविकता से ही नहीं तो अत्यंत बेबाकी से करना पाठकों और समीक्षकों की दृष्टि से अनिवार्य माना जाता है। प्रस्तुत उपन्यास 'आना इस देश' में चित्रित परिवेश ऊपरलिखित सभी तात्विक मापदंडों को स्वीकारते हुए लिखा गया उपन्यास लगता है क्योंकि इसमें चित्रित परिवेश समीक्षा की सभी कसौटियों पर खरा उतरता हुआ दिखाई देता है। उसका सामान्य परिचय इस प्रकार -

'आना इस देश' उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने एक साथ सभी बाह्य स्थितियों को बड़ी सजीवता से साकार किया है। उपन्यास में पिछले साठ-सत्तर साल में भारत और पाकिस्तान के बीच घटी हुई हर स्तर की घटना का बड़ी ही तटस्थता से वर्णन किया है। बटवारे के पहले और बटवारे के बाद आज तक इन दो देशों के बीच राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र सहित विश्व स्तर पर घटनेवाली घटनाओं का भी वर्णन बड़ी ही प्रामाणिकता से किया हुआ दिखाई देता है। इन दोनों देशों के बीच आजादी के पूर्व और आजादी के बाद अब तक जो तणाव की स्थिति है। उस स्थिति का यथार्थ वर्णन ही इस लघु उपन्यास का परिवेश है। राजनीति के स्तर पर दोनों देशों की रही पहचान पर इस उपन्यास में लेखिका ने बड़ी निडरता से चर्चा की है। उसके अनुसार आज ''पाकिस्तान को खुले आम आतंकवादी देश कहा जाता है'' (पृ. 79) उसकी तुलना में भारत आज भी सुंदरता, परंपराओ व विभिन्न संस्कृतियों वाला देश है। इस पर भारत में फैले घिनौनी राजनीति मंत्रियों की स्वार्थांधता, गुनहगारों को बार-बार मुआफ करना और पड़ोसी मुल्क द्वारा बार बार भयंकर हमला करके भी केवल इशारा देने तक की हिम्मत दिखाना ही आज के हमारे देश का सच्चा परिवेश है जिस पर लेखिका ने बॅ. जीना से लेकर अफजल गुरु तक ने खेली घिनौनी राजनीति और सैकड़ो मछुआरों की कैद से लेकर सरबजीत का शव मिलने तक के विविध घटित घटनाओं के माध्यम से राजनीतिक परिवेश का जो मौहोल लेखिका ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है वह एक ओर वास्तविक है ही दूसरी ओर तटस्थता के कारण बेजोड़ बना है। राजनीतिक परिवेश की यही तटस्थता उपन्यास को न पाकिस्तानी द्वेष्टा बनाता है न भारतीय प्रेमी बनकर हिन्दुत्ववादी लगता है। वह तो पाकिस्तान-भारत सहीत चीन के बीच तनाव निर्माण करनेवाले सभी छोटी-मोटी राजनीतिक गतीविधियों का लेखा-जोखा है। जो इतिहास के पन्नों पर

जीतना प्रामाणिक एवं जीवंत है उससे कई गुणा ज्यादा इस उपन्यास में लेखिका ने उसे परिवेश के रुप में सजीवता से साकार किया है।

उपन्यास में चित्रित सामाजिक और धार्मिक परिवेश प्रारंभ से अंत तक अर्थात संपूर्ण रचना पर छाया हुआ है। मानो यह पूरा उपन्यास ही सामाजिक और धार्मिक आचार-विचारों का बखान है। उपन्यास में वर्णित सुरैय्या और अबीर की प्रेमकहानी इसी परिवेश कें भय से भयभीत होकर दु:खांत की ओर प्रवाहीत होती हुई दिखाई देती है। इसमें दो धर्म में विभाजित दो समाज का चित्रण लेखिका ने उनकी सभी अच्छी-बुरी मान्यताओं को प्रस्तुत करते हुए किया है। उपन्यास में चित्रित सामाजिक परिवेश हिंदु और मुस्लिम समाज की आम धारणाओं की, उनके सामान्य आचार-विचारों की पहचान कराता है। जैसे की आम जनता को द्वेष, वैर, गर्व, जातीयता, साम्प्रदायिक विद्वेष, धार्मिक संघर्ष, जातीय प्रभुत्व आदि से कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें बस अपना निजी जीवन सुख-शांति और एकता तथा सर्व धर्म समभाव जैसे मानवतावादी दृष्टि से एक दूसरे के साथ जीना है और रहना है। दोनों समाज की हर पीढ़ी इन्हीं विचारों से अपना सामाजिक जीवन बटवारे के पहले और बटवारे के बाद अब तक जीने की कोशिश करती आ रही हैसही कारण है कि कभी कभार इन दो समाजों के बीच विद्वेष फैल भी गया तो कुछ समय के बाद दोनों समाज फिर एक बार शांति और सुकून से अपना दैनंदिन सामाजिक जीवन जीते हुए दिखाई देते हें। सुरैय्या से बात करते हुए भारत में दोनों समाज अर्थात हिंदु और मुस्लिमों की इसी सामाजिकता की पहचान कराते हुए महमूद ने कहा था कि ''सब खुली हवा में सांस लेते हैं और अपनी इच्छा नुसार जीते हैं। मेल मुलाकातों में कभी सम्प्रदाय अडंगे नहीं डालता। जो नफरत 1947 में जन्मी थी, वो बस आग ठंडी है, बस चिंगारी शेष है, जो हवा लगते ही भडकती है। बुझती है और फिर वही रोज का ढर्रा।'' (पृ.17) समाज के इसी परिवेश का चित्रण लेखिका ने आगे सुरैय्या के मामू (पृ. 28) और गीत-अर्जुन (पृ. 69) तथा सुरैय्या की दादी आदि के विचारों तथा चर्चाओं के माध्यम से उपन्यास में सामाजिक परिवेश का चित्रण अत्यंत प्रामाणिक से किया है। सामाजिक परिवेश की तुलना में इस उपन्यास में लेखिका ने धार्मिक परिवेश का जो चित्रण किया है वह अधिक बेबाक किया गया है। बटवारे के पूर्व जो संघर्ष शरू हुआ था बटवारे के बाद आज तक वही धार्मिक संघर्ष किस प्रकार से और कितनी भयंकरता से चल रहा है इस बात का सही सही चित्रण इसमें लेखिकाने अत्यंत प्रामाणिकता से किया है। धार्मिक संघर्ष जी कि सांम्प्रदायिक संघर्ष इस उपन्यास पर इस कदर छाया हुआ है कि इसकी मुख्य कथा, गौण बन चुकी है और पूरा उपन्यास ही भारत और पाकिस्तान के बीच के साम्प्रदायिक संघर्ष का ऐतिहासिक दस्ताऐवज का रुप धारण करता हुआ लगता है। जिसमें सुरैय्या और अबीर की प्रेम कहानी संवरने के बजाय बिगड़ जाती है। धार्मिक अर्थात साम्प्रदायिक संघर्ष के इस परिवेश में उपन्यास में चित्रित हिंदु-मुस्लिम सभी चरित्रों का दैनंदिन (नीजि) जीवन नरकसा बना दिया है। बटवारे के पहले और बाद में न चाहते हुए भी सुरैय्या की दादी को, अम्मी को, इस वतन को छोड़ने का दु:ख सहन करना पड़ा था। (पृ. 14 से 19) भारत और पाकिस्तान इन दोनों देशों में घटी हुई हर घटना का ताल्लुख साम्प्रदायिकता से रहा है। लेखिका ने उसी तरह से इस उपन्यास में हर घटना का वर्णन किया है। उनके अनुसार ''धर्मांधता बुरी है'' (पृ. 29) जो लोगों को गुमराह करती है, भयभीत करती है। मुल्ला-मौलवी पंडीत अपने अपने धार्मिक लोगों को भयभीत करते हैं,

डराते हैं। ऐसा ही पाखंड हर जगह है। मंदिर मस्जिद जैसी पाक जगह आज हथियार जमा किए जाते हैं। आतंकवाद इसी परिवेश ने पाल-पोसकर बड़ा किया हुआ भस्मासुर है। छोटी-छोटी गलत वार्ता पर फतवे निकालकर आम लोगों का जीना हराम करनेवाले दोनों धर्मों के पाखंड़ी ठेकेदारों का खूंखार चेहरा बेनकाब किया है। इस भयंकर परिवेश के बीच भी इस उपन्यास में लेखिका ने कुछ ऐसी घटनाएँ, पात्र एवं स्थितियों का इस कदर चित्रण किया गया है जिससे पढ़कर पाठकों के मन में भारत और पाकिस्तान में रह रहे आम जनता के मन में सर्व धर्मसमभाव की भावना किस तरह पनप रही थी और आज भी उसी भावना से लोग किस तरह एक-दूसरें से जुड़ गए हैं इस बात का परिचय होता है। इसी भावना से मानवतावादी धर्म के विचारों को दोनों देशों में एक न एक दिन विकास हो जाएगा। इस तरह की इच्छा व्यक्त करते हुए लेखिका ने परिवेश तत्त्व को उद्देश्य तत्त्व के साथ जोड़कर अपनी मानवतावादी सोच सहित खूद की काबिलियत को प्रमाणित किया है। इसके अतिरिक्त लेखिका ने उपन्यास में करांची (पाकिस्तान) दुबई, इन्दौर, जयपुर, आगरा, दिल्ली, मुंबई, ओंकारेश्वर, रामपुर आदि स्थानों का भौगोलिक एवं प्रादेशिक चित्रण इतनी सजीवता एवं प्रामाणिकता से किया है कि पूरा उपन्यास ही परिवेश की कसौटी पर खरा उतरता है।

4.3.2 'आना इस देश' : भाषा-शैली

किसी भी उपन्यास कृति की समीक्षा करते समय महत्त्वपूर्ण माने जानेवाले कथावस्तु, चरित्र-चित्रण आदि परंपरागत तत्त्व जहाँ नए परिवेश और नए रचना प्रक्रिया के दौर में टूटकर बिखर गए हैं वहाँ भाषा तत्त्व आधुनिक उपन्यासों के प्रयोगधार्मिता में एक अनिवार्य तथा मूल्यवान तत्त्व बनकर साकार हुआ है। इन आधुनिक उपन्यासों में 'भाषा' तत्त्व एक स्वतंत्र सज्ञा तत्त्व बन गया है। इसे कुछ समीक्षक उपन्यास का मध्यवर्ति तत्त्व भी मानने लगे हैं और उसी के आधार पर आज उपन्यास कृति की वे समीक्षा करने लगे हैं। इस दृष्टि से देखे तो भाषा तत्त्व आज के समीक्षकों के अनुसार औपन्यासिक तत्त्वों में एक जबरदस्त मूल्यवान तत्त्व है। क्योंकि उनके अनुसार यहीं तत्त्व उपन्यास को गतिशीलता, अर्थवत्ता तथा मूलवत्ता प्रदान करने में अहम भूमिका अदा करता है। वैसे तो यह भाषा मनुष्य के आंतरिक भाव-भावनाओं को अभिव्यक्त करनेवाला एक सशक्त माध्यम होता है। भाषा 'भाववाहिनी' होती है क्योंकि वह मनुष्य के भावनाओं का वहन करती है। इसका प्रयोग सामान्य रुप से साहित्य के विविध विधाओं में अलग-अलग ढ़ंग से किया जाता है। उपन्यास क्षेत्र में भी भाषा का साधारणत: दो प्रकार से प्रयोग किया जाता है। एक उपन्यासकार की अपनी ओर से और दूसरा उपन्यास में चित्रित चरित्रों की ओर से। उपन्यासों में प्रयोगित इन दोनों प्रकार की भाषा से औपन्यासिक रचनाधर्मिता को एक तरह से गरिमा प्राप्त होती है। इसके बावजुद आज के उपन्यासकारों ने भाषा को तीव्र सम्प्रेषणक्षम बनाने की दृष्टि से सभी प्रकार के नए-नए भाषिक प्रयोग अपनी-अपनी रचनाओं में किए हुए हैं। अज्ञेय जी के अनुसार ''आधुनिक उपन्यासकार अनुभूति और संवेदना को अधिक महत्त्व देते हैं जिसके कारण वे औपन्यासिक शिल्प से भी अधिक भाषा पर अपना ध्यान केंद्रित करते है क्योंकि संवेदना, अनुभूति और भाषा का एक दूसरे से गहरा संबंध है। उनके उपन्यासों की भाषा सीधे परिवेश और जीवन यथार्थ से उद्‌भूत होने का कारण विचारों, भावो एवं अनुभूतियों को जीवंत वाणी दे सकती है।'' (आत्मनेवद पृ. 36) इस तरह हिंदी

साहित्य क्षेत्र में कार्यरत नए उपन्यासकारों ने भाषिक स्तर पर नए-नए प्रयोग करते हुए उपन्यास की सर्जनात्मकता, कलात्मकता, भाषात्मकता, प्रतीकात्मकता, सहजता, गहनता, बिम्बात्मकता आदि विशेषताओं का निर्वाह बड़ी सहजता से किया है। कृष्णा आग्निहोत्री द्वारा प्रस्तुत 'आना इस देश' उपन्यास इस बात का सही प्रमाण है। क्योंकि इस उपन्यास में लेखिका द्वारा प्रयोगित भाषा औपन्यासिक तब की दृष्टि से आवश्यक रही सभी विशेषताओं से परिपूर्ण भाषा का एक सशक्त उदाहरण लगती है।

'आना इस देश' उपन्यास की भाषा कोमल, विचारोक्त, गंभीर साथ ही साथ अपनी प्रौढ़ता का परिचय देती है। इसमें पात्रों के मानस भाव को प्रगट करने की सहजता भी रही है। इसमें लेखिका ने कहीं कहीं पर विचारों की सूत्रबद्धता तो कहीं कहीं पर साधारण वर्णनों से प्रस्तुत किया है। मूलत: इस उपन्यास की रचनाकार एक स्त्री होने से संपूर्ण उपन्यास में कई बार काव्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। जिससे उपन्यास में एक अलग ढंग की संगीतात्मकता निर्माण हुई है। उर्दु, अंग्रेजी, बंगाली, पंजाबी शब्दों का प्रयोग लेखिका ने बड़ी सहजता से किया है। संवादों में प्रयोगित भाषा, कोमलता और विचारों की स्पष्टता प्रगट करती है। जैसे -

- '' तुम से सदा के लिए बिछड़े मुझे गवारा नहीं। मन करता है कि शादी से इंकार कर दूँ, पर वे लोग मेरे में पनपते प्यार की लंबाई नहीं नाप सकेंगे। उल्टे दो परिवार तहस-नहस हो जाएंगे।

- यह सब तो हमें पहले ही से पता था न ?

- पर क्या कुछ सोच व तय करके ही प्यार होता है।

- हाँ, सोचा था कोई अधिक झगड़ा फसाद न होगा।..... यदिं ये सब मारे गए तो मेरा जीवित रहना कठिन होगा और सुरैय्या जिस पल मैं तुमसे प्यार कर बैठा उस समय मैं न हिंन्दु था न भारतीय मैं तो बस प्रेमी था।

- मैं भी नहीं चाहूँगी कि मेरे लिए तुम आग पर ही चलों। यूं तो कैसी भी फितरत हो। मुहब्बत को कोई मिटा नहीं सकता अबीर। क्योंकि जजबात न तो हिन्दू होते हैं न मुसलमान।..... (पृ. 59)

******

''अबीर, मुझे मुस्लिम होने पर नाज है और मैं प्यार के लिए भी धर्म परिवर्तन सोच भी नहीं सकती। यदि तुम्हारी अम्मी मुझसे यही कहेगी किं मैंने तुम्हे फांसा है, तो मैं जवाब नहीं दूंगी पर इस दोष को नहीं स्वीकारुंगी।'' (पृ. 67)

******

''- हाँ, अभी तो प्यार की हांडी चढी की पत्थर उठे, उसे फोडा व कल्लेआम शुरु ।

- देखना अबीर, कभी न कभी मजहब में इतना बदलाव होगा कि वो इंसानियत से अलग खुद को समझेगा।

– हाँ, सुरैय्या ईश्वर इबादत के इस अर्थ को बढावा दे दे। हममें तो इसरा भी जिंदा है। हमारी मुहब्बत को कोई सीमा धर्म नहीं खत्म कर सकता। (पृ. 72) इन संवादों के समान पूरे उपन्यास में भाषा का प्रभावात्मक रुप अत्यंत सहजता से प्रस्तुत किया है। जिससे उपन्यास की भाषा लेखिका ने वैसी प्रयत्नपूर्वक बनाई है ऐसा लगने के बजाय उनकी खुद की अपनी नैसर्गिक भाषा होने का एहसास दिलाती है। यही कारण है कि इसमें प्रस्तुत किए गए संवाद छोटे हो या लंबे, भाषिक स्तर पर वे बड़े ही प्रभावात्मक, पात्रानुकूल, घटनानुकूल, प्रसंगानुकूल और परिवेशानुकूल होने से पाठकों को वह सही–सही स्थिति की जानकारी अत्यंत सहजता से देते है। इसमें भाषा, पात्रानुकूल इस कदर बनी है कि उपन्यास में चित्रित हिंदू चरित्र और मुस्लिम चरित्रों की पहचान बड़ी सहजता से होती है। यही कारण है कि जब गीत की माँ बोलती है तो उसकी भाषा में मातृभाषिक हिंदीपन आ जाता है और जब सुरैय्या की दादी बोलती है तो उसमें उर्दुपन सहजता से आ जाता है। जैसे – (गीत की माँ) – ''कैसे समझायें कि पादरी, पंडित, मौलवी मनुष्य की कमजोरियाँ जानते हैं और उन्हीं कमजोरियों का शोषण कर भुनाते हैं। धर्म व मजहब कभी इंसानियत को गुमराह नहीं करते। सच्चा धर्म तो वो है, जो इंसान को दु:खों व कमजोरियों से मुक्त होने का रास्ता बताये।'' (पृ. 38)

(सुरैय्या की दादी) ''– हम तो सोचते थे कि भारत में किसी ने मुस्लिम जान हमारी बेटी का कत्ल कर दिया।..... बेटे अबीर अब हमारे मुल्क की भाषा व विचार तो साफ है, पर कर दिया है सत्यानाश इन हुकमरानों ने।'' (पृ. 90) गीत की माँ और सुरैय्या की दादी के समान उपन्यास का हर चरित्र भाषिक स्तर पर अपनी पहचान सहजता से देता है। यह सहजता वैसे तो लेखिका के भाषिक प्रयोग का कौशल्य है। उनकी यही कुशलता उपन्यास में चित्रित हर घटना एवं प्रसंग को सजीव बनाती है। सुरैय्या और अबीर की प्रेमकहानी भाषा का इसी सजीवता और कोमलता के कारण परत दर परत खुल ही जाती है और पाठकों के मन में उत्सुकता, आशंका, सहानुभूति, व्याकुलता, क्रोध और विद्रोहात्मकता के भाव समय–समय पर उत्पन्न करती है। इस प्रेमकहानी पर प्रारंभ से ही साम्प्रदायिक संघर्ष का दोनों धर्म के झूठे ठेकेदारों के कहर बरसाने की आशंका का चर्चात्मक चित्रण बार–बार किया गया है। जिसमे यह प्रेमकहानी भयंकर साम्प्रदायिक संघर्ष निर्माण होने की आशंका के दबाव में शुरू होती है, बढती है, चलती है और दबाव में खत्म भी होती है। धर्मांधता के कहर से कांपती हुई इस प्रेमकहानी को लेखिका ने केवल भाषा के सहारे उसे अत्यंत रोचक, उत्सुकतापूर्ण तथा कोमलता से सजाया है। इसे रोमँटीक और प्रभावात्मक बनाने के लिए लेखिका ने काव्यमयी भाषा का अत्यंत कलात्मकता से प्रयोग किया है। प्रेममय भावना को, मिलन की उत्सुकता को, विरह की वेदना को, बिछड़ने के भय को, एक दूसरे के लिए जीने–मरने के लिए गए कस्मेवादों को लेखिका ने अपने भाषा के कौशल्य के बलपर हर प्रसंग को इतना सजीवता से चितारा गया है कि पाठक के मन और मस्तिष्क पर यह प्रेमकहानी एक यादगार बनकर रह जाती है। इसके लिए लेखिका ने हर प्रसंग को प्रेममय बनाया है। इसमें उर्दु, अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों का बड़ी सहजता से प्रयोग किया है। प्रसंगानुकूल शेर, शायरी, गीतों का किया हुआ प्रयोग (पृ. 19, पृ. 32, पृ. 33, पृ. 53 पृ. 71) इस दु:खमय प्रेमकहानी को भी रोचक तथा प्रभावात्मक बनाये हुए दिखाई देता है। कुल–मिलाकर प्रस्तुत उपन्यास में

कृष्णा- अग्निहोत्री द्वारा प्रयोगित की हुई भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल होने से संपूर्ण उपन्यास को सरस एवं श्रेष्ठतम बनाने में मददगार हुई दिखाई देती है।

उपन्यास विधा के समीक्षात्मक मापदंड में भाषा तत्त्व को जोड़कर आनेवाला तत्त्व है - शैलीतत्त्व। हिंदी उपन्यास के प्रारंभिक काल में इस तत्त्व को समीक्षकों द्वारा दुर्लक्षित ही रखा गया था किंतु आधुनिक युग के अनेक महत्त्वपूर्ण समीक्षकों ने शैली तत्त्व को अनिवार्य माना है। उनके अनुसार यही तत्त्व उपन्यास में जीवन्तता, संजीदगी और सौंदर्यचेतना लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। यही कारण है कि हिंदी उपन्यास क्षेत्र में कार्यरत अनेक रचनाकारों ने अपनी-अपनी ओर से औपन्यासिक रचनाओं में नई-नई, विविध शैलियों का प्रयोग बड़ी सहजता एवं सफलता से किया हुआ दिखाई देता है। इस दृष्टि से कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया यह उपन्यास अपने साथ अलग-अलग सी अनेक शैलियों का वहन करनेवाला एक सशक्त प्रयोगधर्मी उपन्यास माना जा सकता है क्योंकि इस उपन्यास में लेखिका ने एक साथ अनेक शैलियों का जैसे- वर्णनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति अर्थात फ्लैशबैक शैली, उद्धरणशैली, संवादशैली, गीतशैली, प्रबोधनात्मक शैली, भावात्मक शैली, आत्मनिवेदनात्मक शैली और विश्लेषणात्मक शैली प्रयोग किया है। लेखिका ने अपने इस उपन्यास का संपूर्ण कथानक इन्ही विविध शैलियों की सहायता से साकार किया है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित हर घटना, हर एक दृश्य, प्रसंग, पात्रों द्वारा चर्चित आचार-विचार उनका व्यक्तिगत व्यवहार, धार्मिक-सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियाँ ऊपरलिखित किसी न किसी शैली का प्रदर्शन करती है। यही प्रदर्शन समीक्षा की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास को शैली तत्त्व के मापदंड में एक सफल प्रयोगधर्मी उपन्यास के रुप में प्रमाणित करता है।

4.3.3 आना इस देश : उद्देश्य

हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास विधा अन्य गद्य विधाओं की तुलना में प्रारंभ से ही मानवीय जीवन और जगत का यथार्थ चित्रण करनेवाला एक सशक्त माध्यम बना है। समीक्षकों और विद्वानों के अनुसार हर उपन्यास कृति की निर्मिति के पिछे उसके रचनाकार का कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य या खास दृष्टिकोण रहता ही है। बिना उद्देश्य के कोई भी रचना साकार ही नहीं होती, यहीं कारण है कि उपन्यास में उद्देश्य तत्त्व अवश्य उपस्थित रहता ही है। चाहे वह उद्देश्य मनोरंजन करने का हो या मानवीय जीवन-जगत के अस्तित्व का बोध करानेवाला हो। इस प्रकार उपन्यास में उद्देश्य तत्त्व अनिवार्य रहा है। उपन्यास के उदयकाल से लेकर अत्याधुनिक काल तक के सफर में जिस तरह उपन्यासों ने अपने अलग-अलग रुप धारण किए हैं, उद्देश्य तत्त्व में भी उन रुपों के अनुसार काफी बदलाव किया हुआ दिखाई देता है। आज के उपन्यासकारों की धारणाएँ, कल्पनाएँ, जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण, बदलते जीवनमूल्य, बदलता सामाजिक, धार्मिक परिवेश, घिनौनी राजनीति से लेकर आतंकवादी गतिविधियाँ तक की डरावनी अनुभूतियाँ, नीजि जीवन से लेकर पारिवारीक जीवन तक की जटिलताएँ, बदलते रिश्ते-नाते, स्त्री-पुरुषों के बीच के बदलते संबंध आदि नई-नई समस्याएँ औपन्यासिक रचनाओं की निर्मिति के लिए विषयगत सामग्री प्रदान कर रही है। जिससे वर्तमानयुगीन उपन्यास जीवन के बहुमुखी यथार्थ का प्रतिबिंब बनकर उपस्थित होता हुआ दिखाई देता है। आलोच्य उपन्यास 'आना

इस देश' इस बात की सही प्रमाण है। ऐसा कहा तो गलत नहीं होगा क्योंकि इस उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने वर्तमान युगीन सभी बाह्य स्थितियों का चारों तरफ वर्णन किया है। उपन्यास मे चित्रित यह वर्णन इतना यथार्थ, वास्तविक और बेबाकी (नग्नता) को प्रभावित करते हुए पाठकों को केवल बेचैन ही नहीं करता तो उन्हें सोचने के लिए मजबूर भी करता है कि इन बाह्य स्थितियों में एक न एक दिन बदल करने के लिए हमे प्रयत्न करना ही चाहिए तभी मानवतावादी धर्म विकसित होकर सभी लोग सुख, शांति और सुकून से रहेंगे। हर धर्म की धार्मिकता यही सीखाती है कि हर इन्सान ने एक दूसरे के साथ इन्सानियत से व्यवहार करना ही सच्चा धर्म होता है। यही सच्चा धर्म मानवतावाद कहलाया जाता है। जिसकी पुन:स्थापना के लिए कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने इस उपन्यास का निर्माण किया हुआ दिखाई देता है। मानवतावादी विचारधारा, सर्व धर्म समभाव जैसे मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार करना ही इस उपन्यास की निर्मिति का मूल उद्देश्य है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखिका ने कथ्य की दृष्टि से एक सुंदर प्रेमकहानी का ताना- बाना बुना है। प्रेमकहानी में चित्रित नायक और नायिका हिंदु और मुस्लिम धर्म के हैं। बँटवारे के पहले और बँटवारे के बाद दुनिया के किसी भी कोने में रहनेवाले इन दो धर्म के अनुयायी एक दूसरे के साथ विश्वास से व्यवहार करने के बजाय एक दूसरे का द्वेष ही करते आए हैं। इसपर दोनों ओर से धर्म के ठेकेदार और आपने नीजि फायदे के लिए घिनौनी राजनीतिक धर्म के नाम पर करनेवाले राजनेता, एक ही धर्म के अनुयायीयों में उच्च-नीचता निर्माण करके उनके बीच जानलेवा संघर्ष निर्माण करनेवाले धर्मांधों ने हिंदु और मुस्लिम के बीच पीढि दर पीढि भयंकर साम्प्रदायिक संघर्ष की स्थिति निर्माण की है। बँटवारे के बाद इसे अधिक तीव्र करने का कार्य दोनों धर्मो के धर्मांधों ने निरंतरता से किया हुआ दिखाई देता है। दूसरी ओर धर्म के नामपर हिंदुस्थान से अलग राष्ट्र बने पाकिस्तान ने खुद की आंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने के बजाय कभी मजहब के नामपर तो कभी कश्मीर या सीमा प्रश्न के नाम पर घिनौनी राजनीतिक खेल खेले हैं। भारत को खोखला बनाने के लिए युद्ध छेडे तथा आतंकवादी गतिविधियों को बढावा देने का घिनौना कार्य करते रहे। बटवारे के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों देश हमेशा तणाव की स्थिति में रहते आए है। ऐसे में मुस्लिम धर्म की पाकिस्तानी लड़की सुरैय्या और हिंदु धर्म का भारतीय लड़का अबीर के बीच हुए प्रेम की कहानी है यह उपन्यास। इसमें लेखिका ने धार्मिक संघर्ष, साम्प्रदायिता दोनों देशों के बीच अब तक चले घिनौनी राजनीति, झूठे धार्मिक गर्व, मजहब के नामपर निकाले जानेवाले भयंकर फतवे, धर्मग्रंथों के आधार पर धर्मो का किया जानेवाला शोषण, धर्मांधो की तालिबानी वृत्ति, सीमा पर कायम रहनेवाला तणाव, पाकिस्तानीयों की आतंकवादियों के साथ रही मीलीभगत, भारतीयों की सहनशीलता आदि सभी बातों पर प्रेमकहानी के माध्यम से प्रकाश डालकर यह प्रमाणित किया है कि धार्मिकता बुरी नहीं होती तो धर्मांधता बुरी होती है। इसलिए हर एक ने धर्मांधता को त्यागकर सच्चे धर्म से व्यवहार करना चाहिए। सच्चा धर्म तो वो है जो इंसान के दु:खो व कमजोरियों से मुक्त होने का रास्ता बताता है। धर्म या मजहब कभी इंसानियत को गुमराह नहीं करते। वह तो मानवतावादी जजबातों को विकसित करते हैं और जजबात न हिंदु होते न मुसलमान। वह तो प्यार और मुहब्बत से इन्सान को इन्सान के साथ इन्सानियत से रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए मानवतावादी , समतावादी, शांततावादी विचारों का प्रचार एवं प्रसार करते हैं। इन्हीं विचारों का प्रचार करना प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य रहा है। जिसकी पूर्ति एक

प्रेमकहानी के माध्यम से, अत्यंत प्रभावात्मकता से प्राप्त हुई है।

4.3.4 'आना इस देश' : समस्याएँ

कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा रचित 'आना इस देश' उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास की कोटी में रखा जाए ऐसा नहीं है। यह तो एक उमदां (प्रौढ़) अवस्था में पनपी प्रेमकहानी है, जिसमें दोनों प्रेमी प्रेम की हिफाजत करने की कोशिश करते हुए दिखाई देते हैं। हांलाकि वह दोनों विरुद्ध धर्म के, विरुद्ध राष्ट्र के होने से लेखिका ने दोनों धर्मों की, दोनों राष्ट्रों की एक दूसरे के विरुद्ध बनी मानसिकता, वैचारिकता, आपसी तणाव एवं संघर्ष का इतनी तटस्थता और यथार्थता से चित्रण किया है कि संपूर्ण उपन्यास पिछले साठ-सत्तर सालों में राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय एवं पाकिस्तानी जन सामान्यों का दैनंदिन जीवन, जीन समस्याओं से घायल होकर संघर्ष कर रही है, उन सारी समस्याओं पर प्रमाणिकता से प्रकाश डालता है। इस दृष्टि से देखे तो लेखिका ने वर्तमान युग में दिखाई देनेवाली हर समस्यापर अपनी इस रचना में बड़ी ही इमानदारी से भाष्य किया है। उनमें से प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार है। जैसे -

1. राजनैतिक समस्या
2. धार्मिक समस्या
3. साम्प्रदायिक समस्या
4. सामाजिक समस्या
5. स्त्री / नारी समस्या
6. सीमावाद की समस्या
7. आतंकवाद की समस्या
8. भूमंडलीकरण (ग्लोबलाइजेशन) की समस्या

'आना इस देश' इस लघु उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने ऊपरलिखित सभी समस्याओं पर बड़ी तटस्थता से प्रकाश डालने की कोशिश की है। उनकी यह कोशिश हिंदु-मुस्लिम दोनों धर्मों के धार्मिक स्तर और भारत-पाकिस्तान दोनों राष्ट्रों के राष्ट्रियस्तर पर सर्व-धर्म-समभाव या मानवतावादी धर्म की स्थापना करने के लिए मानो साहित्यिक स्तर पर की गई एक नई शुरुआत है। अत: इस में चित्रित समस्याओं का सामान्य परिचय इस प्रकार

1. राजनैतिक समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास में बटवारे के पहले और बटवारे के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के बीच चली की राजनीतिक गतिविधियों पर काफी चर्चा की है। वह सारी चर्चा दोनों राष्ट्रों के बीच रहे राजकीय तणाव, युद्ध जन्य स्थिति, संघर्ष और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को नीचा दिखाने के लिए पाकिस्तान द्वारा किए

गए राजनीति के घिनौने प्रयास का सच्चा लेखा-जोखा है। उपन्यास में चित्रित सुरैय्या के पिता नदीम ने भारत की मिलिटरी के कुछ गुप्त राज की फाइल चोरी करके पाकिस्तान को देना, कश्मीर घाटी में हुर्रियत कान्फ्रेंस का आयोजन करके 'मैसूमा चलो' का आव्हान करके हिंसा भड़काना (पृ. 45), परमाणु सक्षम मिसाइलें अपने बेड़े में शामिल करने की पाकिस्तान द्वारा घोषणा करना, चीन को मदद करके सीमा पर तनाव निर्माण करना पाकिस्तानी सियासत की घिनौनी नीतियाँ रही है। इधर भारतीय राजनीति स्वार्थ में अंधी होकर सत्ता में कायम रहने की कोशिश करती है। (पृ. 91) बम से घायल होकर भी केवल चेतावनी और समझौते की बाते की जाती है। (पृ. 83) गंभीर मसलेपर भी भारत में राजनीति की जाती है, देश प्रेम, देश सेवा, देश की सुरक्षा का उनमें कोई विचार नहीं होता। यहां के राजनेता तो केवल सत्ता हथियाने के लिए सारी समस्यांए निर्माण करते हैं। इस प्रकार इस उपन्यास में दोनों देशों में प्रचलित राजनीति का घिनौना मुखौटा उतारकर उनके द्वारा दोनों राष्ट्रों में निर्माण की जानेवाली समस्याओं का यहां बड़ी तटस्थता एवं प्रामाणिकता से प्रस्तुतीकरण किया है।

2. धार्मिक समस्या :

उपन्यास में चित्रित नायक हिंदू और नायिका मुस्लिम धर्मीय होने से लेखिका ने दोनों धर्मों के प्रचलित गलत मान्यताओं के कारण निर्माण होनेवाली समस्याओं का चित्रण किया है। लेखिका के अनुसार धार्मिकता बुरी नहीं होती धर्मांधता बुरी होती है और यही धर्मांधता अलग-अलग समस्याओं को जन्म देती है। सर्व-धर्मसमभाव का पालन करके मानवतावादी धर्म से एक-दूसरे के साथ व्यवहार करनेवाले दोनों धर्मों के सामान्य जनों को गुमराह किया जाता है। उन्हें गुमराह करनेवाले दोनों धर्मों के ठेकेदार मुल्ला, मौलवी, पंडित, पुजारी होते हैं। वे इंसानियत का सच्चा धर्म बताने के बजाय धर्म के नामपर फतवे निकालकर सब को डराते रहते हैं, भयभीत करते हैं। ये पाखंडी धर्म के दलाल धर्म का सच्चा चेहरा छुपाकर धर्म की आड़ में अधार्मिकता का प्रचार करते रहते हैं। यही कारण है कि मुस्लिमों में शिया और सुनी एक दूसरे के खून के प्यासे रहते हैं। (पृ. 46) कुराण का वास्ता देकर मुल्ला-मौलवी मनुष्य की कमजोरियों का शोषण करते हैं। मुल्ला-मौलवीयों के समान हिंदु पंडित-पुजारी भी धर्मग्रंथों की आड़ में उच्च-नीचता की निर्मिति करके समाज में फूट डालकर उनका शोषण करते हैं। इन्हीं धर्मों के ठेकेदारों द्वारा निर्माण किए गए धार्मिक उत्पीड़न से उत्पीड़ित होकर लोग अपने ही धर्म से आज पलायन करते हुए नजर आ रहे हैं। (पृ. 69) यही सबसे भयंकर समस्या है जिसका चित्रण कृष्णा अग्निहोत्री ने इस उपन्यास में बड़ी ही निर्भयता से अलग-अलग घटनाओं और प्रसंगों द्वारा प्रस्तुत किया है।

4. साम्प्रदायिक समस्या :

उपन्यास में चित्रित धार्मिक समस्या का दूसरा रुप है साम्प्रदायिक संघर्ष। राजनीतिक क्षेत्र में धार्मिक मान्यताओं को धर्मग्रंथों और आराध्यों सहीत धर्मस्थलों का उपयोग करके अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए विरुद्ध धर्मियों को आपस में लढवाना या संघर्षरत रखना साधारणत: साम्प्रदायिकता माना जाता है। इसमें विरुद्ध धर्म के अनुयायी अपने अपने धर्म का स्वाभिमान एवं गर्व करके दूसरे धर्म के अनुयायियों पर अमानुष अत्याचार करते हैं। अपनी धार्मिक दहशत कायम रखने के लिए ये लोग धर्म के नामपर, मजहब के नामपर दंगा-फसाद,

मार-काट करते हैं। यही साम्प्रदायिक संघर्ष का वास्तविक चित्र प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने समस्या के तौर पर प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया हैं। उनके अनुसार बटवारे के पहले मुस्लिम लीग की निर्मिति अंग्रेजो ने इसी उद्देश्य से की थी। जिसने स्वतंत्र पाकिस्तान की माँग करके बटवारें में अलगता हासिल की किंतु उसका आधार आज भी विकास के बजाय मजहब ही रहा है। (पृ. 49) यहीं मजहब का वजूद साम्प्रदायिक संघर्ष को बढ़ावा देता रहता है। जिससे आज तक दोनों धर्मों के बीच निरंतरता से तणाव तथत्त अशांतता कायम रहती आयी है। राजनीतिक लोग अपने फायदे के लिए इस तणाव को बीच बीच में हवा देने का काम करते हैं। जैसे हिंदु-मुस्लिम लड़का लड़कियाँ की शादी, या प्यार का मामला निकालकर विवाद निर्माण करना, मस्जिद-मंदिरों का मामला निकालकर सबको धार्मिक दहशत में रखना या निर्दोषों को मारना। हिंदु-मुस्लिम दो परिवारों के मोटरों की सड़क पर हुई टक्कर साम्प्रदायिक संघर्ष का कारण बताया जाता हैं। (पृ. 42) और समाज में दोनों धर्मों के गुंडे एकत्रित होकर दहशत निर्माण करते हैं। साम्प्रदायिक संघर्ष की यह दहशत इस उपन्यास में चित्रित अबीर और सुरैय्या की प्रेमकहानी पर शुरु से अंत तक कायम दिखाई देती है। इस जानलेवा समस्या का भयंकर रुप उपन्यास में लेखिका ने पूरी वास्तविकता से चितारा है।

5. आतंकवाद की समस्या :

आतंकवाद एक विचारधारा है, उसमें सहिष्णुता या उदारता की जगह नहीं होती और न हो वह किसी एक के मरने पर मरती है। (पृ. 86) इस विचारधारा ने अब तक इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, लियाकत अलीखान, बेनझीर भुट्टों आदि भारतीय एवं पाकिस्तानी प्रधानमंत्रीयों को अत्यंत क्रूरता से मार दिया है। यह विचारधारा मूलत: इंसान में बसे वहिशाना स्वभाव का अत्यंत क्रुर, भयंकर अमानुषी रुप है। आतंकवाद का यही डरावना रुप आज पुरे विश्व पर मौत का साया बनकर मंडरा रहा है। इस समस्या से आज सारा विश्व संघर्ष कर रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने इसकी सही-सही पहचान कराई है। उनके अनुसार आतंकवाद भूत कभी भी विस्फोट करके हजारों को बर्बाद करता है। (पृ. 79) इसकी शुरुआत राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने सन 1979 में एक आंतरराष्ट्रीय अभियान हेतु 500 मिलियन डॉलर की रकम सीआईए के अदा करके जिहाद के नामपर मध्य ऐशिया व सोवियत संघ में अस्थिरता पैदा करने के लिए की थी। राष्ट्रपति रीगन ने अफगान जिहाद के लिए और अधिक बजट बढाया। इसी चक्कर में पाकिस्तान, तालिबान, अलकायदा की गिरफ्त में आ गया। आज यही आतंकवाद भस्मासुर बनकर पाकिस्तान को निगल रहा है। (पृ. 17) दूसरी ओर पाकिस्तान को लग रहा है कि वह दूसरे देशों मे आतंक फैलाकर अपना महत्त्व स्थापित करेगा। (पृ. 49) मगर वैसा नहीं होगा क्योंकि आज पाकिस्तान को खुले आम आतंकवादी देश कहा जा रहा है। (पृ. 79) वह अपनी पहचान बदलने की कोशिश करने के बजाय दिन-प्रति-दिन भारत से बदला लेने के लिए आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देकर बम विस्फोट से लेकर संसद हमले तक के भयंकर कारनामे करके, निर्दोषियों की हत्या करके अपने वहशीपन का दरंदगी का परिचय देता है। अलकायदा जैसे विविध आतंकवादी संगठनों द्वारा उसने भारत के साथ जिहादी युद्ध छेड़ा है। परिणाम स्वरूप आज भारत के साथ-साथ पाकिस्तान में भी आतंकवादीयों ने अपनी दहशत फैला दी है। इन समस्याओंसे आज दोनों देशों की आम जनता भयभीत

होकर उसका सामना करने की कोशिश कर रही है। इस बात का चित्रण लेखिका ने बड़ी इमानदारी से उपन्यास में किया है।

6. नारी समस्या :

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने इस समस्या पर काफी विस्तृत चर्चा की हुई दिखाई देती है। स्त्री चाहे हिंदु हो या मुस्लिम उसका शोषण एक समान रहता है। फिर चाहे वह स्वावलंबी हो या परावलंबी। सुरैय्या व तरन्नुम के माध्यम से लेखिका ने इस समस्या पर चारों तरफ प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त डॉ. गीत, गीत की माँ, उनके घर में काम करनेवाली नौकरानियाँ आदि के जीवन में घटनेवाली हर घटना नारी के जीवन में निर्माण होनेवाली एक एक समस्या लगती है। बालविवाह से लेकर प्रौढ़ विवाह तक और तलाक से लेकर बलात्कार तक की समस्याओं से घिरी नारी का यातनामय जीवन यहां लेखिका ने दृष्टिगत किया है। धर्म के नामपर उसका शोषण किया जाता है। धर्मग्रंथों का वास्ता देकर उसे कमजोर बनाया जाता हैं। (पृ. 32) (पृ. 38) पुरुषी वर्चस्व कायम रखने के लिए उसपर शारीरिक तथा मानसिक अत्याचार किए जाते हैं। (पृ. 19) (पृ. 20)। जब औरत अपने अधिकारों की माँग करती है तब उसके अपने ही बिरादरी के लोग न्याय-अन्याय के नाम पर पंचायते बिठाकर उसपर ही न्याय के नाम पर सामुहिक बलात्कार किया जाता है। (पृ. 29) हिंदु-मुस्लिम दोनों धर्मग्रंथों में भले ही नारी को अधिकार दिए गए हो। मगर धर्म के ठेकेदार उन्हें अधिकार देने के बजाय बालविवाह, बहुविवाह, विधवाओं के लिए अलग कठोर नियम जैसे मनमानी कुप्रथाएँ निर्माण करके उनका शोषण करते आए हैं। (पृ. 63) कुप्रथाओं का पालन करने के लिए स्त्रीयों को ही शारीरिक और मानसिक अत्याचार सहन करने पड़ते है। (पृ. 62) (पृ. 46) लड़की का जन्मना भी दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता है, वही आगे सभी प्रथा और जौहर का शिकार हो जाती है। उन्हीं पर जुल्म किए जाते हैं। (पृ. 75) अकेली लड़की मीली तो उस पर कुत्ते की तरह नोंच-नोंच कर उसे बरबाद करके मरने के लिए छोड़ दिया जाता है या कैद करके बार-बार सामुहिक बलात्कार का शिकार करके उसे पागल बना दिया जाता है। (पृ. 86, पृ. 90) इस तरह परंपरा से लेकर वर्तमान युग तक नारी जीन समस्याओं से जुझकर अपना अस्तित्त्व सुरक्षित रखने की कोशिश करती आई है। उन सारी समस्या और लेखिका ने इस उपन्यास में प्रकाश ड़ाला है।

7. सीमावाद की समस्या :

भारत-पकिस्तान-चीन के बीच इस समस्या को लेकर प्रारंभ से ही काफी तनाव रहा है। पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को लेकर बार बार इस बात को लेकर विवाद निर्माण किया जा रहा है। बेवजह कश्मीर की घाटी में हिंसा भड़काई जाती है, मारपीट, गोलीबारी करके दहशत निर्माण की जाती है। अब तक लाखों बेगुनाह लोगों को मार दिया है। बार बार सीमा रेखा को लांघकर सैनिकों व आतंकवादियों का भारत में घुसाया जाता है। जब तणाव बढ़ता है तो दोनों तरफा के निर्दोष आम लोगों को कानून व सुरक्षा के कारण बहुत कुछ सहना पड़ता है। (पृ. 81) (पृ. 83) पाकिस्तान इस मुद्दे को लेकर पूरे देश में आतंक फैलाने की कोशिश करता रहता है। दूसरी ओर वह चीन को मद्द करके चीन और भारत के बीच की सीमा विवादात्मक बनाकर अपने बदले की हवस पूरी करने की फिराक में हमेशा रहता है। चीन ने भी अब तक कई बार सीमा रेखा को लेकर

किए गए सारे वायदे, करार तोड़ दिए हैं। वह भी पाकिस्तान से मिलकर नियंत्रण रेखा के पास विवादित इलाकों में टेंट चौकी खड़ी कर सीमा लांघने की कोशिश करता रहता है। (पृ. 81) वह जानबुजकर 2005 में नियंत्रण रेखा को लेकर किए गए सैन्य विश्वास बहाली समझौते (पृ. 81) तोड़कर भारत के भूभाग पर अपना हक जताने की कोशिश करता है। इस तरह चीन की अविश्वसनीयता, जलन और पाकिस्तान की बदले की भावना ने इस समस्या को एक ज्वालामुखी सा बल दिया है। जो हमेशा खदखदाते हुए बाघा सीमा के इस पार से खैबर दर्रों के उस पार कटकर एशिया उपमहाद्वीप में फैलकर भयावह हालात पैदा कर रहा है। इसकी भयानकता नासूर बनकर पूरे विश्वभर में फैलकर इंसानियत को नष्ट कर रही है। जिसका सही-सही वर्णन एक समस्या के रुप में लेखिका ने यहा किया है।

8. भूमंडलीकरण (ग्लोबलायजेशन) से निर्माण हुई समस्याएँ :

इस समस्या का सबसे बड़ा शिकार आज की युवा पीढ़ी हुई है। विदेशी प्रभाव, विकसित देशों की संस्कृति तथा सम्पदा के मोह ने हमारी युवा पीढ़ी को आकर्षित किया है। वह उन्हीं विकसित देशों की गतिविधियों की, रहन-सहन को अपना रही है। (पृ. 47) अपने नीजि कैरियर के प्रति अति जागरुक रहकर कम्पनियों में प्लेसमेंट से बड़ी तनख्वाह लेने के लिए हर तरह के समझौते करते हैं। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां उनके आकर्षण का केंद्र है। उनके दृष्टि से मातृभाषा बेकार है बल्कि विदेशी भाषा में लिखा, सोचा हुआ ही श्रेष्ठ है। (पृ. 47) उनके अनुसार पुरानी दवा से नए रोग का इलाज नहीं होता। कार्पोरेट वर्ल्ड का मामला उनकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कम्पीटिशन की इस दौर में कैरियर में सफलता का मतलब खुद को साबित करना है। इस जानलेवा कम्पीटिशन, कैरियर, विदेशी संस्कृति के आकर्षण ने युवा पीढ़ी का भौतिक सुख नष्ट कर दिया है। कैरियर के झमेले में शादी के बारे में सोचने के लिए उनके पास वक्त नहीं है। प्यार के नाम पर मर्द, औरत की जरुरते पूरी करना आसान हो गया है। (पृ. 31) लिव-इन-रिलेशनशिप में समय और जीवन कटता है, जब समाज उनके प्रति अच्छी दृष्टि से नहीं देखता तब मानसिक कुंठाओं का शिकार बनकर रह जाती है। भारतीय परिदृश्य में उच्च शिक्षित युवा पीढ़ी आज इसी समस्या का शिकार बनी हुई दिखाई देती है। जिसका लेखिका ने इस उपन्यास में पूरी यथार्थता से परिचय दिया है।

प्रस्तुत उपन्यास में कृष्णा अग्निहोत्री ने ऊपर लिखित सभी समस्याओं का चित्रण बड़ी ही सच्चाई और यथार्थता से किया है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) सुरैय्या के नाना उत्तर प्रदेश के ---------- में रहते थे ।

2) सुरैय्या और डॉ. गीत की पहली मुलाकात-------- में हुई थी ।

3) सुरैय्या और अबीर आगरा में ---------- देखने के लिए रुकते हैं ।

4) अबीर के अनुसार अब पाकिस्तान आतंकवाद के -------- के अधीन है ।

5) सुरैय्या की बिमार अम्मी तरुन्नुम को ---------- सीमा सें भारत लाया गया था ।

6) सुरैय्या के अनुसार ---------- न हिन्दु होते हैं न मुसलमान ।

7) डॉ. गीत ने इन्दौर दुरदर्शन के सहयोग से --------- गजलकारों को भारत बुलाया था ।

8) सुरैय्या ऐसी औरत बनना नहीं चाहती जो ------- की दुश्मन है ।

9) अमीर खुसरो के दरगाह पर आज भी --------- दोनों जाते हैं ।

10) सुरैय्या के अनुसार पाकिस्तानी अवाम ---------- चाहती है । उसे भारत के प्रति नफरत या घृणा नहीं है ।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

इत्मीनान – आराम से

फुदकते – नाचते हुए

इजाजत – अनुमती

खासमखास – विशेष

हयूमेनिटी – मानवता

अदब – आदर

खाविंद – पति

मुहर्रिर – लिपिक

सायत – शुभकाल

कुलबोरन – कुलमर्यादा, भंग करनेवाला

कुलमा – व्यभिचारिणी

मर्ज – रोग, बीमारी

फारिंग – मुक्त

शगल – कामधंदा

वालियण्टर – स्वयंसेवक

दफनाना – जमीन में गाड देना

मजहब – धर्म

हिफाजत – रक्षा

बॉस – मालिक

कुदरती – प्राकृतिक

सौगात – भेट, नजराना

बेशकिमती – बहुमोल

जजबात – भावनाएँ

खस्ताहल – कष्टदायक

बेंइसाफी – अन्याय

बयार – धूप

बवंडर – तूफान

इफैक्ट – परिणाम, प्रभाव

परमिशन – अनुमती

रिजर्वेशन – आरक्षण

वर्जित – निर्मनुष्य

फरिश्ते – संत, दूत, भले लोग

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) रामपुर

2) दुबई

3) ताजमहाल

4) भस्मासुर

5) बाघा सीमा

6) जजबात

7) पाकिस्तानी

8) औरत

9) हिंदु मुस्लिम

10) शांति सकून

4.7 सारांश :

1) 'आना इस देश' उपन्यास के व्द्रारा भारत और पाकिस्तान के बीच के साम्प्रदायिक तणाव पर प्रकाश डाला है ।

2) दोनों देशों के हुक्मरानों की घिनौनी राजनीति पर इसमें खुलकर प्रकाश डालते हुए चर्चा की है ।

3) दोनों देशों के बीच आम अवाम की शांति और सकून से रहने की इच्छा का इसमें समर्थन किया गया है ।

4) इसमें पाकिस्तान अधिक आतंकवादी गतिविधियों को बढावा देनेवाला देश हैं, इसे इसमें अलग-अलग उदाहरणों व्द्रारा प्रमाणित किया गया है ।

5) इसमें भारत की सहिष्णुता, सुंदरता, और उसके स्वच्छ राष्ट्रीय चरित्र की चर्चा अधिक सशक्तता से की गई है ।

6) साम्प्रदायिक संघर्ष ने भारत और पाकिस्तान दोनों देशों का भयंकर नुकसान किया गया है, इस बात को समझाने का प्रयास किया गया है ।

7) भारत चीन और पाकिस्तान के बीच सीमा को लेकर हमेशा तणाव रहता है, इस गंभीरता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

8) साम्प्रदायिकता, आतंकवाद आपसी संघर्ष के बदले भारत मानवतावादी आचार विचारों का समर्थक

है । इस बात को प्रस्तुत किया है ।

9) सर्वधर्मसमभाव, मानवता, समानता, इन्सानियत ही सब को शांति और सकून से जीने के लिए आवश्यक है । आंतकवादी गतीविधियाँ सब को नष्ट कर देगी आदि बातों पर प्रकाश डाला है ।

10) सर्वधर्मसमभाव और मानवतावादी विचारों का प्रचार एवं प्रसार इस कृति के माध्यम से किया गया है।

4.8 स्वाध्याय :

अ. लघुत्तरी प्रश्न

1) 'आना इस देश' उपन्यास में चित्रित देश, काल, वातावरण ।

2) 'आना इस देश' उपन्यास का उद्देश्य।

3) 'आना इस देश' उपन्यास की भाषाशैली ।

4) 'आना इस देश' उपन्यास की समस्याएँ ।

आ. दिर्घोत्तरी प्रश्न

1) उपन्यास के तत्व के आधारपर 'आना इस देश' उपन्यास में चित्रित देश-काल-वातावरण की सोदाहरण चर्चा कीजिए ।

2) 'आना इस देश' उपन्यास में लेखिका ने भाषा एवं शैली के अलग-अलग प्रयोग प्रस्तुत किए हैं । उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए ।

3) 'आना इस देश' उपन्यास साम्प्रदायिक संघर्ष का एक भयंकर इतिहास है इस बात को कथानक की सहाय्यता से उद्देश्य तत्त्वपर प्रकाश डालते हुए प्रमाणित कीजिए ।

इ. ससंदर्भ के प्रश्न

1) ' तु अभी कुछ नहीं समझेगी जरा जमीन से कद तो बढा लाडो । तू क्या समझे कि अपनों के बिछडने का दर्द क्या होता है, तेरी खाला, मामू, चाचा जान सब तो रामपुर में हैं । यहाँ हम केवल अकेले समुद्र ताकते रहते हैं ।'' (पृ. 14)

2) जो हुआ वो गम नहीं
न होता तो गम न था,
किसी की जुस्तजू भी नहीं
जो मिला कम मिला, पर एक आरजू पूरी हुई ।'' (पृ. 41)

3) '' नही वो वो रही ही नही

सभी कुछ भीतर खण्डहर है

जो समेटा वह बिखरकर

टूट रहा है सब ।'' (पृ. 53)

4) '' तसब्बुर में मेरे गर तुम न होते

गुजर जाती दुनियां यूं ही रोते-रोते ।'' (पृ. 71)

5) '' मुझे अपने देश आने दो न ।'' (पृ. 89)

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) सांम्प्रदायिक संघर्ष पर खुली चर्चा कीजिए ।

2) 'सर्वधर्मसमभाव' विचारों के प्रचार के लिए व्याख्यानों का आयोजन कीजिए ।

3) आंतकवाद नष्ट करने के लिए पथनाट्यों का आयोजन करने की कोशिश करें ।

4) अपने अपने क्षेत्र में मानवतावादी मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार कीजिए ।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) ''कितने पाकिस्तान''- कमलेश्वर (उपन्यास)

2) 'तमस' - भीष्म सहानी (उपन्यास)

3) 'मलबे का मालिक' (कहानी) - मोहन राकेश

●●●

सत्र 6 – इकाई 1
कौसल्या बैसंत्री का जीवन परिचय

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य।

1.2 प्रस्तावना।

1.3 विषय विवेचन।

1.3.1 कौसल्या बैसंत्री का जीवन परिचय।

1.3.2 कौसल्या बैसंत्री का व्यक्तित्व।

1.3.3 कौसल्या बैसंत्री का कृतित्व।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

1.5 पारिभाषिक शब्द – शब्दार्थ।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

1.7 सारांश ।

1.8 स्वाध्याय ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने पर आप–

1) कौसल्या बैसंत्री के व्यक्तित्व से परिचित होंगे।

2) कौसल्या बैसंत्री के कृतित्व से परिचित होंगे।

3) आत्मकथा विधा के सैद्धांतिक रूप को जान सकेंगे।

4) दलित आत्मकथा के सैंद्धांतिक स्वरूप को जान सकेंगे।

5) नारी आत्मकथा के सैद्धांतिक स्वरूप को जान सकेंगे।

6) दलित तथा नारी की पीडा से परिचित होंगे।

7) दलित समाज के परिवर्तनकारी तथा क्रांतिकारी स्वरूप का परिचय प्राप्त होगा।

8) आंबेडकरवादी विचारधारा का स्वरूप प्राप्त होगा।

9) दलित आंदोलन का स्वरूप प्राप्त होगा।

10) भारतीय नारी वर्ग के आंदोलक स्वरूप का परिचय प्राप्त होगा।

1.2 प्रस्तावना :

मराठी साहित्य में सन 1960 के बाद तथा हिंदी साहित्य में सन 1980 के बाद दलित साहित्य का प्रारंभ हुआ। उसकी प्रेरणा फूले-शाहू-अंबेडकरी विचारधारा है। डॉ. अंबेडकर के निर्वाण के बाद पढी-लिखी दलित युवा पीढी अपने जातीय शोषक उत्पीडन को लेकर लिखने लगी। मराठी में प्र. ई. सोनकांबले का 'यादों के पंछी', लक्ष्मण माने का 'पराया', लक्ष्मण गायकवाड का 'उचक्का', 'शरणकुमार' लिंबाले का 'अक्करमाशी', बेबीताई कांबले का 'हमारा जीना' आदि आत्मकथनों के आधार पर हिंदी में मोहनदास नैमिशराय का 'अपने अपने पिंजरे', ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'जूठन', सूरजपाल चौहान का 'तिरस्कृत', भगवानदास का 'मैं भंगी', माता प्रसाद 'झोपडी से राजभवन तक', डॉ. सुशीला टाकभौरे का 'शिकंजे का दर्द' आदि आत्मकथा हिंदी में विशेष प्रसिद्ध हुए। इन आत्मकथनों में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो' यह दलित वर्ग को दिया हुआ मूल सूत्र दिखायी देता है। इन आत्मकथनों में कौसल्या बैसंत्री का 'दोहरा अभिशाप' यह दलित और नारी विमर्श पर प्रकाश डालनेवाला महत्त्वपूर्ण आत्मकथन है, जो हिंदी में लिखा गया दलित नारी का पहला आत्मकथन है। जीसे पारिवारिक और सामाजिक संघर्ष को संवेदनशीलता से चित्रित करता है। प्रस्तुत आत्मकथन दलित तथा भारतीय नारी के लिए प्रेरणादायी है।

1.3 विषय विवेचन :

रचनाकार साहित्य साधना के माध्यम से साहित्य और समाज की सेवा करते हैं। जिससे भाषा को विकसित करने का भी प्रयास होता है। रचनाकार के प्रभावपूर्ण लेखन में रचनाकार का व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है। रचनाकार का स्वभाव रूची, रहन-सहन विचारधारा आदि का प्रतिबिंब साहित्य में दिखायी देता है। रचनाकार बहुश्रृत या बहुआयामी हो तो साहित्य रचना भी विविध अंगों से सजी हुई दिखाई देती है। अतः साहित्य श्रेष्ठत्व रचनाकार के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है। साहित्यकार के अनुभव भी साहित्य को श्रेष्ठत्व प्रदान करते हैं। अतः साहित्यकार की रचना का अध्ययन करने से पूर्व उनके जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को जानना आवश्यक है।

1.3.1 कौसल्या बैसंत्री का जीवन परिचय :

जन्म :

कौसल्या बैसंत्री का जन्म अनुसूचित जाति के दलित महार परिवार में 8 सितंबर 1926 को महाराष्ट्र के नागपुर के खलासी लाईन बस्ती में हुआ।

माता–पिता :

कौसल्या बैसंत्री की माँ का नाम भागीरथी था। वे नागपुर के एम्प्रेस मिल में धागा बनाने का मजदूर का काम करती थी। उन्हें ग्यारह संतान हुई थी। उनमें से छः जीवित थी। उनमें कौसल्या द्वितीय संतान थी। माँ सुधारवादी विचारधारा की नारी थी। वह नागपुर के कस्तुरचंद पार्क में अपने बच्चों तथा पति के साथ डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का भाषण सुनने गयी थी। इस भाषण से उनकी विचारधारा में अधिक परिवर्तन हुआ। 'अपनी प्रगति करनी है तो शिक्षा प्राप्त करना बहुत जरूरी है। लडका और लडकी दोनों को पढाना चाहिए।' इस भाषण की पंक्तियों का उनपर इतना प्रभाव हुआ कि वे मिल मजदूरी के साथ चूडिया, कुंकुम, शिकाकाई बेचने का काम करके बच्चों को उच्च शिक्षित करने में पति को साथ दिया। अपनी जाति में उच्चशिक्षित लडका–लडकी नहीं मिले तब सभी बच्चों का आंतरजातीय विवाह करके आधुनिक नयी सुधारवादी दृष्टि रखी।

कौसल्या बैसंत्री के पिता का नाम रामाजी दामाजी नंदेश्वर था। प्रारंभ में अंग्रेजों के क्लब में बटलर के रूप में कार्यरत थे। बाद में 18 साल बेकरी में मजदूरी की। वह काम छोडकर कबाडी का काम किया। अंत में पत्नी के साथ एम्प्रेस मिल में मशीन में तेल डालने का काम किया।

कौसल्या बैसंत्री को चार बहने और एक भाई था। जनाबाई, मधुलता, पार्वती, अनुराधा और मनोहर उनके नाम थे। उनमें से मधुलता नागपूर की पहली दलित बी.ए.बीटी शिक्षित लडकी थी। बाद में वह नागपुर की पहली दलित राजपत्रित महिला अधिकारी बनी। पार्वती शिक्षिका थी। अनुराधा स्नातक होकर आज कॅनडा में स्थायिक हुई है। भाई मनोहर मॅकेनिक इंजिनिअर होकर भोपाल में जनरल मैनेजर पद पर कार्यरत था।

बचपन एवं शिक्षा :

कौसल्या बैसंत्री का बचपन नागपुर की दलित–श्रमिक बस्ती खलासी लाईन में ही बीता। बस्ती के जाईबाई के घर पर ही चौथी कक्षा तक की शिक्षा होने के बाद पाँचवीं से दसवीं तक भिडे कन्याशाला सीता बर्डी में शिक्षा ली। उसके उपरांत इसलॉप कॉलेज में प्रवेश लिया। दलित तथा महिला आंदोलन में सहभाग लेने के कारण तथा विवाह के कारण शिक्षा अधूरी रही। इसलिए उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में बी.ए. किया। कला विषयक जे.जे. कॉलेज से डिप्लोमा किया। शिक्षा लेते समय अनेक बार अपनी दलित जाति को छिपाना पडा।

पारिवारीक जीवन :

कौसल्या बैसंत्री गरीब दलित परिवार की होकर भी उन्होंने उच्चशिक्षा प्राप्त की है । उन्होंने दस साल की अवस्था में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का भाषण सुना था। उनके घर पर सामाजिक कार्यकर्ता किसन फागू बनसोडे का आना-जाना होता था। इसलिए सामाजिक कार्य का बचपन से परिचय था। वे नौवीं कक्षा से दलित महिलाओं के आंदोलन में कार्यरत थी। जो ऑल इंडिया शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन के विद्यार्थी संगठन में जॉईंट सेक्रेटरी के पदपर कार्य करते थे। (उस समय बिहार के उच्चशिक्षित देवेंद्रकुमार से परिचय हुआ।) बाद में उन्हीं के साथ विवाह करने का निर्णय लिया। उन्होंने एम.ए.एल.एल.बी. किया था और डी.लिट कर रहे थे। प्रिन्सिपल सेंट्रल इन्फॉर्मेशन सर्व्हिस ब्रॉड कास्टिंग में डेप्युटी डायरेक्टर पद पर कार्यरत हुए थे। माँ-पिता के सकारात्मक विचारधारा से आंतरजातीय विवाह हुआ। देवेंद्रकुमार बडे विद्वान साहित्यिक समाजसेवक थे। इस अलौकिक कार्य के लिए उन्हें स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन मिलती थी। वे दोनों साथ साथ आंदोलनों में कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत थे। देवेंद्रकुमार की पहली पत्नी तथा बच्चों का अंत हुआ था। विवाह की कुछ दिनों बाद उनका स्वभाव ही गर्म मिजाज और जिद्दी बन गया। वे कौसल्या बैसंत्री को छोटी-छोटी बात पर अपमानित करने लगे। मारपीट तथा गाली गलोच पर भी उतर आने लगे। कौसल्या बैसंत्री के पति आई.ए.एस.अधिकारी होकर भी उनके साथ झगडा करते थे। यह झगडा कोर्ट में गया था। पति घरखर्चे के लिए पैसे नहीं देते थे। तब कोर्ट ने ५०० रुपये मासिक खर्चा देने का निर्णय दिया था। बाद में पति का निधन होने पर लडकी और लडके के आश्रय में ही उन्हें रहना पडा।

कौसल्या बैसंत्री जी को पाँच संताने हुई। उनमें से बडा लडका उम्र के ग्यारहवे साल मृत हुआ। अपने बच्चों की परवरीश करते हुए लेखिका ने दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं को जागृत करने का कार्य किया। आगे चलकर 'भारतीय महिला जागृति परिषद' की स्थापना की।

सामाजिक कार्य, पारिवारिक झगडे तथा पति से अलग होने के बावजूद भी उन्होंने अपने बच्चों के प्रति प्रेम तथा कर्तव्य की भावना कायम रखी। लडका राजीव रंजन एम.एस.डब्ल्यू शिक्षा प्राप्त कर दिल्ली के नैशनल बिल्डींग कन्स्ट्रक्शन कार्पोरेशन में जनरल मैनेजर बना। प्रदीप पश्चिम बंगाल के कोल इंडिया में जनरल मैनेजर बना। अतिशकुमार चेन्नई में मल्टीनैशनल इन्शुरंस कंपनी में कार्यरत है। लडकी सुजाता पारमिता पूना के फिल्म इन्स्टिटच्यूट से फॅकल्टी ऑफ ॲक्टींग में स्नातक हुई पहली दलित लडकी है। जो पहला दलित थिएटर ग्रुप बनाकर दिल्ली में दलित सांस्कृतिक विरासत पर कार्यरत है।

1.3.2 कौसल्या बैसंत्री का व्यक्तित्व :

कौसल्या बैसंत्री का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे नारी मुक्ति आंदोलन चलानेवाली समाजसेविका कार्यकर्ता तथा लेखिका थी। उनका मराठी हिंदी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं पर बराबर अधिकार था। वे बी.ए. तक पढी-लिखी सुशिक्षित, विद्वान नारी थी। उन्होंने नारी की विविध समस्याओं के संबंधीत

अनेक आंदोलन एवं अधिवेशन यशस्वीता से संपन्न किये थे। 'दोहरा अभिशाप' यह दलित नारी का हिंदी में लिखा गया पहला आत्मकथन था। इस विशेषता के कारण उन्हें अधिक प्रसिद्धी प्राप्त हुई थी। अध्ययनशीलता, संघर्षशीलता, संवेदनशीलता, सादगी, नम्रता, स्वाभिमानी आदि उनके स्वभाव के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू दिखायी देते हैं। उनका व्यक्तित्व पाठकों के लिए प्रेरक हैं।

वेशभूषा :

कौसल्या बैसंत्री दिखाई देने में सुंदर थी। उनका रंग गोरा था। वे हमेशा सूत की साडी पहनती थी। उन्हें सीधे-साधे साफ-सूथरे कपडे पहनना पसंद था। उन्होंने कभी भी ऊंची किमतोंवाले महंगे कपडे पहनना पसंद नहीं किया। उनका चेहरा गोल था। शरीर मजबूत होने से दूसरों पर उनके व्यक्तिमत्त्व की छाप अपने आप पडती थी। चेहरे पर बडी आकार वाला चष्मा रहता था। आवाज में तीव्रता थी। चेहरे पर कर्तृत्वभाव दिखायी देता था। उनकी भाषा में शुद्धता थी।

विवाह के पूर्व गरीबी थी। विवाह के बाद पति के यहाँ अमीरी होकर न पटने के कारण गरीबी का ही साथ देना पडा। पति हाथ में अधिक पैसे कभी देते नहीं थे। इसलिए विवाह के बाद माँ बहन भाई के पैसों पर ही निर्भर रहकर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना पडा। उन्होंने जे.जे. आर्ट कॉलेज से डिप्लोमा किया था। इससे सूती सफेद साडी पर हात से डिझाईन बनाकर वही साडी वह पहनती थी। उनके हाथ में सिर्फ दो-दो चुडियाँ रहती थी। माथे पे छोटी-सी बिंदी रहती थी। रजनी तिलक उनकी वेशभूषा के बारे में कहती, 'कौसल्या बैसंत्री एक अध्यामिका की तरह प्रतित होती थी।' इतनी सीधी-साधी उनकी वेशभूषा रहती थी।

स्वभाव :

कौसल्या बैसंत्री का स्वभाव बहुत ही अच्छा था। उनके बोलने से शालीनता प्रकट होती थी। वे हमेशा मुस्कुराते हुए बोलती थी। सामाजिक कार्यकर्ता का आदर्श रूप उनमें दिखायी देता था। उनका स्वभाव सदैव मददगार के रूप में था। वे स्वयं गरीब परिवार से आयी है यह बात हमेशा उनके मन में थी। इसलिए उनके पास आयी हुई हर महिला उनसे लाभान्वित होकर ही वापस लौटती। वे आंदोलन में हमेशा आक्रमक विद्रोही तथा क्रांतिकारी थी। लेकिन कार्यकर्ता के सामने मिलनसार मानवीय गुणों से युक्त सहृदय चरित्र के रूप में रहती। गरीब, दीनदलित महिलाओं के प्रति उनमें आत्मियता थी। प्रामाणिकता, ईमानदारी, मेहनत निस्वार्थ भाव स्वाभिमान ये गुण उनके पास हमेशा रहे। वे स्त्रीवादी विचारधारा की प्रगतिशील महिला थी। दूसरों के प्रति उनके मन में सदैव आदर तथा अपनापन था।

रहन-सहन :

कौसल्या बैसंत्री की रहन-सहन सीधा -साधी थी। विवाह के उपरांत चालीस साल तक वे पति के साथ रही। पति से पीडा अपनाम का जीवन सहा। बाद में सहन न होने पर घर तथा उदरनिर्वाह के लिए कोर्ट में केस करना पडा। मासिक कुछ पैसे मिले। उस पर रहन-सहन प्रारंभ किया। सुबह

उठते ही अखबार पढना उन्हें पसंद था। वैचारिक किताबे पढना तथा लिखना हमेशा अच्छा लगा। घर साफ-सुथरा रखना, अपनी कारीगरी से घर को सजाना। महंगी वस्तूएं घर में लाने के वे खिलाफ थी। वे खास किसी बात की शौकिन नहीं थी। किसी दिन होटल में जाकर खाना खाया ऐसा कभी नहीं हुआ। जो भी खाना हो घर में बनाकर बच्चों के साथ खाने में उन्हें अच्छा लगता। महाराष्ट्रीयन खाना उन्हें अच्छा लगता था । पेंटींग, लेखन में रूचि थी। वे हमेशा भविष्य तथा आगे की सोचती। लोगों के साथ राजनीति पर चर्चा करती थी ।

सामाजिक कार्य :

१० साल की अवस्था में कौसल्या बैसंत्री जी ने डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का भाषण सुना था। नागपुर की खलासी लाइन दलित बस्ती में डॉ. अम्बेडकर जयंती का आयोजन करती थी। यहाँ से कौसल्या बैसंत्री का सामाजिक कार्य में प्रवेश हुआ । डॉ. बाबासाहब के सहयोगी किसन फागू बनसोडे उनके घर पर माता पिता को मिलने के लिए आते थे। बस्ते की दलित नारियों को न्याय देने का अनेक बार प्रयास किया था। बी ए की शिक्षा के समय नागपुर में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की अध्यक्षता में हुए आखिल भारतीय अस्पृश्य अधिवेशन में सहभाग लिया था। भारतीय अस्पृश्य विद्यार्थी फेडरेशन की वह जॉईंट सेक्रेटरी थी। नागपुर भंडारा, उमरेट, खडगपूर तथा देश के विविध जगहों पर वे भाषण देकर लोगों में जागृति लाने का प्रयास करती थी। मराठी, हिंदी, अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान होने के कारण अंग्रेजी भाषणों के अनुवाद भी करती थी।

विवाह के उपरांत दिल्ली में भारतीय महिला जागृति परिषद की उन्होंने स्थापना की। यह दिल्ली की पहली दलित महिलाओं की परिषद थी। दिन-रात महिलाओं की समस्याएं सुनकर उन्हें न्याय देने का प्रयास करती थी। वह महिलाओं को संगठित कर सभा-सम्मेलनों का सतत आयोजन करती थी। नारी चेतना को जगानेवाली वह एक जागरूक कार्यकर्ता थी। महिलाओं को प्रेरणा देने के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में महिलाओं के अधिकार पर कार्यक्रमों में भाषण देती रही । पढना, लिखना, संगीत, पेंटिंग , गृहगसज्जा आदि के बारे में महिलाओं को मार्गदर्शन करती है । दलित महिलाओं को मुख्यधारा में जोडने का वह हमेशा प्रयास करती रही । दलित महिलाओं की समस्याओं पर अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष रामधन तथा राष्ट्रपति ज्ञानी झैलसिंह जी से भी मिली थी। कौसल्या बैसंत्री जी नारी के प्रश्नों के बारे में अधिक संवेदनशील थी। 1984 ई. में 'दलित वुमन प्रॉब्लेम अँड प्रॉस्पेक्टस' इस विषय पर दिल्ली में परिषद ली थी। देश के विविध राज्यों से महिलाएं आयी थी। वे इतनी जागृत तथा क्रांतिकारी आंदोलन कर्ती कार्यकर्ता थी कि उन्हे अनेक बार आंदोलनों में पुलिस फौज का सामना करना पडा। जिसमें बंदी बनाना या तुरूंगवास ये बाते उनके लिए सामान्य बनी थी। महिलाओं को मार्गदर्शन करते समय वे हमेशा कहती थी कि, दलित महिलाओं ने आंदोलन की ओर जितना ध्यान देना चाहिए उतना नहीं दिया।

वे एक स्वाभीमानी कार्यकर्ता के साथ आदर्श संगठक भी थी। महिला आधिवेशनों के माध्यम से

देश के अनेक महिला कार्यकर्ताओं से उन्होंने संपर्क रखा था। महाराष्ट्र की प्रा. कुमुद पावडे, मीनाक्षी मून, उर्मिला पवार, नलिनी सोमकुवर, नलिमा टेकचंद, दिल्ली की रेखा गौतम, कृपा गौतम, रजनी तिलक, रमणिका गुप्ता, विमल थोरात, बिहार की डॉ. मालेचा घोष, बेंगलोर की डॉ. टुथ मनोरमा आदि विविध स्त्री कार्यकर्ताओं की अपनी सहेली माध्यम से भी साथियों के साथ संपर्क रखा। प्रा. कुमुद पावडे, रजनी तिलक, उर्मिला पवार, मिनाक्षी मून, विमल थोरात आदि महिलाओं के आग्रह पर ही उन्होंने 'दोहरा अभिशाप' यह आत्मकथन लिखा।

पुरस्कार सम्मान :

कौसल्या बैसंत्री जी को उनके सामाजिक तथा साहित्यिक कार्य के लिए उन्हें विविध सामाजिक संस्थाओं ने विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया-

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली से सावित्रीबाई फुले पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन २००० में उनकी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' के लिए रमणिका फाऊंडेशन ने 'कामिल बुल्के पुरस्कार' से सम्मानित किया।

निधन :

कौसल्या बैसंत्री उम्र के 86 वर्ष तक महिला स्वतंत्रता अधिकार के बारे में कार्यरत रही। अपने पारिवारिक उत्पीडन से भी त्रस्त रही। जिसमें वे तीन-चार साल तक बीमार थी। चेन्नई में छोटा लडका अतिशकुमार और लडकी सुजाता पारमिता अस्पताल में सेवा करते रहे। लेकिन स्मृतिभ्रंश की बीमारी में 24 जून 2011 को सुबह नौ बजे उन्हें अपना प्राण त्यागना पडा।

फिर भी कौसल्या बैसंत्री भारतीय महिला जागृति परिषद और 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथन के माध्यम से अमर रहेगी।

1.3.3 कौसल्या बैसंत्री का कृतित्त्व :

कौसल्या बैसंत्री प्रसिद्ध दलित कथाकार, अनुवादक, लेखिका तथा आंदोलक कार्यकर्ता थी। वे दलित तथा नारी वर्ग की समस्याओं पर लेखन करनेवाली संवेदनशील लेखिका थी। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के 'जनता' पत्रिका में लेख तथा भाषण प्रकाशित करती थी। मद्रास के 'जयभीम दलित' मे भी सामाजिक विषयों पर लिखती थी। इसके साथ 'हंस', 'युद्ध', 'आम आदमी' आदि मासिक पत्रिकाओं में और 'दिनमान', 'कथा देश' में स्त्रीवादी कथाएँ तथा नारी जागृति विषयक लेख लिखती थी। उन्होंने उर्मिला पवार (मराठी की लेखिका) की न्याय, सहावे बोट, बाईची जात इन कथाओं और 'आयदान' इस आत्मकथा का हिंदी में अनुवाद किया। किताब रूप 'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा का लेखन उनके लेखिका के रूप का महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। क्योंकि इस लेखन से उन्हें अधिक प्रसिद्धी मिली। यह आत्मकथा दलित नारी की हिंदी में लिखी गयी पहली आत्मकथा है। यह

इस आत्मकथा की खास विशेषता है। इस आत्मकथन का कविता महाजन ने मराठी मे अनुवाद किया है। उन्होंने इसके साथ डॉ. आम्बेडकर, महात्मा फुले, मुक्ताबाई पर लेख लिखे हैं। कौसल्या बैसंत्री के पुरे साहित्यिक लेखन में 'दोहरा अभिशाप' एक महत्त्वपूर्ण किताब है। कौसल्या बैसंत्री के दलित लेखिका, कर्तृत्ववान महिला कार्यकर्ता, समाजसेविका आदि विशेषताओं से युक्त चरित्र निर्मिती के पीछे प्रेरणा थी भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर इस महापुरुष की, जिनकी विचारधारा से प्रभावित होकर कौसल्या बैसंत्री ने अपने जीवन में आयी कठिनाइयों का सामर्थ्य के साथ सामना किया।

कौसल्या बैसंत्री जी ने विवाह के 40 साल पीडा और संघर्ष में बीताये। उनकी आत्मकथा पति के कारण बनी हुई उत्पीडन की संघर्षमय कथा है। उन्होंने अपना भोगा हुआ दुःख समाज के सामने रखा है। पुत्र, भाई पति या अन्य किसी को आत्मकथा लिखकर नाराज करना उनका उद्देश्य नहीं है। नारी वर्ग को भी स्वतंत्रता चाहिए। यह प्रमुख मांग उनके इस लेखन कार्य के पीछे है। लेखिका का जन्म महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ है। उनकी मातृभाषा मराठी है। लेकिन उनका बहुतांश लेखन हिंदी में है। इसका कारण एकमात्र है उनका विवाह बिहार के देवेन्द्रकुमार से होने के बाद वे दिल्ली तथा मध्यप्रदेश इस हिंदी प्रांत में ही अधिक रहने के कारण अपने लेखन की माध्यम भाषा हिंदी ही स्वीकार की।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) कौसल्या बैसंत्री का जन्म .....को नागपुर में हुआ।

क) 8 अक्तूबर 1926 ख) 8 दिसंबर 1926

ग) 8 सितंबर 1926 घ) 8 नवंबर 1926

2) कौसल्या बैसंत्री की माँ का नाम .....था।

क) जनाबाई ख) भागेरथी

ग) साखराबाई घ) सरस्वती

3) कौसल्या बैसंत्री के पिता का नाम .....था।

क) शंकर ख) किसन

ग) रामाजी घ) दामाजी

4) कौसल्या बैसंत्री की शिक्षा .....तक हुई।

क) बी.ए. ख) एम.ए.

ग) बी.एस.सी. घ) बी.कॉम.

5) कौसल्या बैसंत्री का निधन .....की बीमारी में हुआ।

क) यक्षमा ख) डायबेटीस

ग) रक्तचाप घ) स्मृतिभ्रंश

6) कौसल्या बैसंत्री का निधन..... में हुआ।

क) मुंबई ख) दिल्ली ग) चेन्नई घ) नागपुर

7) कौसल्या बैसंत्री का निधन उम्र .....अवस्था में हुआ।

क) 86 क) 68 ख) 70 घ) 75

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए।

1) कौसल्या बैसंत्री का जन्म कहां हुआ था ?

2) कौसल्या बैसंत्री की बेटी का नाम क्या है ?

3) कौसल्या बैसंत्री के पति का नाम क्या है?

4) कौसल्या बैसंत्री के भाई का नाम क्या है?

5) कौसल्या बैसंत्री अपने पति के साथ कितने साल रही ?

6) विद्यार्थी जीवन में 'भारतीय अस्पृश्य विद्यार्थी फेडरेशन' में कौसल्या बैसंत्री कौन से पद पर कार्यरत थी?

7) कौसल्या बैसंत्री ने दिल्ली में कौनसा संगठन शुरू किया था?

8) कौसल्या बैसंत्री का निधन कब हुआ?

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

दलित : दबा हुआ।

दलित विमर्श : दलितों के जीवन संबंधी।

अभिशाप : अभिशप्त विचार, अहितकारी बोल।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नोंके उत्तर :

1) 8 सितंबर 1926

2) भागेरथी

3) रामाजी

4) बी.ए.

5) स्मृतिभ्रंश

6) चेन्नई

7) 86

आ)

1) कौसल्या बैसंत्री का जन्म महाराष्ट्र के नागपुर महानगर के खलासी लाईन बस्ती में हुआ।

2) कौसल्या बैसंत्री की लडकी का नाम सुजाता परमिता है।

3) कौसल्या बैसंत्री के पति का नाम देवेंद्रकुमार बैसंत्री था।

4) कौसल्या बैसंत्री के भाई का नाम मनोहर था।

5) कौसल्या बैसंत्री अपने पति के साथ 40 साल रही।

6) विद्यार्थी जीवन में 'भारतीय अस्पृश्य विद्यार्थी फेडरेशन' में कौसल्या बैसंत्री 'जॉईंट सेक्रेटरी' पद पर कार्यरत थी।

7) कौसल्या बैसंत्री ने दिल्ली में 'भारतीय महिला जागृति परिषद' नाम का संगठन शुरू किया था।

8) कौसल्या बैसंत्री का निधन 24 जून 2011 के दिन सुबह नौ बजे हुआ।

1.7 सारांश :

1. दलित महिला लेखिकाओं में तथा महिला कार्यकर्ताओं मे कौसल्या बैसंत्री जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

2. दलित महिला लेखिकाओं में कौसल्या बैसंत्री का हिंदी पहला आत्मकथन है।

3. मिलनसार, शालीनता, संवेदनशील, नम्रता, स्वाभीमान और सादगी ये इनके व्यक्तित्त्व के महत्त्वपूर्ण पहलु रहे हैं।

4. इन्हें जीवन में भोगे हुए वास्तवदर्शन ने एक आदर्शवादी सामाजिक कार्यकर्ता तथा लेखिका बनाया।

5. संघर्षशील जीवन से उभरकर आगे बढने की प्रेरणा कौसल्या के व्यक्तित्व से मिलती है।

6. आज भी पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को दोयम स्थान दिया जाता है।

7. कौसल्या जी के व्यक्तित्व में लेखिका, नारी, सामाजिक कार्यकर्ता, आंदोलक का रूप दिखाई देता है।

8. उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से महिला एवं दलितों की समस्याओंको चित्रण कर, उनसे मुक्ति दिलाने का प्रायास किया है।

9. कौसल्या जी ने साहित्य और सामाजिक कार्य के माध्यम से भारतीय महिलाओं को न्याय प्रदान करने का प्रयास किया। उनका कार्य महिलाओं के लिए प्रेरणादायी है।

1.8 स्वाध्याय :

1) कौसल्या बैसंत्री का जीवन परिचय लिखिए ।

2) कौसल्या बैसंत्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए ।

3) कौसल्या बैसंत्री के कृतित्व का परिचय दीजिए ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) कौसल्या बैसंत्री के समान हिंदी दलित महिला रचनाकार डॉ. सुशीला टाकभौरे जी का 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथन को पढिए और कौसल्या बैसंत्री के आत्मकथन के साथ उसकी तुलना कीजिए।

2) कौसल्या बैसंत्री के समान मराठी दलित महिला रचनाकार बेबीताई कांबळे, कुसुम पावडे, उर्मिला पवार, शांताबाई कांबळे, शांताबाई दागी आदि के आत्मकथनों को पढिए और कौसल्या बैसंत्री के आत्मकथन के साथ उसकी तुलना कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) कौसल्या बैसंत्री : 'एक लेखिका... एक कार्यकर्ता' – 'रजनी तिलक', 'बयान', संपा. मोहनदास नैमिशराय, (नई दिल्ली : दिसंबर 2011) पृ. सं. 8

2) कौसल्या बैसंत्री : 'एक लेखिका.... एक कार्यकर्ता', 'रजनी तिलक', 'युद्धरत', 'आम आदमी' संपा. रमणिका गुप्ता (नई दिल्ली : अक्तूंबर – दिसंबर 2011) पृ. सं. 17

3) अंतःस्फोट (मराठी) प्रा. कुमुद पावडे, सुगावा प्रकाशन पुणे. तृतीय सं. 73 (2013)

4) आम्ही इतिहास घडविला (मराठी) उर्मिला पवार, सुगावा प्रकाशन पुणे.

5) हिंदी आत्मकथा (स्वरूप विवेचन और विकासक्रम) – सन 1881 सं.(2001) डॉ. सविता सिंह (कानपुर : शैलजा प्रकाशन, प्र. सं. 2009)

●●●

सत्र– 6 इकाई – 2
'दोहरा अभिशाप' : कथावस्तु एवं शीर्षक

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य।

2.2 प्रस्तावना ।

2.3 विषय विवेचन ।

2.3.1 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास का परिचय।

2.3.2 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास की कथावस्तु ।

2.3.3 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास का शीर्षक।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

2.5 पारिभाषिक शब्द – शब्दार्थ ।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

2.7 सारांश ।

2.8 स्वाध्याय ।

2.9 क्षेत्रीय कार्य ।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) कौसल्या बैसंत्री के 'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथात्मक उपन्यास के कथ्य से परिचित होंगे।

2) 'दोहरा अभिशाप' के माध्यम से कौसल्या की जीवनगाथा से परिचित होंगे।

3) हिंदी महिला आत्मलेखन में 'दोहरा अभिशाप' के महत्त्व से परिचित होंगे।

4) हिंदी के दलित महिला आत्मकथा में 'दोहरा अभिशाप' के स्थान से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी दलित महिला आत्मकथा लेखन में 'कौसल्या बैसंत्री' लिखित 'दोहरा अभिशाप' एकमात्र आत्मकथात्मक उपन्यास है। हिंदी आत्मकथात्मक लेखन में मोहनदास, नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमार लिंबाळे आदि ने अस्पृश्य समाज की महिलाओं का जीवन चित्रित किया है। इसके फ्लैप पर इसे आत्मकथानात्मक उपन्यास कहा गया है परंतु इसके साथ यह भी कहा है कि 'यह उपन्यास लेखिका के लंबे संघर्षपूर्ण, कडवे-मीठे अनुभव से भरे जीवन के सिंहावलोकन के रूप में लिखा है...।' आत्मकथा एक दृष्टि से अपने ही जीवन का जीवंत दस्तावेज होता है, जहाँ स्मृतियों का आवाहन किया जाता है। स्वयं लेखिका इसे अपने माता-पिता के त्याग, समर्पण को समर्पित करती है। इसमें उनके पूरे परिवार का संघर्ष है जो गरीबी, अंधविश्वास जातीय प्राताडनाओं से लड रहा है, इतना ही नहीं बल्कि आनेवाली ऐसे अनेक परिवारों को जीने का रास्ता भी प्रशस्त कर रहा है। भूमिका में बैसंत्री ने इसे 'भोगा हुआ यथार्थ' कहा है। अपनी आत्मकथा में उन्होंने 'भारतीय महिला जागृति' परिषद के माध्यम से दलित कार्यकर्ताओं में गाव एवं शहर में घूमकर इस संगठन को मजबूत बनाना है। यदी देश की दलित महिलाओं का एकमात्र संगठन था। इस संगठन के माध्यम से दलित महिला आंदोलन को बल मिला। डॉ. बाबासाहेब और 'दोहरे अभिशाप' की नायिका कौसल्या दोनों समकालीन थे। आंबेडकर जी से प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से ही वह समाजसेवा से जुडी थी। कौसल्या बैसंत्री जी महाराष्ट्रीयन थी।

2.3 विषय विवेचन :

2.3.1 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास का परिचय

'दोहरा अभिशाप' शीर्षक आत्मकथा 1999 में परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। आत्मकथाकार कौसल्या ने अपने जीवन को 68 वर्षों के 'भोगे हुए सत्य' को 28 भागों में और 124 पृष्ठों में विभाजित किया है। इसमें उनके जीवन के वे तमाम घटनाक्रम हैं जिसमें लेखिका के जीवन के उतार-चढाव अंकित है। लेखिका ने इसे 'प्रकरण' नाम से संबाधित किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए आत्मकथा के कथानक लेखन भी 28 भागों में ही किया है।

प्रस्तुत आत्मकथा दलित महिला की ही नहीं, दलित समाज के मन में आत्मसम्मान जगाती है। दलितों के मन में अन्याय के विरोध में लडने की शक्ति निर्माण करती है। दलित समाज को स्वतंत्रता, बंधुता, समता, सामाजिक न्याय व शिक्षा के संदर्भ में जागरूकता निर्माण करने की भी प्रेरणा देती है।

2.3.2 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास की कथावस्तु

प्रकरण – 1

लेखिका ने प्रकरण एक के अंतर्गत अपने माँ-बाप, बाबा-दादी का परिचय दिया है। अपनी दादी

के विवाह का परिचय, अस्पृश्य समाज के रीतिरिवाजों, परंपराओं का भी विस्तार से वर्णऩ किया है। इसी प्रकार विधवा-विवाह, बालविवाह की प्रथा, घरकाम का व्यवस्थापन, छुट्टी के दिनों का नियोजन आदि अनेक बातों का लेखाजोखा प्रस्तुत प्रकरण में किया गया है।

कौसल्या के माँ-बाबा नागपुर-एम्प्रेस मिल में काम करते थे। माँ धागा बनानेवाले विभाग में थी तो पिताजी मशीनों में तेल डालने का काम करते थे। रविवार के दिन मिल को छुट्टी होती थी। माँ को पाच लडकियाँ थी, बडी बहन के बाद बेटा हुआ था परंतु डेढ वर्ष का होते मर गया। उसके बाद दो बेटियाँ दस ग्यारह महीने होते ही चल बसी। उसके माँ ने लगातार चार बेटियों को जन्म दिया, अब पांच बहनें जीवित है। माँ ने बच्चों का भरण-पोषण बडे प्यार से किया था। रविवार का दिन घर के कामों का दिन था- जैसे लडकियों के बाल धोना, हप्ते भर के चावल बीनना, दीवारें साफ करना एवं गोबर से उन्हें लीपना आदि।

लेखिका की माँ काम के व्यवस्थापन का केंद्र थी। माँ और बेटियों में सुविधानुसार व्यवस्था थी। बाबा भी अनेक प्रकार के काम करते थे। जंगल से लकडी लाना, उन्हें काटना, बरसात के मौसम के लिए लकडियों का प्रबंध करना आदि। माँ-बाबा बेटियाँ सारे छुट्टी के दिन घर काम में व्यस्त रहते थे। बस्ती में ही गुड्डी गोदाम नामक जगह पर कसाईखाना था, वहाँ एक छोटीसी मार्केट भी थी। ज्यादातर बस्ती के लोग एवं लेखिका का परिवार गाय का माँस खाते थे। रविवार के दिन भात, रोटियां मांस बनता था। कभी कभार बेसन की कढी, सब्जी, भात बनता था। आमतौरपर गरमी के दिनों में साल भर की खाने की चीजों का प्रबंध किया जाता था- जैसे मूग उडद के पापड, बडियाँ, सेवइयाँ आदि। यह एक अच्छी गृह व्यवस्थापन था औरतों का। अपनो परिवारों, मेहमानों, रिश्तेदारों के लिए यह प्रबंध किया जाता था। लेखिका के पडोस में कमनी आत्या रहती थी जिनके साथ लेखिका की बहने चरोटा, चौलाई, पातूर, खापखुटी नामक साग तोडकर लाती थी। इस मिश्रित साग की सब्जी बडी स्वादिष्ट लगती थी।

प्रकरण दूसरा :

मोडकू जी के साथ कौसल्या की नानी का विवाह :

इस प्रकरण में कौसल्या के परिवार के सारे दैनंदिन नैमित्तिक कामों को दोहराया गया है। कौसल्या की माँ की निमरानी में घर के सारे कामकाज होते थे। अक्सर वह भूतकालीन घटनाओं में खो गई है। जब कौसल्या दस साल की थी तब आजी (नानी) का स्वर्गवास हुआ था। आजी खुबसुरत थी। गोरा रंग, तीखे नैन-नक्शा, भूरी आँखे, काले घने बाल वाकई सुंदर थी। आजी छः भाईयों में इकलौती एवं छोटी थी। आजी के भाई गोंदिया (महाराष्ट्र) में रहते थे। आजी का गाव अस्पृश्य समाज का था। गाव में स्कूल नहीं था, पढने के लिए अन्य कोई सुविधा भी नहीं थी। आजी की पाच एकड जमीन थी, उसीपर पूरे परिवार का गुजारा चलता था। घर की सारी महिलाएँ, पुरुष अपने और दूसरों की खेती

में भी काम करते थे। गाव में अस्पृश्यता का बोलबाला था, सवर्णों के घर इन्हें कोई नहीं मिलता था। गाव में बालविवाह प्रथा प्रचलित थी। आजी का विवाह भी बालविवाह ही था, आजी के पति बारह साल के थे। आजी ससुराल ज्यादा नहीं रही। अचानक एक साप के काटने से आजोबा की मृत्यु की खबर मिली। आजी भाईयों के साथ अपने ससुराल पहुँची। घर शोकसागर में डुबा था। आजी के सारे सौभाग्य चिन्ह मिटाए गए थे आजी मायके आ गयी। 'दुखोडा फेडना' रस्म हो गया। आजी के दूसरे विवाह की बहस घर में होने लगी, उनके भाईयों ने भंडारा जिले के मांडवी गाव के मोडकूजी कोंडागळे को आजी के लिए दूसरा वर चुना था। मोडकूजी विवाहित एवं दो बच्चों के बाप थे। उनको गाव में 'साहूकार' कहा जाता था। अछूतों के मोडकूजी की सांपत्तिक स्थिति अच्छी थी।

मोडकूजी वर्ण से काले, बडे मूँछवाले, रौबदार चेहरा एक प्रभावित व्यक्तित्ववाले थे। आजी अपने नये ससुराल में सारा काम करती, बडी सहिष्णू थी। आजोबा मोडकू सनकी क्रोधी थे, दारू पीते। आजी ने एक लडके और दो लडकियों को जन्म दिया पहला लडका श्रावण और बेटियों में छोटी भागेरथी (लेखिका की माँ) आजोबा गुस्सैल स्वभाव के और झगडालू थे। आजी पर श्रेष्ठता दिखाने के लिए डाँटते। कभी कभी पीटते भी। वह जीवन से तंग आ गई थी। अब आजी की सहनशक्ति ने आवाज दिया। परंतु व कहाँ जाती? वह रातभर रोती रही और पक्का निश्चय भी किया की अब अपने पाँव पर खडे होकर बच्चों का पालन करेगी। उन्होंने नागपूर जाना निश्चित किया। नागपुर में आजी के रिश्ते का भतीजा था। उसी के पास जाना तय हुआ। आजी दोनों बच्चों को लेकर ढूँढते ढूँढते भतीजे के पास नागपुर गई।

प्रकरण तीसरा :

साखराबाई एक दयालू महिला :

कौसल्या बैसंत्री जी ने तीसरे प्रकरण में अपनी माँ भागेरथी का विवाह, रामटेक का वर्णन, भागेरथी भी आशा-आकांक्षा, नागपुर में फैली प्लैग की बीमारी, सनकी स्वभाव के आजोबा, महार जाति का बारह उपजातियाँ, कोसरे जाति के रीति-रिवाज एवं परंपराएँ, सूर्या-त्योहार आदि बातों को- घटनाओं को विस्तार से लिखा है। कौसल्या के पिता पारडी गाव में साखराबाई के घर के पास ही रहते थे। दादी को भली जवानी में वैधव्य आया था, उनके दो बच्चे थे। बच्चों के पालन-पोषण हेतु दादी ने दूसरा विवाह (पाट) कर लिया था। यही व्यक्ति कौसल्या के दादा थे। कुछ दिनों बाद दादा दादी दोनों स्वर्ग सिधारे। तब कौसल्या मात्र तीन साल की थी। उन्हें एक बडा भाई और बहन थी। कौसल्या के पिता का चाचा-चाची से कोई लगाव नहीं था। आठ साल तक वे चाचा के यहाँ रहे। साखराबाई अच्छी पडोसी होने कारण बडी दयालू थी। साखराबाई के घर के सारे छोटे मोटे कामकाज वे लगन के साथ करते। पिताजी के इमानदारी एवं लगन के कारण दोनों में स्नेह निर्माण हुआ था। साखराबाई ने उन्हें पाला पोसा था। पिताजी देखने में सुंदर थे। रंग गोरा साफ, नाक-नक्शा अच्छा उंचा कद उनका

नाम रामा था। अब पिताजी साखराबाई के लिए पुत्र ही बन गए थे।

साखराबाई के पति कोतवाल थे। साखराबाई कौसल्या की जाति की ही थी परंतु उनकी उपजाति अलग थी। महार जाति में साडे बारा उपजातियाँ थी। सबमें खान-पान हो जाता था पर विवाह मात्र अपनी ही उपजाति में होता था। उपजातियों में शादी की रस्मे भी एक जैसी नहीं थी। इस प्रकरण में लेखिका ने कोसरे उपजाति उसकी भाषा, रीतिरिवाज, परंपरा आदि का परिचय दिया है। लेखिका कहती है - 'योगायोग ही कहिए, आजी को लडका साखराबाई के घर ही मिला। वह भी कोसले उपजाति का- आजी की जाति का। उसी के साथ भागेरथी, मेरी माँ का विवाह हुआ और वे मेरे बाबा थे।'

प्रकरण 4 :

लेखिका की माँ की गृहस्थी का वर्णऩ :

इस प्रकरण में पारडी गाव के अकाल का वर्णन है। गाव के लोग पारडी छोडकर शहर जाने लगे थे। साखराबाई भी रामा को लेकर नागपुर आ गई, वहाँ धरमपेठ नामक बस्ती में वे रहने लगे। धरमपेठ की यह बस्ती दलितों की भी। रामा को नौकरी की तलाश थी, एक दिन नागपुर के सी.पी. क्लब में उन्हें नौकरी मिल गई। यह क्लब अंग्रेजों का था। वहाँ रामा क्लब में कुर्सी, टेबल साफ करना, टेबर पर शराब बोतले रखना, खाने एवं डिनर का सामान रखना आदि काम कर लिया करते थे। वहाँ का बचा कुचा-का खाना साखराबाई के लिए लेकर आते थे। बाद में लेखिका की माँ भागेरथी से इनका विवाह हुआ। माँ को भी बाद में काम मिल गया और जीवन निर्वाह ठीक से चलने लगा। दादी के लिए लेखिका बडी प्यारी थी।

भतीजे ने आजोबा को बाबा के बारे में लिखा था। आजोबा आ गए। भतीजे के घर ठहरते थे। उन्होंने माँ के लिए साडी लाई थी और खाने के लिए बहुत-सी चीजे। भतीजे ने आजोबा को बाबा के बारे में सारी बाते कही। लडका अनाथ है और उसे बावने जाति की औरत ने पाला है इस कारण आजोबा ने यह रिश्ता नकारा। बाद में आजोबा को बाबा के बारे में शरीफ, शांत, सुंदर रूप, नौकरी सारी सकारात्मक विशेषताएँ स्पष्ट की। आजी भी अपने निश्चय पर अटल रही। बडी मुश्किल से आजोबाने होकार दिया और बाबा और भागेरथी का विवाह हुआ।

कौसल्या की माँ ने सर्वेंट कॉलनी में अपनी गृहस्थी जमा ली। परंतु वह हमेशा रोती रहती और उदास भी। वह बाबा को नौकरी छोडने के लिए कहती थी। बाबा का नौकरी छोडना कठीन था तुरंत दूसरी नोकरी पाने जैसे ही। वे अब तेलंगखेडी के सिविल लाइंस में रहते थे। यह जगह बडी सुनसान थी, कोई चहल-पहल यहाँ नही थी। यह पर माँ को पहली संतान लडकी हुई। बाद में माँ ने बच्चों को जन्म दिया पर लगातार तीन बच्चों की मृत्यु हुई। थोडे दिनों बाद बाबा ने नौकरी छोड दी और घर के पास ही एक जमीन खरीद कर छोटा-सा झोपडा बना लिया और एक ईसाई विधवा महिला की बेकरी में अठारह रुपये माहवार की नौकरी करने लगे।

प्रकरण 5 :

लेखिका का जन्म :

नागपुर के खलासी लाईन में माँ का परिवार रहता था। बस्ती में अधिकांश लोग अछूत, अनपढ एवं मजदूर थे। बस्ती में पक्की सडक थी। सडक की एक ओर बडे बडे पक्के मकान थे जहाँ बडी जाति के लोग रहते थे। सडक की दूसरी ओर गरीब, अशिक्षित लोग। इन बडे घरों के बीच ही डबलरोटी बनाने की बेकरी थी जहाँ लेखिका के पिता काम करते थे।

इसी बस्ती में 8 सितंबर 1926 को लेखिका का जन्म हुआ था। लेखिकाने अस्पृश्य समाज में प्रचलित बलिप्रथा का भी जिक्र किया है। लेखिका के जन्म के तुरंत घर में मंत्र-तंत्र जादू टोने किए गए। पैदा होते ही पाँच धातू की नथ से उनकी नाक छेदी गई थी। यह सारी प्रथाएँ अज्ञान, अशिक्षा के कारण चलती रही। आज उसकी याद आते ही उन्हें अपमानित लगता हैं।

लेखिका की माँ अब नागपुर के एम्प्रेस मिल में नौकरी करने लगी थी। आजी दिहाडी पर काम करती, बडी बहन जनाबाई लेखिका की देखभाल करती थी। बचपन में लेखिका बहुत बीमार रहती। लिखिकाको भरपूर आयुष्य मिले इसलिए पूजा-पाठ, मंत्रतंत्र होते ही रहते थे। लेखिका का नाम खराब-सा रखा। 'कचरी' मतलब 'कूडा-करकट'। लेखिका के बाद जो लडकी पैदा हुई उसका नाम रखा गया था 'उरकुडी' मतलब 'कुडे का ढेर'। बाद में ये नाम बदले। लेखिका का नाम 'कासल्या' और छोटी बहन का नाम 'मधुलता' उसके पति ने रखा था। बस्ती के सारे लोक लेखिका को 'कचरी' नाम से ही पुकारते थे।

लेखिका के भरणपोषण में आजी ने काफी कष्ट उठाए थे। जब लेखिका दस महिने की थी तभी आजी चल बसी। पंढरपुर के विठोबा के चरणों में आजी ने लेखिका के लिए लंबी आयु माँगी थी। पंढरपुर की यात्रा की वापसी में ही आजी को कॉलरा, दस्त हो गया था। अक्सर तीर्थ-स्थलोंपर अस्वच्छता से बीमारियाँ फैलती है। आजीने नागपुर के बस अड्डे पर अपना दम तोड दिया था। आजी की गठरी में कफन का सारा सामान मौजूद था वह हमेशा कहा करती थी कि किसी का बोझ न बने। लेखिका के आजी के बारे में उद्‌गार है- 'यह मानिनी स्वाभिमान से रही, किसी के आगे नहीं झुकी।' यह सारी बातें बताते बताते लेखिका की माँ की आँखों से आँसू बरसते थे।

प्रकरण 6 :

खलासी लाईन बस्ती की विशेषताएँ :

इस प्रकरण में हम खलासी लाईन की बस्ती से परिचित होनेवाले है। नागपुर में खलासी लाईन की जमीन का मालीक एक पटेल था जो जायसवाल जाति का बनिया था। लेखिका ने उसका वर्णन किया है। पटेल शांत प्रकृति का एवं शरीफ इन्सान था। इस बस्ती के ज्यादा तर निवासी गरीब,

अनपढ, अछूत और मजदूर थे। उन्होंने बस्ती के लोगों को जमीन उधार पर बेच दी थी। बस्ती के कुछ घर मिट्टी के थे तो कुछ घास-फूस के। इस बस्ती में महार, आंध्र के चमार, सफाई कर्मचारी तथा आदिवासी जाति गोंड रहते थे। यहाँ महारों की संख्या अधिक थी। नागपुर के एम्प्रेस मॉडेल मिल में टाटा मिल में पुरुष और औरतें दोनों बीडी बनाने का काम करते थे। यहाँ औरतें झाडू पोछा, दाई का काम, जच्चा-बच्चा को तेल मालिश करना आदि। बस्ती में अनेक परंपराओं का पालन होता था। जैसे ग्रहण लगने पर 'दे दान छुटे गिरान' की आवाज लगती थी। लोग दान में पुराने कपडे, पैसे, चावल देते थे। विविध जाति धर्म के लोग एकसाथ मिल जुलकर रहते थे, कोई भेदभाव नहीं होता था। विविध उत्सव-त्योहारों पर सभी के आंगन में बाजा बजता। सफाई कर्मचारी, गोंड जाति के लोग बस्ती का सारा काम करते थे। यहाँ लडकियों के लिए कोई स्कूल नहीं आई थी। बस्ती के माता-पिता में बच्चों को साक्षर करने की जागृति नहीं आई थी। बालमृत्यु अधिक होते थे। सफाई के प्रति लोगों का ध्यान कम था इसलिए बीमारियाँ जल्दी फैलती। बच्चों की बीमारी का इलाज नगरपालिका के अस्पताल में होता था। तंत्र-मंत्र जादू टोना, टोट का बोलबाला अधिक था। खासरा, चेचक टाईफाईड को देवी का प्रकोप माना जाता था। देवी के प्रकोप के भय से डॉक्टरी इलाज से लोग डरते थे। बीमारी ठीक होने तक घर में झाडू ये सफाई नहीं होती, कपडे से ही घर साफ किया जाता । बस्ती में पूजा का अजब तरीका था। आषाढ पूर्णिमा पर मंदिर में देवीपर बकरे, मुर्गी नारियल आदि चढाया जाता। अधिकांश महार बौद्ध हो गए थे। कुछ इसाई, फ्रान्स की बौद्ध भिक्षुणियाँ लडकियों को कढाई, बुनाई सिलाई तो पुरुषों को खेलकूद व्यायाम सीखाते थे।

इसाई भिक्षुणियों को अम्मा कहा जाता था, अम्मा वे नागपुर में एक हायस्कूल खोला था। लेखिका की बहन इस स्कूल में मेजपोश, रूमाल, स्वेटर, मौजे आदि बनाना सीखने जाती। सिलाई खत्म होते येशू की प्रार्थना होती।

प्रकरण 7 :

बस्ती में सुविधाओं का अभाव एवं शिक्षा का प्रचार प्रसार :

जाईबाई नामक एक अछूत महिला ने नई बस्ती नामक जगह पर लडकियों के स्कूल खोला था। इस बस्ती में कोई सामान्य सुविधाएँ भी नही थी। यहाँ पचासो के करीब घरों के लिए मात्र एक नल था। बस्ती काफी बडी थी। पानी को लेकर हमेशा वाद विवाद, झगडे चलते थे। दलित इसाई के घर जाईबाई ने जो स्कूल खोला था उस घर का मालिक एक स्कूल मास्टर थे। जाई स्कूल चलाने के लिए चंदा इकठ्ठा करती थी। बस्तियों में लडकियों की शिक्षा का प्रचार प्रसार करती थी 'शिक्षा के महत्त्व' को समझाती। जाई बाई की प्रेरणा से लेखिका की बडी बहन और लेखिका जाई बाई के स्कूल में पढने लगी थी।

'गड्डीगोदाम' बस्ती में 'झूलाबाई' नामक एक आदिवासी (गोंड) महिलाने भी एक स्कूल खोला

था। इस स्कूल के माध्यम से आदिवासी महिला ने आदिवासी लोगों में शिक्षा क्षेत्र में जागृति लाने का प्रयास भी किया। झूलाबाई के स्कूल में गोंड जाति की लडकियाँ, आसपास के अछूत, दलित समाज के बच्चे आते थे। इस प्रकार बस्ती में जाईबाई और झूलाबाई दोनों महिलाओंने आदिवासी समाज में (बस्ती के) शिक्षा के प्रचार-प्रसार का अभियान शुरू किया।

लेखिका की माँ भागेरथी एवं जाईबाई में विशेष स्नेह एवं लगाव निर्माण हो गया था। माँ के लिए जाईबाई मौसी ही बन गई थी। जाईबाई ने भागेरथी का परिचय 'किसन भागूजी बनसोडे' नामक व्यक्ति से करवाया था। बनसोडे विदर्भ में अस्पृश्यों में जागृति तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते थे। उनकी पत्नी भी लडकियों की शिक्षा का अभियान चलाने में अग्रणी थी। इस महिला पर महात्मा फुले जी का प्रभाव था एवं प्रेरणा थी। बनसोडे ने भी अपने लेखन के माध्यम से शिक्षा के प्रचार प्रसार को बल दिया था। वे कवि थे, पत्नी तुलसी उन्हें इस काम में सहायता करती थी। बनसोडे की आर्थिक स्थिति विषम थी। इस आर्थिक अभाव का परिणाम अपने काम पर होने नहीं दिया, वे तन मन से अपने कार्य के लिए समर्पित थे।

जाईबाई के स्कूल में शनिवार के दिन महिलाएँ गर्लस् गाईड की प्रशिक्षण देने आती थी। इस प्रशिक्षण में -संकटकाल की स्थिति में, अपघात, पानी में डूबना, रोगी की निगा, रस्सी की मजबूत गाँठे बाँधना आदि विषयों पर मार्गदर्शन होता। इसके साथ ही खाने की चीजे पकाना, सिलाई-कटाई करना आदि का भी मार्गदर्शन होता। एक बार स्कूल में 'पृथ्वीराज-संयोगिता' नामक नाटक का मंचन किया गया था। कौसल्या ने इस में 'राजा जयचंद' की भूमिका निभाई थी। 'गर्लस् गाईड' में दो दल थे, छोटी लडकियों की दल को 'बुलबुल' कहा जाता था। नागपुर की कई लडकियाँ आकर यहाँ अपने कार्यक्रमों को प्रस्तुत करती थी। जाईबाई स्कूल में शिक्षा की फीस नहीं थी पास ही 'चोखामेळा अस्पृश्य विद्यार्थी' होस्टल था जहाँ नागपुर के छात्र रहते थे।

भागेरथी और रामा (कौसल्या के माता-पिता) को अपनी बडी बेटी को शिक्षित करने का मानस था। माँ की साध थी उसे प्रायमरी टिचर बनाना। किंतु लडकी का विवाह माता-पिता के लिए एक सामाजिक रूकावट बनकर आता है। समाज में रहकर कभी कभी रीतिरिवाज, बंधनों को अनिच्छा से वरण करना पडता है। माता-पिता को यह अनुभूत हो रहा था कि लडकी ज्यादा बडी होने से विवाह में दिक्कते पैदा हो सकती हैं। उनकी उपजाति कोसरी थी। इस उपजाति में पढा लिखा लडका वर के रूप में मिलना मुश्किल था। वह समय छुआछुत समस्या से घिरा था। नागपुर के संयुक्त में बडी बहन का रिश्ता तय हो गया, तब बडी बहन तेरह साल की थी। लडका आठवीं कक्षा पास था तथा नागपुर के एम्प्रेस मिल में नौकरी करता था। बहन आगे अपनी शिक्षा बरकरार नहीं रख सकी। इस बात का माँ को जीवनभर दुःख रहा।

बहन ससुराल गई तब कौसल्या तीसरी कक्षा में पढती थी। तीसरी कक्षा के बाद उन्होंने जाईबाई का स्कूल छोड दिया और सीताबर्डी की भिडे कन्याशाला में प्रवेश पाया। कन्याशाला में उन्हें फ्रीशिप

मिली। इस पाठशाला में ब्राह्मण समाज की लडकियाँ अधिक थी। दो कुनबी जाति की लडकियाँ थी। कन्याशाला का वातावरण जाईबाई की पाठशाला से अलग था। अब लेखिका ब्राह्मण एवं कुनबी लडकियों के समवेत पढने लगी। अस्पृश्य लडकियाँ जो भी थी वे काफी अमीर घर की थी। कुनबी जाति की लडकियों में थोडा हीनगंड (हीनता) थी इसलिए लेखिका से वे बात करती थी। वह समय ऐसा था जब स्पृश्य-अस्पृश्य की भावना अपनी चरमसीमा पर थी। मार-पीट तक होती थी। लेखिका को बचपन से ही अपनी जाति का एहसास होने लगा था। उसे अपने अस्पृश्य होने का बहुत दुःख होता था।

प्रकरण 8 :

लेखिका के परिवार का साक्षर होना। :

कौसल्या के पिताजी-रामा 18 सालों तक बेकरी में काम करते रहे। बेकरी में गंग्या नामक 15-16 साल का लडका पिताजी के साथ काम करता था। इस दरमियान दोनों में स्नेह, प्रेम, अपनत्व निर्माण हुआ था। वे उसे अपना भाई मानने लगे थे। बेकरी की मालकिन गरम मिजाज थी। अधिक काम कम दाम यह उसका उसूल था। त्यौहारों पर छुट्टी नहीं होती थी। इस 18 साल की कालावधी में पिताजी की तनखा में कोई बढोत्तरी नहीं हुई। पिताजी बडे शांत, गंभीर एवं सहनशील प्रकृति के थे। कौसल्या की माँ भागेरथी ने बेकरीवाली महिला के पास वेतन बढाने की बात की, इसका उस पर कुछ असर नहीं हुआ। उन्होंने बेकरी की नोकरी छोड दी। वे अब कबाडी का धंदा करने लगे थे। अंग्रेजों के घर की बहुत सुंदर बोतले, टिन के डिब्बे, अंग्रेजी हिंदी पत्रिकाएँ बेचने लगे थे। लेखिका ने इन्ही पत्रिकाओं से 'उसने कहा था' कहानी पढी थी।

भिडे कन्याशाला से लेखिका ने चौथी कक्षा पास की और पाचवी में प्रवेश लिया। बडी बहन ससुराल में थी। सौभाग्य से अब वह नागपुर के प्राव्हिडेन्स गर्लस् हायस्कूल में शिक्षा ग्रहण करने लगी थी। कोई इसाई नन्स इसे चलाती थी। छोटी बहन भी शिक्षा ले रही थी और पढाई में बडी तेज थी। भाई ने गुड्डीगोदाम के स्कूल से अच्छे नंबरो में प्रायमरी पास की थी। अब वह नागपुर के सरकारी स्कूल पटवर्धन हायस्कूल में अध्ययन कर रहा था। छोटी बहन को सरकारी छात्रवृत्ति मिली। इस प्रकार लेखिका के परिवार में व्यस्त रहने लगे थे। इसमें पिकनिक का भी समावेश था। पिकनिक के स्थलों में सीताबर्डी की टेकडी, गणपती मंदिर, टेकडी, अंग्रेजों का फौज स्थल आदि स्थलों का समावेश था।

प्रारंभ में लेखिका धार्मिक प्रवृत्ति की थी, अनुभवोपरांत नास्तिक बन गई। उन्होंने अनुभव किया कि अस्पृश्यों के लिए मंदिर प्रवेश नहीं था। जाति-पाति बनानेवालों के प्रति उसके मन में काफी चिढ थी।

प्रकरण 9 :

घर-संकटों से त्रस्त-अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण :

आज कौसल्या कुछ उदास थी। अब वह महाराष्ट्रीयन शैली की नौ गज (वार) साडी पहनने लगी

थी। जवान हो गई थी। इसलिए संभलकर रहने के लिए माँ की ओर से अनुरोध होता था। पिताजी ने कबाडा धंदा छोडकर नागपुर एम्प्रेस मिल में मशीन में तेल डालने का काम संभल लिया था। दोनों माता-पिता साथ में मिल जाते और साथ में घर लौटते थे। द्वितीय महायुद्ध शुरू होने जा रहा था, मँहगाई बढ रही थी। घर में बिजली नहीं थी। माता-पिता दोनों घर के काम निपटाते थे। घर में सुबह जल्दी उठने की आदत थी। घर में सुबह चाय-नाश्ता नहीं बनता यदि चाय बन गई तो समझ लेना कि कोई विशेष व्यक्ति घर में आया है। बस्ती में सभी लोगों की जीवनशैली इसी प्रकार की थी। सब की समस्याएँ, सुख-दुःख एक से थे। घर में महंगाई से सारे तंग आ गए थे, घर चलाना मुश्किल था, ऐसी स्थिति में बडी बहन का आर्थिक स्थिति बिगड गई थी, उसके पती बीमार चल रहे थे। हर दो साल के बाद बहन बच्चे को जनम देती रही, उसे ग्यारह बच्चे हुए थे, बारबार बीमार रहते थे। अच्छा खाना-पिना, दवा-पानी, इलाज नहीं हो सकता था। लेखिका की दृष्टि से यह सारे अशिक्षा और अज्ञान का ही फल था।

बहन और माँ के साथ-साथ बच्चे होते रहे। लेखिका कहती है- 'उस समय खाना खाने, पानी पीने की तरह ही बच्चे होना भी सामान्य काम समजा जाता था। कहते ये भगवान देता है, भगवान की मर्जा है क्या करे। अशिक्षा, अज्ञान की वजह से ही उनकी ऐसी सोच थी।' परंपरा से लडकियों को पराया धन समझा जाता रहा है। आज भी यह सोच है। लेखिका की माँ ने लोगों की इन टीकाओं पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दी। इस बात को लेखिका ने अहं महत्त्व दिया है।

लेखिका की बस्ती में वह पहली लडकी थी जिन्होंने मैट्रिक पास किया था। कोसरे उपजाति में शिक्षा का महत्त्व नहीं था। लेखिका की जाति के ही श्री तुलाराम साखरे नामक सज्जन ने बस्ती में अनेक सुविधाएँ दी। तुलाराम साखरे अठराह वर्ष नगरपालिका के सदस्य रह चुके थे। कोसरे जाति में भी साखरे ने विवाह वगैरह की रसमों में सामाजिक सुधार लाया था।

प्रकरण 10 :

'मैं अस्पृश्य हूँ' - इस हीनगंड से त्रस्त नहीं बल्कि दुःखी होना। :

इस भाग में लेखिका के मन में उभरा न्यूनगंड का वर्णन है। 'मैं अस्पृश्य हूँ' यह भावना कहीं उसके अंदर बैठ गई थी। स्कूल में भी घडे से पानी निकालकर पीना उसे अच्छा नहीं लगता था। स्कूल में एक दिन हरिजन संघ सेवा की ओर से अस्पृश्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और पुस्तकें, आर्थिक सहायता सूचना आई थी। पाठशाला में अध्यापकों में अस्पृश्यों के प्रति कोई लगाव नहीं था, उन्होंने यह सहायता स्वीकार नहीं की। किंतु 'खरे' नामक अध्यापक ने उनकी सहायता की। वे गणित पढाते थे।

इधर महंगाई ने सभी का जीना दुष्कर कर दिया था। घरखर्च, बच्चों की पढाई, फीस इनसे सारे परेशान हो गए थे। बाबा को मशीन साफ करने के लिए जो कपडे दिए जाते थे, उनमें से हमारे लिए पेटीकोट तथा अन्य कपडे सिए जाते थे। लेखिका कहती है - 'बाबा को मिल में मशीन साफ करने

के लिए कुछ नए कपडे की पट्टियाँ मिलती थी। बाबा उनमें से अच्छी लंबी पट्टीयाँ अलग कर अपनी धोती के नीचे लंगोट की तरह बांधकर लाते। कभी किसी को शक नहीं हुआ। उनमें से कुछ सफेद पट्टीयों को अलग करके हम पेटीकोट और चड्डियाँ हाथ से सीते थे। कभी-कभी बाबा सुंदर प्रिंट की पट्टीयाँ लाते थे। उसीसे ब्लाऊज और बहन की फ्रॉक सीकर हमने गुजारा किया है।' इसी प्रकार वह लिखती है - 'मैं अस्पृश्य हूँ, इसका मुझे बहुत दुःख होता था और मैं हीनता महसूस करती थी। कोई मुझे मेरी जाति न पूछे इसका मुझे सदैव डर लगता था।' मनुष्य ही मनुष्य आपसे एक दूसरे से नफरत करे यह अभिशाप नहीं तो क्या है? इसी के साथ वह अनुभव करती है कि दलित स्त्री होकर जीना यह 'दोहरा अभिशाप' ही है।

भागेरथी ने अब की बार ग्यारहवीं संतान को जन्म दिया था। जिसका नाम अहिल्या रखा गया था। लेखिका को घर के सारे काम निपटाकर स्कूल जाने के लिए देरी होती परिणामतः अध्यापकों की डाँट पडती, सजा मिलती। वह सोचती है कि क्यों ये लोग मेरी मजबूरी नहीं समझते? कभी कभी उसे रोना आता। अहिल्या को अफीम खिलाकर सुलाया जाता क्योंकि वह ज्यादा रोती थी। इसी हालत में अहिल्या को बुखार हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्युपर सारे संवेदनशील एवं भावविवश हो गए थे।

प्रकरण 11 :

धूमधाम से देवी देवताओं का उत्सव मनाने के पर्व का वर्णन :

छह बहनों के बाद कौसल्या की माँ ने पुत्र को जन्म दिया था। कौसल्या का परिवार धार्मिक था, पुत्र जन्मसे पांच वर्ष गणपती स्थापना का निश्चय किया गया था। लेखिका कहती है अस्पृश्य समाज में गणपति पूजा का महत्त्व नहीं होता, वे शिव एवं कृष्ण के उपासक होते हैं। देवी-देवताओं में मरीआई, खंडोबा, देवदुल्ना, वाघोबा आदि का विशेष महत्त्व था। नागपंचमी के दिन दीवारों पर नाग के चित्र बनाए जाते थे, नागों को दूध पिलाया जाता था, सपेरों को बुलाकर बीन बजाई जाती थी, औरतें नागों की पूजा करती थी। कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव भी बस्ती में धूमधाम से मनाया जाता था। इन उत्सवों के उपलक्ष्य में कौसल्या की माँ कोई न कोई समारोह का आयोजन करती थी। नागपंचमी, कृष्णजन्माष्टमी, होली, गणपति-पूजा, शिवरात्रोत्सव आदि त्योहार खुशी के साथ मनाए जाते। इन त्योहारों के समय अंताक्षरी, गीतगायन, वादविवाद आदि स्पर्धाएँ होती। भागेरथी ओवी गाती थी। बस्ती के रंगारी काका, भोजकाका, भागेरथी, रामू सारे सम्मिलित होते थे। रंगारी काका ने भागेरथी को ग्रामोफोन पर गाना लगाना सीखाया था।

अब बस्ती की जीवनशैली विविधता आई थी। कुछ सुधार भी आया था। किंतु कुछ लोगों को त्योहार मानना अस्वीकार था। कभी कभी गणपति उत्सव पर घर पर बडे बडे पत्थर फेंके जाते थे। बस्ती में हर प्रकार के लोग थे। इनमें से कुछ आवारा लडकों ने निरर्थक हरकतें की। इस बात का लेखिका की शिक्षा पर परिणाम होने लगा था। पिताजी ने हर हालत में उसकी पढाई जारी रखी। बस्ती के ये आवारा लडके प्रेमी लडके लडकियों की टोह लेकर उन्हें अपमानित करते। इन आवारा लडकों

की बेहुदा हरकतों से पूरे बस्ती के लोग तंग आ गए थे। बस्ती के कुछ गुंड आवारा लडके कौसल्या के परिवार की प्रगति पर नाराज भी थे, जलते थे। इनमें से कुछ उच्चवर्णीय भी थे। पुलिस इन्स्पेक्टर से पास शिकायत भी पेश की। बहुत दिनों तक कौसल्या का परिवार अनेक तकलिफें सहता रहा। कौसल्या के माता पिताने यहाँ की जमीन खरीदी तथा घर भी बना लिया। अब मधु और कौसल्या दोनो बहनें की शादी हो गई थी। आसपास सुशिक्षित और ज्यादातर, ब्राह्मण बस्ती थी। कुछ परिवार अस्पृश्यों के भी थे।

प्रकरण 12 :

कौसल्या के माता पिता–अथक परिश्रमी और दृढनिश्चयी तथा
बाबासाहेब जी का जनजागृति अभियानः

कौसल्या के माता–पिता उद्यमशील वृत्ति के थे। वे अथक परिश्रमी तथा मेहनती थे। अनेक प्रकार के छोटे–मोटे व्यवसाय से जीवनयापन करते थे। कौसल्या की माँ बस्ती में चुडियाँ कुंकूम, शिकेकाई आदि सामान बेच लिया करती थी। माता–पिता के कष्ट देखकर कौसल्या ने नागपुर के 'मेयो' अस्पताल में नर्सिंग कोर्स के लिए अर्जी भी दी थी। उन दिनों नागपुर में कोई मेडिकल कॉलेज नहीं था। कौसल्याने अपनी पढाई जारी रखी उन्होंने अभिनेत्री बनने का सपना भी देखा था। नाटक में भी हिस्सा लिया था। हिरोईन बनने के लिए एक सहेली के साथ अभिनेत्री देविकारानी को पत्र भी लिखा था। बात यह है कि उपर्युक्त किसी बात में उन्हें सफलता नहीं मिली। जीवन के हर मोड पर हमें लेखिका संघर्षरत रूप में दिखाई देती है।

बाबासाहेब आंबेडकर जी के जनजागृति–अभियान का बोलबाला था। समाजसुधार के लिए इस अभियान में निखार आ रहा था। इस आंदोलन के अभियान से समाज प्रभावित हुआ था। कौसल्या ने भी 'अछूतोद्धार' नाटक में छोटासा अभिनय किया था। स्पृश्य–अस्पृश्य को लेकर यह नाटक लिखा गया था। इस प्रकार गुड्डीगोदाम की बस्ती में समाज सुधार हेतु अनेक कार्यक्रम होते रहे। बस्ती के कारण उनका विकास नहीं हो सका था। उन्हें मार्गदर्शन करनेवाला कोई नहीं था। लेखिका ने महाराष्ट्र के उस प्रचलित कहावत का स्मरण किया है। 'महार माँगो घर गाना और ब्राह्मणों के घर पढना–लिखना।' बस्ती के कुछ लोग पोवाडे, भजन, लावणी, गीत, गोंधळ गाते थे, मृदंग, शहनाई बजाने में माहीर थे। औरतों का अभिनय पुरुष ही करते थे। लावणी में औरते नाच–गाना करती थी।

प्रकरण 13 :

बस्ती में जनजागृति एवं समाजसुधार :

कौसल्या को अपनी बस्ती में काफी बदलाव नजर आ रहा था। भिडे कन्याशाला में जाने के बाद कौसल्या अब बस्ती का वातावरण और उच्चवर्णीय वातावरण में अंतराल अनुभव करने लगी थी। दोनों में रहन–सहन, खान–पान, विचारों में बडा अंतर था। उन्होंने बस्ती में अनेक प्रकार के दृश्य देखे थे।

जैसे नंगधडंग बच्चे, इसाई एग्लोइंडियन, पारसी समाज उसी के साथ वहाँ के पाखाने, उच्च वर्णियों के आम के जूठे छिलके खाना, खुली मैदान में पाखाना करना, वहाँ टेपवर्म, रिंगवर्मों का रेंगना, बिलबिलाना आदि। पानी के अभाव के कारण बदबू, गंदगी फैलती। साफ करनेवाला जमादार कहता था – 'टट्टी करते हो तब बदबू नहीं आती क्या? तुम लोक अपने माँ बाप या बीमार की टट्टी–पेशाब से भी नाक–भौं सिकौडते हो और हमें देखो पेट की खातीर ऐसा काम करते हैं।' लेखिका ने लिखा है – अभी भी वहाँ जमादार सिर पर मैला उठाकर ले जाते हैं। उन्होंने अनुभव किया कि यदि बस्ती में सुधार लाना है तो मिशनरी स्पिरिट से काम करने की आवश्यकता है। ये लोग सदैव समाज से उपेक्षित एवं तिरस्कृत रहे हैं, इसलिए उनके स्वभाव में जिद्दीपन आ गया है। आवश्यक है कि उनमें सुधार लाना धैर्य एवं सहनशक्ति का कार्य है। समाज में स्वच्छता, सुधार के बारे में जागृति की आवश्यकता है।

प्रकरण 14 :

बस्ती के छोटे छोटे परिवार – समाज :

कथावस्तु का यह मध्य भाग है जिसमें लेखिका कौसल्या अपने बस्ती का विस्तार से वर्णन किया है। बस्ती में ही छोटे छोटे परिवार थे, जो छोटे मोटे काम करके अपना जीवन निर्वाह चलाते थे। उनके घर के पिछवाडे में दशरथ नामक व्यक्ति उसकी दो पत्नियाँ रहती थी। पहली पत्नी की कोई संतान नहीं हुई इसलिए उन्होंने दूसरा विवाह किया था। एक का नाम लेखिका ने 'ठमी' बताया है। दोनों पत्नियाँ परिश्रमी, मेहनती थी। दशरथ लकडियाँ काटता था, और अपना गुजारा चलाता था। दूसरा, परिवार था– 'सोगी' नामक औरत का। सोगी मरा हुआ जानवर– गाय, बैल खरीदकर उसे काटकर उसका माँस बेचती थी। तीसरा परिवार था– जयराम और रामकुँवर पति–पत्नी का। रामकुँवर मिल में काम करती थी, जयराम कामचोर था। अपनी औरत की कमाई पर जीता था। सारा दिन जुआ खेलता था। हमेशा पत्नी के घर आते वक्त पेट–दर्द का बहाना बनाता था। पत्नी रामकुँवर का पगार छीनकर जुए और शराब में उडा देता था। रामकुँवर का उसी मिल में काम करनेवाले आदमी से इश्क हो गया था। जयराम को यह बात मालूम हो गई थी। इस बहाने जयराम पत्नी को पीटता रहता, वह बार–बार मायके जाती, फिर वापस आती। यह सिलसिला उन दोनों के बीच में चलता रहा। लेखिका ने इस प्रकरण में बस्ती के विभिन्न परिवारों के जीवन का परिचय दिया है। इसमें बस्ती की औरते हैं, पुरुषों में कोतवाल, जयराम, सखाराम आदि का परिचय है। दलित बस्तियों में पुरूषसत्ताक संस्कृति है तथा पुरूष स्त्री का शोषण करते रहे हैं। पती पत्नी के बीच के रिश्तों की पहचान भी करायी है।

प्रकरण 15 :

कौसल्या का प्रगति–पुस्तक :

इस अध्याय में लेखिका के अध्ययन की निरंतरता का वर्णऩ किया गया है। लोगों ने बस्ती में प्रौढशिक्षा के वर्ग शुरू किए हैं। लेखिका कौनसी कक्षा में पढती है यह किसी को मालूम नहीं था।

प्रौढशिक्षा के वर्ग लेखिका के घर पर ही लगते थे। इसमें माँ-भागेरथी, कमनीअत्या, सारजी मौसी, भिलन आदि प्रौढशिक्षा वर्ग के छात्र थे। लेखिका के पिताजी रामा, अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। सभी बातों का हिसाब किताब ठिक से रखना यह उनकी आदत थी। विभिन्न प्रकार के कागजातों के संभलकर रखना उसे वे जिम्मेदारी मानते थे। माँ भागेरथी ने लेखिका को डायरी लेखन के लिए अनुरोध किया पर लेखिका कहती है- 'आज उन्हें डायरी न लिखने से पछतावा हो रहा है।'

बस्ती में एकबार कौसर जाति का एक लडका अपने रिश्तेदारों से मिलने आया था। उसका उद्देश्य था पढी लिखी वधू तलाशना। पेशे से प्रायमरी स्कूल में शिक्षक था। उसी समय लेखिका अपना घर गोबर से लीप रही थी। वह यह दृश्य देखकर चकित हुआ। उसने शादी की बात की। परंतु लेखिका ने अपनी शिक्षा का कारण बताया कि बी.ए. तक वह पढनेवाली है। इसी प्रकार लेखिका की बारह साल की उम्र में ही एक पुलिस से रिश्ता तय हुआ था, किंतु लेन-देन के व्यवहार में दोनों परिवारों में मतभेद हुआ और रिश्ता नहीं बच पाया।

अब भागेरथी (माँ) नें बच्चों की शादी की चिंता छोड दी थी। उसका ध्यान बच्चों की शिक्षा पूर्ण करने में केंद्रित था। माँ बडी दिलेर इन्सान थी।

इस प्रकरण में लेखिकाने छात्रों के मार्गदर्शन हेतु अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद बनाने का मानस बनाया है, जिसका वर्णऩ वह विस्तार से करती है। उस समय लेखिका नववीं कक्षा में पढ रही थी। लेखिकाने परिषद की कार्यकारिणी बनाई। परिषद के अध्यक्ष, श्री. नागदिवे थे, सचिव सखाराम मिश्रा थे। कौसल्या और मि.एन.जी. उसके उपसचिव थे। लेखिका अस्पृश्य छात्रपरिषद की कार्यकारिणी में होने के कारण छात्रों से मिलना जुलना होता था। यह देखकर बस्ती की औरतें उसपर ताने कसती। अस्पृश्य समाज के ही व्यक्ति डिप्टी डायरेक्टर, तहसिलदार, पुलिस इन्स्पेक्टर और कुछ क्लार्क बने थे। इस प्रकरण में, लेखिका ने आगे लिखा है कि उस समय लडकियों का शादी के लिए शिक्षित होना जरूरी नहीं था किंतु गोरी होना, सुंदर होना आवश्यक था। जब जाईबाई के स्कूल में लेखिका पढती थी तब उनकी सखाराम मेश्राम चोखामेळा हॉस्टेल में रहता था। वह अत्यंत हँसमुख एवं मजाकियाँ वृत्ति का था। एक साधारण परिवार एवं गाव से आया था। कौसल्या को अंग्रेजी एवं गणित विषय पढाता था। भागेरथी और रामा उसे पुत्रवत प्रेम करते थे। लेखिका भी उसे बहुत पसंद करती थी। और वह भी उसे चाहता था। किंतु जाति-उपजाति की झंझट में यह विवाह नहीं हो सका। उन्होंने दूसरी लडकी से विवाह किया। इस बात से लेखिका कुछ अस्वस्थ हुई। सखाराम ने लेखिका से शादी के लिए अनुरोध किया पर लेखिका ने उसे नकारा।

प्रकरण 16 :

बस्ती में पानी का अभाव/कौसल्या का संघर्ष :

बस्ती में कोई सामाजिक सुधार नहीं थे। पानी को लेकर बस्तीवासियों में वादविवाद चलते थे।

नगरपालिका ने पानी का कोई प्रबंध नहीं किया था। नगरपालिका का मेयर अमीर एवं जायसवाल जाति का बनिया था। यह व्यक्ति औरतों के मामले में बदनाम था। वह अमीर था। उसने काफी पैसा कमाया था। उसके घर में धीवर जाति की लडकी घरकाम करती थी। पहली पत्नी का देहांत हो चुका था, तभी से यह लडकी बीवी के रूप में उसके साथ रहती थी। बीवी होने के बावजूद घर में उसे कोई स्वातंत्र्य नहीं था। बस्ती में पानी-प्रबंधन के लिए लेखिका अपने पिताजी के साथ मेयर से मिली। उन्होंने लेखिका को 'विचार करेंगे' का आश्वासन दिया। उसके बाद वह नगरपालिका के सेक्रेटरी, सदस्य से मिली। सभी अधिकारियों ने सकारात्मक उत्तर दिए। इसी सिलसिले में कुमुद डोंगरे नामक कौसल्या की सहेली के सुझाव से वहाँ के संबंधित चिफ इंजिनिअर राजाध्यक्ष जी से भेंट की। सभी प्रयत्नों का फल निकला और नल कनेक्शन लगवाए गए। यह बस्ती में पहला नल कनेक्शन था। कौसल्या ने इंजिनिअर पानीदाता को धन्यवाद दिए। इस प्रकार बस्ती में सुखदुःखी रूपी जीवन का आँखमिचौनी खेल चल रहा था। बस्ती में सभी प्रकार के लोग थे। कोई मानवीय था, कोई आवारा गुंड था। जैसे मुसीबतें निर्माण करनेवाले थे, वैसे मुसीबतों का हल खोजनेवाले भी। व्यक्ति की सही पहचान अनेक सामूहिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के अवसर पर होती थी।

बस्ती के लोगों की पानी की समस्या मिट गई। गर्मी के दिनों में शनिवार रविवार पोवाडे, गोंधळ के कार्यक्रम होते तथा वर्षा ऋतू में रामायण, महाभारत पर कथा सुनाई जाती थी।

प्रकरण 17 :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का प्रभाव :

अस्पृश्य समाज को जीने का अधिकार देनेवाले डॉ. बाबासाहेब जी का लेखिका पर गहरा प्रभाव रहा। उन्होंने दलित अस्पृश्य, गरीब, रंजित, पीडित समाज को जीने की हिम्मत तथा संघर्ष के लिए प्रेरित किया था। लेखिका को विचार से अस्पृश्य समाज के उत्कर्ष में बाबासाहेब 'देव' ही थे। बस्ती में 14 अप्रैल को बाबासाहेब की जयंती मनाई जाती थी। बस्ती का माहौल उत्साही एवं आनंदमयी वातावरण में डूब जाता था। यहाँ एक छोटीसी लायब्ररी बनाई गई थी तथा 'जनता' नामक अखबार भी शुरू किया गया था। ज्यो बाबासाहेब के विचारों का प्रतिनिधित्व करता था। श्याम के समय प्रसिद्ध व्यक्ति का भाषण, बाबासाहेब जी का फोटोपूजन, उनके जीवनकार्य पर आधारित गीतगायन, वादविवाद, प्रतियोगिता, कविताओं पर अंताक्षरी प्रतियोगिता, नाटक आदि उद्‌बोधक एवं रंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। बस्ती के बच्चों के लिए एवं लडकियों के लिए भी क्रमशः प्रतियोगिता, गीत-गायन होता था। 'बाबासाहेब जैसी संतान हर घर में पैदा हो' यह कामना की जाती थी। इस प्रकार आंबेडकर जयंती बडी धूमधाम से मनाई जाती थी।

लेखिका ने आंबेडकर जी का पहला भाषण नागपुर के कस्तुरचंद पार्क में सुना था, तब वह 12-13 साल की थी। उनका भाषण लेखिका के लिए बडा प्रभावित एवं प्रेरणादायक रहा था। उनकी

आशा-आकांक्षाएँ पल्लवित हो रही थी। उन्हें पढना, ठीक-ठाक रहना, कलात्मक वस्तुएँ देखना, पारसी एवं एंग्लो-इंडियनों के बंगले देखना अच्छा लगने लगा था। लेखिका की क्रीडा-खेल विषयक अभिरुचि दिन-ब-दिन बढती जा रही थी। उसके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था।

प्रकरण 18 :

लेखिका को खेल-कूद में विशेष अभिरूचि थी। खेल प्रतियोगिता, नाटक आदि क्षेत्रों में स्कूली दिनों में ही सहभागी होने की तीव्र इच्छा बढ रही थी। खो-खो, बॅडमिंटन खेलना उन्हें बडा अच्छा लगता था। परंतु हीनता या किसी वजह से खेलने का साहस नहीं हो सका। स्कूल में नलिनी सबनीस नामक लडकी से पक्की दोस्ती बनी थी। लेखिका को घर आकर वह ज्वारी की रोटी-सब्जी खा लेती। लेखिका कहती है- 'मैं महार हूँ, यह उसके मन में ही नहीं आता था।' पोहे उन्होंने पहली बार नलिनी के घर ही खाए थे। स्कूल छोडने बाद भी इन दोनों में दोस्ती बनी रही। दूसरी सहेली का नाम था कुमुद डोंगरे। इनके घर लेखिकाने श्रीखंड, पुरणपोली खायी थी। 'पोला' त्योहार वे अवसरपर माँ भी पुरणपोली बनाती, घी के बिना पुरणपोली खाई जाती थी। उस दिन बस्ती के सदाशिव काका बैलों को खूब सजाते उनके पीठ पर रंगीत चित्र अंकित करते। मिट्टी का दिया बनाकर बैलों की आरती उतारी जाती थी। सदाशिव काका के बैलों के नाम 'सका' और 'बका' था।

कौसल्या की सहपाठी कुसुम नामक ब्राह्मण लडकी थी। वह आर.एस.एस की थी। कुसुम का रंग गोरा, आँखे भूरी तथा कद छोटा था। लेखिका की अन्य सहेली नागपुर के रईस परिवार से थी। जिसका नाम कुमुद था। कुमुद के घर लेखिका जनेऊ कार्यक्रम में शरीक हुई थी। कुमुद के घर कौसल्याने भरजरी साडियाँ, सोने की तार से बना जनेऊ, हीरे मोती के जेवर आदि देखे थे। उन्होंने पहली बार वहाँ अनेक पक्वानों का स्वाद लिया था। जैसे लड्डू, पुलाव, पुरियाँ, पकोडे, श्रीखंड आदि। यह स्वादिष्ट खाना देखकर उसका मन भर आया। वह कहती है -'खाना तो खा रही थी परंतु मन बडा भारी हो रहा था।' उन्होंने अफसोस भी व्यक्त किया कि बहुत सा खाना यहाँ बरबाद हो रहा था।

बस्ती में गोंड औरतें भी थी, जो जंगली जडी-बूटी बेचने का काम करती थी, उसी पर हाथ और ललाट पर गोंदने का काम भी। इस लडकी का नाम जंगला था। लेखिका की बडी बहन जनाबाई की वह सहेली थी, अनाथ थी, दादी के पास रहती थी। जंगला के घर में बकरियाँ थी।

लेखिका ने भी गोंद औरत से अपनी शिक्षिका का नाम गुंदवाया था, शिक्षिका का नाम आनंदी था। गोंद। गुदना के बारे में उनके बुजूर्गोंका कहना था - 'मरने के बाद गुदना ही साथ जाता है'। आदिवासी औरतें गोंद ने के बदले पैसे, अनाज, चावल, आटा वगैरेह लेती थी।

प्रकरण 19 :

अखिल भारतीय अस्पृश्य महिला अधिवेशन :

जब लेखिका 9 वीं कक्षा में थी तब नागपुर में अखिल भारतीय अस्पृश्य समाज का अधिवेशन संपन्न

होने जा रहा था। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर निमंत्रित थे। इसमें महिलाओं का अधिवेशन करने का निश्चित हुआ था। इसमें लेखिका को भी निमंत्रण था। गर्मियों के दिनों में अधिवेशन के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम महिला समिति कर रही थी। ऐसे समारोहों पर लेखिका के लिए बोलने का अवसर दिया जाता था। कभी कभी सामाजिक विषयपर वे गीत भी गाती थी। महिला समितियों में विशेषकर जाईबाई चौधरी, विरेंद्राबाई तीर्थंकर, इंदिराबाई पाटील, कुमारी राजभिदे, मंजुला कानफाडे, कीर्तिबाई पाटील आदि महिलाएँ प्रचार प्रसार का काम करती थी। बस्ती में इनकी खातिर की जाती थी।

आधिवेशन की स्वागत समिति का गठन किया गया था। अधिवेशेन माऊंट हॉटेल की खुली जगह में रखा गया था। सुलोचनाबाई डोंगरे जी ने अधिवेशन की अध्यक्षता निभायी। बाबासाहेब ने महिलाओं को कुछ सुझाव दिए। इस अधिवेशन में 30,000 महिलाऐं उपस्थित थी। बाबासाहेब सीधे-साधे अभिनिवेश में थे। कौसल्या (लेखिका) अस्पृश्य विद्यार्थी फेडरेशन की जॉईंट सेक्रेटरी थी। मि.एन.जी. -के भी जॉईंट सेक्रेटरी थे। उन्होंने संदेश देते समय कहा कि, 'कच ने मेहनत और मुसीबत उठाकर शुक्राचार्य से विद्या हासिल की वैसे ही विद्या हासिल करो।' अब लेखिका की सामाजिक कार्य में रूचि बढ गई थी, वह भाषण भी देने लगी थी। अखिल भारतीय अस्पृश्य अधिवेशन में भारत के विभिन्न कोनों से अस्पृश्य लोग आए थे। लेखिका ने इस मौके का लाभ उठाते हुए सामाजिक कार्य में रूचि रखनेवाली महिलाओं से संपर्क बढाकर महिला संस्था के संगठन को मजबूत किया।

विवाह के बाद कौसल्या दिल्ली में रहने लगी थी। यहाँ उन्हें कुछ कडवे अनुभव प्राप्त हुए। वह कहती है - 'शील की चादर ओढे और अंदर से राक्षस। औरतों को देखकर मानो इनके मुँह में पानी भर आता है।' (यह अनुभव दिल्ली के एम.पी. के बारे में रहा है।)

प्रकरण 20 :

कौसल्या की महाविद्यालयीन शिक्षा-देवेंद्रकुमार बैसंत्री का परिचय :

नागपुर में कौसल्या की महाविद्यालयीन शिक्षा प्रारंभ हुई थी। यहाँ उन्हें सह-शिक्षा का माहौल अच्छा लगा। एक दो इसाई लडकियां भी लेखिका के साथ पढती थी। यहाँ के प्रोफेसर भी अच्छे थे। यहाँ जाति-पाँति का कोई भेदभाव नहीं था। कॉलेज के कार्यक्रमों में लेखिका वंदे मातरम, जन गण मन गाना गाया करती थी। कॉलेज के वादविवाद प्रतियोगिता में भी उन्होंने हिस्सा लिया था, वाद विवाद का विषय था - 'स्त्री पुरूष के मार्ग का रोडा है।'

कौसल्या शेड्युलकास्ट स्टुडंट फेडरेशन की जॉईंट सेक्रेटरी का पद संभाल रही थी। नागपुर विश्वविद्यालय का स्टुडंट युनियन का चुनाव था। यह फेडरेशन बाबासाहेब के विचारोंसे प्रभावित था। वह कहती है -'हमारा विद्यार्थी फेडरेशन बाबासाहेब की विचारधारा से बहुत प्रभावित था। बाबासाहेब और गांधीजी में कुछ मामलों में गहरा मतभेद था।' नागपुर का दलित समाज बाबासाहेब पर जान छिडकता था।

1945 में यू.पी. शेड्यूलकास्ट विद्यार्थीयों का अधिवेशन उन्नाव में बुलाया था। लेखिका, चंद्रकांत

कांबले और एक लडकी नागपुर से इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए। उस समय लेखिका का एक रिसर्च स्टुडंट से परिचय हुआ जो बनारस में डी.लिट. के लिए रिसर्च कर रहा था। लेखिका कहती है –'उस वक्त मेरे मन में जरा भी खयाल नहीं आया था कि बाद में मेरी शादी इसके साथ होगी।' इस विद्यार्थी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह एम्.ए. एल.एल.बी. करके डी.लिट कर रहा था। वह कानपुर से निकलने वाले हिंदी अखबार 'सावधान' और मद्रास से निकलने वाले एक अंग्रेजी अखबार के लिए लिखता था। उसका नाम था देवेंद्रकुमार बैसंत्री। बिहार का रहनेवाला था। लेखिका ने उसके लेख पढे थे पर उसके साथ विवाह का विचार नहीं किया था। वह बिहार के किसान आंदोलन में सक्रिय था, जेल भी गया था। वह यु.पी. शेड्युलकास्ट फेडरेशन का अध्यक्ष था। लेखिका ने बनारस विद्यापीठ में अस्पृश्य छात्रों को मिलनेवाली सुविधाओं के बारे में उसके साथ पत्राचार किया था। लेखिका पैसे के अभाव में बनारस नहीं जा पाई और नागपुर के हिस्लाप कॉलेज में महाविद्यालयीन शिक्षा जारी रखी। देवेंद्रकुमार बैसंत्री तथा कौसल्या में पत्राचार शुरू था। किंतु प्रेम के बारे में नहीं। क्योंकि इनमें कोई प्यार का भाव नहीं था।

प्रकरण 21 :

देवेंद्रकुमार और कौसल्या का विवाह :

लेखिका अब इक्कीस साल की हो गई थी और घर में उसके विवाह की चर्चा हो रही थी। घर में इंटरकास्ट विवाह के लिए मान्यता थी। लेखिका घर की स्थिति देखकर शादी के लिए राजी हो गई। इसी दरमियान सुलोचना बाई डोंगरे के पति ने कौसल्या के लिए अच्छा सा वर लाया। लडका महार बटालियन में कॅप्टन था और लेखिका इंटरमीडियट पढती थी। सामाजिक कार्य में रूचि रखनेवाला कोई प्रोफेसर, वकील पती के रूप में उन्हें पसंद था। 1947 में नागपुर में All India Sc Student's federation का अधिवेशन संपन्न होने जा रहा था। भारत के विविध क्षेत्र से–बंगाल, आंध्रप्रदेश उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली से छात्र आए थे। बंगाल से केवल एक लडकी आई थी। जिसका नाम स्वर्णलता हाजरा था। अधिवेशन सफल रहा और सारे छात्र अपने अपने क्षेत्र लौट गए।

घर में कौसल्या के शादी के लिए नकारा था। विषय जोर पकड रहा था। कौसल्याने देवेंद्रकुमार को शादी के लिए नकारा था। कारण यह था, वह पहले से ही विवाहित था और उसकी पत्नी जीवित थी। बाद में पता चला की उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई है। देवेंद्र का बालविवाह हुआ था, पत्नी की बीमारी आदि कारणों से वह दूसरा विवाह करना चाहता था। देवेंद्रकुमार विद्याविभूषित था और पढी लिखी पत्नी चाहता था। इसी बात से कौसल्या उनसे विवाह करना चाहती थी। उन दिनों कौसल्या की 21 साल की उम्र शादी की दृष्टि से ज्यादा थी। देवेंद्र के माँ–बाप जीवित नहीं थे। उनके दो छोटी बहनें एवं एक भाई था। वह बिहार के खर्डिया नामक गाव का निवासी था। अंततः कौसल्या और देवेंद्रकुमार का विवाह रजिस्टर पद्धति से संपनन्न हुआ। कौसल्या को गाजा–बाजा एवं तामझाम पसंद नहीं था। इस विवाह के लिए कौसल्या ने बडी मुश्किल से स्वीकृति दी थी। लेखिका को दो ननदे और एक देवर था। ननद उनके

साथ रहती थी और देवर बिहार में। बाद में किसी बीमीरी से देवर की मृत्यु हो गई।

प्रकरण 22 :

विवाह के पश्चात् दोनों बनारस आए। देवेंद्रकुमार शादी के पहले बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के होस्टल में हरता था। विश्वविद्यालय के पास ही छितपुर नामक गाव में देवेंद्रकुमार ने मकान किराए पर लिया। उनकी शादी 16 नोव्हेंबर 1947 को हुई थी। देवेंद्र की दोनों बहनें- लेखिका की ननदे इलाहाबाद हॉस्टेल में रहकर पढ रही थी। वे उन्हें बनारस लाना चाहते थे किसी कारणवश स्कूल में दाखिला नहीं मिला। उनकी पढाई छूट गई। छोटे भाई ने बिहार में ही पेईंग गेस्ट के रूप में रहकर 9 कक्षा पास की थी। उसे भी बनारस में दाखिला नहीं मिला और 'सारकोमा' नामक बिमारी से उसकी मृत्यु हो गई। देवेंद्रकुमार गृहस्थी चलाने में कौसल्या से सलाह-मशवरा नहीं करता था, आत्मकेंद्री था। उसने कभी कौसल्या की इच्छाओं का भावनाओं का सम्मान नहीं किया। देवेंद्र की बहने, भाई कौसल्या से उम्र में छोटे थे। तीनों भाई बहने आपस में हँसी मजाक करते जीवन का लुफ्त उठाते थे। कौसल्या को बिहार के किसी महिला से यह ज्ञात हुआ था कि 'बिहार में लडकियों को ज्यादा बोलने नहीं देते।' देवेंद्रकुमार को अपना काम खुद करने की आदत नहीं थी। छोटे छोटे अपने काम भी वह बहनों से करवाता। यह दृश्य देखकर कौसल्या को दुःख होता था।

कौसल्या को नागपुर का माँ का घर और यहाँ पति देवेंद्र का घर इन दोनों के वातावरण में कुछ अलग दिखाई दे रहा था। उन्हें बनारस विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं मिला केवल लेक्चर सुनने की इजाजत मिली थी। बाद में गर्भवती होने के पश्चात वहाँ जाना छोड दिया। घर का खर्च बढ गया था। देवेंद्र को 60 रुपये छात्रवृत्ति थी। उनमें से किराए के 14 रुपये दिने पडते थे। घर में बिजली नहीं थी। पानी के लिए कुआँ था। देवेंद्रकुमार का घर बनारस से दूर नहीं था। वह गाँव जाकर अपने खेत में उगे चीजे लाता था। फिर भी आर्थिक तंगी रहती थी।

प्रसुति के लिए लेखिका नागपुर आई। उन्हें लडका पैदा हुआ। माता-पिता बस्ती में ही रहते थे, बस्ती में लडके के जन्म पर मांग लोगों ने आनंद मनाया।

अब घर का खर्चा बढ गया था। देवेंद्रकुमार को रिसर्च छोडना पडा और लेबर इन्स्पेक्टर नौकरी अपनायी। यह भारत सरकार की राजपत्रित पोस्ट थी। उसके बाद बिहार में ही पोस्टिंग मिली -'निरसा' में। यह अत्यंत नीरस जगह थी। बिहार का यह अप्रगतशील भाग था। मनोरंजन का कोई साधन नहीं, हफ्ते में एक बार बाजार लगता था। ज्यादा तर पानी के लिए पैसे चुकाने पडते थे। एक वर्ष के बाद उनका तबादला आसनसोल हो गया। वहाँ भी दफ्तर घर पर ही था। निरसा और आसनसोल दोनों जगहों पर पहले से ही उनकी जाति के लोग पहुँच चुके थे। चार पाँच महिने के बाद देवेंद्रकुमार ने यहाँ की नोकरी छोड दी। अब उनकी भारत सरकार के सूचना और प्रसार विभाग में असिस्टंट रिसर्च ऑफिसर के रूप में नियुक्ति हो गई थी। लेखिका दूसरे बच्चे की प्रसुति के लिए नागपुर आई थी बस्ती में रहकर

भाई-बहनों का अध्ययन जारी था, घर की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया था। लेखिका ने दूसरी बार लडके को जनम दिया था।

प्रकरण 23 :

देवेंद्रकुमार एवं कौसल्या में मनमुटाव :

देवेंद्रकुमार और कौसल्या दिल्ली आ गए थे। यहाँ इन दोनों में मतभेद निर्माण हो रहा था। देवेंद्रकुमार गर्म मिजाज एवं जिद्दी थे। लेखिका कहती है -'अपने मुँह से कहता कि मैं बहुत शैतान आदमी हूँ।' उन्होंने लेखिका की भावनाओं की कद्र नहीं की। कौसल्या की इच्छा, भावना, खुशी का कोई सम्मान नहीं होता था। देवेंद्रकुमार सदैव गाली देना, पत्नी पर हाथ उठाना, क्रूर तरिके से मारना, सारी शैतानी हरकते करता था। वह घर में सभी को मारता था। पति को छोडने के लिए मुझे कहा गया था परंतु माँ-बाबा के ढलती उम्र में उन्हें वह मानसिक यातनाएँ नहीं देना चाहती थी।

देवेंद्रकुमार को पत्नी की आवश्यकता दो कारणों के लिए थी- खाना बनाना तथा शारीरिक भूख मिटाना। बच्चे छोटे थे वह घरकामों में व्यस्त रहती थी। उसका सामाजिक कार्य रूक-सा गया था। लोगों से संपर्क टूटता जा रहा था। इसी व्यस्त एवं पति से शोषित जीवन से समय निकालकर कौसल्या ने जे.जे स्कूल ऑफ आर्ट में पेटींग की परीक्षाएँ दी। इस से वह हस्तकला की वस्तूएँ बना सकती थी। देवेंद्रकुमार के छल के रोज नए नए रूप सामने आते थे। रोज कुछ न कुछ कारण झगडे के लिए काफी था। वह हर प्रकार से उसे छलता। लेखिका के ही शब्दों में -'घंटा भर मुझे बारीश, ठंड धूप में दूध-राशन की लाईन में खडा रहना पडता था, कपडे धोना बंद कर दिया, क्योंकि मैं कपडे बैठकर नहीं धो सकती, मुझे बहुत गंभीर गठिया है, नौकरानी कपडे धोती थी, उसे भी देवेंद्रने छुडवा दिया।' शादी के पत्नी को पालने कोई जिम्मेदारी देवेंद्र ने नहीं पाली। पत्नी धर्म निभाने में वह असफल रहा। देवेंद्रकुमार का अत्याचार शोषण अब सीमातीत हो चुका था। वह अत्याचार से तंग आ गई ओर एक दिन कोर्ट में देवेंद्रकुमार पर केस दायर किया। लेखिका को हर माह 500 रुपये मेंटेनन्स के मिलते हैं। कौसल्या तंग आकर कहती है-'न्यायपालिका भी लगता है स्त्री के लिए ज्यादा फिक्र नहीं करती।' क्योंकि ये केस दस सालों से कोर्ट में था। फिलहाल वह छोटे लडके के पास रहने लगी थी।

प्रकरण 24 :

सुशिक्षित एवं सुसंस्कारित परिवार :

नागपुर में कौसल्या की माता-पिता ने बस्ती का घर बेच दिया था। उनकी छोटी बहन मधु की शादी उत्तर प्रदेश के शशिमोहन से तय हो गयी थी। यह भी शादी रजिस्टर पद्धति से हुई। शशिमोहन B.Sc. थे तो मधु मैट्रिक थी। शशिमोहन को डिप्टी कलेक्टर के पद से आई.ए.एस.पद पर नियुक्त हुए थे। मधु ने बी.ए. पास किया तथा वह फॅमिली प्लॅनिंग में राजपत्रित पोस्ट पर नियुक्त हुई थी। मधु के बाद छोटी बहन पार्वती की शादी लेखिका की उपजाति में हुई। उसके पति रेल्वे में अच्छे पदपर

थे, यह अच्छा खाता-पिता परिवार था। उन्होंने टीचर्स ट्रेनिंग पास किया था और कार्पोरेशन के स्कूल अध्यापिका बनी। सब से छोटी बहन वह मैट्रिक के बाद हिंदी विशारद पास करके महाराष्ट्र के सूचना एवं प्रसारण विभाग में नौकरी करने लगी। उसका नाम अनुराधा था उसके पति भी M.Sc.agri थे, शिमला में पोटॅटो रिसर्च इन्स्टिट्यूट में वैज्ञानिक थे। अनुराधा अब शिमला में ही प्रायव्हेट कॉलेज में हिंदी पढाती रही। कौसल्या की सब बहने सुशिक्षित भी एवं उच्चविद्या ग्रहण करके अच्छे औहदे पर नियुक्त थी। सबसे बडी बहन नहीं पढ पायी, पर उन्होंने अपनी लडकियों को पढाया था। सभी बहनों के बच्चे इंजिनिअर, डॉक्टर और अच्छे ओहदे पर थे।

कौसल्या को एकलौता भाई था। उसने इंजिनिअरिंग मेरिट में पास किया था। वह रिटायर्ड होने तक भोपाल के हैवी इलेक्ट्रीकल्स में उप-महाप्रबंधक रहा।

कौसल्या के माता-पिता ने नागपुर में ही हाऊसिंग सोसायटी से कर्जा लेकर रामदास पेठ के पॉश कॉलनी में घर बना लिया था। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई थी। नागपुर की दीक्षा भूमि पर कौसल्या की माँ ने एक कुँए भी बनवाए थे। जिसमें आने जाने वाले लोगों के लिए पानी की सुविधा होती। दीक्षा भूमिपर असंख्य बौद्ध चाहते बुद्ध को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए आते थे। माँ ने कौसल्या को पूरे परिवार पर अच्छे संस्कार किए थे। माँ भागेरथी को किसी ने कहा था डायरी रोज लिखने के लिए, वही बात माँ ने कौसल्या को कही थी कौसल्या कहती है - 'यदि माँ की बात मानकर मैं डायरी लिखती रहती, कितना अच्छा होता।' इस प्रकरण मे कौसल्या के माता-पिता ने अपनी संतानों को सुशिक्षित संस्कारित बनाने का जायजा लिया है।

लेखिका की माँ बडी स्पष्टवादी थी। पचास वर्ष की आयु में गतिशील थी, जहाँ जहाँ प्रतियोगिताओं का आयोजन वहाँ हिस्सा लेती। एक बार तो अखबार में भी उनका नाम छपा था कि ग्यारह बच्चों की माँ है जिन्होंने तीसरा स्थान 'तेज चाल' में प्राप्त किया है । माता-पिता ने अंत तक मिल में काम किया, अपने पैसो में कुए खुदवाएं, अनाथ बच्चों को अनाज दिया, अस्पृश्य बच्चों को किराए पर अपने घर पर रख लिया।

प्रकरण 25 :

भोपाल में लेखिका का अनुभव :

लेखिका के पति का तबादला आठ वर्ष बाद दिल्ली से भोपाल हो गया। भोपाल तब मध्यप्रदेश की राजधानी बना था। कौसल्या ने देखा कि भोपाल शहर बहुत गंदा, जगह जगह पर पान की पीक, बीडी के टुकडे आदि से भरा था। चारो तरफ गरीबी और गंदगी यहाँ रिक्शा नहीं थे, तांगे थे। ज्यादातर मुस्लिम रहते थे, नवाब के घर का एरिया कुछ अच्छा था। महिलाओं के लिए सुलतानियाँ जनाजा अस्पताल था। तात्या टोपेनगर में मेडिकल अस्पताल था। इसी नगर में उन्हें सरकारी क्वार्टर मिला था। भोपाल आने से पहले ही बेटे का मम्स की जहर दिमाग में चले जाने से मृत्यु हो गई थी।

देवेंद्रकुमार महीने में बीस दिन दौरे पर होते थे। सरकारी कार्यक्रमों में उन्हें निमंत्रण पत्र मिलते थे, कौसल्या भी उनके साथ जाती थी। ऐसे ही एक कार्यक्रम में लेखिका की मुलाकात अवंतिका शास्त्री से हुई। अवंतिका भोपाल में एक सामाजिक संस्था में काम करती थी और पति मध्यप्रदेश के हिंदी भाषा विभाग में डायरेक्टर थे। राष्ट्रपती जी शंकरदयाल शर्मा तब मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग में मंत्री थे और पत्नी विमला शर्मा संस्था की प्रमुख थी। भोपाल में नागरिक कल्याण समिति बनी थी। समिति की ओर से विविध परीक्षा, हिंदी दिवस खेलकूद, नाटक आदि का आयोजन होता था।

भोपाल में कौसल्या के संपर्क में अली-अकबरखान सरोजावादक, अवंतिका शास्त्री-भोपाल नागरी कल्याण समिति, अध्यक्षा, राज्यपाल पाटस्कर-मध्यप्रदेश बाबासाहेब के पुत्र यशवंतराव आंबेडकर आदि प्रतिष्ठित लोग आए। 1942 की महिला कॉन्फरन्स में कौसल्या सहभागी थी।

भोपाल में कौसल्या के आसपास ब्राह्मण परिवार रहते थे। उसी लाईन में इसाई परिवार भी था। इन दोनों परिवार से कौसल्या का संपर्क एवं स्नेह बढता गया। यहाँ औरते चिटफंड (भिसी) चलाती थी। भिसी चलानेवाली महिलाओं में ब्राह्मण, मराठा ईसाई आदि सभी प्रकार की महिलाएँ थी। इन महिलाओं में लेखिका की जाति पर बहस हुई। लेखिका को गुस्सा आया था, उसने जाति तो कब की झटक दी थी। लेखिका इसपर कहती है -'मैं अपनी जाति को हीन नहीं समझती, न उनको अपने से उँचा। वैसे मैं जाति पाँति नहीं मानती।' उन्होंने अपने परिवार में जो बहुएँ लाई थी उसमें आयंगर ब्राह्मण, बंगाली कायस्थ और मध्यप्रदेश की थी। लडकी का विवाह सिखधर्म के लडके से हुआ था। रिश्तेदारों में राजस्थानी, नेपाली, गोवानीज उत्तरप्रदेशीय आदि प्रांतो से थे। उनकी खुद की शादी बिहारी से हुई थी। अर्थात उनके परिवार में लगभग पूरा भारत समेटा था।

प्रकरण 26 :

क्या ऐसे पति से प्यार श्रद्धा हो सकती है ? :

पाँचवे बच्चे की पैदाईश का लेखिका को बडा कटुआ अनुभव है जिसे वह चाह कर भी विस्मृत नहीं कर सकती। इस प्रकरण में देवेंद्रकुमार का व्यवहार, नौकरानी की सहायता, अपना बिगडता हुआ स्वास्थ्य, सफाई कर्मचारी की समझदारी, पैसे की तंगी (पति उँचे ओहदे पर होने पर भी) आदि यादों को वह भूल नहीं सकती। वह पाठकों से प्रश्न करती है - 'क्या ऐसे पति से प्यार श्रद्धा हो सकती है?' इस प्रसंग की याद आते ही मेरा खून खौलने लगता है। इधर नागपुर में पिताजी का स्वास्थ्य बिगड चुका था।

नागपुर के मातृसेवा संघ के हॉल से मृणाल गोरे का भाषण आयोजित किया था। नई-नई जनता पार्टी बनी थी। उसकी सदस्या गोरे जी थी। मृणाल जी ने इस हॉल में इंदिरा गांधी की सरकार के भ्रष्टाचार, बंबई के व्यापारों की जमाखोरी, मुनाफाखोरी, पानी की समस्या तत्कालीन राजकीय वातावरण आदि विषयों पर भाषण दिया था। उसी समय लेखिका का कुसुम पावडे से परिचय हुआ। वह संस्कृत की प्राध्यापिका थी। दलित समाज से थी। यहाँ लेखिका ने अनुभव किया कि 'दलितों की समस्याओं

को हमेशा पिछला स्थान दिया जाता है।' मृणाल जी ने दलितों की समस्याओं पर कोई भाष्य नहीं किया था। लेखिका को बुरा लगा।

प्रकरण 27 :

महिला समता समाज – दिल्ली में दलित महिलाओं का संघटना :

साढे पाँच वर्ष रहने के उपरांत फिर से देवेंद्रकुमार का तबादला दिल्ली हो गया था। वे दोनों इस्ट किदवईनगर में रहने लगे थे। कौसल्या ने यहाँ सामाजिक कार्य करना प्रारंभ किया था। उन्होंने पहले दलित समाज की महिलाओं से संपर्क किया। दिल्ली में दलित महिलाओं की कोई संघटना नहीं थी। उन्होंने एक समिति बनाई – 'महिला समता समाज' नाम से। बहुत कोशिश करनेपर भी इस संस्था को पिकनिक–आयोजन से आगे नहीं बढा पाई और कोई विशेष कार्य कर नही सकी।

इमरजन्सी की वजह से लेखिका के पति को दो साल पहले सेवानिवृत्ति दी गई और उन्हें सरकारी मकान छोडना पडा अब वे मुनीर का में रहने आए। यहाँ भारत के कई प्रांतों के दलित और आदिवासी समाज के लोगों के कुछ फ्लैटस रिजर्व कैटेगरी में अलाट हुए थे। यहाँ मुनीरका गांव में दलितों की संख्या अधिक थी। उन्होंने उनके फ्लैट में जाकर संस्था का महत्त्व एवं उसकी उपयोगिता महिलाओं के सामने बताई। उन्होंने अनुभव किया की सारी महिलाऐं पति के विचारों के अधीन थी, स्वतंत्र निर्णय लेने की स्वतंत्रता उनमें नहीं थी।

कौसल्या का परिचय केरल की महिला वेलाधुयन, लता दरडे तथा अन्य जागृत महिलाओं से हुआ। उनके प्रयत्नों से 'महिला जागृति परिषद' नामक संस्था बनी। प्रारंभ सभी ने उत्साह दिखाया फिर सारा ठंडापन। लेखिका कहती है – 'स्वयं दलितों में ही अपनी स्थिति को बदलने का उत्साह नहीं है। अपनी स्थिति को उन्होंने नियति मान लिया था।'

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दस वर्ष पूरे होने जा रहे थे। इस उपलक्ष्य में कौसल्या ने दलित महिलाओं का कार्यक्रम आयोजित किया था। ऑल इंडिया वीमेन्स असोसिएशन तथा भारतीय महिला जागृति के संयुक्त तत्त्वावधान में दलित महिला समस्याओं पर विठ्ठलभाई पटेल हाऊस, नई दिल्ली में सेमिनार आयोजित किया था। इस सेमिनार में महिलाओं की उपस्थिति बडी उदासीन रही। सेमिनार में सुजातासिंह ने देवदासी समस्या पर भाष्य किया। कुछ महिलाने दलित समस्या और आरक्षण पर प्रकाश डाला। इसी वर्ष नैरोबी में वर्ल्ड वीमेन कॉन्फरंस का आयोजन हुआ था जिस में कौसल्या की संस्था ने भी प्रस्ताव भेजा था।

प्रकरण 28 :

'दोहरा अभिशाप' एक संघर्षपूर्ण गाथा, जो प्रेरणादायी एवं मार्गदर्शक कृति। :

यह आत्मकथा 28 वाँ तथा अंतिम प्रकरण है। इन सारे प्रयत्नों के साथ कौसल्या ने अपनी संस्था की ओर से बाबासाहब आंबेडकर की जयंती के अवसरपर राष्ट्रपति से मिलने और दलित महिलाओं की

समस्याओं के विषय ज्ञापन देना निश्चित किया। राष्ट्रपति ज्ञानी झैलसिंह ने उन्हें आश्वासन भी दिया।

दिल्ली में जब मंडल रिपोर्ट लागू होने बाद आरक्षण विरोधी तूफान उठा। लेखिका ने अनुभव किया कि हिंदु समाज फिर उस आदिम अवस्था में लौट गया है जिसमें दलितों को जीने के अधिकार से भी वंचित किया गया था। आत्मकथा के अंत में आने तक लेखिकाने आठ मार्च को महिला दिवस पर महिलाओं की स्थिति के बारे में ज्ञापन तैयार करने का सुझाव रखा। बहुसंख्यांक दलित महिलाएँ काम के लिए इधर उधर भटकती है, इसलिए उनके बच्चे बढ नहीं मालिकों की मर्जी पर ही उन्हें पैसा मिलता है, इसलिए उनके प्रश्न को प्राथमिकता ही जानी चाहिए। लेखिका को सुझाव संस्था को पसंद आया। अपनी उन्नत्ति करना चाहते हैं, तब हमें अपने पाँव पर खडा होकर अपने पर भरोसा रखकर आगे बढना होगा। हमे अपने अंदर शक्ति पैदा करनी होगी। किसी का सहारा लेकर चलने से काम नहीं बनेगा।' अतः प्रस्तुत आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' समस्त महिलाओं को संघर्षपूर्ण एवं अर्थपूर्ण जीवन जीने का संदेश देती है। यह आत्मकथा मात्र दलित महिला समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करती बल्कि गरीबी, अंधविश्वास और जातीय प्रताडनाओं से लडते हुए महिला वर्ग को सुशिक्षित करके जीने का रास्ता दिखाती है।

2.3.3 'दोहरा अभिशाप' : उपन्यास का शीर्षक :

'दोहरा अभिशाप' कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा है। कौसल्या एक दलित समाज की लेखिका है। इस आत्मकथा के अंतर्गत उन्होंने दलित नारी जीवन की व्यथा एवं संघर्ष को चित्रित किया है। हम देखते आ रहे हैं कि पुरूषसत्ताक समाज व्यवस्था ने स्त्री का निरंतर शोषण किया है और यदि वह दलित स्त्री है तो उसका शोषण अपमान, उत्पीडन यह आम महिलाओं से अधिक है। कौसल्या बैसंत्री ने मानो 'अपने ही वर्ग को ललकारा है कि क्या केवल दलित वर्ग की पीडा ही भारी पीडा है उस पर से नारी होकर दलित वर्ग में जन्म लेना विशेष पीडा नहीं है?' केवल यह पीडा ही नहीं बल्कि 'दोहरा अभिशाप' है। कौसल्या की यह बलवती विचारधारा है कि दोहरे अभिशाप, पीडा से मुक्ति पाना है तो शिक्षा एक मात्र धारदार साधन है। कौसल्या पर बचपन से ही डॉ. आंबेडकरजी का प्रभाव था।

डॉ. आंबेडकरने ऐसे समाज का सपना देखा था जहाँ स्त्री-पुरूष दोनों ही एक समान भागेदारी हो। किंतु आज स्त्री की अस्मिता एवं अस्तित्व को नकारना, कुचलना ही समाज की नियति बन चुकी है।

'दोहरा अभिशाप' में कौसल्या बैसंत्री ने अपने माँ और पिता के अथक परिश्रम का भी विस्तार से जायजा लिया है। उनकी माँ पर आंबेडकर के 'सीखो, संघटित बनो' और संघर्ष करो का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी प्रभाव से अपने बच्चों को उच्च विद्याविभूषित बनाने का मानस बनाया था। आत्मकथाकार लेखिका का जीवन भी निरंतर संघर्षशील, अपमानित, शोषित एवं उत्पीडित है। वह पितृसत्ताक व्यवस्था से अपने बिरादरी से, परिजनों से एवं स्वजनों से निरंतर लड रही है। उन्होंने विपरित परिस्थितियों का सामना करते हुए स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की। एक प्रतिभाशाली, सहिष्णु स्त्री बनने का वह हकदार है। इन सभी रूपों में वह पाठकों से बार बार मिलती है। अपने घर के अंदर पति से और बाहर अनेकों से प्रताडना सहते हुए जीवन में चलते रहना सीख लिया है। इन दो पाटों के बीच वह अभिशप्त है।

उच्चविद्याविभूषित, स्वातंत्र्य सेनानी, ताम्रपत्र प्राप्त उच्च एवं प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त पति देवेंद्रकुमार ने

भी उस पर अमानुष अत्याचार ढाए। पति क्रूर मानसिकता को वहन करनेवाला पुरुषी अहंकार का प्रदर्शन करनेवाला देवेंद्रकुमार अपनी पत्नी की आशा-आकांक्षाओं का, भाव-भावनाओं का, इच्छा अपेक्षाओं का कहीं भी सम्मान नहीं करते नहीं दिखाई देता। उसकी ऐसी कौनसी मजबूरियाँ या कमजोरियाँ है जो अपनी पत्नी का भावनाओं की थोडी-सी कद्र नहीं करता? ऐसे अनेक प्रश्न उठते हैं जो तमाम पुरूषी वर्चस्व एवं अहंकार धारण करनेवाली प्रवृत्ति को है। आत्मकथा के उत्तरार्ध में लेखिका प्रश्न उठाती है - 'मेरी देवेंद्र की न बनी। देवेंद्रकुमार सिर्फ अपने ही घरों में रहनेवाला आदमी है। गर्म मिजाज और जिद्दी। अपने मुँह से कहता है कि मैं बहुत शैतान आदमी हूँ। मारता भी था बहुत क्रूर तरीके से।' 'दोहरा अभिशाप' के देवेंद्रकुमार की अत्याचार की शोषण की यह चरमसीमा थी। उन्हें पत्नी सिर्फ खाना पकाने और शारीरिक भूख मिटाने के लिए आवश्यक थी। जब अत्याचार सीमातीत होता और कौसल्या की सहिष्णुता भी सीमातीत होती तब वह पति के खिलाफ अन्याय के विरोध में कोर्ट जाना मुनासिब समझती है। कौसल्या कहती है -'पति ने कभी मेरी कद्र नहीं की बल्कि रोज रोज के झगडे, गालियों से मजबूर होकर घर छोडना पडा और केस करना पडा।' पति के साथ इसी अवस्था में वह चालीस साल तक रही। पति का घर छोडने की सलाह छोटी बेटी सुजाता ने दी। अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय न हो इसलिए सहनशीलता के टूटने का इंतजार नहीं किया। प्रस्तुत आत्मकथा के बारे में समीक्षक सविता सिंह के ये विचार महत्त्वपूर्ण है-'कौसल्या बैसंत्री के व्यक्तित्व को उसके माँ-बाप ने भूखे प्यासे रहकर दुनिया के ताने तकाजे सहकर निर्माण किया। उसके पति ने उसे खंड खंड करके उसे खंडित किया। जिस लेखिका को एक दलित मूवमेंट के लिए जोडा उसी लेखिका को कैसे एक आंबेडकरवादी पति ने ही ध्वस्त किया। ऐसी ध्वस्त महिलाएँ कई पढे लिखे दलित साहित्यकारों के घरों में मिल सकती है। दलित स्त्री के कटु अनुभवों की बेबाक अभिव्यक्ति के 'दोहरा अभिशाप' महत्त्वपूर्ण है। यह अभिशाप केवल कौसल्या तक सीमित नहीं है। कौसल्या के समान जीवनयापन करनेवाली अनेक महिलाओं को यह आत्मकथा जीने का संदेश देती है। 'दोहरे अभिशाप' से मुक्ति पाने के लिए शिक्षित होने का मार्ग प्रशस्त करती है।

'दोहरा अभिशाप' शीर्षक सटीक एवं अर्थपूर्ण है। 'दोहरा अभिशाप' भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री और दलित स्त्री के जीवन की पारिवारिक एवं सामाजिक व्याख्या करता है। प्रस्तुत आत्मकथा भारतीय दलित महिला के जीवन की यथार्थ व्याख्या करता है।

हिंदी साहित्य के आत्मकथात्मक लेखन में 'दोहरा अभिशाप' एक अनूठी जीवनगाथा है। 'दोहरा अभिशाप' यह शीर्षक पूरे आशय, उद्देश्य एवं निरंतर संघर्षशील जीवन को साकार करता है। लेखिका की दृष्टि में स्त्री होना और दलित स्त्री होना यह 'दोहरा अभिशाप' है। किसी भी स्त्री के लिए रोटी, कपडा और मकान यह तीन आम जरूरते होती है। किंतु कौसल्या कहती है -'लेकिन दलित स्त्री के नसीब में ठीक कपडा भी नहीं होता। बाबा को मिल में मशीन साफ करने के लिए कुछ नये कपडों की पट्टियाँ मिलती थी। बाबा उनमें से अच्छी लंबी पट्टियाँ अलग कर अपने धोती के नीचे लंगोट की तरह बाँधकर लाते थे। कभी किसी को शक नहीं हुआ। उनमें से कुछ सफेद पट्टियों को अलग करके हम पेटीकोट और चड्डियां हाथ से सीते थे। कभी कभी बाबा सुंदर प्रिंट की पट्टियाँ लाते थे। उसके ब्लाऊज और बहन की फ्राक सीकर हमने गुजारा किया है।' जीवन के साथ हर समय कौसल्या के परिवार ने समझौता किया। जीवन के साथ लडना, संघर्ष करना यह उन्होंने स्वीकार किया था। इसलिए कौसल्या का जीवन सार्थकता एवं सफलता की

बात करता है। आनेवाली दलित स्त्री पीढी के लिए ही नहीं समस्त नारी जगत के लिए कृतार्थ जीवन जीने का अमर संदेश देता है। अतः 'दोहरा अभिशाप' से यही ध्वनित होता है कि परंपरा से स्त्री- दलित स्त्री उपेक्षित रही है किंतु शिक्षा के बलबूते पर उन्होंने इस अपने को मुक्त कर दिया है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथात्मक उपन्यास .....में प्रकाशित हुआ है।

क) 1999 ख) 2009 ग) 2011 घ) 2013

2) 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा .....भागों में विभाजित है।

क) 25 ख) 26 ग) 27 घ)28

3) 'दोहरा अभिशाप' की लेखिका का पूरा नाम.....है।

क) कौसल्या नंदेश्वर बैसंत्री ख) कौशल्या नंदेश्वर बसंत्री

ग) कौसल्या नंदेश्वर वाजंत्री घ) कौसल्या नंदेश्वर बजंत्री

4) 'दोहरा अभिशाप' के लेखिका के माता का नाम .....था।

क) सरस्वती ख) भागेरथी ग) जनाबाई घ)झूलाबाई

5) 'दोहरा अभिशाप' के नायिका के पिता का नाम.....था।

क) तुलाराम ख) रामा ग) देवेंद्रकुमार घ) श्रावण

6) कौसल्या के आजोबा की मृत्यु.....काटने से हुई थी।

क) साँप ख) बिच्छू ग) विषेला किटक घ) मच्छर

7) लेखिका बैसंत्री के आजोबा का नाम.....था।

क) कृष्णा ख) शिवा ग) मोडकू घ) सूर्या

8) भागेरथी के दयालू पडोसीन का नाम .....था।

क) चंद्राबाई ख) साखराबाई ग) मधु घ) जनाबाई

9) प्रारंभ में लेखिका का नाम .....रखा गया था।

क) कचरी ख) उरकुडी ग) अनुराधा घ) झूलाबाई

10) कौसल्या बैसंत्री ने हिंदी की कहानी.....मासिक में पढी थी।

क) पुरस्कार ख) वापसी ग) उसने कहा था घ) कफन

11) लेखिका ने पृथ्वीराज संयोगिता नाटक में .....की भूमिका की थी।

क) संयोगिता ख) राजा जयचंद ग) पृथ्वीराज घ) चंदबरदाई

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

चावल की खुद्दी – चावल का भूसा

चावल बीनना – चावल साफ करना

चरोटा, चौलाई पातूर, खापरवुटी – सागों के नाम

पाट – दूसरा विवाह, पुनर्विवाह, निकाह

कबाडी– पुरानी वस्तु, रद्दी वगैरह बिकनेवाला

दिहाडी – मजदूरी, रोजंदारी पर काम करना

घाटा या आंबूकरा – गरमी के दिनों में बचे हुए बासी खाने में इमली और पानी डालकर पकाना

सूर्या– दलित की उपजाति – कोसरे जाति द्वारा मनाया जानेवाला एक त्यौहार

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) 1999
2) 28
3) कौसल्या नंदेश्वर बैसंत्री
4) भागेरथी
5) रामा
6) साँप
7) मोडकू
8) साखराबाई
9) कचरी
10) उसने कहा था
11) राजा जयचंद

2.7 सारांश :

1) 'दोहरा अभिशाप' कौसल्या बैसंत्री लिखित दलित महिला का आत्मकथात्मक उपन्यास है। यह एक दलित नारी की आत्मकथा है जो अपना अलग अस्तित्व रखती है।

2) कौसल्या बैसंत्री ने अपने औपन्यासिक आत्मकथा को 124 पृष्ठों में और 28 प्रकरणों में विभाजित किया है। इन प्रकरणों के अंतर्गत अनेक घटनाएँ हैं, जो उनके जीवन–संघर्ष को साकार करती है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन के स्थूल और सूक्ष्म उन सारी घटनाओं का जिक्र किया है।

3) आत्मकथा मात्र घटनाओं का संकलन नहीं होता है इस दृष्टि से 'दोहरा अभिशाप' लेखिका के जीवनदर्शन एवं जीवनदृष्टि दोनों को साकार करती है।

4) प्रस्तुत आत्मकथा कौसल्या के माता-पिता के कठोर परिश्रम, संघर्ष एवं प्रयत्नों की निरंतरता को व्यक्त करती है, जो दूसरों के लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शक बनता है।

5) इस औपन्यासिक आत्मकथानात्मक कृति में दलित समाज में प्रचलित बालविवाह, विधवाविवाह का जिक्र किया है। साथही अस्पृश्य समाज के दलित महिलाओं का रोजमर्रा जीवन का भी परिचय कराया है। दलित समाज अनेक जाति उपजातियों की विशेषताओं को भी रेखांकित किया है।

6) लेखिका की माँ-भागेरथी एक आदर्श माँ के रूप में चित्रित है जो लेखिका एवं बस्ती के अनेक परिवारों को संस्कारों के वस्तुपाठ पढाती है। अपने समाज के सारे रीति-रिवाज, परंपराओं का परिचय भी देती है। वह अच्छी गृहिणी, आदर्श माँ, आदर्श संस्कारक्षम एवं सूझबूझ रखनेवाली भारतीय नारी है।

7) लेखिका के माता-पिता अपनी संतानों के लिए अनंत कष्ट उठानेवाले, जीवनभर त्रासदी भोगनेवाले, गरीबी से ही जीवन का सुंदर रास्ता निर्माण करनेवाले, दुःख अंधविश्वास, जातीय प्रताडनाओं से जुझनेवाले, और अपने बच्चों के भविष्य उज्ज्वल बनानेवाले जागरूक माता-पिता है।

8) प्रस्तुत रचना में दलित समाज के त्यौहार, उत्सव, रीति-रिवाज परंपराओं का वर्णऩ है। इसी प्रकार अस्पृश्य एवं दलित परिवार में होली, दीवाली, गौना आदि त्यौहारों का महत्त्व भी दर्शाया है।

9) लेखिका ने आत्मकथा में अनेक सहेलियों का तथा संपर्क में आए लोगों का योगदान का भी उल्लेख किया है जो कथानक में दर्ज हैं।

10) 'दोहरा अभिशाप' में दलित समाज की अनेक जातियाँ एवं उपजातियों का परिचय देते हुए उऩके गुणवैशिष्ट्यों का भी वर्णऩ किया है। उसी के साथ महार जाति का विस्तार से वर्णऩ किया है।

11) लेखिका ने अपने पिता-रामा, तथा माता-भागेरथी दोनों के व्यक्तित्व की विशेषताएं स्पष्ट की है। जैसे बाबा-कठोर, व्यवहारी तो माँ अनुशासनबद्ध, उत्तम व्यवस्थापक आदि।

12) लेखिका ने अपनी आत्मकथा में उन सभी लोगों का स्मरण किया है जो उनके जीवननिर्माण में सहायक रहे हैं- जैसे पडोसी महिला साखराबाई, बाबासाहेब एवं उनके अनेक अनुयायी, पानी की व्यवस्था करनेवाले तुलाराम साखरे आदि।

13) लेखिका ने अपनी बहन जनाबाई के शिक्षा के बारे में भी वर्णऩ किया है। बडी बहन और लेखिका दोनों जाईबाई के स्कूल में पढते थे। बाद में भिडे कन्याशाला में पढना (नागपुर) आदि बातों का भी परिचय दिया है।

14) तीसरी कक्षा के बाद लेखिका का नाम भिडे कन्याशाला में लिखवाया था । यहाँ ब्राह्मण, कुनबी, अमीर-गरीब, अस्पृस्य लडकियाँ एक साथ पढती थी। छुआछूत की समस्या अधिक थी। लेखिका

को इस बात का एहसास बचपन से ही था, इन समस्त बातों का 'दोहरा अभिशाप' में बैसंत्री ने स्पष्ट रूप से लेखन किया है।

15) लेखिका पर 'दोहरा अभिशाप' में डॉ. आंबेडकर के विचार एवं कार्य का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। आंबेडकरजी के उन विचारों का वह उल्लेख भी करती है, 'अपनी प्रगति करना है, तो शिक्षा प्राप्त करना बहुत जरूरी है।' लेखिका के जीवनध्येय के पीछे शायद इन तत्त्वों का प्रभाव रहा है।

16) लेखिका का परिवार बडा था, आमदनी कम थी। माता पिता दोनों ने अनेक जगहों पर अलग अलग प्रकार के काम करके घर का चरितार्थ चलाया, बच्चों को पढाया तथा सुशिक्षित भी बनाया। लेखिका ने इस बात को रेखांकित किया है।

17) लेखिका ने जहाँ अपनी गरीबी एवं बस्ती का चित्रण इस आत्मकथा में किया है वहाँ अपनी सहेलियाँ जो सवर्ण जाति की थी और जो त्यौहार में शामिल होती थी, इसका भी वर्णऩ किया है। अनेक रिवाजों में गोदना, गुदवाना एक रिवाज था। सभी अपने प्रिय लोगों का नाम गुदवा लेते थे, लेखिका ने अपनी प्रिय शिक्षिका आनंदी का नाम गुदवा लिया था।

18) लेखिका ने जब सामाजिक कार्य में रूचि लेना प्रारंभ किया तब उन्हें अनेक चित्र-विचित्र अनुभवों से गुजरना पडा। जब वह अस्पृश्य विद्यार्थी फेडरेशन की जॉईंट सेक्रेटरी थी तब उन्होंने बाबासाहेब की जयंति पर भाषण दिया था।

19) लेखिका बैसंत्री ने अपने समाज के उद्धार के लिए, उन्हें सही हक दिलवाने के लिए सामाजिक कार्य में सक्रिय सहभाग दिया। 'दलित महिला संगठन' को मजबूत बनाने के लिए प्रामाणिक कोशिश की।

20) लेखिका सामाजिक संगठन कार्य करते समय अनेक अच्छे बुरे अनुभवों से गुजरी है, जिसका जिक्र इस आत्मकथा में है।

21) लेखिका की इच्छा थी कि सामाजिक कार्यकर्ता से विवाह करने की माँ-बाप ने उनकी पसंद को होकार दिया था। बाद में बिहार के देवेंद्रकुमार एल.एल.बी.डी.लिट. करनेवाले व्यक्ति से विवाह किया। बाद में भारत सरकार की राजपत्रित लेबर इन्स्पेक्टर की नोकरी उन्हें मिली और छोटी छोटी जगहों पर स्थानांतरण होने लगा।

22) लेखिका का पूरा परिवार अच्छा शिक्षित बना। बहनों ने अच्छी पढाई की, भाई ने इंजिनिअर मेरिट में पास किया। उन्होंने भोपाल से हैवी-इलेक्ट्रिकल्स में उप-महाप्रबंधक के पद से अवकाश ग्रहण किया।

23) लेखिका के माता पिता ने अंत तक नागपुर के मिल में काम किया। बाद में अपने पैसों से कुआँ खुदवाया तथा अस्पृश्य एवं अनाथ बच्चों की मदद की।

24) प्रस्तुत आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' पर विजय पाकर नया रास्ता खोजती है, आनेवाली पीढी के लिए मार्गदर्शक बनकर उभरती है लेखिका ने अपने कार्य से आत्मविकास, समाजविकास एवं परिवार का विकास किया, शिक्षा को जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

25) लेखिका कौसल्या बैसंत्री ने अपनी आत्मकथा का शीर्षक 'दोहरा अभिशाप' इसलिए दिया होगा वह एक स्त्री है, दलित है, इसलिए दोनों ओर से अभिशप्त है। उनकी धारणा है कि दलित-पुरूष और सवर्ण पुरुषों की सोच में कोई बडा भेद नहीं। लेखिका के व्यक्तित्व विकास में बाधक रूपों में सर्वाधिक पुरूष एवं बिरादरी के ही पुरूष है। वह कहती है, 'बस्ती के लोगों ने उनका जीना बेहाल कर दिया। वास्तव में उनकी मुठभेड पुरूष सत्ता से नहीं बल्कि दलित पुरूष सत्ता से है।'

26) कौसल्या के पति देवेंद्रकुमार बैसंत्री उच्चविद्या विभूषित है। उन्हें स्वतंत्रता-सेनानी का ताम्रपत्र एवं पेन्शन भी मिलती है। सरकार ने उनके कार्य की प्रशंसा भी की है। किंतु लेखिका की दृष्टि में वे गर्म मिजाजी जिद्दी, मारपीट करनेवाला, अत्याचारी एवं शोषित इन्सान है। देवेंद्रकुमार ने कभी अपनी पत्नी कौसल्या की भावना और इच्छाओं का सम्मान नहीं किया है।

28) 'दोहरा अभिशाप' में कौसल्या ने अपने जीवन के संघर्ष एवं कडुवे अनुभव के साथ दलित समाज का जीवन, अज्ञान, गरीबी, शिक्षा, आदि का भी विस्तार से वर्णन किया है।

2.8 स्वाध्याय :

लघुत्तरी प्रश्न :

1) 'दोहरा अभिशाप' का परिचय।
2) 'दोहरा अभिशाप' का शीर्षक।

दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) 'दोहरा अभिशाप' का कथानक लिखिए।
2) ' दोहरा अभिशाप' कथानक की समीक्षा कीजिए।
3) 'दोहरा अभिशाप' में कौसल्या बैसंत्री के जीवन का घटनाक्रम चित्रित हुआ है, स्पष्ट कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

दोहरा अभिशाप की मराठी भाषा की आत्मकथाओं के साथ तुलना कीजिए। :

1) तीन दगडाची चूल- इंदुमती जोंधळे
2) मी नरसाबाई - मेघा किराणे
3) यशस्विनी - विनोदिनी गायकवाड
4) सांगण्याजोगे - शांताबाई गुलाबचंद

5) माझं नर्सिंग सोध अस्तित्वाचा – सुजाता लोखंडे

6) आहे मनोहर तरी – सुमती देशपांडे

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) बूँद बावडी : पद्मा सचदेव

2) अ) कस्तुरी कुंडल बसै आ) गुडिया भीतर गुडिया – मैत्रेयी पुष्पा

3) जिंदगी कोई सौदा नही : कुसुम अंसल

4) और और औरत : कृष्णा अग्निहोत्री

●●●

सत्र 6 – इकाई 3
'दोहरा अभिशाप' : पात्र एवं चरित्र–चित्रण

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य ।

3.2 प्रस्तावना ।

3.3 विषय विवेचन ।

3.3.1 'दोहरा अभिशाप' के प्रमुख पात्र ।

3.3.2 'दोहरा अभिशाप' के गौण पात्र ।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

3.5 पारिभाषिक शब्द – शब्दार्थ ।

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

3.7 सारांश ।

3.8 स्वाध्याय ।

3.9 क्षेत्रीय कार्य ।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने पर आप –

1) 'दोहरा अभिशाप' के चरित्र-चित्रण से परिचित होंगे।

2) कौसल्या बैसंत्री के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से परिचित होंगे।

3) देवेंद्र की चारित्रिक विशेषताओं से अवगत होंगे।

4) भागेरथी के बहुआयामी चरित्र से परिचित होंगे।

5) आजी, मोडकू साहूकार, रामा, साखराबाई के चरित्र से परिचित होंगे।

3.2 प्रस्तावना :

कथानक संगठन का प्रमुख उद्देश्य पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करना होता है। उपन्यासकार अपनी अनुभूति के आधारपर चरित्र-सृष्टि अंकित करता है। पात्रों के राग, विराग, संघर्ष, दया, करूणा तथा संवेदनशीलता आदि स्वाभाविक गुणों का तथा हिंसा, शत्रुता, क्रूरता, अनुदारता आदि दुर्गुणों का चित्रण यथार्थ के धरातलपर करता है।

कौसल्या बैसंत्री का 'दोहरा अभिशाप' दलित जीवन को अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है। इसमें पात्रों की बहुलता है। कौसल्या जी ने कुल-मिलाकर पाच छह चरित्रों का संपूर्ण परिचय पाठकों से कराया है। परंतु अन्य जितने भी गौण पात्र हैं वे अपने परिवेश, तथा अपने समाज का प्रतिनिधित्व करने में अत्यंत सफल अत्यंत सफल हुए हैं। लेखिका के यथार्थ जीवन की भावभूमि पर साकार हुए इस उपन्यास में चरित्र-सृष्टि सशक्त रूप में प्रस्तुत हुई है। कौसल्या जी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को आत्मकथात्मक उपन्यास के रूप में पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने व्यक्तिवादी स्तरपर अन्य चरित्रों के आंतरिक द्वंद्वों का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है।

3.3 विषय विवेचन :

अध्ययन की सुविधा के लिए आलोच्य उपन्यास में वर्णित पात्रों का विभाजन 'मुख्य पात्र' और 'गौण पात्र' शीर्षक से किया है।

अ) प्रमुख पात्र : कौसल्या बैसंत्री (नायिका) देवेंद्र बैसंत्री (प्रमुख कलाकार)

ब) गौण पात्र : भागेरथी (कौसल्या की माँ) आजी (कौसल्या की नानी) मोडकू साहूकार (कौसल्या के नानाजी), रामा (कौसल्या के बाबा), साखराबाई, जनाबाई, जाईबाई, झूलाबाई, किसन बनसोडे, तुलाराम साखरे, सोगी, कुमुद डोंगरे आदि।

3.3.1 'दोहरा अभिशाप' के प्रमुख पात्र :

- **कौसल्या बैसंत्री**

1. उपन्यास की नायिका (प्रमुख स्त्री पात्र):

कौसल्या बैसंत्री 'दोहरा अभिशाप' इस उपन्यास की नायिका एवं लेखिका है। कौसल्या का जन्म सन 08 सितंबर 1926 को नागपुर की खलासी लाईन नामक बस्ती में एक गरीब एवं दलित परिवार में हुआ। माँ का नाम भागेरथी तथा पिता का नाम रामा नंदेश्वर था। कौसल्या को पाँच बहने और एक भाई था। कौसल्या के बचपन में बस्ती के बडे-बुजुर्ग उसे कचरी नाम से पुकारते थे।

2. गरीब एवं दलित माँ की संतान :

उपन्यास की नायिका कौसल्या एक गरीब एवं दलित माँ की संतान है। माँ भागेरथी का जीवन संघर्षमय था। वह अथक परिश्रमी, मेहनती और उद्यमशील महिला थी। घोर गरीबी और जातीय प्रताडनाओं का सामना करते हुए उसने कौसल्या को पढाया था। भागेरथी मिल-मजदूर थी। बच्चों की परवरिश ठिक ढंग से हो इसके लिए वह अनेक कष्ट उठाती थी। छुट्टी के दिन चुडियाँ, कुंकूम, शिकेकाई आदि सामान बेचकर बच्चों की पढाई के लिए पैसे जुटाती थी। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के भाषण का प्रभाव अनपढ भागेरथी पर पड चुका था। वह शिक्षा का महत्त्व जान गयी थी इसी कारण उसने कौसल्या को उच्चशिक्षा दिलाने का दृढनिश्चय किया था।

3. हर घर काम में कुशल एवं अभिरूचि संपन्न :

कौसल्या घर के हर काम में कुशल एवं अभिरूचि संपन्न थी। यह कुशलता उसे अपनी माँ से विरासत में मिली थी। माँ ने कौसल्या को कपडे धोना, घर लीपना आदि सिखाया था। छुट्टी के दिन कौसल्या अपनी बहनों को साथ लेकर घर की आधी दिवार सफेद मिट्टी से और नीचे की जमीन को गोबर से लीपती थी। लेखिका के शब्दों में, 'मैं छोटी बाल्टी को रस्सी बाँधकर कुएँ में डालकर पानी खींचती और माँ,बडी बहन मिलकर उस पानी से कपडे धोती। सबका काम बँटा था।' माँ मिल में चली जाने के बाद लेखिका घर के सारे काम निपटाकर स्कूल चली जाती थी।

4. सुशिक्षित एवं बुद्धिजीवी :

कौसल्या ने माता-पिता के सहकार्य तथा जाईबाई की प्रेरणा से शिक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। अनेक समस्याओं का सामना करते हुए वह पढाई में आगे बढती गई। लेखिका अपनी बस्ती में पहली लडकी थी जिन्होंने मॅट्रीक पास किया था। लेखिका के शब्दों में, ''नगरपालिका के सदस्य श्री तुलाराम साखरे जी ने छोटी-सी सभा और चाय पार्टी का आयोजन किया। हमारी उपजाति के काफी लोग आये थे। कुछ लोगों ने हमारी प्रशंसा की और कहा कि यह गर्व की बात है कि दो लडकियों ने मैट्रिक पास किया। मेरे गले में हार डाला गया। माँ-बाबा भी आए थे मेरे साथ और वे फुले नहीं समा रहे थे। वे बहुत खुश थे।''

बुद्धिवादी एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की धनी कौसल्या ने आगे चलकर बी.ए. की उपाधि हासिल की और सदियों से शिक्षा से वंचित दलितों की शैक्षिक स्थिति को उसने रेखांकित किया। छात्रा अवस्था से ही वह प्रगत विचारों की कायल रही है। कौसल्या ने 12-13 उम्र में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी का भाषण सुना था जो उसके लिए बडा प्रेरणादायी रहा। उनसे प्रभावित होकर कौसल्या ने छात्रों के मार्गदर्शन हेतु अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद बना ली थी। विविध प्रांतों में संपन्न होनेवाले दलित आधिवेशनों में हिस्सा लेती है। दलितों के प्रश्नों पर विचार-मंथन करती है। अतः कौसल्या बुद्धिवादी एवं कलात्मक प्रवृत्ति की थी।

5. अपने परिवार के प्रति समर्पित :

कौसल्या अपने परिवार के प्रति समर्पित दिखाई देती है। चाहे वह परिवार पिता का हो या पति का। दोनों परिवारों की जिम्मेदारीयाँ उसने बडे समर्पण भाव से निभाई है। उसके माता-पिता ने अपने बच्चों को सुशिक्षित एवं संस्कारित बनाने के लिए अनेक कष्ट उठाएँ थे। उन कष्टों का लेखिका ने हमेशा आदर किया और बी.ए. तक की पढाई पूरी करके माँ-बाप का सपना साकार किया। वह अपने भाई-बहनों से भी बहुत प्रेम करती है। कौसल्या अपना पति एवं बच्चों के प्रति भी समर्पित रही है। इसीकारण ही वह चालीस साल तक पति के क्रूर अत्याचार सहती है। अतः उसने बेटी, पत्नी और माँ होने का दायित्व बखुबी निभाया है।

6. माँ और आजी का प्रभाव :

लेखिका पर उनकी माँ तथा आजी के अथक मेहनती और दृढ-निश्चयी व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाई देता है। उसकी माँ बडी धैर्यवान, साहसी, निडर एवं तेजबुद्धी की महिला थी। हर काम सुचारू रूप से करती है। लेखिका के शब्दों में, 'माँ अगर पढी-लिखी होती और पढने का मौका मिलता तो आज जरूर इंजिनिअर होती। माँ हर काम बहुत व्यवस्थित ढंग से करती थी।' माँ के बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रभाव लेखिका को संपूर्ण जीवनभर दिखायी देता है। कौसल्या की आजी स्वाभिमानी महिला थी। अनमेल विवाह का शिकार बनी आजी जीवनभर संघर्ष करती है। अधेड उम्र के पति के अत्याचारों से तंग आकर बच्चों के साथ घर छोडा और स्वाभिमान के साथ अपनी लडाई खुद लडती रही। यहाँ तक की आजी ने अपना कफन भी स्वयं जुटा दिया था। इसी प्रभाव के फलस्वरूप ही वैवाहिक जीवन के चालीस वर्षों के बाद क्यों न हो अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए लेखिका ने पति को त्याग दिया था।

7. रीति-रिवाजों के प्रति प्रेम :

कौसल्या को अपने समाज के रीति-रिवाजों के प्रति नितांत प्रेम दिखाई देता है। अस्पृश्य समाज के लोग शिवजी और कृष्णजी के भक्त थे। लेखिका वर्णन करती है,'बस्ती में लोग श्रीकृष्ण-जन्म अष्टमी की पूजा बडी धूमधाम से करते थे। बाजार में खूब सुंदर-सुंदर श्रीकृष्ण की मूर्तियाँ मिलती थी। लोग इन्हें खरीदकर लाते थे। बाबा भी सुंदर-सी मूर्ति खरीदर लाते थे। एक-दो दिन पहले घर-आँगन की सफाई और लिपापोती हो जाती थी। घर को रंग-बिरंगे कागज के फूलों और डंडियों से सजाते थे।' कोसरे उपजाति के एक त्यौहार के बारे में लेखिका लिखती है, 'जनवरी महीने में एक त्यौहार आता जिसे सिर्फ कोसरे उपजाति ही मनाती थी, उसे 'सूर्या' कहते। सूर्य की पूजा करते। वह भी आँगन में सूर्य निकलने पर सवेरे मुर्गे की बली देते थे। मुर्गे का सिर काटकर उसे दिन भर आँगन में ही पूजा के स्थान पर टोकरी ढाककर रखते थे। मुर्गा पकाकर खाते थे। शाम को मुर्गे के सिर को पकाकर प्रसाद के रूप में खाते थे परंतु अब यह सब रस्म रिवाज बंद हो गए। अब सब पढने-लिखने की ओर ध्यान दे रहे हैं।

8. संगीत के प्रति रूझान :

कौसल्या संगीत प्रेमी थी। उनकी आवाज अच्छी थी इसलिए कॉलेज के कार्यक्रमों में वह ग्रुप

में वंदे मातरम, जन गण मन गाती थी। कौसल्या ने स्कूल के एक नाटक में अभिनय के साथ गाना भी गाया था। लेखिका के शब्दों में, 'सबने मेरे गाने और अभिनय को सराहा और मुझे एक चाँदी का मैडल मिला था। गाना सीखना चाह रही थी परंतु पैसे की तंगी और घर से संगीत स्कूल बहुत दूर होने के कारण संगीत ही सीख पाई। मन मारकर यह जाना पडा। मेरी आवाज अच्छी थी।' अतः संगीत के प्रति रुझान होते हुए भी उसे गरीबी के चलते गाना सीख नहीं पायी, इसका उनको दुःख था। सरोद वादक अली अकबर खाँ के सरोद वादन से वह मोहित हो गयी थी।

9. अभिनय में अभिरूचि :

कौसल्या जी को नाटक तथा अभिनय में अभिरूचि थी। एक बार स्कूल में 'पृथ्वीराज-संयोगिता' नामक नाटक मंचन किया गया था। कौसल्या ने इसमें 'राजा जयचंद' की भूमिका निभाई थी। उस समय डॉ. आंबेडकर के आंदोलन से प्रभावित होकर अस्पृश्य लोग सामाजिक सुधार के लिए पोवाडे, जलसे, नाटक, गीतों के कार्यक्रम करते थे। कौसल्या लिखती है, 'ऐसा ही एक नाटक जो अछूतों द्वार पर था, कुछ लोगों ने करने की योजना बनाई थी। उसमें मुझे छोटी-सी भूमिका दी गई। नाटक में मेरे पिता और भाई पानी के लिए ब्राह्मणों के कुँए के पास जाते हैं और दूर रहकर पानी माँगते हैं, परंतु ब्राह्मण उन्हें पानी नहीं देते। वे प्यासे तडपकर कुएँ के पास मर जाते हैं। मैं कुएँ के पास आकर खूब रो-रोकर गीत गाकर भगवान से प्रार्थना करती हूँ। कृष्ण भगवान पानी का घडा लेकर प्रगट होते है और दोनों को पानी पिलाकर जीवित करते हैं। बस, यही मेरा रोल था। सबने मेरे गाने और अभिनय को सहारा और मुझे एक चाँदी का मैडल मिला था।' अभिनय में रूचि के कारण ही कौसल्या ने एक्ट्रेस बनने का सपना भी देखा था। शालिनी नाम की एक सहेली और उनसे देविका रानी को एक पत्र लिखा था कि हम दोनों फिल्मों में काम करना चाहती है। दोनों ने बांबे टाकीज के लिए अपने फोटो भेजे थे परंतु उनके फोटो फोटोजेनिक नहीं है, ऐसा उनका पत्र आया जिससे दोनों निराश हो गयी थी।

10. शांत एवं सहनशील :

कौसल्या शांत एवं सहनशील स्वभाव की थी। अपने बच्चों का भविष्य कहीं अंधःकारमय ना हो इसलिए चालीस वर्षों तक उसने पति के क्रूर अत्याचारों को शांत स्वभाव के कारण सहा है। लेखिका के शब्दों में, 'देवेंद्रकुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी। दफ्तर के काम और लिखना यही उसकी चिंता थी। मुझे किसी चीज की जरूरत है, इस पर उसने कभी ध्यान नहीं दिया। मैंने कभी उसके लिखने-पढने में बाधा नहीं डाली, न उसका विरोध किया। बच्चे छोटे थे। घर के कामों में व्यस्त रही। काम करने की आदत बचपन से ही थी।' एक प्रतिभा संपन्न स्त्री की लाचारी के पीछे सबसे बडा डर है कहीं पति की सामाजिक प्रतिष्ठा को धक्का न पहुँचे। पति के अन्याय-अत्याचार को वह इसलिए भी सहती है कि, पति से जुडी खुद की समाज में बनी इमेज कहीं चरमराकर टूट न जाए। अतः जब उसकी सहनशक्ति ने जवाब दिया तब उसने तंग आकर पति का विरोध किया और उसपर केस दायर की।

11. जातिभेद के प्रति चीढ :

कौसल्या जी को जातिभेद में अविश्वास एवं चीढ थी। जातीय प्रताडनाओं को उसके परिवार तथा समाज ने बहुत भोगा था इसी कारण उसके मन में बचपन से ही छुआछूत को लेकर विद्रोह की भावना पनपती है, 'बाबा ने हेड मिस्ट्रेस के चरणों के पास अपना सिर झुकाया दूर से, क्योंकि वे अछूत थे, स्पर्श नहीं कर सकते थे। बाबा का चेहरा कितना मासूम लग रहा था उस वक्त। मेरी आँखे भर आई थी। अब भी इस बात की याद आते ही बहुत व्यथित हो जाती हूँ। अपमान महसूस करती हूँ। जाति-पाँति बनानेवाले का मुँह नोचने का मन करता है। अपमान का बदला लेने का मन करता है।' कौसल्या ना ही अपनी जाति को हीन समझती है और न सवर्ण जाति को अपने से ऊँचा। चिटफंड की उच्चवर्णिय एक महिला शिकायत करती है कि कौसल्या पहले से ही अपनी जाति नहीं बताई और अपनी जाति छिपाई। तब कौसल्या ने इस महिला को मुँहतोड जवाब दिया, 'आपने मुझसे मेरी जाति नहीं पूछी। क्या मैं अपनी जाति का पोस्टर अपनी पीठ पर चिपकाकर रखूँ? आप सभ्य नहीं लगती। सभ्य आदमी जाति-पाँति का विचार अपने मन में नहीं रखते और जाति-पाँति मानने वाले लोगों से मैं अपना संपर्क नहीं रखती। मुझे पहले पता होता कि आप जाँति-पाँति मानती है तो मैं स्वयं आपके चिटफंड में नही आती।' लेखिका के मन में जातिभेद के प्रति विद्रोह दिखायी देता है।

12. खेलकूद में रूचि :

कौसल्या को खेल-कूद में विशेष अभिरूची थी। वे स्कूल के दिनों में ही खेल प्रतियोगिता में सहभागी होने की तीव्र इच्छा थी। बैडमिंटन खेलना उन्हें बहुत पसंद था। परंतु हीनता या किसी और वजह से आगे जाने का साहस उनमें नहीं होता था। कौसल्या के शब्दों में, 'मैंने स्कूल के किसी कार्यक्रम जैसे खेलकूद, नाटक वगैरह में कभी भाग नहीं लिया। मुझसे हीनता की भावना भरी थी। मैं खो-खो, कबड्डी वगैरह अच्छा खेल सकती थी। परंतु मैं आगे बढने से ही डरती थी। मैं अस्पृश्य हूँ, यह भावना मेरे मन से जाती ही नहीं थी।' इसी कारण कौसल्या स्कूल शुरू होने से पहले जल्दी जाकर खो-खो और बैडमिंटन खेलती थी।

13. अस्पृश्य होने का न्यूनगंड :

कौसल्या जी के व्यक्तित्व में बचपन से ही अस्पृश्य होने का न्यूनगंड था। हमेशा हीनता महसूस करती थी। लेखिका के शब्दों में, 'मैं अस्पृश्य हूँ, इसका मुझे बहुत दुःख होता था और मैं हीनता महसूस करती थी। कोई मुझे मेरी जाति न पुछ बैठे, इसका मुझे सदैव डर रहता था। इसलिए मैं अकेली चुपचाप खाने की छुट्टी में या स्कूल शुरू होने के पहले एक ओर बैठी रहती थी।' इसी न्यूनगंड के कारण उसने स्कूल में सवर्ण तथा कुनबी लडकियों से अपनी जाति छिपा ली थी। अस्पृश्यता की हीन-भावना उसके मन जाति ही नहीं थी। स्कूल में रखे पानी के घडे से पानी निकालकर पीने में भी उसे डर लगता था। खेलकूद, नाटक जैसे स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लेने से भी वह डरती थी।

14. पति से प्रताडितः

लेखिका जीवनभर पतिद्वारा प्रताडित एवं शोषित रही है। उच्च पद पर काम करनेवाले उच्चशिक्षित पति देवेंद्र के मन में अपनी पत्नी के लिए सम्मान की भावना का लवलेश न होना पुरूष वर्चस्व एवं अहंकार ही दर्शाता है। पत्नी को गंदी गालियाँ देना, क्रूर तरिके से मारना आदि शैतानी हरकते करता था। बहुत लड-झगडकर पत्नी को खर्च के लिए प्रति माह चालिस रुपये देता था वह भी बाद में बंद कर दिए। लेखिका को घंटा-भर बारीश, ठंड, धूप में दूध-राशन की लाईन में खडा रहना पडता था। यहाँ तक की कौसल्या जी को बहुत गंभीर गढिया हुई थी तब उसके पति ने घर की नौकरानी घुडवा दी थी। ऊपर से पत्नी को कहता है कि, बाहर जाकर काम करो और खाओ। वह पैसे, चिनी, साबुन भी अलमारी में बंद रखता था। पति द्वारा बढती जा रही उपेक्षा, अवहेलना का मार्मिक चित्रण लेखिका ने किया है। वह पाँचवे बच्चे को जन्म देनेवाली थी। पत्नी के प्रसव के दिन समीप है यह जानते हुए भी देवेंद्र दौरे पर चला जाता है। बडी मुश्कील से लेखिका दाई और गाडी का बंदोबस्त करके अस्पताल भर्ती होती है और एक बेटे को जन्म देती है। उसका पति अगले दिन सबेरे दौरे से वापस आता है और अस्पताल पहुँचता है। इसके बारे में कौसल्या जी लिखती है, 'मुझे जनरल वार्ड के पलंग पर लिटा गया था। अब मुझे थोडा होश आने लगा था। सिर भारी हो गया था। आँखे भी नहीं खुल रही थीं। तब देवेंद्रकुमार की थोडी आवाज सुनाई दी। वह डॉक्टर से कह रहा था कि इसे प्राइवेट वॉर्ड में रखो। मैं बडा आफिसर हूँ, इसकी शान उसे दिखानी थी।.... देवेंद्रकुमार जैसे आया वैसे ही चला गया। मुझे मिला ही नहीं। न मेरी हालत के बारे में पूछा।' जाते वक्त ऑपरेटर के पास तीस रूपये देकर चला जाता है। यह तीन रुपये रोजाना के हिसाब से दस दिन के कमरे का किराया था। अस्पताल की आया, सफाई कामगार सभी बख्शीश माँगते हैं और लेखिका के पास एक फूटी कौडी भी नहीं थी। देवेंद्र स्वयं तो पत्नी को लेने भी नहीं आया और ये भी नहीं सोचा कि वह घर कैसे आएगी। भूख से बेहाल कौसल्या बडी मुश्किल से घर पहुँचती है। वह कहती है कि, 'क्या ऐसे पति से प्यार, श्रद्धा हो सकती है? इस प्रसंग की याद आते ही मेरा खून खौलने लगता है।' देवेंद्र के नजरिए में पत्नी मात्र भोग की वस्तु ही बनी रही थी। अंत में पति के अत्याचारों से तंग आकर लेखिका अपने पति पर केस दायर करती है।

15. जीवन को अर्थपूर्ण बनानेवाली नारी :

कौसल्या जी के व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक बाधाएँ खडा करनेवाला उसकी अपनी बिरादरी का पुरूष वर्ग ही था। सबसे अधिक यातनाएँ तो उनके अपने आंबेडकरवादी पति ने ही दी है। अतः कौसल्या जी को स्त्री होने तथा दलित होने का अभिशाप सिर्फ दोहरे ही नहीं न जाने कितने स्तरों पर भुगतना पडा है। उसके माता-पिता ने थोर गरीबी और जातीय प्रताडनाओं से लडते-झगडते बेटी का व्यक्तित्व निर्माण किया था परंतु उसके स्वतंत्रता सेनानी, सोशल वर्कर पति ने उसे खंड-खंड करके ध्वस्त किया। इस प्रकार कौसल्या जी को पारिवारिक एवं सामाजिक दिक्कतों का प्रताडनाओं का सामना करना पडा फिर भी वह निराशावादी नहीं बनी बल्कि बी.ए.तक की शिक्षा ग्रहण करके माँ-बाप

के जीवन को सार्थक एवं सफल बनाया। आंबेडकरवादी विचारधारा को बडे समर्पण से विकसित किया। वह एक कुशल सोशल वर्कर बनी। महिलाओं के विविध संगठनों में जुडकर उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग बनाने का कार्य जीवनभर किया है। दलित महिलाओं को उन्नति, प्रगति तथा बदलाव की ओर अग्रेसर करती हुई वह समझाती है, कि, 'अगर हम स्वाभिमान से अपनी उन्नति करना चाहते हैं, तब हमे अपने पाँव पर खडा होकर, अपने पर भरोसा रखकर, आगे बढना होगा। हमें अपने अंदर शक्ति पैदा करनी होगी। किसी का सहारा लेकर चलने से काम नहीं बनेगा।' कौसल्या जी की जीवन-यात्रा बहुत कठिन रही फिर भी उन्होंने भोगे हुए यथार्थ को शब्द-बद्ध करके अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाया। अपने संघर्षमय जीवन को अभिव्यक्त करके समस्त स्त्री-वर्ग के लिए सम्मान का मार्ग प्रशस्त किया है।

- **देवेंद्र :**

1. परिचय :

देवेंद्रकुमार बैसंत्री लेखिका कौसल्या जी के पति हैं। वे बिहार के खर्डिया नामक गाँव के निवासी थे। उनके माता-पिता की मृत्यु हुई थी। उनकी दो छोटी बहने तथा एक भाई था। माँ-बाप ने बचपन में ही देवेंद्र की शादी कर दी थी। उसकी पत्नी हमेशा बीमार रहती थी। उसे दो-तीन बच्चे भी हुए परंतु वे जीवित नहीं रहे। वह दूसरी शादी करना चाहता था। खुद उच्चशिक्षित था इसलिए पढी-लिखी पत्नी चाहता था। एक अधिवेशन में देवेंद्र का परिचय कौसल्या से हुआ था परंतु उस वक्त दोनों को भी खयाल नहीं आया था कि दोनों की शादी होगी। परिचय के बहुत दिनों बाद दोनों ने शादी करने का इरादा किया और रजिस्टर पद्धति से दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

2. सुशिक्षित एवं उच्चविद्याविभूषित :

देवेंद्रकुमार एम.ए.एल.एल.बी. करके बनारस विश्वविद्यालय में डि.लिट. के लिए रिसर्च कर रहा था। देवेंद्र कानपुर से निकलने वाले हिंदी अखबार 'सावधान' और मद्रास से निकलने वाले एक अंग्रेजी अखबार में लेख लिखता था। वह एम.एन. राय की रेडिकल डेमाक्रेटिक पार्टी में भी रहा। युवावस्था में वह बिहार के किसानों के आंदोलन में सक्रिय रहा था और जेल भी गया था। वह यू.पी. शेड्यूलकास्ट फेडरेशन का अध्यक्ष था। इसप्रकार देवेंद्र उच्चविद्याविभूषित बहुआयामी व्यक्तित्व रहा है।

3. पत्नी का शोषण करनेवाला :

सुशिक्षित देवेंद्र पत्नी का हर तरह से शोषण करता हुआ दिखाई देता है। शादी के पहले कौसल्या से उसका व्यवहार मित्रवत, सहयोगपूर्ण रहा है। परंतु शादी के बाद उसमें पुरूषी अहं जागने लगता है। अपने ही घेरे में रहनेवाला देवेंद्र ग्रहस्थी चलाने में पत्नी से सलाह-मशवरा नहीं करता। पत्नी की इच्छा, भावना खुशी की कभी कद्र नहीं करता। बात-बात पर पत्नी को गंदी-गंदी गाली देता और हाथ उठाता है। बडे क्रुर तरीके से पत्नी को मारता भी था। गर्म मिजाज और जिद्दी देवेंद्र अपने मुँह से कहता है

कि 'मैं बहुत शैतान आदमी हूँ।'उनकी बहनों से पता चलता है कि वह माँ-बाप तथा पहली पत्नी को भी मारता था। देवेंद्र कुमार के सामने उनकी बहनें भी खडी भी नहीं होती थी। उसके जीवन में पत्नी का स्थान बहुत नीचा था। लेखिका के शब्दों में, 'देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी।' वह घर खर्च के लिए पूरे पैसे नहीं देता था। पैसे अपनी अलमारी में ताले में बंद रखता है और रोज दूध और सब्जी के लिए गिनकर पैसे देता था। पैसे देने की बात आती तब कुछ न कुछ कारण निकालकर झगडा करता। मारने दौडता। पत्नी कौसल्या उसके अत्याचार, शोषण से तंग आ गई थी।

4. संतानों के प्रति प्रेम, सहानुभूति का अभाव :

माँ-बाप के मनमुराद का सबसे अधिक गंभीर असर बच्चों पर होता है। देवेंद्र कुछ-न-कुछ कारण निकालकर हमेशा अपनी पत्नी से झगडा करता था। ऐसे में बच्चे अगर माँ का पक्ष लेते हैं तो उनके ऊपर नाराज हो जाता है उसे अपने संतानों के प्रति प्रेम, सहानुभूति नहीं थी। छोटे बेटे के साथ हमेशा नोंकझोंक चलती रहती थी। पत्नी की उपेक्षा बच्चों के लिए किस कदर भारी पड सकता है इसका अंदाजा देवेंद्र का पहला बेटा जो छठी कक्षा में पड रहा था उसकी मौत से लगाया जा सकता है। मन्स का जहर दिमाग में चले जाने से उसकी मृत्यु हुई, तब देवेंद्र दौरे पर था और बेटे की मृत्यु के बाद घर पहुँचता है। बच्चों के जन्म के समय भी वह मौजूद नहीं रहता था। उसको ना बच्चों से लगाव था ना पत्नी से। देवेंद्र सिर्फ अपने ही घेरे में रहनेवाला आदमी है। ज्यादातर दौरे पर ही रहता। त्यौंहार के दिन भी कभी-कभी बाहर ही रहता है। बच्चे उदास रहते हैं।

5. उच्च ओहदे पर कार्यरत :

उच्चशिक्षित देवेंद्र को पहली नौकरी लेबर इन्स्पेक्टर की मिली। यह पोस्ट भारत सरकार की थी और राजपत्रित थी। कुछ महिनों बाद देवेंद्र ने यह नौकरी छोड दी कारण भारत सरकार के सूचना और प्रसार विभाग में असिस्टंट रिसर्च ऑफिसर के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। वे अब पत्नी और बच्चों के साथ दिल्ली में रहने लगे। दिल्ली में आठ वर्ष रहने के बाद उनका तबादला भोपाल हो गया। वहाँ से देवेंद्रकुमार पंचवर्षीय योजना के प्रसार-प्रचार के लिए पूरे मध्य प्रदेश के लिए नियुक्ति हो गये।

6. संशयी प्रकृति :

देवेंद्र शकी और संदेही प्रकृति का आदमी था। उसने अपना पतिधर्म कभी नहीं निभाया। उलटा रोजमरी की छोटी-छोटी बातों में पत्नी पर संदेह करता था। किसी भी बात पर उसे पत्नी पर विश्वास नहीं था। लेखिका के शब्दों में, 'वह साबुन भी अपनी अलमारी बंद रखता, चीनी भी बंद, थोडी-थोडी रोज लडके के लिए, चाय के लिए एक कटोरी में रख देता। अब खुद राशन, दूध-सब्जी आदि लाता। पकाने के लिए सब्जी टेबल पर निकालकर रख देता। मैं खाना बन जाने पर खा लेती थी। तब उसने यह शिकायत मेरे भाई से की कि मैं उससे पहले खाना खा लेती हूँ।' इस प्रकार अपनी पत्नी पर संदेह करनेवाला शकी आदमी था।

7. सामाजिक कार्यकर्ता :

युवावस्था से ही देवेंद्र सामाजिक कार्य में सक्रिय रहा है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के दलित मुवमेंट से वह जुडा हुआ था। उनके विचारों से प्रभावित होकर देवेंद्र शेड्यूल कास्ट अधिवेशन तथा आंदोलनों में हिस्सा लेता था। वह रेडिकल डेमॉक्रेटिक पार्टी के लिए भी उसने सामाजिक कार्य किए है। अखबारों में लेख लिखता था। उसके सामाजिक कार्यो के कारण ही उसे सरकारी कार्यक्रमों में उसे निमंत्रण मिलते रहे। महीने में बीस दिन वह दौरे पर ही रहता था। उसके कार्यों के लिए उसे स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र मिला था। इसप्रकार देवेंद्र दलित आंदोलन तथा अन्य सामाजिक कार्यों में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में दिखाई देता है।

8. पत्नी को दासी के रूप में देखने की वृत्ति :

एक सामाजिक कार्यकर्ता होकर भी देवेंद्र अपनी पत्नी को दासी के रूप में देखता था। उच्चशिक्षित पत्नी का अनादर करता था। रोज नए-नए रूप से पत्नी का छल करता था। घर खर्च के लिए पत्नी को पैसे नहीं देता। लेखिका के शब्दों में 'बहुत लड-झगडकर उसने मुझे चालीस रूपये महीने देना शुरू किया। जब देवेंद्र कुमार अपने गाँव बिहार जाता तब एक कागज पर इतने पैसे दूध के इतने सब्जी के, इतने राशन के और चालीस रूपये तुम्हारी पगार लिखकर रख देता, जैसे मैं वहाँ इनके घर की नौकरानी हूँ।' घर का सारा काम करने पर भी पत्नी की प्रशंसा नहीं करता था। कुछ महिनों बाद तो उसने चालीस रूपये देना भी बंद किया। घर की नौकरानी को भी बंद किया। लेखिका लिखती है, 'नौकरानी कपडे धोती थी, उसे भी देवेंद्र ने छुडवा दिया। मुझसे कहता कि मैंने तुम्हें पालने का ठेका नहीं लिया है। मैंने कहा, शादी के बाद पत्नी को पालने की जिम्मेदारी पति की होती है। मैं भी यहाँ मुक्त में तो नहीं खाती। यहाँ काम करती हूँ। तब कहता, ''बाहर जाकर काम करो और खाओ। पत्नी को वह स्वतंत्रता सेनानी भी दासी के रूप में ही देखना चाहता था।'' इस प्रकार देवेंद्र की मानसिकता दोहरे मापदंड की थी।

9. पत्नी को ताने देने की आदत :

देवेंद्र कुमार को अपनी पत्नी को ताने देने की बुरी आदत थी। वह दलित आंदोलन से जुडा सामाजिक कार्यकर्ता था इसलिए लेखिका ने उसके साथ शादी करने का निर्णय उससे पहले लिया था परंतु इसकी सजा कौसल्या को जिंदगी भर 'तू ही मेरे पीछे पडी थी।' कहकर चुकानी पडी। कौसल्या लिखती है, 'मैंने शादी के लिए पहल की थी जरूर। यह कोई बडा अपराध नहीं था। मैंने कोई जोर-जबरदस्ती नहीं की थी। फिर भी मुझसे बार-बार कहता की तुम्हे कोई नहीं मिला, इसलिए तुमने मेरे साथ शादी की। एक बार छोटे लडके ने बाप को टोका कि आपकी शादी को चालीस साल हो गए और आप बार-बार इसकी रट लगाते हो। तब उसके ऊपर नाराज हो गया।' इस प्रकार पत्नी को हमेशा तंग करने की ही सोचता था।

10. कृतघ्न :

देवेंद्र बडा कृतघ्न व्यक्ति था। पढे-लिखे शिक्षित देवेंद्र ने पत्नी पर बहुत अत्याचार किए। पत्नी को वह खाना बनाने और शारीरिक भूख मिटाने की वस्तु के रूप में देखता था। इसीकारण वह पत्नी के प्रसुति के दिन उसके पास रहने के बजाय दौरे पर चला जाता है। जब की दौरे का कार्यक्रम बनाना उसके ही हाथ में था। उसने पत्नी के हाथ में तीस रूपये पकडा दिए और कहा, अस्पताल चली जाना। अपनी पत्नी गर्भवती पत्नी तथा होनेवाली संतान के प्रति इतनी बेरूखी कोई कृतघ्न व्यक्ति ही कर सकता है। दौरे से वापस आने पर भी वह पत्नी की खबर नहीं लेता। फोन करने पर देवेंद्र अस्पताल आता है। कौसल्या के शब्दों में, 'देवेंद्र कुमार जैसा आया, वैसा चला गया। मुझे मिला ही नहीं। न मेरी हालत के बारे में पूछा।'..... सिर्फ --और चाय।.... आठ दिन तक देवेंद्र कुमार मुझे देखने भी नहीं आया। कह रहा था माँ से कि उसके पाँव में मोच आ गई थी। लेकिन दफ्तर और इधर-उधर के काम से तो जाता ही था। आठवे दिन आया। पर मुझसे बात नहीं की।.... फिर घर चला गया। जाते वक्त देवेंद्र कुमार ने दफ्तर के ही एक फिल्म ऑपरेटर को तीस रुपये पकडाकर कहा कि 'अस्पताल का बिल चुका देना और मेरी वाईफ को घर पहुँचा देना।' अस्पताल का का बिल २०० रुपये हुआ था और देवेंद्र ने सिर्फ तीस रुपये दिए थे। इस प्रकार प्रसव पीडा से तथा भूख से बेहाल पत्नी को अस्पताल में छोडकर बडी बेरहमी से देवेंद्र दौरे पर चला जाता है।

11. सरकार से देवेंद्र के कार्य की प्रशंसा :

उच्चविद्याविभूषित देवेंद्र डॉ. आंबेडकर जी के विचारों से प्रभावी होकर उनके दलित आंदोलन से जुडा था। सामाजिक कार्य में रुचि के कारण अनेक संगठनों में काम करता था। सरकारी कार्यक्रमों में निमंत्रित किया जाता था। किसानों के आंदोलन में भी वह सक्रिय रहा है। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उसने कार्य किया है। इन कार्यों के लिए 'देवेंद्र को स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र मिला और पेंशन भी मिलती है। सरकार ने उसके कार्य की प्रशंसा की थी।'

3.3.2 'दोहरा अभिशाप' : गौण पात्र :

- **भागेरथी :**

भागेरथी प्रस्तुत उपन्यास की महत्त्वपूर्ण गौण स्त्री-चरित्र है। अपने इरादों में अचल हिमालय को भी हिलाने की ताकत रखनेवाली भागेरथी के संघर्षशील, प्रेरणादायी जीवन का प्रभाव संपूर्ण कथानक पर दिखाई देता है। भागेरथी उपन्यास की लेखिका कौसल्या जी की माँ है। अनपढ होते हुए भी भागेरथी एक प्रगत विचारोंवाली परिश्रमी नारी के रूप में सामने आती है। उसपर डॉ. आंबेडकर जी के 'पढो-लिखो शिक्षित बनो और आगे बढो।' का बहुत बडा प्रभाव पड चुका था। यही कारण है कि अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए अपनी लडकियाँ तथा लडके को बिना किसी भेदभाव के पढाने निश्चय उसने किया और वह उसमें सफल भी हो गयी। इस बारे में लेखिका लिखती है, 'अब माँ ने हमारी शादी की चिंता

छोड दी और पक्का इरादा कर लिया था कि चाहे कितनी भी अडचनें क्यों न आएँ हम सब भाई-बहनों को ऊँची शिक्षा देंगी। वह बहुत दिलेर महिला थी।' इसलिए बढती उम्र की बेटियों के शादी के प्रति अधिक चिंता जताने के बजाय उसने बेटे-बेटियों को पूरी आजादी दे रखी थी। बच्चों की पढाई के लिए पढाई के लिए वह बहुत कष्ट उठाती है। मिल की मजबूरी के साथ-साथ छुट्टी के दिन चुडियाँ, कुंकुम, शिकेकाई बेचकर पैसे कमाती है। वह पढने-लिखने का महत्त्व जानती थी इसलिए अपने जेवर साहुकार के पास गिरवी रखकर वह बच्चों की किताबें खरीदती है। अपने बच्चों की देखभाल वह बडी लगन से करती है। वह अपने पति का साथ भी बडी समझदारी और कुशलता से निभाती है।

भागेरथी तेजबुद्धी की थी। उसने अपने घर में प्रौढशिक्षा की कक्षा लगाकर बस्ती के लोगों को पढने-लिखने के लिए प्रेरित किया। स्वयं उसने 'अ' से लेकर 'ह' तक अक्षर पढना और लिखना सिखा था। भागेरथी ने किसी से सुना था कि डायरी लिखना अच्छा होता है तब वह डायरी लिखने के लिए अपनी बेटी के पिछे पडती है। भागेरथी हर काम व्यवस्थित ढंग से करती थी। लेखिका के शब्दों में, 'माँ अगर पढी लिखी होती, और पढने का मौका मिलता तो अज जरूर इंजिनियर होती। माँ ने मिट्टी के घर को ऐसा बनाया था कि वह पक्का ईंट का लगता था।'

भागेरथी हमेशा बडी हिम्मत और निडरता से रहती थी यही कारण है की बस्ती के गुंडे, आवारा किस्म के लडके उसे डरते थे। शोषण का विरोध करनेवाली साहसी महिला के रूप में वह दिखाई देती है। उसका पति जिस बेकरी में काम करता थाउस बेकरीवाली ने अठाराह वर्ष में एक पैसा भी पगार में नहीं बढाया था तब भागेरथी ने खुद बेकरीवाली के पास जाकर पैसा बढाने के लिए कहा परंतु वह नहीं मानी । तब भागेरथी ने उसी के सामने अपने पति का हाथ पक़डकर बेकरी के बाहर खींचा और बेकरीवाली से कहा, ''तुम मेरे पति से इतना काम करवाती हो और उनकी कद्र भी नहीं करती। कई वर्षों से एक पैसा भी नहीं बढाया। अब मैं यहाँ नौकरी नहीं करने दूँगी । चाहे हम भूखे ही रहें, परंतु यहाँ काम करने नहीं दूँगी। इस प्रकार वह पति पर होनेवाले अन्याय का विरोध करती है। भागेरथी बडे आत्मसम्मान और रोब से रहती थी । उसके घर के आसपास सवर्ण लोग रहते थे परंतु उसमें कभी 'वे उच्च है और हम हीन है।' ऐसी भावना नहीं आयी। सवर्ण भी उसका सम्मान करते थे क्योंकि वे जान गए थे कि भागेरथी ने अपने बच्चों को पढाया है।

भागेरथी व्यवहारकुशल नारी थी इसलिए घर का सारा कारोबार खुद देखती थी। अच्छे लोगों से मिलना, उनकी अच्छी बातें सुनना उसे अच्छा लगता था। डॉ. आंबेडकर जी का भाषण जहाँपर भी हो वहाँ जाकर भागेरथी उनका भाषण सुनती थी। रेडियो की खबरे सुनती थी। उसे संगीत से भी प्रेम था इसलिए भिसी के पैसे जमा करके उसने एक ग्रामोफोन खरीदा था। उसकी आवाज सुरीली थी। वह भजन गाया करती थी।

सामाजिक कार्य में अभिरूची होने के कारण भागेरथी अपनी आर्थिक हालत सुधारने पर अनाथ बच्चों को पैसे, आटा-चावल देती थी। उसने अपने पैसों से बौद्ध विहार में एक कुँ आ भी खुदवा दिया

था ताकि लोगों को पानी पीने की सुविधा हो। इसके अलावा कॉलेज की पढाई के लिए गाँव से नागपुर आए अस्पृश्य विद्यार्थियों को अपने घर में कम किराए पर कमरा देती थी। वह स्पष्टवादी थी। उसके घर पर रहनेवाले एक लडके को अच्छी नोकरी लगने पर घमंडसा हो गया था। खुद काला होकर अच्छे घर की सुंदर गोरी लडकी चाहता था। तब भागेरथी ने उसे स्पष्ट कहा कि, 'तुम एकदम काले हो तो लडकी भी तो चाहेगी कि लडका अमीर गोरा, सुंदर हो। देखो, ये बातें छोडो और लडकी सुशील हो तो संसार अच्छा होगा। रूप-रंग पर इतने मत जाओ।' लडके ने उसकी बात मान ली और देखने में ठीक-ठाक एक गरीब घर की लडकी से शादी करके मजे में रहने लगा।

भागेरथी पचपन साल की उम्र में भी खेलकूद में रूचि रखती थी। चलने की एक प्रतियोगिता में उसका तीसरा स्थान आया था, तब अखबारवालों नें उसके बारे में लिखा था कि, 'भागेरथी बाई का तीसरा स्थान रहा। वह ग्यारह बच्चों की माँ है (सब जीवित नहीं हैं।) और उनकी उम्र पचपन वर्ष है। इसलिए भागेरथी बाई की प्रशंसा करनी चाहिए।' भागेरथी मिलनसार स्वभाव की थी। कोई बीमार हो उसे जरूर देखने जाती उसे तस्सली देती थी। किसी की शादी तो किसी के जन्मदिन, हल्दी, कुंकुम आदि समारोह में आसपास के घरों में जाती थी। उसका संपर्क काफी लोगों से था। इसलिए उसे मिलने रोज कोई-न-कोई आता ता। भागेरथी शुरू में धार्मिक प्रवृत्ति की दिखाई देती है, परंतु जब उसे समझ आने लगी कि भगवान वगैरह सब बाते मनगढंत हैं तब उन्होंने पूजा-पाठ छोड दिया। इसप्रकार प्रगत विचारों की भागेरथी का संपूर्ण जीवन संघर्षमय । फिर भी प्रेरणादायी चरित्र रहा है। अचल हिमालय की तरह मजबूत इरादोंवाली भागेरथी ने अशिक्षित, रूढिवादी समाज की जटिल समस्याओं पर मात करके अपने जीवन को सार्थक बनाया। बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए अनेक कष्ट उठाए और उनके जीवन में ज्ञान तथा आशा के फूल खिलाने में वह सफल रही है। अतः कुल मिलाकर भागेरथी के चरित्र के माध्यम से पारिवारिक प्रेम विशेषकर अपने बच्चों के लिए माँ के संघर्ष का एक खुबसुरत चित्र उभरकर आया है।

- **(नानी) आजी :**

कौसल्या बैसंत्री की आजी का कोई नाम नहीं है। किंतु अशिक्षित, रूढिवादी अस्पृश्य समाज के रीतिरिवाजों में पिसता हुआ प्रतिनिधि चरित्र दिखाई देता है। अन्य दलित औरतों की तरह आजी का जीवन भी संघर्षपूर्ण रहा है। आजी छः भाईयों की सबसे छोटी इकलौती बहन थी। एकदम गोरा रंग, भूरी आँखे, काले घने बाल और नैन-नक्श तीखे होने से वह बहुत सुंदर दिखती थी। परंतु आगे चलकर यही खुबसुरती उसके लिए अभिशाप बन गई। आजी छोटी थी तभी उसके माँ-बाप गुजर गए थे। बडे भाई और भाभी ने अपने बच्चों के साथ आजी को भी बडे प्रेम से पाला था। छः सात वर्ष की आजी अपने भाईयों के बच्चों के साथ खेलती थी और साथ ही घर के छोटे मोटे काम भी करती थी।

तत्कालीन समाज में बालविवाह का प्रचलन था इसीकारण आजी का भी विवाह छोटी उम्र में बारह वर्ष के लडके के साथ कर दिया था। वह छोटी होने से मायके में रहती थी। गौना होने के बाद ही वह हमेशा के लिए ससुराल जानेवाली थी परंतु उसके पहले ही जहरीले साँप ने डसने से उसके पति

की मृत्यु हो गई, आजी बालविधवा हो गयी। वह सुशील एवं सादगी भरे स्वभाव की थी परंतु जैसे जैसे वह जवान होने लगी वैसे भाईयों को उसकी चिंता होने लगी। उन्होंने आजी का दूसरा विवाह एक अधेड उम्र के व्यक्ति मोडकू साहूकार से कर दी जिसके पहले एक पत्नी तथा उसके बच्चे भी थे। मोडकू की पहली पत्नी आजी पर रोब झाडने की कोशिश करती थी। आजी मेहनती थी। सारा दिन काम में जुटी रहती 'आजी घर में चक्की पर आटा पिसती, झाडू लगाती, कुएँ से पानी भरती, धान कुटती,घर लीपती थी। किसी के पास बैठकर ज्यादा बाते करने की उनकी आदत नहीं थी।' आजी को एक लडका और दो लडकिया हुई थी। गुस्सैल स्वभाव का आजी का पति आजी को डाँटता, और हाथ उठाता था फिर भी आजी चुपचाप रहकर सब कुछ सहती थी। सहनशील आजी ऐसे जीवन से तंग आ गई थी फिर भी कुछ नहीं कहती। वह खुद की पिटाई सह लेती है लेकिन बच्चों की पिटाई सहन नहीं करती। एक दिन पतिद्वारा बेटे को मारने की कोशिश में आजी अपने बच्चों को साथ लेकर घर छोडती है।

आजी दृढनिश्चयी थी। बिना किसी सहारे के वह नागपुर चली आती है। रास्ते में उसकी एक बच्ची सरस्वती की मौत होती है फिर भी आजी टूटती नहीं, झुकती नहीं। नागपुर में वह मेहनत मजदूरी करके दोनों बच्चों का पालन पोषण अकेली करती है। भतीजे से थोडे से पैसे कर्ज के तौर पर लेकर खाली जमीन पर मिट्टी और घास-फूस से गुजारे लायक एक छोटी सी झोपडी बनाती है। आजी बहुत स्वाभिमानी महिला थी। उसने थोडे ही दिनों में भतीजे से लिए हुए पैसे पुरे चुका दिए। और 'अपने मायके वालों को भी कहा भेजा की वह अपनी लडाई खुद लडेगी और वे उनके लिए परेशान न हो।'

आजी अपने पावों पर खडी रहकर अपने बच्चों को बडे आत्मविश्वास के साथ पालती है। उसने कभी हाथ किसी के घर के सामने नहीं फैलाए। परंतु उसके जीवन में दुःख ही दुःख भरा था। दुर्भाग्यवश उसके अठराह वर्ष के बेटे श्रावण की मौत टाइफाइड से मृत्यु होती है। दोनों बच्चों की मृत्यु से आजी टूट जाती है। फिर भी उसे बेटी भागेरथी के लिए जीना पडता है।

आजी नागपुर में रहती है इसका पता जब उसके पति मोडकू को लगता है तब वह बीच-बीच में आकर अपना हक जमाता है तथा आजी को मनाकर वापस ले जाने की कोशिश करता है। परंतु आजी अपने निर्णय पर टीकी रहती है। आजी अपनी बेटी भागेरथी के विवाह का निर्णय बडी समझदारी से लेती है। शरीफ एवं शांत परिश्रमी लडके से भागेरथी का विवाह होता है। इसप्रकार आजी बडी सहिष्णु थी। कौसल्या बचपन में बीमार रहती थी तब उसकी लंबी आयु के लिए आजी ने पूजापाठ किया और पंढरपूर के विठोबा के चरणों में मन्नत मांगी थी। इसे पूरा करने के लिए पंढरपूर की यात्रा पर आजी चली जाती है परंतु वापसी में उसे कॉलरे की बिमारी होती है। नागपुर के बस अड्डे पर आते ही आजी की सडक पर मृत्यु हो गई। आजी बहुत स्वाभिमानी थी। हमेशा कहा करती थी कि, 'वह अपनी लडाई खुद लडेगी, किसी पर बोझ नहीं बनेगी। अपने कफन का सामान भी वह स्वयं जुटाएगी और उन्होंने अपनी बात पूरी करके दिखाई।' उनकी गठरी में कफन का सारा सामान मौजुद था। लेखिका के शब्दों में, 'यह मानिनी स्वाभिमान से रहीं किसी के आगे नहीं झुकी। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में आजी का चरित्र आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वास से भरा दिखाई देता है।'

- **मोडकू साहूकार :**

मोडकू साहूकार लेखिका कौसल्या के आजोबा (नानाजी) है। वे भंडारा जिले के मांडवी गाँव में रहते थे। शादीशुदा मोडकू ने कौसल्या की आजी से दूसरा विवाह किया था। उनकी पहली पत्नी जीवित थी और उनके एक लडका और लडकी थी। आस-पास के गाँव के दलित समाजों में उनकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। उनके पास दस एकड जमीन थी। महुआ की शराब बनाकर बेचते थे और बीडियों का व्यापार भी करते थे। इसी कारण लोग उनको मोडकू साहूकार कहते थे।

मोडकू जी का वर्ण काला था परंतु उनका चेहरा रोबदार था। वे बडी-बडा मूँछे रखते थे। उनका रहन-सहन भी बडा ढंगदार था। 'अपनी बैलगाडी पर कारोबार के सिलसिले में जाते वक्त सिर पर लाल रंग की पगडी, काले रंग का कोट और सफेद धोती पहनकर रोब से बातें करते लोगों के साथ।' उनकी दूसरी पत्नी को एक लडका श्रावण तथा दो लडकियाँ सरस्वती और भागेरथी पैदा हुई थी। सनकी और गुस्सैल स्वभाव के मोडकू दारू पीते थे। वे बडे झगडालू व्यक्ति थे। मोडकू जी की दूसरी पत्नी शांत और दिखने में सुंदर थी। उसपर अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए बिना वजह उसे डाँटते रहते और अपना रोब झाडते थे। पत्नी के सौंदर्य के आगे अपने को हीन समझते थे इसलिए रोज रोज दारू पीते और अपना गुस्सा उसपर उतारते थे। इन अत्याचारों से तंग आकर पत्नी ने उनका घर छोडा। फिर फिर भी मोडकू जी सोचते रहे की पत्नी अपने भाईयों के घर गई होंगी थोडे दिनों में वापस आ जाएंगी। अपनी पत्नी का शोषण करने वाले मोडकू जी अपनी गलती छिपाने के लिए कहते फिरते थे कि ऐसी कितनी औरते वे अपने घर रख सकते हैं। स्त्री को हीन माननेवाली पुरुषी मानसिकता का दर्शन उनके व्यक्तित्व में होता है।

मोडकू जी को पता चलता है की आजी (दूसरी पत्नी) नागपुर में रह रही है तब वे अपना हक जताने के लिए नागपुर चले जाते हैं। बेटी भागेरथी को प्यार करने लगते हैं। बेटी को साडी, खाने की चीजें लाकर देते हैं। भागेरथी के लिए एक रिश्ता भी तय कर लेते हैं, जिसे बाद में अपने गुस्सैल स्वभाव के कारण तोड भी देते हैं। 'उनके क्रोधी, सनकी और विचित्र स्वभाव से सब परेशान थे। सबको उनके इशारे पर ही नाचना चाहिए ऐसी वे अपेक्षा करते थे।' यही कारण है कि भागेरथी के पति (जमाई) की और उनकी कभी बनी नही। वे अपने आपको सर्वश्रेष्ठ पुरुष समझते थे और अपना प्रभाव डालने के लिए कुछ-न-कुछ नुक्स निकालते थे।

वृद्धावस्था में मोडकू जी की हालत बहुत बुरी हो गई। बहू उनकी देखभाल ठीक से नहीं करती थी। इसी कारण वे नागपुर में बार बार आकर बेटी के पास रहते थे। अंतिम दिनों में उनका खुद के शरीर पर नियंत्रण नहीं रहा, फिर भी सब को गालियाँ देते रहते थे। एक दिन भुखे-प्यासे, टट्टी-पेशाब में खाट पर उनकी मृत्यु हुई। किसी को पता ही नहीं चला। इस प्रकार सनकी और विचित्र स्वभाव के कारण मोडकू का अंत बडी दुःखद परिस्थिति में हुआ। अंत तक किसी को भी उनके प्रति सहानुभूति नहीं थी सिर्फ घृणा थी।

- **साखराबाई :**

साखराबाई मानवतावादी चरित्र है। वह कौसल्या की जाति की ही थी परंतु उनकी उपजाति अलग थी। वह बावने उपजाति की थी। पारडी गाँव में उनकी दस एकड जमीन थी। साखराबाई के पति कोतवाल थे। सरकारी तनखा मिलती थी इसलिए उन्होंने कुछ पैसा जमा किए थे। बाद में उनकी मृत्यु हो गई और साखराबाई अकेली हो गई थी। पारडी गाँव में साखराबाई के पडोस में लेखिका के बाबा रामा रहते थे। छोटे रामा पर उसके चाचा-चाची बहुत अत्याचार करते थे। साखराबाई बडी दयालु महिला थी। रामा का शोषण देखकर दुःखी होती थी। रामा को चोरी छीपे खाना खिला दिया करती थी। एक दिन उसने चाचा से कहकर रामा को अपने पास रख लिया। रामा साखराबाई के घर के छोटे मोटे काम बडी लगन के साथ करते थे। साखराबाई अपने बेटे की तरह उसे प्यार करने लगी। लेखिका के शब्दों में, 'साखराबाई को अब बाबा से बहुत स्नेह हो गया था।.... बाबा अगर दो मिनट भी न दिखाई दे तो साखराबाई बहुत चिंतीत हो जाती थी और गाँव भर में उन्हें ढूँढने निकरती थी। सबको पूछती थी कि रामा को कहीं देखा है क्या। साखराबाई के पास कुछ सोने और चांदी के जेवर और असली चाँदी के पैसे थे।' रामा को मालूम था फिर भी उसने इनको कभी छुआ नहीं। 'बाबा की ईमानदारी से साखराबाई बहुत प्रभावित हुई और उन्होंने बाबा को अपना बेटा मान लिया था।' और बडी जिम्मेदारी तथा प्रेम से रामा को पाला पोसा और बडा किया था। अतः प्रस्तुत उपन्यास में साखराबाई के रूप में एक दयालु चरित्र के दर्शन होते हैं।

- **रामा :**

रामा कौसल्या के पिताजी (बाबा) है। वे पारडी गाँव में रहते थे। उनकी माँ भरी जवानी में विधवा हो गई थी। उनके दो बच्चे-एक लडका और एक लडकी थी। इनकी परवरिश के लिए माँ ने दूसरी शादी कर ली थी यही व्यक्ति रामा का पिता था। परंतु रामा तीन साल के थे तब माँ और बाबा चल बसे वे अनाथ हो गए। अब वे चाचा के घर रहने लगे। चाचा-चाची रामा को न प्रेम करते थे न भरपेट खाना देते थे। हमेशा मारते रहते थे। पडोस में रहनेवाली साखराबाई रामा की हालत देखकर दुःखी होती थी। उसने रामा के चाचा से कहकर रामा को गाय तथा बकरियाँ चराने का काम दिया और अपने ही घर रख लिया। साखराबाई रामा को जो भी काम लगाती थी वह काम रामा बडी लगन और ईमानदारी से करता है। इससे प्रभावित होकर साखराबाईने रामा को अपना बेटा मान लिया था। रामा साफ रंग के थे। नाक-नक्श से अच्छे और लंबे थे। वे जवानी में बहुत सुंदर दिखते थे। वे स्वभाव से शांत और शरीफ थे।

पारडी गाँव में अकाल पडने से साखराबाई रामा को लेकर नागपुर आकर रहने लगती है। नागपुर के सी.पी. क्लब में नौकरी मिली। इसी समय भागेरथी के साथ रामा की शादी होती है। दोनों का गृहस्थ जीवन अच्छा चलता है। क्लब की नौकरी छोडकर रामा एक ईसाई विधवा महिला की बेकरी में अठारह रूपये माहवार की नौकरी करने लगे। वे शांत और सहनशील होने के कारण बेकरीवाली

उनका शोषण करती है। अठराह वर्ष की नौकरी में एक रुपया भी वेतन नहीं बढाती। इसी कारण बेकरी की नौकरी छोडकर रामा कबाडी का धंदा करने लगे। मेहनती रामा अपने परिवार के लिए समर्पित दिखाई देते हैं।

रामा को नागपुर की एम्प्रेस मिल में मशीन में तेल डालने की नौकरी मिलती है। उनकी पत्नी भागेरथी पहले से ही वहाँ मिल मजदूर है। अब दोनों साथ-साथ मिल में जाते थे साथ-साथ घर आते थे। अपने लडके लडकियों के भरण-पोषण तथा उनको अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए पत्नी के साथ अनेक कष्ट उठाता है। बढती मँहंगाई के चलते रामा को मशीन साफ करने के लिए जो कपडे मिलते उनसे बच्चों को पेटीकोट तथा अन्य कपडे सीकर डालते थे। घर के काम में पत्नी का हाथ बटाते थे। जंगल से लकडी लाकर उन्हें काटते और बरसात के मौसम के लिए प्रबंध करते थे। परिश्रम करके अपनी गृहस्थी चलाने का दायित्व उन्होंने बखुबी निभाया है। पत्नी की तरह रामा प्रगत विचारों के परिवर्तनशील व्यक्ति थे। वे प्रौढकक्षा में जाते थे। डॉ. आंबेडकर जी के भाषण का प्रभाव उनपर पडा था। उनके बच्चों से रामा ने पढना लिखना तथा दस्तखत करना सिखा था। पत्नी के किसी भी काम में वे दखल नहीं देते थे। वे अपने काम में मस्त रहनेवाले व्यक्ति थे। यही कारण है की मिल की नौकरी से रिटायर्ड होकर वे शांति का जीवन जीते हैं। पत्नी के साथ मेहनत मजदूरी करके अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने में वे सफल रहे हैं। रामा तथा भागेरथी का जीवन संघर्ष भरा जरूर रहा है परंतु पति-पत्नी के आपसी ताल-मेल के कारण दोनों गृहस्थ जीवन सार्थक बन गया था।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'दोहरा अभिशाप' की नायिका.....है।

क) भागेरथी ख) कौसल्या बैसंत्री ग) जनाबाई घ) पार्वती

2) कौसल्या जी को बचपन में बस्ती के बडे-बुजुर्ग.....नाम से पुकारते हैं।

क) उरकुडी ख) कचरी ग) छुटकी घ) बुलबुल

3) कौसल्या जी की माता का नाम .....था।

क) जनाबाई ख) सरस्वती ग) साखराबाई घ) भागेरथी

4) लेखिका के पति का नाम.....था।

क) सखाराम मेश्राम ख) मोडकूजी खोटांगळे

ग) देवेंद्रकुमार बैसंत्री घ) तुलाराम साखरे

5) एक्ट्रेस बनने के लिए लेखिका ने.....को पत्र लिखा था।

क) वैजयंती माला ख) मीना कुमारी ग) देविका रानी घ) मधुबाला

6) लेखिका को हर माह .....रूपये मेटेंनन्स के मिलते हैं।

क) 700 ख) 300ग) 900 घ) 500

7) देवेंद्रकुमार को स्वतंत्रता सेनानी का.....मिला था।

क) पुरस्कार ख) दल्वपत्र ग) सम्मान घ) ताम्रपत्र

8) .....को दिल्ली के काफी महिला संगठनों ने महिला दिवस मनाने का कार्यक्रम बनाया।

क) 25 मार्च ख) 8 एप्रिल ग) 26 जनवरी घ) 8 मार्च

9) बाबा साहब ने.....धर्म की दीक्षा ली थी।

क) जैन ख) बौद्ध ग) हिंदू घ) ईसाई

10) चलने की प्रतियोगिता में भागेरथी का .....स्थान आया था।

क) दूसरा ख) चौधा ग) तीसरा घ) पहला

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

दिहाडी – रोजंदारी पर काम करना, मजदूरी

चावल बीनना – चावल साफ करना

पाट – दूसरा विवाह, पुनर्विवाह

कबाडी – पुरानी वस्तु, चीजें, रद्दी वगैरह बिकनेवाला

घाटा चा आंबूकरा – गरमी के मौसम में बचे हुए बासी खाने में इमली और पानी डालकर पकाना।

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) कौसल्या बैसंत्री

2) कचरी

3) भागेरथी

4) देवेंद्रकुमार बैसंत्री

5) देविका रानी

6) 500

7) ताम्रपत्र

8) 8 मार्च

9) बौद्ध

7) तीसरा

3.7 सारांश :

1) 'दोहरा अभिशाप' की लेखिका कौसल्या बैसंत्री ने व्यक्तिगत अनुभवों को चित्रण सुक्ष्म एवं गहराई से किया है।

2) प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित चरित्रों के माध्यम से दलित समाज का दैन्य, दारिद्र्य, अज्ञान, अंधविश्वास, अवहेलना, शोषण आदि का जीवंत चित्र उभरकर आया है।

3) दलित स्त्री सिर्फ दोहरे ही नहीं न जाने कितने स्तरों पर शोषित एवं उत्पीडित दिखाई देती है।

4) लेखिका कौसल्या जी ने दलित समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अंधविश्वासों का विरोध किया है।

5) नायिका कौसल्या बैसंत्री का चरित्र समस्त महिला वर्ग को ज्ञान प्राप्ति से ही प्रगति और के लिए प्रेरित करता है। पुरुष सत्ता के प्रति विद्रोह और नारी अस्मिता की स्थापना का संदेश देता है।

6) भागेरथी एवं रामा ने घोर गरीबी, अंधविश्वास तथा जातिय प्रताडनाओं से लडते झगडते अपने लडके लडकियों को शिक्षित करके सम्मान से जीने का मार्ग दिखाया। यहाँ बच्चों के प्रति माता-पिता का समर्पित रूप दिखाई देता है। उन दोनों के चरित्र में अपने परिवार के प्रति लगन और निष्ठा के दर्शन होते हैं।

7) आजी की जीवनगाथा बालविवाह, अनमेल विवाह अंधविश्वास आदि कुप्रथाओं के दुष्परिणाम उजाकर करती है। वह एक मानीनी-स्वाभिमानी स्त्री थी।

8) देवेंद्रकुमार तथा मोडकू साहुकार दोनों के चरित्र पुरुष वर्चस्व एवं अहंकार को दर्शाते हैं। दोनों असंवेदनशील तथा असहिष्णु थे।

9) देवेंद्रकुमार बैसंत्री को एक आंबेडकरवादी सामाजिक कार्यकर्ता एवं स्वतंत्र सेनानी के रूप में सम्मानित किया जाता है, परंतु यही व्यक्ति अपने घर में पत्नी का शोषण करनेवाला क्रूर अत्याचारी है। उसके माध्यम से लेखिका ने पुरुष वर्ग की दोहरी मानसिकता की पोल खोल दी है।

10) लेखिका कौसल्या जी का संघर्षमय जीवन दलित स्त्री का अनूठा दर्पण है।

3.8 स्वाध्याय :

दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) कौसल्या बैसंत्री का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) देवेंद्र कुमार बैसंत्री की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

3) 'दलित स्त्री - दोहरा अभिशाप' कौसल्या जी के चरित्र के माध्यम से इसे स्पष्ट कीजिए।

लघुत्तरी प्रश्न

1) भागेरथी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) कौसल्या जी की आजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3) मोडकू साहूकार का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4) रामा (बाबा) का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5) साखराबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) कौसल्या जी के कार्य की प्रेरणा से अपने आस-पास की अनपढ महिलाओं को पढाने का काम कीजिए।

2) कौसल्या जी के संघर्ष के आधार पर मराठी में निबंध लिखने का प्रयास कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) कस्तूरी कुंडल बसै - मैत्रेयी पुष्पा

2) शिंकजे का दर्द - सुशीला टाकभौरे

3) कुछ कही कुछ अनकही - शीला झुनझुनवाला

●●●

सत्र 6 – इकाई 4
'दोहरा अभिशाप' : देश काल तथा वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य।

4.2 प्रस्तावना।

4.3 विषय – विवेचन।

4.3.1 दोहरा अभिशाप : देश काल तथा वातावरण।

4.3.2 दोहरा अभिशाप : भाषा–शैली।

4.3.3 दोहरा अभिशाप : उद्देश्य।

4.3.4 दोहरा अभिशाप : समस्याएँ।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

4.7 सारांश।

4.8 स्वाध्याय।

4.9 क्षेत्रीय कार्य।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. उपन्यास में चित्रित परिवेश से परिचित होंगे।
2. कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा के उद्देश्य से परिचित होंगे।
3. कौसल्या बैसंत्री की भाषा–शैली से अवगत होंगे।

4. दलित नारी का संघर्ष और उसकी कठिनाईयों से अवगत होंगे।

5. दलित वर्ग की समस्याओं से परिचित होंगे।

6. कौसल्या बैसंत्री के अंग्रेजी भाषा एवं क्षेत्रीय भाषा के शब्दों से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना :

''दोहरा अभिशाप'' में लेखिका कौसल्या बैसंत्री ने जीवनानुभव को प्रस्तुत करते हुए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश के अनेक बिंदुओं को विवेचित किया है। निजी धरातल पर व्यक्त हुए अनुभव स्त्री जाति की समग्र पीडा को जाति समुदाय के परिप्रेक्ष्य में उद्‌घाटित किया है।

दलित आत्मवृत्त में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप देखने पर दलित साहित्य में व्यक्त किया जानेवाला आक्रोश इन आत्मवृत्त की भाषा में सक्षम रूप में व्यक्त हुआ है। परिवेश एवं पात्रानुकूल, आशयानुकूल भाषा का सटीक प्रयोग हुआ है। आत्मवृत्त का शिल्प सुगठित संगठित है। शैली के विभिन्न प्रयोग से इसमे रोचकता आ गई है। उसी प्रकार सहज स्वाभाविक रूप में विदेशी शब्द, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, उर्दू शब्द, देशज शब्द, मुहावरे-कहावते के प्रयोग से भाषा में कसावट आ गई है। फलस्वरूप भाषा समृद्ध दिखाई देती है। तीखे तेवरवाली भाषा ही आक्रोश को व्यक्त करती है यह दलित साहित्य की विशेषता है। दलित आत्मवृत्त मे यह तीव्रता से उभरकर आयी है। जो स्वाभाविक रूप में है न कि कलात्मक रूप में। इस दृष्टि से आशय की भिन्नता के कारण भाषा में खुरदरापन आ ही जाता है। आत्मकथा में कहीं-कहीं पर अशीष्ट, अश्लील शब्द का प्रयोग हुआ है परंतु वे समाज व्यवस्था के दिये गये जख्म है।

4.3 विषय-विवेचन :

कौसल्या बैसंत्री की मातृभाषा मराठी है। महाराष्ट्र के नागपुर शहर में उनका बचपन बीता। यहाँ की भाषा ही नहीं महाराष्ट्र के समाज जीवन से वह भलि-भाँति परिचित है। पति हिंदी प्रदेश से होने के कारण हिंदी भाषा उनके घर-परिवार में दैनंदिन व्यवहार में अधिक प्रयोग में रही। लेखिका द्वारा अंग्रेजी तथा मराठी भाषा के शब्द प्रयुक्त हुए है।

''दोहरा अभिशाप'' में वर्णनात्मक शैली को ही अधिक अपनाया है। इसके साथ-ही साथ व्यंग्यात्मक शैली तथा अहंवादी शैली को अपनाया है।

''दोहरा अभिशाप'' में विविध समस्याओंका चित्रण किया है। उसमें कम उम्र की जिम्मेदारी, सकस आहार का अभाव, जीविका के लिए संघर्ष, गरीबी एवं विवशता तथा हीनत्व बोध की समस्या का चित्रण किया है।

'दोहरा अभिशाप' में लेखिका ने अपना उद्देश्य स्पष्ट करते हुए विविध प्रश्नों को रेखांकित किया है। जैसे मानवीय दृष्टि से उपेक्षितों को न्याय देना, सवर्ण वर्ग की मानसिकता में परिवर्तन लाना, तथा विषमतावादी दृष्टि को नष्ट करने की सोच बनाना आदि उद्देश्य को स्पष्ट किया है।

4.3.1 देश काल तथा वातावरण :

'दोहरा अभिशाप' यह कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा दलित नारी की हिंदी में लिखी गयी पहली आत्मकथा है। इस आत्मकथा को यह खास विशेषता है। लेखिका मूलत: महाराष्ट्रीयन है। वह नागपुर जैसे शहर में पली और बढी हुई। यहीं पर शिक्षा ग्रहण की। उनकी मातृभाषा मराठी रही है। जिस भूमि को संतों की जन्मभूमि कहा जाता है, जिसे शाहू, फूले, आंबेडकर के विचारों से सिंचित भूमि माना जाता है। ऐसे वातावरण के संस्कार उन्हें मिले। फलत: उनका व्यक्तित्त्व अपने समय की विचारधारा के विपरीत परिवर्तनवादी है। अपनी जाति में ही नहीं अपने प्रदेश से हटकर आंतरप्रदेशीय भिन्न भाषी, भिन्न जाति के पुरुष से वह विवाह करती है। विवाह को माता-पिता से अक्सर होनेवाला विरोध यहाँ नहीं दिखता। तात्पर्य लेखिका के विचारों से सहमत परिवार या नये विचारों को ग्रहण करनेवाले लोग यहाँ दिखते हैं।

लेखिका की माँ पर अपनी आजी के संस्कार होने के कारण लेखिका को उसकी माँ उसे स्कूल भेजती है। तत्कालीन समय में लडकियों को स्कूल नहीं भेजा जाता था। दलित वर्ग की लडकियों को तो बिल्कूल स्कूल नहीं भेजा जाता था। इसीकारण शिक्षा प्राप्त करते समय लेखिका को अत्यंत संघर्ष करना पडता है। लेखिका जिस बस्ती में रहती थी, वहाँ का माहौल गंदगी से भरा हुआ था। पुरी बस्ती में तीन पाखाने थे। बच्चे सडकपर नंगे घुमते थे, सडकपर ही गंदगी करते थे। पुरी बस्ती के वातावरण में बदबु फैल जाती थी। बरसात के दिनों में तो बस्ती में पैर रखने के लिए जगह नहीं मिलती। ऐसे माहौल में लेखिका अपना जीवन बीताती है।

लेखिका की माँ मिल की छुट्टी के दिन सवर्ण बस्ती में चुडियाँ, कुंकुम, शिकाकाई बेचने जाती थी। जान-पहचान के कारण वहाँ के गांधीवादी ब्राम्हण नेता ने लेखिका की माँ से आग्रह किया था कि वह बस्ती के अन्य महिलाओं के साथ संक्राति के अवसर पर हल्दी-कुंकुम लेने आये। उनके आग्रह के खातिर जब दलित बस्ती की महिलाएँ लेखिका की माँ के साथ हल्दी-कुंकुम लेने पहुँचती है तो वहाँ की सवर्ण महिलाएँ हल्दी-कुंकुम देने के लिए तैयार नहीं थी। गांधीवादी कार्यकर्ता बार-बार आग्रह कर बुलाने पर कुछ औरतों ने पुराने और साधारण कपडों में आकर अनमने भाव से हल्दी-कुंकुम दिया। हल्दी-कुंकुम देने के बाद औरते अपने घरों में जाकर नहाई। इससे पता चलता है कि तत्कालीन परिस्थिति छुआछूत के बारे में कितनी भयावह थी। यह आत्मकथा एक स्त्री की आत्मकथा के बहाने उन सभी स्त्री जाति के तकलीफदेह जीवन को उसके द्वारा किए गए संघर्ष को अपने बच्चों के प्रति उत्तरदायित्त्व एवं प्रेम को परिभाषित करती है और परिश्रम का महत्त्व प्रतिपादित करती हुई प्रेरणां ग्रहण करने का संदेश देती है।

4.3.2 दोहरा अभिशाप : भाषा-शैली :

'दोहरा अभिशाप' यह कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा है। लेखिका की मातृभाषा मराठी है।

महाराष्ट्र के नागपुर शहर में उनका जन्म, बचपन, शिक्षा, विवाह हुआ। यहाँ की भाषा ही नहीं महाराष्ट्र के समाज जीवन से वह भलि-भाँति परिचित है। अतः यहाँ के संस्कार उनके पोर-पोर में बसे हुए हैं। लेखिका विवाह के बाद पति के साथ दिल्ली, भोपाल, बिहार आदि हिंदी प्रदेश में ही अधिक रही। पति हिंदी प्रदेश के होने के कारण हिंदी भाषा उनके घर परिवार में दैनंदिन व्यवहार में अधिक प्रयोग में रही। नागपुर जिला मध्यप्रदेश की सीमा से संलग्न है। यहाँ हिंदी प्रदेश के लोग अधिक संख्या में पाये जाते हैं। अतः नागपुर के मराठी भाषा पर हिंदी का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ के लोग दैनंदिन जीवन में हिंदी का ही अधिक प्रयोग करते दिखाई देते हैं। यही कारण रहा होगा कि कौसल्या बैसंत्री ने अपनी आत्मकथा हिंदी में लिखना उचित समझा।

'दोहरा अभिशाप' में लेखिका द्वारा अंग्रेजी तथा मराठी भाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। जिस परिवेश में लेखिका का जीवन बीता उस भाषा संस्कार का प्रभाव स्वाभाविक रूप से उनके लेखन पर पडा है। अतः 'दोहरा अभिशाप' में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द इस प्रकार है -

अंग्रेजी शब्द :

क्लब, सर्वंट, क्वार्टर, सिविलगर्ल्स, गाईड ग्रुप, गवर्नर, वाइसराय, चेअर, हॉस्टेल, ट्रे, प्रायमरी, टिफिन, बॉक्स, अल्युमीनियम, मार्केट, इंजीनियर, मैनेजर, स्कूल, स्कालरशीप, हाईस्कूल, प्रोव्हीजन्सस, हेड मिस्ट्रेस, कलर बॉक्स, ब्रुस, फीस, पार्क, चिटफंड, मैट्रिक, एम.ए. पार्लियामेंट, अंबेसडर, कमिशनर, फाइन, मीटिंग, प्रिंट, बैंडेज, क्लाथ, ब्लाऊज, गेट , स्टेशन, ट्रक, टेंपो, इंटरमीडिएट, डॉक्टर्स, वार्ड, नर्स, डिबेट, रिकार्ड, और हिज मास्टर्स व्हाइस, ग्रामोफोन, फोटोग्राफर, पोज, केस, फोटो, कोर्ट, पॉश, कालोनी, ऑपरेशन, आइसक्रीम, मैटनी, टॉकीज, साइज, स्टेशनरोड, एक्ट्रेस, फिल्म, फोटोजेनिक, टीनरोड, हॉल, रोड, मैडल, रेडियो, पार्क, एंग्लोइंडियन, डिप्टि कलेक्टर, सब इन्स्पेक्टर, स्टेटस कॉलेज मेयर, इलेक्शन, मेज, पॉश, सप्लाई, टैक्स, लायब्रेरी, टेबल, ड्राइंगरूम, सीनियर, बेडशीट, मशीन, मिसेज, क्लर्क, फेडरेशन, जॉईंट सेक्रेटरी, इंटरमीडिएट, क्लास, फाइनल, हैलो, नोट्स, वर्क्स, कम्युनिस्ट पार्टी, ब्रेनवॉश, पैम्फलेट, शेड्यूलास्ट, स्टुडंट फेडरेशन, डिप्टीमिनीस्टर, मेंबर, स्टुडंट युनियन, रेडिकल, डेमोक्रेटिक, इंटरकास्ट, बटालियन, लैप्टिनैंट, कर्नल, रजिस्टार, जज, इंप्रूवमेंट, टाइपिस्ट, लेक्चर, रिसर्च स्कालरशिप, ड्रेन, टाइपिस्टक्लर्क, पोस्टिंग, अ. रिसर्च ऑफिसर, आर्ट पेंटिंग, रिटायर, पेंशन, मैन्टेनेन्स, टॅक्सी, मैजिस्टेटस्, वीमेंस, युनिव्हरसिटी, प्लानिंग, टीचर्स ट्रेनिंग, हेडमिस्ट्रेस, डायरेक्टर, रेडियो स्टेशन, कान्वेंट, एनधिसिया, टेलिफोन ड्रायवर, ऑपरेटर, रिजर्व कैटगिरी, अलाट फ्लैट, ग्रेज्युएट, प्रोग्रेसिव्ह वीमेंस, असो. आल इंडिया सेमिनार, वल्डवीमेंस कॉन्फ्रेंस, हाईलाईट मिटिंग, वोटक्लब।

उक्त अंग्रेजी शब्द संख्या देखने पर अनुमान किया जा सकता है कि लेखिका वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा से किस तरह प्रभावित है। इसका एक कारण यह भी है कि उनके रिश्तेदार बहने, भाई, लडके, लडकियाँ बहुएँ सभी उच्च शिक्षित ही नहीं बल्कि उच्च पदों पर नौकरी में कार्यरत भी है, अतः वर्तमान में एक उच्च शिक्षित एवं सधन परिवार में वे गिने जाते हैं। ऐसे परिवार में अंग्रेजी का प्रयोग

अधिक होता है। क्योंकि लेखिका अपने अपने बेटियों के पास रहती है तो उनकी भाषा में अंग्रेजी का अधिक प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है। वृद्धावस्था में लेखिकाने आत्मकथा का लेखन किया है। अतः आत्मकथा में निवेदन शैली की भाषा शुरू से अंत तक एक जैसी है।

मराठी देशज शब्द :

बाबा, देवा, जवस, टेकडी, टुकडी, मुसळ, घाटा, काका, चिमनी, गोदडिया, चिड-चिडी, टांगना, ओवी, पाट, दुखोडा, फेडना, तिरगुनी, जोडवे, अस्पृश्य, डंडार, कढी, पोला, करंजी, देव्हारा, लीपना, चरोटा, चौलाई, पातूर, खापरखुटी, आत्या, आजी, गोठे, पोवाडे, गोंधळ, पुरणपोळी, उदंड, खाट, थापते, गड्डा, आजोबा, गाडीवान, शीशी।

लेखिका मूलतः मराठी भाषिक है। विवाह के बाद भले ही हिंदी भाषा एवं हिंदी प्रदेश से जुडी रही हो परंतु अपने मायके नागपुर में माँ-बाबा से बार-बार वे मिलने आया करती थी। अतः यहा आने पर वे अपनी मातृभाषा से बराबर जुडी रही, यही भाषा प्रभाव उनकी आत्मकथा से प्रयुक्त भाषा पर प्रतित होता है।

कौसल्या बैसंत्री ने एक मात्र 'दोहरा अभिशाप' इस कृति की रचना की है। वे साहित्यिक प्रकृति की महिला नहीं है। अतः आत्मकथा की भाषा सरल-सीधी अभिधात्मक अर्थ लिये हैं। इसमें अलंकारयुक्त भाषा का प्रयोग न के बराबर है। शब्द के लक्षण एवं व्यंजन शब्द शक्ति का प्रयोग बहुत कम हुआ है। जहाँ पर वेदना एवं आक्रोश व्यक्त हुआ वह स्पष्ट रूप से आया है। मुहावरों तथा लोकोक्तियाँ का प्रयोग भी कम ही हुआ है। आत्मकथा में प्रशिष्ट, अश्लील शब्द प्रयोग नहीं मिलता।

अतः अन्य दलित आत्मवृत्त की तरह भाषा प्रयोग नहीं हुआ है।

लोकोक्तियाँ :

'महार मांगो घर गाना, और ब्राह्मणों के घर पढना लिखना।'

'दे दान छुटे गिरान' यहाँ गिरान का अर्थ ग्रहण है। मराठी बोली भाषा में गिरान कहते हैं।

मुहावरे :

1) फूटी आँख से न देख सकना।

2) आग बबूला होना।

शैली :

वर्णनात्मक शैली :

'दोहरा अभिशाप' में वर्णनात्मक शैली को ही अधिक अपनाया गया है। जैसे - 'आजी और माँ-बाबा जिस बस्ती में रहते थे, उस बस्ती का नाम खलाशी लाईन था। यह बस्ती नागपुर (महाराष्ट्र)

स्टेशन के नजदीक थी। रेल गाडी की दिन रात आवाज सुनाई देती थी। गाडियाँ भी नजर आती थी। बस्ती से सटा एक नारा बहता था। नाले के साथ ही एक पक्की सडक बनी थी जो स्टेशन को जाती थी। सडक के एक ओर बस्ती थी और दूसरी ओर बडे-बड़े पक्के मकान में जहाँ बडी जाति के लोग रहते थे। जो अच्छी नौकरी करते थे।

व्यंग्यात्मक शैली :

'दोहरा अभिशाप' में व्यंग्य शैली को अपनाया गया है। महिलाओं की समस्याओं पर कार्य करनेवाली महिला नेता दलितों की समस्याओं पर कार्य करते समय अग्रक्रम नहीं देती इस बात पर व्यंग करते हुए कौसल्या बैसंत्री ने लिखा है-'दलितों की समस्याओं को हमेशा पिछला स्थान दिया जाता है। पता नहीं मृणाल जी और सभाओं में दलितों की समस्या पर बोली या नहीं क्योंकि अखबारों में उन दिनों में मैने इसके बारे में खबर नहीं पढी।

अहंवादी शैली :

'दोहरा अभिशाप' में लेखिका अपने माँ-बाबा की प्रशंसा में लिखती है -'माँ-बाबा के घर के आस-पास सवर्ण लोग रहते थे परंतु माँ यें वे उच्च हैं और हम हीन ऐसी भावना नहीं आयी। वह रोब से रहती थी आस-पास के सवर्ण भी माँ को सम्मान देते थे। वे जान गए थे कि माँ-बाबा ने अपने बच्चों को पढाया है। वे उन लोगों के बराबर हो गए है।'

अहं और अस्मिता में अंतर है अतः दलित आत्मकथा में अस्मितावादी शैली है। -'मैं अपनी जाति को हीन नहीं समझती न उनको अपने से ऊँचा। वैसे मैं जाति पाति नहीं मानती। मेरे एक लडके की पत्नी आयंगार ब्राह्मण है मद्रास की, दूसरे की पत्नी बंगाली कायस्थ और तीसरे की मध्यप्रदेश की। मेरी लडकी का विवाह सीख धर्म के लडके से हुआ है। हमारे सगे रिश्तेदारों की शादियाँ राजस्थानी, नेपाली, गोवानीज, उत्तरप्रदेशीय आदि में हुई है। मेरा अपना विवाह भी बिहार में हुआ है। जाति तो हमने कब की झटक दी है। दलित चेतना के फलस्वरूप परिवर्तनशील आधुनिक विचारों का वहन करनेवाले अपना अपमान सहन नहीं कर सकते यही उक्त कथन से स्पष्ट होता है।'

दलित साहित्य में व्यक्त किया जानेवाला आक्रोश इन आत्मवृत्त की भाषा में समक्ष रूप में व्यक्त हुआ है। परिवेश एवं पात्रानुकूल, आशयानुकूल भाषा प्रयोग सटीक बन पडा है। आत्मवृत्त का शिल्प सुगठित संग्रित है। शैली के विभिन्न प्रयोग से इसमें रोचकता आ गई है। उसी प्रकार सहज एवं स्वाभाविक रूप में विदेशी शब्द अंग्रेजी, अरबी, पारसी, उर्दू शब्द, देशज शब्द, मुहावरे, कहावते के प्रयोग से भाषा में कसावट आ गई है। फलस्वरूप भाषा समृद्ध दिखाई देती है। तीखे तेवर वाली भाषा ही आक्रोश को व्यक्त करती है। अनुभव दग्धता पीडा के कारण भाषा में तीक्ष्णता का स्वर मुखर हुआ है। यह दलित साहित्य की विशेषता है। दलित आत्मवृत्त ये यह अधिक तीव्रता से उभरकर आयी है। जो स्वाभाविक रूप में न कि कलात्मक रूप में। इस दृष्टि से आशय की भिन्नता के कारण भाषा में खुदरापन

आ ही जाता है। आत्मवृत्तों में कहीं-कहीं पर अशिष्ठ अश्लील शब्द का प्रयोग हुआ है। परंतु वे समाज व्यवस्था के दिये गये जख्म हैं। विषमता-धिष्ठित समाज में दलित को गाली ही तो समझा गया था। अतः दलित आत्मवृत्त लेखन अब उसे लौटा रहे हैं। दलित आत्मवृत्त में आत्मनिवेदनात्मक प्रथम पुरुष की शैली अपनाई गई है।

4.3.3 दोहरा अभिशाप : उद्देश्य

कोई भी लेखक कृति की रचना करता है, किसी-न-किसी उद्देश्य से, निरूद्देश्य नहीं। आत्मकथा लेखक का उद्देश्य अन्य लेखकों से पृथक होता है। आत्मकथा साहित्य का उद्देश्य होता है - आत्मनिर्माण, आत्मपरिक्षण या आत्मसमर्थन, अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व के उलझनों में अपने-आपको अन्वेषित करने का साहित्यक प्रयास। प्रस्तुत आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में लेखिका कौसल्या बैसंत्री ने विविध उद्देश्य को स्पष्ट किया है।

'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा का पहला उद्देश्य यह है कि दलित आत्मकथा का अध्ययन करना। दलित आत्मकथा में दलित जीवन की पीडा और दु:ख कैसा होता है, दलित जीवन केवल वेदना को सहन करने के लिए, पीडा को उपभोगने के लिए होता है। दलित होना शाप है और दलित स्त्री होना यह दोहरा अभिशाप है। इसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। तात्पर्य दलित स्त्री की वेदना को स्पष्ट किया है। इसे जानने के लिए दलित आत्मकथा का अध्ययन करना आवश्यक है।

प्रस्तुत आत्मकथा का दूसरा और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि दलित आत्मकथा में व्यक्त विविध प्रश्नों को रेखांकित करना। जैसा कि भूखे रहना, छुआ-छूत, संघर्ष करना, गरीबी, स्त्री जाति के प्रति पुरुषों का देखने का दृष्टिकोण, सुविधाओं का अभाव, अंधविश्वास, शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट करना आदि प्रयत्नों को रेखांकित करना।

इस आत्मकथा का तीसरा उद्देश्य यह है कि मानवीय दृष्टी से उपेक्षितों को न्याय दिलाने हेतु समाज के सामने प्रस्तुत करना। दलितों के साथ सदियों से सवर्ण वर्ग पशु जैसा व्यवहार करता आया है। इसमें परिवर्तन होना चाहिए। दलितों को उनका न्याय और हक मिलना चाहिए, वह किसी भी तरह से उपेक्षित नहीं रहना चाहिए।

प्रस्तुत आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' का चौथा उद्देश्य यह है कि सवर्णों की संकीर्ण मानसिकता में परिवर्तन लाना। मनुष्य कितना भी उच्च शिक्षित हो, लेकिन अपने मन में दलितों के प्रति जो घटिया विचार उसे त्यागता नहीं है। इस प्रकार के संकुचित विचार में परिवर्तन लाना जरुरी है।

इस आत्मकथा का पाँचवा उद्देश्य यह है कि विषमतावादी दृष्टी को मूलत: नष्ट करने की सोच बनाना। आदि उद्देश्य को स्पष्ट किया है।

4.3.4 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित समस्याएँ :

1. **कम उम्र में जिम्मेदारी**

दलितों के घरों में पुरखों से गरीबी है। गरीबी से दो हाथ करने के लिए इनके बच्चों पर भी जिम्मेदारी आ पडती है। 'दोहरा अभिशाप' की लेखिका पर कम उम्र में बडे व्यक्तियों में पायी जानेवाली समझदारी है। वह अपनी घर की गरीबी को भलि-भाँति समझती है। इसलिए स्कूल की पढाई के अलावा माँ-बाबा ने बताये घर के जरूरी काम भी करती रही है। अपनी बीमार छोटी बहन अहिल्या को बहन मधु घर के जरूरी काम भी करती रही है। अपनी बीमार छोटी बहन अहिल्या को बहन मधु की सहायता से अस्पताल में भर्ती करा देती है। और माँ के आने का इंतजार करती है। तेज बुखार और उचित इलाज के अभाव में छोटी बहन अहिल्या की मृत्यु हो जाती है। मधु मृत्यु की खबर माँ को देने घर जाती है। इधर मुर्दा घर में शव को रखा गया था। लेखिका मुर्दा घर के आगे बैठकर अकेली रोती है। इस दर्दनाक प्रसंग की लेखिका साक्षी है। जिन्होंने कम उम्र में भी बडों की-सी समझदारी दिखायी थी। अक्सर हालात ही इन्हें कम उम्र में सबकुछ सिखा देते हैं। इनका बचपन खो जाता है। खेल-कूद करने की आयु में ही जिम्मेदारी को होना सिख लेते हैं। यह विवशता है। यही दलित जीवन की विडंबना है।

2. **सकस आहार का अभाव :**

बस्ती में गरीब दलितों को उत्कृष्ट आहार नहीं मिलता। वे ऊँचे दामों वाला अनाज खरीद नहीं सकते। वे सस्ते मोटे लाल चावल खरीदते हैं। उसी तरह बच्चों के लिए बाजार से पूराने कपडें खरीदते है। खाने में सस्ती सब्जी ही हमेशा बनती है। अच्छा खाना खाने के लिए इनके बच्चें जिंदगीभर तरसते रहते हैं। लेखिका ने अपना अनुभव आत्मकथा में व्यक्त किया है - 'कुमुद नाम की सहेली के मामा के लडके के जनेऊ में कार्यक्रम में शामिल हुई। वहाँ उच्च वर्णियों की चमक-दमक देखी। उँचे दामोवाली साडियाँ पहने स्त्रियाँ, गहनों से लदी थी। अनेक पक्वानों और स्वादिष्ट भोजन आदि देखकर दंग रह गई। अपने घर की बस्ती के लोगों की दशा याद आने लगी। वह अपने घर का खाना और यहाँ के खाने की तुलना करती हुई बडे बेमन से खाना खाती है।

3. **जीविका के लिए संघर्ष :**

लेखिका के माँ-पिता इतनी मेहनत मजदूरी करते हैं कि मिल के काम के अलावा खाली वक्त में बैठकर आराम नहीं करते बल्कि अन्य काम करते हैं-'लेखिका ने लिखा है-माँ भी चूडियाँ, कुंकुम, शिकेकाई वगैरेह बेचने लगी। वह सिर्फ रविवार को ही गड्डी गोदाम अपनी बस्ती और पासवाली पॉश कॉलनी में यह सामान बेचने जाती। माँ-पिता की यह कोशिश इसलिए है कि अपने बच्चों की ठीक ढंग से परवरिश हो।' अतः वे कष्ट के लिए पीछे नहीं हटते। यही हालात बस्ती में रहनेवाले समस्त दलित परिवारों का है। जिन्होंने परिस्थिति से लडना सिखा वे ही इस कीचडभरी जिंदगी से उबर सके हैं।

बस्ती में रहने वाले लोगों के के सामने अनेक समस्याएँ थी। वे आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर

थे। उनके बच्चे नंग-धडंग घूमते थे। उच्च वर्णीय बंगलो के आस-पास पडे आम आदि के छिलके उठाकर खाते थे। बारीश के दिनों में बस्ती में सब तरफ कीचड ही कीचड भर जाता था। बच्चे खुले में पाखाने करते थे। इतनी बडी बस्ती के लिए तीन पाखाने थे। साफ सफाई की कमी के कारण गंदगी से भरा माहौल दिखाई देता था। नल को पानी कम आता था। पानी के लिए झगडे फसाद होते थे। तात्पर्य दलितों को गरीबी से लडना था। साथ ही इन सब असुविधाओं के कारण परेशानी उठानी पडती थी।

दलितों के जीवन को अनेक समस्याओं ने घेर रखा है। जिसका चित्रण 'दोहरा अभिशाप' में हुआ है। लेखिका अपने स्थिति का वर्णऩ करने के बहाने दलित जीवन का समग्र चित्र उपस्थित करती है। जिसकी भयावहता संवेदनशील मन को बेचैन किये बिना नहीं रह सकती।

4. **गरीबी एवं विवशता** :

'दोहरा अभिशाप' में लेखिका ने अपने परिवार के साथ जो आर्थिक अभाव भरा जीवन जिया उसे अनेक पृष्ठों में अभिव्यक्त किया है। लेखिका अपनी तीन पीढियों के आर्थिक तंगहाली का वर्णन करती है। पहली पीढी उसकी आजी की है। दूसरी उसकी माँ-बाबा की है। और तीसरी पीढी लेखिका की है। अर्थात लेखिका की आधी उम्र तंगहाल जीवन जीते-जीते बीती है।

लेखिका जिस बस्ती में रहती थी वहाँ घास-पूस की झोपडियाँ थी। कच्चे मिट्टी के घर को कुछ ईंट के मकान भी थे। इस बस्ती में महार, आंध्र से आये चमार, सफाई कर्मचारी के तीस-चालीस घर, मांग जाति के तेरह घर, कुछ आदिवासी गौंड जाति के, कुछ दलित ईसाइयों के घर भी थे। यहाँ रहनेवाले सभी मेहनतवश लोग थे। अलग-अलग काम करके गुजारा करते थे। कुछ लोग एम्प्रेस मिल में, कुछ कपडे की मील में, कुछ बीडी बनाने का काम करते थे। कुछ लोग अमीर घरों में झाडू-पोछा करने का तो कुछ अमीर लोगों का सामान बाजार से लाने का काम करते थे। ये काम आदमी-औरतें दोनों करते थे। मांग जाति के लोग बाजा बजाने का, उनकी औरते टोकरे, सूप आदि बनाकर बेचती थी । बस्ती में छोटे बच्चों की मृत्यु अधिक होती थी। मृत्यु का कारण समय पर इलाज न करने का था। बच्चों की देखभाल के प्रति लापरवाही बरती जाती थी। क्योंकि बच्चों को बीमारी की हालत में घर पर छोडकर काम पर निकल जाते थे। कभी कभी अफिम आदि खिलाकर झुले में सुलाकर जाते थे। इन सब भागदौड की वजह गरीबी है। यही उनके जीवन का यथार्थ था।

5. **हीनताबोध की समस्या** :

गरीबी के कारण ही अपमानित होना पडता है तो कभी दूसरों के सामने घटियापन महसूस होता है। ऐसे कई प्रसंग लेखिका ने आत्मकथा में दर्ज किये। जो उनकी यादों में चिरस्मरणीय है। एक प्रसंग लेखिका ने दिया है-'स्कूल के पिकनिक पर सभी लडकियों के साथ वह भी जाती है। शिक्षिका के कहने पर आटा, आलू, प्याज, और छोटी बोतल में तेल ले जाती है। अन्य लडकियों ने लाया हुआ तेल शिक्षिका रख लेती है और लेखिका का तेल लौटा देती है। क्योंकि वह तेल जवस का था। उसे

तब पता चलता है कि अमीर लोग जवस का तेल नहीं खाते। स्पष्ट है यहाँ गरीब एवं अछूत परिवार की सदस्य होने के कारण हीनताबोध है।'

6. **भूख की समस्या :**

प्रस्तुत आत्मकथा में भूख का चित्रण भी हुआ है। मनुष्य के लिए जरूरी है अन्न। गरीबी के कारण दलितों को स्वादिष्ट एवं भरपेट अन्न कभी नसीब नहीं होता। दलितों के घरों में बासी अन्न सुखाकर रखा जाता है। आवश्यकता पडने पर उसको पकाकर पेट की भूख मिटाई जाती है। गरीब दलित परिवार में बच्चे अधिक होते हैं। इन सब के खाने के खर्चे में ही मजदूरी का पैसा उड जाता है। इसलिए इन बच्चों को कभी-कभी रुखी-सुखी रोटी खानी पडती है। या कभी-कभी फाँके भी पडते हैं। लेखिका की बडी बहन जनाबाई को ग्यारह संताने हुई। वह तथा उसके बच्चे सदा बीमार रहने थे। किसी तरह डॉक्टर के पास इलाज करवाना हो तो कर्जा चढ जाता था। खर्चा बढने से उनकी स्थिति और बिगड जाती थी। लेखिका इस बात की ओर ध्यान आकर्षित कर लिखती है - ''कभी-कभी दो-दो दिन तक वे चने मुरमुरे खाकर रहते थे। माँ-बाबा उन्हें सहायता करते, परंतु वे भी कितना कर सकते थे । उनकी हालत भी कोई अच्छी नहीं थी ।'' आत्मकथा में भूख का दर्दनाक चित्रण हुआ है। यह उस उदाहरण में देख जा सकता है। यहाँ से वहाँ तक दलितों की स्थिति एक जैसी है। अत: रिश्तेदार भी कहॉ तब मदद कर सकते हैं । आत्मकथा में भूख के दलितों के जीवन में गरीबी के कारण दैनंदिन जीवन में जरुरी सामान की कमी हमेशा रहती है। यह स्थिति दर्शाती है, की लेखिका का पुरा परिवार भयावह गरीबी की मार को सह चुका है। चारो और अभावों से घिरी स्थिति है। बाबजूद इन परिवार की लडकियों में पढने की जिद्द है। पढ-लिखकर ही अपनी स्थिति बेहतर बन सकती है, इस उनका विश्वास है। यही आत्मविश्वास उन्हें हर कठीन स्थिति का मुकाबला करने के लिए तत्पर करता है, बल देता है।

7. **छुआ-छूत की समस्या :**

भारतीय समाज व्यवस्था में दलित एवं आदिम जातियों को असभ्य, असंस्कृत, पीछडा माना गया है। हर जाति की बस्तियों भिन्न-भिन्न जगह पर होती है। दलितों की बस्ती उच्चभ्रू सवर्ण लोगों की बस्ती से अलग दिशा में बसी हुई पाई जाती है। सदियों से गाँव के बाहर रहनेवाले वंचित उपेक्षित दलित समाज नें सवर्णों की सेवा की है। कभी बल प्रयोग से तो कभी श्रम के बदले बहुत कम दाम देकर दलितों से काम करवायें गये हैं। दलित समाज शिक्षा के अभाव में और आर्थिक कमजोरियों के कारण अन्याय और अत्याचार को सहते आया है। परंतु धीरे-धीरे समय परिवर्तन के साथ दलितों में जागरण के फलस्वरूप अस्मिता की प्रतीति होने लगी है। लेखिका ने इस प्रतीति को आत्मकथा में शब्दबद्ध किया है। स्वर्ण लोग ही नहीं बल्कि आदिवासी जाति के लोग भी दलितों सें छुआछूत बरतते थे। इस घटना का उल्लेख करती हुई लेखिका लिखती है- ''मेरी समझ में नहीं आ रहा था, कि मेरे हाथ लगाने से ऐसा क्या हो गया। जंगला का घर हम से अच्छा नहीं था। घर में बकरियाँ बँधी थी और उनके मलमूत्र की बहुत बदबू आ रही थी। फिर भी जंगला

हमसे छुआछूत बरतती थी।'' वर्तमान समय में भी आदिवासी समाज, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दृष्टि से पीछडा हुआ है। वह अन्य समाज की तुलना में उन्नति से कोसो दूर है। बहुत कम प्रतिशत इनमें जागरण हुआ है। इन जनजातियोंने छुआछूत को सवर्ण हिंदू लोगों के अनुकरण स्वरुप पाल रखा है। वस्तुतः इनकी संस्कृति, रहन-सहन वेशभूषा, खान-पान, त्यौहार और जीवन के संबंध में मान्यताएँ सम्य समाज से बिल्कूल भिन्न है। इनके उच्च कुलीन होने का संदर्भ किसी भी हिंदू धर्म ग्रंथो में प्राप्त नहीं होता। ना ही वर्णव्यवस्थाधिष्ठित साहित्य परंपरा में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।

8. **वरिष्ठ दलित अफसर के साथ छुआछूत :**

छुआछूत की स्थिति हर जगह होती है। ऐसी ही एक प्रसंग लेखिका ने दर्ज किया है। दलित व्यक्ति पढ-लिखकर अच्छे पद पर नौकरी करता है। उसका रहन-सहन अच्छी आर्थिक स्थिति के कारण उच्च स्तर का है जाता है। वह अन्य उच्च जाति के लोगों से किसी भी बात में कम नहीं दिखता। परंतु लेखिका खेद प्रकट करते हुए कहती है कि जहाँ तबादला होता था वहाँ पहुँचने से पहले हमारी जाति पहुँच जाती थी। वहॉ के चपरासी तक साहब का अर्थात लेखिका के पति देवेंद्र का कोई काम नहीं करता था। अपने छोटी जाति का साहब अगर हो तो पूरी इनामदारी से उच्चवर्णीय क्लर्को से सहयोग नहीं मिलता। उनके मन में यह दुःख रहता है, कि हम से नीची जाति का होकर हमारा बॉस बना बैठा है। उसे किसी-न-किसी तरह से संकट में डालने की साजिश या असहयोग दफ्तर के अन्य कर्मियो द्वारा किया जाता है।

9. **स्त्री के प्रति देखने का दृष्टिकोण :**

पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री को उतनी अहमियत नहीं जितनी पुरुष को है। स्त्री के स्वास्ध्य संबंधी स्त्रियों में जागरण की आवश्यकता है। वह शिक्षा के कारण ही आ जाती है। जहॉ गरीबी है, गंदगी है, रहन-सहन, साफ-सुथरा नहीं रहता वहाँ स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता। अशिक्षा के कारण दलितों में परिवार नियोजन के बारे में सूझ-बूझ नहीं है। इसलिए गरीबी के बाबजूद स्त्रियों के द्वारा कई बच्चों को जन्म दिया जाता है। इससे उनके स्वास्थ्य पर विपरित परिणाम होता है। वह अनेकों बिमारियों से पीडित रहती है। इस वास्तविकता के प्रति लेखिका ध्यान आकर्षित करती है। इस संदर्भ में लेखिका अपनी बडी बहन का उदाहरण प्रस्तुत करती है। ''बहन को हर दूसरे वर्ष बच्चे होते थे। पहली लडकी हुई बाद में तीन लडके हुए। तीनों बीमार होकर चल बसे। बहन को ग्यारह बच्चे हुये थे और वे बराबर बीमार रहते थे।'' तात्पर्य न केवल जन्म देनेवाली मॉ के स्वास्थ्य पर इसका असर होता है। बल्कि पैदा होनेवाली संतान भी स्वस्थ निरोगी नहीं रहती। घर परिवार में बच्चो की अधिक संख्या होने से उनकी पढाई की और ठीक-ठाक माँ-बाप ध्यान नहीं दे सकते। बडा परिवार आर्थिक चुनौतियाँ खडी करना है। उसी तरह सामाजिक स्वास्थ्य भी बिगाड देता है, इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता।

10. सुविधाओं के अभाव समस्या :

लेखिका ने बस्ती के लोगों को किस तरह गंदगी के बीच रहना पडता था इसका उल्लेख करते हुए लिखा है, ''कि बस्ती के घरो के सामने ही पाखाने नजर आते थे। उठते-बैठते पाखाना नजर आता है। इतनी बडी बस्ती के लिए सिर्फ तीन पाखाने थे।'' तात्पर्य दलित बस्तियों में बीमारियों के फैलाने का यह भी एक कारण है। जिसकी ओर नगर निगम के लोग ध्यान नहीं देते ना ही पूरी सुविधा उपलब्ध कराते हैं। यह प्रश्न वर्तमान स्थिति में ज्वलंत प्रश्न है। इस दलित बस्तियों का पाखाना साफ करने जमादार आते थे, उनके काम करते वक्त आस-पास एक तरह से बदबू फैल जाती थी। लेखिका ने एक बार नाक पर रूमाल रखा जिसे देखकर जमादार कहने लगा- ''टट्टी करती हो तब बदबू नहीं आती है क्या? तुम लोग अपने माँ-बाप या बीमार की टट्टी पेशाब से भी नाक सिकोडते हो और हमें देखो पेट की खातीर ऐसा काम करते हैं।'' स्पष्ट है कि घृणास्पद काम कोई कितना भी पैसा मिले करता नहीं है। वर्तमान समय में भी अपने पेट के लिए ही काम करते हैं फिर भी लोग उनसे दूरियाँ बनाए रखते हैं। उनको बस्ती के नल और कुएँ से पानी भरने नहीं देते थे। इनके प्रयत्नों के बाद के कुएँ का पानी भरने को मान्यता मिली। मेहतर लोगों में जागृति लाने का काम करने की आवश्यकता है। इनको सुधारने के लिए धैर्य और संयम की आवश्यकता है। इन अपेक्षित वर्गों का उद्धार तब ही संभव है।

11. अंधविश्वास :

दलितों में अशिक्षा के कारण अंधविश्वास अधिक पाया जाता है। अतः इनका विश्वास आधुनिक युग के चिकित्सा उपायों और दवाईयों की अपेक्षा मंत्र-तंत्र, टोने-टोटके, झाडू-फूँक साधु फकीर में, देवी देवताओँ की मनौती में अधिक रहता है। तत्कालीन स्थिति में लेखिका के माँ-बाप आजी ही नहीं बस्ती के सभी दलित की स्थिति एक जैसी थी। लेखिकाने लिखा है-'उसके बचने और स्वस्थ रहने के लिए उस आजी और माँ ने भगवान से मनौती मानी थी कि- वह बकरे की बली देगी और लेखिका के वजन के बराबर गुड चावल चढायेगी। यह भी भगवान के मंदिर से दूर खडे रहकर। क्योंकि उस समय अछूत लोगों को मंदिर में जाने की मनाई थी। तथा अछूत लोगों में बलिप्रथा चल रही थी।

अंधविश्वास के फलस्वरूप लेखिका के घर में मंत्र-तंत्र टोने-टोटके किये गए। पाँच धातू के नथ से नाक छेद गई, ब्राह्मणों के घर से जूठी पत्तल लाकर उसके उपर से पाँच बार घुमाया गया। यह सब किसलिए किया गया क्योंकि वे अज्ञानी थी। अपनी स्थिति के बारे में सचेत नहीं थे। दलितों में अंधश्रद्धा की वजह देते हुए लेखिका कौसल्या बैसंत्री ने लिखा है - 'माँ-बाबा ही नहीं संपूर्ण दलित समाज अज्ञान, अशिक्षा के गर्त में पडा था। अपने अधिकार अपनी परिस्थिति के बारे में ज्यादा नहीं सोचता था, उसे अपने पेट की ही चिंता अधिक रहती थी कि कब चुल्हा कैसे जलेगा।'' स्पष्ट है कि दलितों में आर्थिक विवेचना के कारण अपनी स्थिति को बेहतर बनाने हेतु भाग्यवाद पर आधिक भरोसा किया जा रहा था। तत्कालिन सामाजिक व्यवस्था ने शिक्षा, धन, संपत्ति, अधिकार से उन्हें वंचित कर

रखा था। दलित समाज तो अपने ही घेरे बंदी में जकडा हुआ था। अतः इनकी बदतर हालात के लिए व्यवस्था ही जिम्मेदार थी। दलित समाज में बच्चों की संख्या अधिक होने का कारण भी उनका अज्ञान ही है। वे होनेवाली संतान को भगवान की देन मानते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि लडकियों से अधिक लडकों को महत्त्व दिया जाता है। उन्हें वंश का दीपक चाहिए। इस दीपक के इंतजार में परिवार में बच्चों की संख्या बढ जाती है। दलित परिवार में बच्चों की मृत्यु का प्रमाण भी अधिक है। क्योंकि जादा तर बच्चों की ठीक से देखभाल गरीबी के कारण कर नहीं सकते। लेखिकाने स्वयं के माता-पिता को ग्यारह संताने होने का उल्लेख किया है। इतना ही लेखिका की बडी बहन को भी ग्यारह बच्चे हुए थे। उनमें से कुछेक की बीमार होकर मृत्यु हुई और कुछ सदा ही बीमार रहते थे। इन सबकी वजह गरीबी, अज्ञान, अशिक्षा, अंधश्रद्धा है। लेखिकाने बस्ती के लोग किस तरह अंधविश्वासी और परंपरागत मान्यताओं से उलझे हुए थे इसका विस्तृत वर्णन आत्मकथा में किया है। बस्ती के लोगों के अंधविश्वास के बारे में वह लिखती है -'खसरा, चेचक, टाइफाईड को देवी का प्रकोप मानकर वे शीतला माता की पूजा करते थे। बस्ती में माता का मंदिर था। चेचक और खसरा होने पर बीमार के घर के लोग सुबह श्याम माता के मंदिर में नीम की पत्तियाँ और पानी चढाकर आते थे। सुबह श्याम नहाकर गीले कपडों में ही वे माता देवी के मंदिर जाते थे। लोगों में देवी का भय था। इसलिए वे रोगी को डॉक्टरी दवाईयाँ नहीं देते थे। सिर्फ देवी की पूजा पर ही भरोसा रखते थे। स्पष्ट है बीमार को दवाईयाँ न देने से मरीज ठीक कैसे होंगे परंतु अंधविश्वास के कारण वे इस प्रकार के आचरण करते थे।' अज्ञानवश दलितों में मनौती मानने की प्रथा का उल्लेख करते हुए लेखिकाने लिखा है -'अंधश्रद्धा की कोई सीमा न थी। बीमारी ठिक होने के लिए कोई गुडचावल की, कोई मुर्गा-मुर्गी की बलि चढाने की मन्नत मानता था। और उसे पूरा करता था।' पूजा का सामान सिंदूर, नारियल, कपूर आदि सामान मंदिर में चढाया जाता था। इस प्रकार के अंधविश्वास के कारण किये जाने वाले व्यवहार में गरीब दलितों को काफी खर्चा उठाना पडता था। पहले यह प्रथा बस्ती के दलितों में विद्यमान थी। लेखिका लिखती है कि, 'अब अधिकांश महार, बौद्ध हो गये हैं और उन्होंने इस अंधविश्वास और काल्पनिक देवी-देवताओं को पूजना छोड दिया है। माता मंदिर की जगह अब यहाँ बौद्ध मंदिर बन गया है। स्पष्ट है कि महारों के बौद्ध धर्म स्वीकार के बाद ही उनमें अनिष्ट प्रथा तथा अंधविश्वास कम हुआ है। बौद्ध धर्म स्वीकार करके बाद इनके अनुयायी किसी भी बात पर विश्वास करने से पहले तर्क एवं विवेक की कसौटी पर उसे कसकर देखते हैं। जब उन्हें कोई बात जंचती है तो स्वीकार करते हैं। वरना नहीं। वे बुद्धिप्रमाण मानते हैं । एक तरह से उनमें बौद्ध धर्म के कारण विज्ञानवादी दृष्टी निर्माण हुई हैं।'

12. शिक्षा की समस्या :

आदिकाल से शिक्षा का महत्त्व माना गया है। पूर्व प्रचलित मान्यताओं के अनुसार मध्यकाल तक दलित एवं पिछडों के लिए शिक्षा के द्वार बंद थे। यही स्थिति स्त्रियों की भी थी। आधुनिक काल में भारतीय समाज व्यवस्था पर पाश्चात्य विचारों का प्रभाव पडा। भारत देश पर 150 वर्ष अंग्रेजों ने

राज्य किया। यहाँ आकर अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। स्कूल कॉलेज खोले गये। अंग्रेजों के द्वारा दी जा रही शिक्षा का सर्वप्रथम लाभ भी यहाँ के उच्चवर्णीय लोगों ने ही उठाया। भारतीय लोगों द्वारा भी शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान दिया जाने लगा था। परंतु यह शिक्षा पिछडों को नहीं मिल पा रही थी। इसके कई कारण थे। पहला यह कि तत्कालीन समय में छुआछूत, उच्च-नीच को अधिक महत्त्व दिया जा रहा था। सवर्णों द्वारा यह कहकर भी पिछडों एवं दलितों को प्रवेश नहीं दिया जा रहा था कि तुम पढ-लिखकर क्या करोगे। दूसरा कारण यह था कि सदियों से दलित शिक्षा से वंचित रखे गए थे। वे अज्ञानी थे इसलिए शिक्षा ग्रहण करने से अपना उद्धार हो सकता है इसके बारे में वे अनभिज्ञ थे। उसी तरह स्त्री शिक्षा के द्वार भी बंद थे।

'दोहरा अभिशाप' की लेखिका स्वतंत्रता से पूर्व ही शिक्षा व्यवस्था में दलितों की स्थिति को रेखांकित करती है। उनका कहना है, तत्कालीन समय में बहुत कम लोग थे जो अपने बच्चों को पढाई के लिए स्कूल भेजते थे। उसमें भी लडकियों को पढने के लिए भेजने का समाज में प्रचलन नहीं था। शिक्षा के महत्त्व को जानकर ही मानो लेखिका की माँ अपनी लडकियों को आर्थिक विवंचना के बावजूद पढने को भेजती है। लेखिकाने आत्मकथा में इस बात का संकेत किया है कि दलित परिवार में से पढनेवाली बहुत कम लडकियाँ रहती थी। पढनेवाली लडकियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण अच्छा नहीं था। फिर भी स्त्री शिक्षा का प्रचार करने में कुछ महिलाएँ अग्रेसर थी। जिनका उल्लेख 'दोहरा अभिशाप' में किया गया है। दलित बस्ती में स्कूल खोलनेवाली जाईबाई चौधरी एक अछूत महिला थी। उसके इस शैक्षिक कार्य में सहयोग देने वाला एक ईसाई परिवार था। जिन्होंने स्कूल के लिए अपना आधा मकान दे रखा था। इसी तरह आदिवासियों में शिक्षा का प्रसार एवं उनमें जागृति लाने के लिए आदिवासी महिला झूलाबाई ने एक स्कूल खोला था। इनके स्कूल में आस पास में दलित, अछूत, आदिवासी बच्चे पढते थे। इनका शिक्षा क्षेत्रों में दिया गया योगदान बहुत महत्त्व रखता है। क्योंकि उस समय बहुत ही कम संख्या में स्कूल थे, तथा अछूत और आदिवासी बच्चों की पढाई के लिए इस प्रकार के स्कूलों की आवश्यकता थी। लेखिकाने बस्ती के ही जाईबाई स्कूल में तीसरी कक्षा तक पढाई की थी।

शिक्षा के लिए प्रेरणा और उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता रहती है। शिक्षा लेने वाला छात्र किस तरह की और किस स्कूल में शिक्षा लेनी चाहिए इन बातों से अनभिज्ञ रहता है। समय पर उचित मार्गदर्शन मिलता है तो उनके जीवन की दिशा ही बदल जाती है। लेखिका ने शिक्षा के संबंध में मार्गदर्शन देने वाले नामों का उल्लेख करते हुए लिखा है, -'आग्रीभोज तथा रंगारी ने माँ-बाबा को सलाह दी कि लड़कियों को अच्छे स्कूल में भेजे। यहाँ बोर्ड की परीक्षा होगी, अच्छे नंबर लाने पर स्कॉलरशिप भी मिल सकती है।' उनकी सलाह पर ही लेखिका का नाम भिडे कन्या शाला में डाला गया था। लेखिकाने स्पष्ट किया कि-'इस स्कूल में मेरे सिवा और कोई अस्पृश्य लडकी नहीं थी। सिर्फ दो लड़कियाँ कुनबी जाति की थी। बाकी सब लडकियाँ ब्राह्मण जाति की थी।

सवर्ण जाति की लड़कियों के बीच लेखिका में दब्बूपन की भावना आ गयी थी। इस भिडे कन्याशाला में ब्राह्मण लड़कियों की अधिक संख्या से स्पष्ट था कि वे लडकियों को पढाने में आगे थे। लडकों के बराबर लड़कियों को शिक्षा देने के महत्त्व को वे जानते थे ।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. आत्मकथा का नायक ..... होता है।

   1) पाठक 2) लेखक 3) श्रोता 4) प्रकाशक

2. आत्मकथा की भाषा ..... पुरुषवाचक होती है।

   1) उत्तम (प्रथम) 2) मध्यम (द्वितीय) 3) अन्य (तृतीय) 4) पंचम

3. कौसल्या बैसंत्री की मातृभाषा ..... है।

   1) मराठी 2) हिंदी 3) अंग्रेजी 4) उर्दू

4. कौसल्या बैसंत्री ..... प्रदेश में ही अधिक रही।

   1) हिंदी 2) मराठी 3) गुजरात 4) मध्य

5. कौसल्या बैसंत्री ..... भाषा से अधिक प्रभावित है।

   1) मराठी 2) हिंदी 3) अंग्रेजी 4) उर्दू

4.5 पारिभाषिक शब्द शब्दार्थ :

पैतृक संपत्ति : पुश्तैनी संपत्ति
लाइसेंस : अनुमति
रियासत : राज्य देशी राज्य
कस्बा : गाँव से बडी और शहर से छोटी बस्ती
लीडर : नेता, मुखिया
गिरगिट : रंग बदलनेवाला सरडा
आँधी : तूफान
दोहरा : दुगुना
महाजन : साहुकार
भाप : बाष्प

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) - 2 2) - 1 3) - 1

4) - 1 5) - 3

4.7 सारांश

1. ''दोहरा अभिशाप'' यह दलित महिला लेखिका कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा है।

2. दलित महिला लेखिकाओं में हिंदी की यह प्रथम आत्मकथा है।

3. कौसल्या बैसंत्री ने दलित होने और उसमें महिला होने का यह दोहरा शोषण चित्रण किया है।

4. कौसल्या बैसंत्री पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव होने के कारण आत्मकथा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5. लेखिका मूलत: मराठी भाषिक है। विवाह के बाद हिंदी भाषा एवं हिंदी प्रदेश से जुडी रहने के कारण यही भाषा प्रभाव उनकी आत्मकथा में प्रयुक्त भाषा पर प्रतित होता है।

6. वृद्धावस्था में लेखिकाने आत्मकथा का लेखन किया है। अत: आत्मकथा में निवेदन शैली की भाषा शुरू से अंत तक एक जैसी है।

7. लेखिका ने दलित जीवन में आनेवाली समस्याओं का चित्रण किया है।

8. स्वतंत्रता के बाद भी दलित जीवन की स्थिति कितनी भयावह होती है? यह चित्रित किया है।

4.8 स्वाध्याय

1. ''दोहरा अभिशाप'' में चित्रित देश काल तथा वातावरण को स्पष्ट कीजिए।

2. ''दोहरा अभिशाप'' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. ''दोहरा अभिशाप'' में चित्रित समस्याओं को लिखिए।

4. ''दोहरा अभिशाप'' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. स्वातंत्र्योत्तर काल की हिंदी दलित आत्मकथाओं की सूची बनाइए।

2. अपने शहर/गांव की दलित बस्ती का वृत्तांत लेखन कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. ''जीवन हमारा'' - बेबी कांबले ।

2. ''अपने-अपने पिंजरे'' भाग-1 और 2 - मोहनदास नैमिशराय ।

●●●